

न । पूर्वोपयुक्तशिवशब्दसहायनाम्ना श्रीमद्विरीश  
तनेयेशपदार्चकेन २ तत्रादौ प्रथमस्कंधशंकास्पृच्छ  
न्तिवाचकम् । श्रोतारोचिनयेनैव शंकया विप्रचेतसाः ३  
दयायुक्तस्सुशीलाश्च कथाश्रवणकौशलाः । बद्ध  
हस्तपुटाः सर्वे नमस्तत्पादपंकजम् ४ कृतश्रमशब्द  
शास्त्रे सर्वशास्त्रविशारदं । विद्याविनोदवार्तायां प्रोत्फुल्ल  
मुखपंकजम् ५ श्रोतार ऊचुः ॥ भगवन् हृदयेऽस्माकं  
श्रीमद्भागवतं प्रति । शंका महीयसी नित्यं वर्तते भ्रांति  
वर्द्धिनी ६ न्युनेष्वपि महाराज पुराणेस्तोत्रसंचये ।  
कविभिर्मेकृता ग्रन्था न्यूनान्यूनतश्चापि ७ व्यासेनापि  
महाबुद्धे विस्तृतानां तु का कथा । मंगलाचरणाश्लो  
करिकैः भागवत के शंका की मंजरी बनाता हूं श्लोक दो को अर्थ  
मिला है युग्म है २ शंका करिकै युक्त चित्त तथा दयायुक्त तथा  
शोलवान तथा अनेक शास्त्रों के श्रवण में चतुर ऐसे जो श्रोता हैं  
सो हस्त जोड़िकै कथा बाँचनेवाले के चरणों को नमस्कार  
करिकै ३ बहुत विनती करिकै पहिले प्रथमस्कंधकी शंका वा-  
चकसे पछते भये दो श्लोकों को अर्थ मिला है युग्म है ४ कैसे  
कथा बाँचनेवाले हैं व्याकरण पढ़े हैं तथा सब शास्त्र में चतुर  
हैं शास्त्र में कोई शंका पूछता है तो बहुत खुशी होते हैं ५  
श्रोता पछते हैं हे महाराज श्रीमद्भागवत में हमारे लोगों की  
हृदय में बड़ी शंका है सोई शंका हमारे सबके मनमें भ्रांति  
को बढ़ाय दिया है जिस कारणसे भागवत सुनते हैं खरीपण  
विश्वास कथामें नहीं आता ६ हे महाराज कवियोंने छोटेसे भी  
छोटा ग्रंथ बनाए तथा बड़ा भी बनाए पण छोटेमें भी बड़ेमें भी  
मंगल होने वास्ते बहुत से श्लोक पहिले बनाये हैं ७ अथा

काः कविभिर्बहवः कृताः ८ विघ्नबाधाविनाशाय चादौ  
मंगलदाः प्रभो । श्रीमद्भागवतं शास्त्रं सर्वार्थपरि  
बोद्धितम् ९ महापुराणमुनिभिः कथितं मोक्षदायकम् ।  
तस्यादौ मंगलनास्ति गणेशगुरुवन्दनम् १० केवल  
ब्रह्मणो ध्यानं निस्पृहे नैव संकृतम् । तथापि श्लोकब  
हुलैः कृतञ्चेत्तस्य वन्दनम् ११ नवर्तते तदा शंका हृदि नो  
महती प्रभो । त्रिध्येनां शास्त्रखण्डेन न कपोलो द्रते न वै १२

वाचक उवाच ॥ ययस्वै सज्जनाः सर्वे बोधन्यापितर  
स्सदा ॥ धृतं जन्मकुले येषां भवद्भिर्हरिबल्लभैः १३ शंके  
यन्निश्चला जाता युष्माकं महती हृदि । ममानन्दकरा श्रेष्ठा  
व्यासजीभी छोटे स्तोत्र में मंगलाचरणश्लोक बनाये हैं और  
बड़े ग्रंथ में तो वनौ वै किये हैं युग्मश्लोक हैं ८ विघ्न के दुःख को  
नाश होनेवास्ते कवियों ने ग्रंथकी आदि में मंगल को देनेवा-  
ला श्लोक बनाते हैं पण श्रीमद्भागवत शास्त्र सब अर्थ करिके  
युक्त है ९ मुनिलोग भागवत को महापुराण कहते हैं तथा  
मोक्ष को देनेवाला भी कहते हैं पण भागवतकी आदि में ग-  
णेशकी तथा कविके गुरुकी वंदनारूप मंगल नहीं किया है  
१० केवल विना प्रीति सरीके ब्रह्म को ध्यान व्यासने किया जो  
दापि ब्रह्म को ध्यान भी बहुतसे श्लोक में प्रीति से करते ११ तो  
हमारे सबके मन में बड़ी शंका न होती अब इस बड़ी शंका  
को शास्त्रकी तरवार से काटो अपनी इच्छा से घात पनाय के मति  
हो १२ वाचक बोले हे श्रोता लोगो तुम सब बड़े सज्जन हो तुमारे  
पितरों को धन्य है भगवान् के प्यारे तुम सब जिसके कुल  
में जन्मते भये १३ हे श्रोता हो तुमारी सबकी हृदय में यह शंका नि-  
वृत्त उत्पत्ति भई है सो हम को भी आनन्द देती है तिरका कारण

श्रोतारस्तन्निवाधत १४ यदाव्यासोमहाबुद्धिः ।  
 न्दशसप्तच । नानेतिहासशास्त्राणि १५ तव  
 वै १५ तदोपदिष्टोमुनिना नारदेनापिदुःखितः ।  
 लीलानुकथनेमग्नोऽभूर्द्धर्षवारिधौ १६  
 यथानारीं निर्द्धनश्चयथाधनम् ।  
 थाभून्मुनिसत्तमः १७ शीघ्रंरचितुकामोसौ  
 त्यबहुमंगलम् । केवलं ब्रह्मणो ध्यानं कृत्वैकेनमहातुरः  
 १८ श्रीमद्भागवतंशास्त्रं शीघ्रंरचितुमुद्यतः । एतद  
 र्थंचश्रोतारो नचक्रेबहुमंगलम् १९ ॥  
 इति श्रीभागवतशंकानिवारणमंजय्यां शिवसहायबुधवि  
 रचितायां प्रथमस्कंधे प्रथमेऽध्याये प्रथमवेणी ॥ १ ॥

सुनो १४ जबबड़ेबुद्धिमान् व्यासजीने अठारह पुराण अनेक  
 शास्त्रतथाइतिहास वनायके संतोषको नहींप्राप्तिभये १५ तब  
 भगवान्केचरित्र गानकरने वास्ते नारदमुनिने  
 देशकिया तवहर्षरूप समुद्रमें व्यास मग्न होगये १६ जैसाका  
 मीप्राणी स्त्रीको पायकैसुखीहोताहै तैसा नारदकी  
 पायकै व्यासजी सुखीभये १७ भागवतको बनानेवास्ते  
 ने जलदीकिया औरश्लोक मंगलदायक भलिगये ए  
 करिकैअकेलेब्रह्मको ध्यानकियाबड़ाआतुरहोकै १८ श्रीसत्भा  
 गवतको बनानेवास्ते बहुतजलदीसे प्रारंभकिया इसवास्तेबहु  
 श्लोकमंगलदायकनहींबनाया ॥ १९ ॥ इति श्रीभागवतशं  
 कानिवारणमंजय्यां शिवसहाय बुधविरचितायां सुधामयीटीका  
 सहितायां प्रथमस्कंधे प्रथमेऽध्याये प्रथमवेणी ॥ १ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ प्रथमेप्रथमेऽध्यायेव्यासोवाचेति नास्तिवै । द्वितीयाऽध्यायप्रारम्भे व्यासोवाचकथम्मुने १ वाचकउवाच । नारदेनोपसन्दिष्टो भगवद्दीर्घवर्णने । हर्षसागरसम्मग्नो बभूवमुनिसत्तमः २ प्रारम्भकृतवाञ्छीघ्रं श्रीमद्भागवतस्यच । आतुरान्नैवसंचक्रे स्ववाक्यंमुनिसत्तमः ३ संस्मृत्योवाचपश्चाद्वितीयादौचकारसः ४ इतिश्रीभा० प्र० द्वितीयेऽध्यायेद्वितीयवेणी ॥ २ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कृष्णावतारम्पप्रच्छुरादौसूतम्मुनीश्वराः । तम्परित्यज्यसूतेनकथमुक्तंयथाक्रमम् १

श्रोतावोक्ततेभये प्रथमस्कंधकी पहिलीअध्यायके प्रारंभमें व्यासनहींबोले दूसरीअध्यायकी प्रारंभमें क्योंव्यासबोले १ वाचक बोले भगवान्को चरित्रवर्णनकरनेवास्ते व्यासकोनारद जीनेआज्ञा दिया तबव्यासमुनि हर्षके समुद्रमें डूबिगये २ व्यासने बड़े हर्षसेभागवतबनानेको प्रारंभकिया पण आतुर पणते पाहिलेआपनी वचननहींलिखी ३ पीछेसे व्यासकोयादि भई कि प्रारंभकरतेवखतव्यासउवाच ऐसालिखना चाहतारहा है सोहम भूलिगये ऐसाविचारिकै दूसरीअध्यायकी आदिमें व्यासउवाचकियाहै ४ इति भा० प्रथ० द्वितीयेऽध्याये द्वितीयवेणी ॥ २ ॥

श्रोतापूछतेभयेकि, प्रथम अध्यायमें श्लोक १२में श्रीकृष्ण के अवतारकीकथा सनकादिकोंने सूतसेपूछेथे सूतनेकृष्णके चरित्रकीकथाको त्यागिकै आदिमें भगवान्को सब अवतार क्यों वर्णनकिये बड़ीभ्रमहोतीहै १ ॥



वाचकउवाच कृष्णवतारचरितं द्विधाभूतंविदृश्यते  
 सत्संगिनाम्मोक्षरूपमज्ञानाम्बिषयाण्यवम् २ युगेयुगे  
 भवत्तस्य प्रभावोबहुविस्तरः । श्रुत्वादौकृष्णचरितं  
 येऽपक्वहृदयानराः ३ तेपिकर्मप्रकुर्वन्ति कृष्णवच्चवि  
 मोहिताः । मोक्षजारमुखम्भत्वा पतिष्यति च रौरवे ४  
 मूर्खानैवविजानन्ति श्रीकृष्णचरितामृतम् । ज्ञानिनां  
 मोक्षरूपं च तद्धीनानाम्भ्रभावहम् । एतदर्थंचश्रोतारो  
 वर्णितंचयथाक्रमम् ५ इतिश्रीभा० प्र० तृतीया०तृती  
 यवेणी ॥ ३ ॥

वाचकवाले श्रीकृष्णको चरित्र दोप्रकार को संसारमें देखि  
 परता है सत्संग करनेवाले मनुष्य तो कृष्ण के चरित्र को मोक्ष  
 रूप मानेंगे तथा मूर्खलोग विषयको समुद्र कृष्णके चरित्र  
 को मानेंगे २ तथा युग युगमें श्रीकृष्ण को चरित्र बहुत वि-  
 स्तार करिके होता है यह विचार कियोंकि सनकादिक तौ  
 परमहंस हैं कृष्णके चरित्र को सुनिके मोक्षरूप मानेंगे पण  
 पेस्तर कृष्णके चरित्र को मूर्खलोग सुनैंगे ३ वो मूर्खलोग  
 श्रीकृष्णका चरित्र मोक्षरूप है तिसको जारको सुखमानिके  
 कृष्णसरी के परस्त्रियों के संगक्रीड़ा करेंगे रौरवनरक में परेंगे  
 ४ पेस्तर वर्णन कृष्णको अमृतरूप चरित्र करेंगे तौ मूर्खलोग  
 कृष्णके चरित्ररूप अमृत को नहीं जानेंगे और जो पहिले  
 सब अवतारको चरित्र वर्णन करेंगे तौ उस चरित्र को धीरे  
 धीरे सुनिके मूर्खभी ज्ञानी होजावेंगे पीछेसे कृष्णके चरित्र  
 को सुनैंगे तौ भ्रमनहीं मानेंगे मोक्षरूप मानेंगे इसवास्ते पे-  
 स्तर कृष्ण को चरित्र सुतजीने नहीं वर्णन किया ॥ ५ ॥  
 इति भा० प्र० तृतीयाऽध्यायेतृतीयवेणी ॥ ३ ॥

श्रोतार ऊचुः। येषामुपरियोगीन्द्रो करोतिभूरिशःकृ  
 पाम् । सगोदोहनमात्रं हि तिष्ठते च तदाश्रमे १ अतिष्ठ  
 त्सप्तरात्र वै कथन्तत्रमहामुनिः । श्रावयामासराजानं  
 श्रीमद्भागवतन्तदा २ वाचकउवाच । एकदागतवान्यो  
 गीगोलोकंस्वेच्छया मुनि। कृष्णेन पूजितस्तत्रगन्तुकाम  
 स्तपोधनः ३ प्रार्थितस्तत्रकृष्णेन परीक्षिन्मोक्षहेतवे ।  
 पांडवामेप्रियास्स्वामिन्तत्पौत्रोयन्नृपोमुने ४ दुर्गतिं स  
 पदंष्टश्चे ह्रजिष्ठातिद्विजेरितात् । तदाहास्यं भवेत्लोकै  
 ममभूरिचित्तोसदा ५ अतोयथेच्छाभवतस्तथा तारय  
 तन्नृपम् । एतदर्थमुनिस्तस्थौ सप्तरात्रं नृपान्तके इति  
 श्रीभा० प्र चतुर्थेऽध्याये चतुर्थवेणी ॥ ४ ॥

श्रोता पूछते भये शुकजी जिस के ऊपर बड़ी  
 कृपाकरते थे उस के मकानपर टिकतेथे कितनीदेर जितनी  
 देर गायके दूहने में लागती है उतनी देरबड़ी कृपाकरें तो  
 जराखड़े हो जातेथे १ सो शुकदेवजी गंगा के तटपर सात-  
 दिन क्यों टिकतेभये तथा टिकिके परीक्षित् को भागवत  
 सुनाते भये २ वाचकबोले एकदिन अपनी इच्छासे शुकजी  
 गोलोक को गये तब श्रीकृष्णने शुकको पूजन किया पूजन  
 ग्रहण करिके शुकजी चलने लगे ३ तब परीक्षित् की मोक्षहो  
 ने वास्ते श्रीकृष्ण जीने शुक की प्रार्थना किया हे मुनिजी पांडव  
 मेरे बड़े प्यारेथे तिन को यह परीक्षित् पोता है ४ ब्राह्मण  
 के वचनते सर्पकरिके काटाहुआ परीक्षित् जब नरकको जावे  
 गा तब तीनलोक में मेरी बड़ी हँसी होवैगी कि कृष्णके मि-  
 त्रों का पोता नरकको जाता है देखो भाई ५ इसवास्ते जैसी  
 आपकी इच्छा होवै उसी प्रकार से परीक्षित् को नरक से

श्रोतारज्जुः ॥ दुःखितान्नारदोदृष्ट्वा जनान्दुःखसम-  
न्वितः । मूर्च्छितस्तत्क्षणे भूमौ पतत्यत्यंतविह्वलः १  
करोत्युपापानिवह्नीनारदस्तद्धुःखशान्त्ये भगवत्प्रियो मु-  
निः । दुःखादितं सत्यवती सुतस्मिन्निरीक्ष्य चक्रे कथमा-  
श्वयोग्यम् २ वाचक उवाच निवारितस्सत्यवती सुतोऽनि-  
शम्मा वर्णय त्वन्निखिलार्थवाचनं । सुरर्षिणा प्रीतिभरेण  
मानितो हरेश्चरित्रम्बदसौख्यवारिधिम् ३ न कृतं स्वचन-

उद्धार करो मेरे लोक में भेज देवो हे श्रोता जन ऐसी कृष्ण की  
विनती से परीक्षित के साथ सात दिन शुकदेवजी टिकते भये  
६ ॥ इति भा० प्र० चतुर्थेऽध्याये चतुर्थवे गी ॥ ४ ॥

तब श्रोता पूछते भये कि, हे मुनिजी तीन लोक में किसी  
जीवको दुःखी नारद ने देखिके उसी वखत नारद पृथ्वी में  
पड़ जाते थे बहुत मूर्च्छा को प्राप्त होते थे और बहुत विह्वल होते थे  
भगवान् के प्यारे जो नारद सो उस जीवके दुःखको नाश होने  
वास्ते अनेक उपाय करते थे कि जीव सुखी होवै तो आपु भी सुखी  
होवै ऐसे दयावान् व्यास मुनिको दुःखी देखिके मुस्कियाने क्यों  
अयोग्य क्योंकि हे कि अपना स्वभाव क्यों छोड़ै २ वाचक बोले  
नारद ने बड़ी प्रीति करिके बड़े आदरसे व्यासको मना कि हे कि  
हे व्यास संसार को ठगनेवाला ग्रंथ मति बनावो जिसके नामको  
ग्रंथ उसकी तो तारीफ दूसरे की निन्दा फिर दूसरे के नामको ग्रंथ  
उसकी तारीफ और जिसकी तारीफ किया था उसकी निन्दा दूस-  
रे ग्रंथ में लिखि दिया ऐसा शास्त्र मति बनावो सुख को समुद्र ऐसा  
जो भगवान् को चरित्र सो वर्णन करो ऐसा सिखावन वारंवार नारद  
व्यासको देते भये ३ व्यासजी बड़े अभिमानते नारद की वाक्य  
को नहीं माने अनेक प्रकार के ग्रंथ बनाये उनमें से एक है व्यास

न्तस्य तेन मानातिवेगतः । प्राप पश्चान्महादुःखन्तं विलो  
क्य मुनिस्तदा । कृपां कृत्वास्मितञ्चक्रे तत्रासार्थं न मानतः  
४ इति श्री भा० प्रथमस्क० पंचमेऽध्याये पंचमवेणी ॥ ५ ॥

श्रोतार उचुः ॥ अनुग्रहीता मुनिभिर्नारदस्य प्रसूरो  
कथं मृता सर्पदंष्ट्राशंके यस्मद्दृतीहि नः १ वाचक उवाच  
मुनीन् जिगमिषून् ज्ञात्वा सुतं ज्ञानरतन्तथा । इन्द्रियान् प्र  
बलान्मत्वा प्रार्थयामास सा हरिम् २ शूद्रयो नौ समुत्पन्ना

कोकुटुभी सुख नहीं भया ग्रंथवनाये पीछे वडे दुःख को व्यास प्रा  
सभये तब व्यास को दुःखी नारद मुनि ने देखि कै व्यास के ऊपर  
कृपा करि कै तथा व्यास को प्रास देने वास्ते मुस्कि आते भये अभि  
मान ते निदर्श होके नहीं मुस्कि आते तब ज्ञान देके व्यास के दुःख को  
हरते भये ऐसी कृपा करते भये ॥ ४ ॥ इति० भा० प्र० पंचमेऽध्याये  
पंचमवेणी ॥ ५ ॥ श्लोक १ ॥

नारद की माता के ऊपर मुनि लोगों की कृपा बहुत थी  
क्योंकि जो कृपा नहीं करते तो मुनियों के सकाशते नारद को  
जन्म उस दासी में क्यों होता ऐसी मुनियों की कृपा से युक्त  
नारद की माता सर्प के काटे से क्यों मृत्यु को प्राप्त हुई खोटी  
मृत्यु नारद की माता की मुनिके हमारे लोगों को बड़ी शंका  
आती भई १ वाचक बोले नारद की माता ने मुनियों को तीर्थ  
करने वास्ते जाता जानिके तथा अपना पुत्र जो नारद तिस  
को ज्ञान में रमित जानि कै तथा इन्द्रियों को बड़ी बलवान  
जानिके भगवान् की प्रार्थना करती भई विचार किया कि  
मेरे को मुनि जन त्यागिके जाते हैं और पुत्र मेरा ज्ञान में मस्त  
है अब मेरी रक्षा कौन करेगा इन्द्रिय तो अपनी अपनी तरफ  
को मेरे जीव को दुःख देवगी २ नारद की माता ने विचार किया

शूद्रसंगतिकारिणी । केनचित्कर्मयोगेनमुनीनामापसंग  
तिम् ३ तथाप्यपक्वहृदयाज्ञानध्यानविवर्जिता । तथा  
र्थितोरमानाथोनिमित्तेनाहिनाप्रभुः । दंशयित्वातिशीघ्रं  
वैस्थापयामासस्वान्तिके ४ इति भा० प्रथमस्क० षष्ठे  
ऽध्याये षष्ठवेणी ॥६॥ श्लोक ६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ भक्तिः प्रवर्द्धते कृष्णे श्रीमद्भागवते  
श्रुते । अनेन ज्ञायते ब्रह्मज्ञत्वेनैकतनौ हरेः । सूतेनोक्तं कथमि  
दं द्विधि शंका म्महीयसीम् १ वाचक उवाच ॥ व्यासोऽपि  
कथ्यते कृष्णो मुनिभिश्चादरेण हि । कृष्णो विष्णुर्जगन्नाथो  
शूद्रके कुलमें मेरा जन्म हुआ शूद्रों की मैंने संगतिकी किसी  
सुन्दर कर्मके प्रभावसे मेरेको मुनियों की संगति प्राप्ति भई  
है ३ तथा ज्ञानध्यान से हीन हूं मेरे हृदयमें कुछ भी ज्ञान  
नहीं है अब मैं निराधार हूं मेरा मरण जल्दी होना चाहिये  
ऐसी विनती भगवान् से करती भई भगवान् इसकी विनती  
मानिके जल्दी मरण होने वास्ते सर्प से कटायकै मरण  
करिके अपने सामने नारदकी माको टिकाते भये इसवास्ते  
सर्पबाधा से मरण नारदकी माको भया भगवान् अपने सामने  
टिकाते भये सांप काटे से मृत्यु होती है वह प्राणी दुर्गति को  
जाता है नारद की मा मुनियों की कृपा से ईश्वर के सामने टि-  
कती भई ४ इ० भा० प्र० षष्ठे अध्याये षष्ठवेणी ॥६॥ श्लोक ६ ॥

श्रोता पृच्छते भये सूतने ऐसा वचन क्यों कहे कि भागवत को  
सुनैगा तो कृष्ण में भक्ति होवेगी ऐसे वाक्य से क्या मालूम  
होता है कि भागवत सुनने से कृष्ण अकेले में भक्ति होवेगी और  
जो भगवान् के अनन्त अवतार हैं तिन में भक्ति न होवेगी  
यह बड़ी शंका हमारे सबके मन में है तिसका आप छेदन

बहुनामाजगत्पतिः २ तथापिगुरुराचार्यस्सूतस्यमुनिना  
यकः । कृष्णेतिबल्लभन्तस्यसूतस्यसततंहृदि ३ एतदर्थं  
च कृष्णेवैभक्तिरुत्पद्यतेऽनिशम् । उक्तेनतुविरोधेनसर्वं  
विष्णुमयंजगत् ४ इतिश्री भागवतेप्र० सप्तमेऽध्यायेस  
प्तमवेणी ॥ ७ ॥ श्लोक ७ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ त्यक्त्वात्रयचक्रह्याख्योभस्मकुर्व्याज्ज  
गत्त्रयं । उत्तरातनुलग्नश्च नददाहकथं त्वरः १ वाचक  
उवाच ॥ पतिहीनाचवैराटीश्रीकृष्णचरणद्वयम् । स्मरंती  
सततंभक्त्यानेत्राश्रुपरिमुचती २ हरे कृष्ण हरे कृष्ण  
करो १ वाचक बोले मुनियों ने आदर करिके व्यास को भी  
कृष्ण कहा है क्योंकि भगवान् के अनन्तनाम हैं कृष्ण विष्णु  
जगन्नाथ इन को आदिके कै तोभी व्यास जी सूतके गुरु हैं  
कृष्ण यह नाम सूतके हृदयमें सदा प्यारा जगताहै ३ इस  
वास्ते सूतने कहेकि भागवतके सुननेसे कृष्णजो व्यास तिन  
में भाक्तिहोवैगी कुछ विरोधसे नहीं कहे क्योंकि सब संसार  
भगवान्को रूपहै भगवान्के एक रूपमें भक्तिहुई तो अनन्त  
रूप में होवैगी ईश्वरके रूपमें भेद नहींहै ४इ०भा०प्र० सप्तमे  
॥ ५ध्यायेसप्तमवेणी ॥ ७ ॥ श्लोक ७ ॥

श्रोता पृच्छतेभये किं ब्रह्मअस्त्रको ऐसा प्रताप शास्त्रमेंलिखा  
है कि जिस वखत चौथा लोग ब्रह्मअस्त्रको धनुषपरसे छाँड़ेंगे  
तो जो कदापि तीनलोक भस्म करने वास्ते छाँड़ेंगे तब धनुष  
से छूटिकै उसी वखत तीन लोक को भस्म करि डरैगा पण  
उत्तराकी देहमें ब्रह्मअस्त्र लगिकै जल्दी उत्तराको भस्म क्यों  
नहीं किया १ वाचकबोले पतिसे हीनऐसी उत्तरा राति दिन  
बड़ी भक्ति से श्रीकृष्णके चरणका स्मरण करतीथीआखों से

कृपालोभक्तरत्नकानमस्तुभ्यन्नमस्तुभ्यन्नमस्तुभ्यन्नमो  
नमः ३ इतिमंत्रंजपन्तीसातस्थौपांडववेशमनि । अश्व  
त्थाम्नाविसृष्टश्चब्रह्मास्त्रः प्राप्यतत्तनुम् ४ बभूवशीतल  
शशिघ्नंकृष्णस्मरणतेजसा । तथापिविह्वलाभूत्वाऽप्याजु  
हावयदूत्तमम् ५ इति० भा० प्र० अष्टमेऽध्याये  
अष्टमवेणी ॥ ८ ॥ श्लो० ८ ॥

श्रोतारऊचुः॥ भीष्मोमहात्मा मुनिभिः कथितस्सत्स  
भासुच । सः कथं कुरवचनम्प्रोक्तवान्पांडवान्प्रति १ वाच  
कउवाच॥ अज्ञानान्मत्तरूपांस्तान्ज्ञात्वामानविवर्द्धितान्  
तेषामानविनाशायभीष्मेनोक्तमिदंवचः २ इति० भा०  
प्र० नवमेऽध्यायेनवमवेणी ॥ ९ ॥ श्लो० १२ ॥

प्रेम के जल बहे जाते थे २ हे कृपा के स्थान हे भक्तों के  
रक्षक हे कृष्ण ३ हे हरे ३ आपको नमस्कार है इसमंत्रको  
जप करती उत्तरा पांडवों के महल में टिकी थी उसी वखत  
अश्वत्थामा करिकै छोड़ा जो ब्रह्मास्त्र सो उत्तरा की देह में  
लागिकै ४ श्रीकृष्णके स्मरणके प्रभाव से ठंडा 'होगया तो भी  
उत्तरा व्याकुल होके श्रीकृष्ण को पुकारती भई जो ईश्वर का  
भजन उत्तरा न करती तो उसी वखत भस्म करिदेता परन्तु  
भजनके प्रभाव से नहीं जलाया ५ इ० भा० प्र० अष्टमेऽध्याये  
अष्टमवेणी ॥ ८ ॥ श्लो० ८ ॥

श्रोता पूछते भये भीष्मजीको ज्ञानियों की समाजमें मुनियों  
महात्मा कहे थे सोई भीष्मजी मूर्खसरीके छोटे वचन  
पांडवों को क्यों कह १ वाचक बोलते भये भीष्मजीने पांडवों  
को बड़ा उन्मत्त बड़ा अभिमानी जानिकै पांडवों के ऊपर कृपा  
करिकै पांडवोंके अभिमानको नाश करनेवास्ते ऐसा क्रूर वाक्य

श्रोतारञ्जुः ॥ पतिभीरहिताब्रह्मन्कुरुनार्योनिरीक्ष  
णम् । श्रीकृष्णस्य कथंचक्रुः प्रेमव्रीडास्मितेक्षणैः १ पति  
व्रताः प्रकुर्वन्ति प्रेमव्रीडास्मितेक्षणम् । स्वपतौ प्रीतिभा  
वेन जारिण्योजारकर्तरि २ कुरुनार्यः कुलोत्पन्नाः क  
र्मणा पतिवार्जिताः । कथंचक्रुः शुभाचाराः प्रेमव्रीडास्मि  
तेक्षणम् ३ भगवन्तं परिज्ञाय चेद्यदा कुरुवल्लभाः  
चक्रुस्तदाप्ययोग्यं च तत्र योग्याकरांजलिः ४ करुणान  
मनयोग्यमश्रुपातसमन्वितम् । अनया शंकया स्माकं म

पांडवों को भीष्मवोलते भये इ० भा० प्र० नवमेऽध्याये  
नवमवेणी ६ श्लो० ॥ १२ ॥

श्रोतापूछते भये विधवा जो कुरुवंशियों की स्त्रियां थी सो  
प्रेम करिके लज्जा करिके मुस्किआइके श्रीकृष्णको क्यों देखती  
भई यह बड़ी शंका होती है १ पतिव्रता स्त्री अपने पतिको प्रीति  
करिके प्रेम में तथा लज्जामें तथा मुस्किआइके देखती हैं तथा  
जारिणी स्त्री व्यभिचारी पुरुषको इसी तरह देखती हैं २ कौ-  
रवों की स्त्री सब घड़ेवड़े कुलकी जन्मी हुई बड़ी पतिव्रता  
शुद्धधर्म करने वाली ऐसी स्त्री किसी जन्मके पाप से विधवा  
होगई तो कुछ चिंता नहीं परन्तु श्रीकृष्ण परपुरुष हैं तिनको  
प्रेमसे लज्जा से मुस्किआइके क्यों देखती भई ३ जो कदापि  
कुरुवंशकी स्त्रियोंने श्रीकृष्णको भगवान् जानिके प्रेम करिके  
लज्जा करिके मुस्किआइके देखती भई तो भी अयोग्य है भ-  
गवान् जानिलिही कृष्णको तो भी हाथ जोड़िके नमस्कार करना  
चाहता रहा ४ अपनी गरीबी देखाय के कृष्णको तथा आंखोंसे  
अश्रुपड़िरही है इस प्रकार से नमस्कार करना योग्य रहा है



देवोरमाश्रयः । उत्पत्यवननाशानां कर्तृणां जगतः कदा ३  
 उपमैतादृशी केषां नदत्तानश्रुताचनः । सततम्भ्रामयत्ये  
 षाशंकास्माकम् मनः प्रभो ४ वाचक उवाच ॥ कथितो नैव श्रो  
 तारो द्विजैरस्मि पितामहः । विधिर्गिरीशो न शिवो विष्णु  
 नैव रमाश्रयः ५ पितामहा शिशोस्सर्वे पांडवाः पंचकी  
 र्तिताः । तेषां साम्ये समः प्रोक्तो नैवं विधिसमश्चतैः ६ यथा  
 गिरीशो हिमवानचलो वर्तते क्षितौ । तथा चलमतिश्रया  
 म्प्रसादे तत्समस्मृतः ७ रमादीप्तिस्समाख्याता सविता  
 बालक बड़ा बुद्धिमान् होवैगा तथा संसारको ब्रह्मासरीके  
 एक दृष्टि देखैगा दान देने में शिवसरीके उदार होवैगा २  
 रमापति जो भगवान् तिससरीके सब प्राणियोंको मालिक  
 होवैगा संसारकी उत्पत्ति पालन व नाशके करनेवाले जो तीन  
 देवता तिनकी बरोवरि कभीभी ३ ब्राह्मणों ने तीन देवों की  
 बरोवरि परीक्षित की उपमा दिया परन्तु ऐसी उपमा सं-  
 सारमें किसीकी भी नहीं दी गई तथा हम सब ने ऐसी उपमा  
 कभीसुनी भी नहीं यह शंका नित्य हमारे सबके मनको भ्रमाती  
 है ४ वाचक बोले हे श्रोता जनो पितामह (समस्तसाम्ये) इस  
 श्लोक में ब्राह्मणों ने ब्रह्मा को पितामह नहीं कहेथे तथा शि-  
 व को गिरीश नहीं कहेथे तथा विष्णु को रमाश्रय नहीं कहे  
 थे ५ पांच पांडव धर्मराज, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव, बालक  
 जो परीक्षित तिस के पितामह दादा हैं तिन आपने पिता  
 मह जो दादा तिन की बरोवरि संसारको एक दृष्टि परीक्षित  
 देखैगा ऐसा मुनियों ने कहा है ब्रह्मा की बरोवरि नहीं कहें ६  
 जैसा भूमि में सुंदर कर्म में गिरीश कहे हिमवान् पर्वत  
 चलायमान नहीं होता तथा दूसरे को बरदेने में बड़ा उदार

वतदाश्रयः । तस्माच्च सर्वभूतानां शिशुस्तद्वत्समाहतः  
इति० भा० प्र० द्वादशाध्याये द्वादशवेणी १२ श्लो० २३

श्रोतार ऊचुः ॥ धृतराष्ट्रस्य पांडोश्च कथ्यते विदुरः  
कथम् । अनुजस्सर्वशास्त्रेषु भारतादिषु भोगुरो १ यस्स्व  
मातरिसंजातस्स्वजन्यादनुबालकः । सोऽनुजः कथ्य  
तेनान्योलौकिकेष्वपि नैव च २ वाचक उवाच ॥ उद्वाहे  
यो विधिः प्रोक्तो वेदेषु लौकिकेष्वपि । चतुर्णां चैव वर्णानां  
विधिः सा प्रथमा स्मृता ३ द्वाभ्यां विरहिता या च सा विधि  
है तैसा परीक्षित भीमिरीश कहे हिमवान् सरी के दान देने  
में उदार होवैगा ७ रमानाम रोशनी को है तिस रोशनी को  
मालिक सूर्य है इसीवास्ते सब प्राणियों को मालिक सूर्य है  
सूर्यविना जीव को निर्वाह नहीं होता मुनियों ने कहेथे कि  
जैसा सूर्य उदय होके संसार को आनंद देता है तैसा परी-  
क्षित भीमराजा होके अपनी प्रजाको सुखदेवैगा ऐसा मुनियों ने  
कहेथे ईश्वर के चरोवरि नहीं कहेथे ॥ = ॥ इति भा० प्र०  
द्वादशाध्याये द्वादशवेणी ॥ १२ ॥ श्लो० २३ ॥

श्रोता पूछते भये धृतराष्ट्र को तथा पांडु को छोटा भाई विदुर  
कैसे होते भये हे गुरुजी सब शास्त्रों में तथा भारत आदि इति-  
हासों में १ अपने जन्म भये पीछे अपनी माता में जो बालक  
जन्मता है उस को शास्त्र में और लोक में छोटा भाई  
कहते हैं दूसरी माता को जन्माया बालक लोक में और  
शास्त्र में छोटा भाई नहीं कहाता धृतराष्ट्र तथा पांडु ये क्षत्री के  
पुत्र और विदुर शूद्रों के पुत्र धृतराष्ट्र को छोटा भाई विदुर क्यों  
भये यह बड़ी शंका होती है स्वाचक बोले ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य  
व शूद्र इन चारों वर्णों के विवाह होनेकी विधि शास्त्र में तथा

श्रानुकथ्यते। तद्वत्त्याजायते यो वै सोऽनुजः कथ्यते द्विजैः ४  
 अतो नामानुजस्तेषां विदुराणामितीरितम् । स्वमात  
 रिच योजातस्स्वजन्यादनुवालकः । अनुजस्सोपिविख्या  
 तः शास्त्रलोकद्वयोरपि ५ अर्थप्रतीतिसंवीक्ष्य यत्र या  
 यत्प्रतीयते । तदर्थस्तत्र कर्तव्यशब्दार्थश्चापि भूरिशः  
 ६ इ० भा० प्र० त्रयोदशाध्याये त्रयोदशवेणी ॥  
 १३ ॥ श्लो० २७ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ सप्तद्वीपाधिपेनैव धर्मराजेन वै कथम् ।  
 चाराद्वापत्रद्वाराद्वा न ज्ञातायादवामृताः १ महदाश्चर्य  
 लोकमें कही है सोई विधि श्रेष्ठ है तथा प्रथम है ३ शास्त्रसे तथा  
 लोक से रहित जो विवाह की विधि है उस को अनुकहते हैं  
 शास्त्र में उस अनुकी विधि माने अन्याय करिके जो जन्म  
 लेवै उस को अनुज मुनिजन कहते हैं ॥ ४ ॥ इसी  
 वास्ते विदुर लोगों का नाम अनुज है विदुर कहे वर्ण-  
 संकर तथा आपने जन्मभये के पीछे अपनी माता में जो  
 जन्मलेवै उसको भी शास्त्र में लोक में अनुज कहते हैं ५  
 शब्दके अर्थ अनेक प्रकारके हैं परन्तु जो अर्थ जिस जगह  
 जैसा घटि जावै अयोग्य न मालूम परै सोई अर्थ उस जगह  
 करना चाहिये जैसा पय जल को कहते हैं और पय दूध को भी  
 कहते हैं गोधेनु को नाम गोभूमि गोजल गो इन्द्री गो वाक्-  
 स्थान देखिके अर्थ करना इसी वास्ते (विदुरेणानुजेन) ऐसा  
 वचन व्यासजीने कहा धृतराष्ट्र को छोटा भाई नहीं कहा ॥ ६ ॥  
 इति भा० प्र० त्रयोदशाध्याये त्रयोदशवेणी ॥ १३ ॥ श्लो० २७ ॥

श्रान्ता पूछते भये सातद्वीप पृथ्वी को राजा युधिष्ठिर  
 तिनको चिट्ठी से तथा दूतसे यह बात क्यों न मालूम परी कि

मेतद्विन्यनराज्ञापिज्ञायते । स्वराज्यसकलावार्ताशंके  
यन्नोगरीयसी २ वाचक उवाच ॥ अर्जुनागमनात्पूर्व  
न्दिवसेदशमेश्रुताः । चारैर्निवेदितो राज्ञेयादवास्सुखिनो  
ऽनिशम् ३ विप्रशापेन तेनाशंक्षणेनैव प्रपेदिरे । कर्मकृ  
त्वासमायातस्सप्तमेदिवसेऽर्जुनः ४ इति श्री भा० प्र०  
चतुर्दशेऽध्याये चतुर्दशवेणी ॥ १४ ॥ श्लो० २५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कुरुक्षेत्रे मृतास्सर्वे क्षत्रिया ये समाग  
ताः । त्रयोवसिष्ठाः कुरुपुसप्तैव पाण्डवेषु च १ कथं धनं ज  
येनोक्तमेको हम्पारगोऽभवम् । कुरुसैन्यार्णवं विप्रमहत्कौ  
तूहलन्त्वदम् २ वाचक उवाच ॥ न कुरुक्षेत्रवार्ते यमर्जुने  
संवयदुवंशी मरिगये १ हमारे सबके यह बड़ा आश्चर्य तथा बड़ी  
शंका होती है कि छोटा भी राजा होता है सो भी आपने  
राजका सब हाल मालूम करिलेता है और धर्मराज सात द्वीप  
को राजा उनको नहीं मालूम पराकि यदुवंशका नाश होगया  
यदुवंशी भी छोटे नहीं बड़े आदमी थे २ वाचक बोले जिसदिन  
द्वारिका से अर्जुन युधिष्ठिरके पास आया उसके दशदिन पे-  
इतर दूतों करिके धर्मराज सुनेथे कि चारोंवार यदुवंशी आनंद  
करिरहे हैं ३ हे श्रोताजनो कालकी गति कठिन है ब्राह्मणके शाप  
करिके एक क्षणमें यदुवंश को नाश होगया तब सब को  
मृतक कर्म करिके सातवेदिन अर्जुन युधिष्ठिरके पास आया  
४ ॥ इति भा० प्र० चतुर्दशेऽध्याये चतुर्दशवेणी ॥ १४ ॥ श्लोक ॥ २५ ॥

कुरुक्षेत्र में जो क्षत्रिय आयेथे सो सब मरिगये कौरव में  
तीनवचे पाण्डव में सातवचे १ फिर अर्जुन क्यों कहे युधिष्ठिर  
से जिस भगवान्की कृपासेंती कौरव की समुद्ररूप सेनाको  
में अकेला पारगया २ वाचक बोले युधिष्ठिर से अर्जुन कहे कि

नैनैवभाषिता । विराटनगरस्यैषावातार्तागोश्रहणोद्भवा  
 कृतेगोश्रहणे तत्र कौरवैर्भीष्मप्रेरितैः । पार्थस्तन्मूर्ख  
 नकृत्वासर्वेषाम्मुकुटानिवै । १५ ॥ इति ० भा० प्र० पंचदशेऽध्याये  
 दशवेणी ॥ १५ ॥ श्लो० १४ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ परीक्षितिनृपेवृहन्नयादेर्विणां  
 तदा । गानञ्चक्रुश्चकेतत्र पाण्डवानाम्  
 वाचक उवाच ॥ दुष्टभीताश्चमुनयोगात्सर्वैकथम् ।  
 जिस भगवान् की कृपासेती कौरवकी समुद्रमहदाश्चर्य  
 मैं अकेला पारगया यह बात कुरुक्षेत्र की पात्रसे तथा  
 कौरवोंने विराटकी गौवों को हरतेभये उहांकी वनुकहते हैं  
 भीष्मकी आज्ञाको पायकै जब कौरवोंने विराटजो जन्म  
 को हरतेभये तब अर्जुन ने सब कौरवांको मर्लित ॥ इसी  
 समस्त कौरवकी फौज में बड़े बड़े योधारहैं तिनकेहै वर्ण-  
 लेकै जल्दी विराट नगरको गया तथा विराट राजा में जो  
 वोंको मुकुट देताभया तबकी बात धर्मराज से अर्जुन हैं ५  
 है ॥ ४ ॥ इति श्री भा० प्र० पंचदशेऽध्याये पंचदशगह  
 १५ ॥ श्लोक ॥ १४ ॥  
 श्रोता पृच्छतेभये कि परीक्षितराजादिग्विजयकोगया तभी  
 वोंको बड़ायश मनुष्यगानकरतेभये तवराजा जहांगय  
 जगहसो यशगान करनेवाले मनुष्य कौनहैं १वाचकवाले  
 जुआरीचोर व्यभिचारी ठग इनको आदिलेकै और ने  
 हैं तिनहों करिकै डरेंहैंजो मुनिजनसो सब पंडोंको  
 करिकै परीक्षित को सुनाते भये कि राजा तेरेदादे लोग  
 भयेकि जिन्होंके राजमें हम सब आनन्द से तप करतेथे

भवन् । महाधनन्ददौतेभ्योनिर्भयं राजसत्तमः २ इति  
श्री भा० प्रथमस्कंधेषोडशोऽध्यायेषोडशवेणी ॥ १६ ॥  
श्लो० १३ । १५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ राज्ञापृष्टो यदा धर्म्मो नो वाचकलेश  
द्रायकृत् । जानन्नपि महाशत्रुमात्मनः कथमुक्तवान् ॥  
चतुर्दशोऽध्यायश्चर्यमिदन्नो हृदिवर्तते १ वाचक उवाच ॥

श्रोतार हृदये धर्म्मो नाकथयद्रिपुम् । पाण्डवे यो नृपो  
ताः । त्रयोव्यास्यति चेत् सारस्वप्राणसंकटे चैव परेषामपि  
येनोक्तमेकोहमे दुष्ट दुःख देते हैं ऐसा मुनियों का वचन सुनिकै  
तू हलन्तिवदसी उसी वखत दुष्टों को नाश करिकै मुनियों को मि  
सवयदुवंशी डा धन देता भया २ इ० भा० प्र० षोडशोऽध्याये  
शंका होती ॥ १६ ॥ श्लोक १३ से ॥ १५ ॥

राजका सब छूते भये हे गुरुजी यह बड़ा आश्चर्य हमारे सवनके  
को राजा कि बयलरूप धर्मसे राजा परीक्षित पूछते भये बैल  
यदुवंशी भूमको जो प्राणी दुःख देता है तिसको मुझे बतावो  
द्वारिका दुःख देने वाले प्राणी को मैं मारि डालूंगा तब धर्म अपने  
इतर दूते वाले वैरी को जानते थे कि कलियुग मेरे को दुःख देता  
करि रहे क्यों नहीं राजा से बताये और झूठ क्यों बोले कि अप  
करिकै दुःख देने वाले को मैं नहीं जानता हूं झूठ बोलना धर्म का  
मृत नहीं है १ वाचक बोले कि धर्म अपने हृदयमें ऐसा विचा  
रके अपने वैरी को राजा से नहीं बताये क्या विधारे धर्म कि  
राजा परीक्षित पांडवों का पोता है बड़ा बुद्धिमान है अपने मन  
करिकै सब संसार को चरित्र जानि लेवेगा २ अपना प्राण  
नष्ट होता होवै और झूठ बोले से प्राण बचि जावै तथा दूसरे  
किसी को प्राण नष्ट होता होवै और झूठ बोले से बचि जावै गातौ

चानृतम् । सत्यम्भवतिवेदेषुचातोऽनृतमुदीरितम् ३  
इति श्री भा० प्र० सप्तदशेऽध्याये सप्तदशवेणी ॥ १७॥  
श्लो० १७ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ राज्ञः परीक्षितश्चैवंबुद्धिभ्रंशः कथं  
गुरो । योमृताहिं समुद्रह्यविप्रकंठे न्यवेशयत् १  
मन्येकलिकृतंचेद्वै तथापि न च शोभते । न वर्तितव्यम् मत्से  
त्रे कलिर्ज्ञप्तो नृपेन वै २ वाचक उवाच ॥ सप्तवर्षो यदा  
बालो बालक्रीडाकुतूहले । मुनिसंतर्जयामास सूत्रसर्पेण  
भ्रूठबोलना सत्य होता भ्रूठनहीं कहाता वेदोंमें ऐसा लिखा है  
धर्म विचारे कि जो अपने बैरी को बताऊंगा तो उसी वखत राजा  
मेरे बैरी को मारि डालेगा मेरे को पाप होवेगा अपने मन से  
मेरे बैरी को जानिकै जैसा चाहैगा वैसा करैगा इस वास्ते  
धर्म भ्रूठ बोले ३ इति० भा० प्र० सप्तदशेऽध्याये सप्तदशवेणी  
१७ ॥ श्लो ॥ १७ ॥

श्रोता पृष्ठते भये हे गुरुजी राजा परीक्षित बड़ा बुद्धिमान  
तिस्की बुद्धि भ्रष्ट क्यों होगई कि बुद्धि भ्रष्ट होकै परीक्षित मरे हुं  
सांप को उठा यकै मुनिके गलेमें पहिराय दिया यह क्या तमाश  
किया बड़ा पागल होगा सो भी ऐसा नहीं करैगा ।  
जो कदापि ऐसा मानिलेवै कि परीक्षित की बुद्धि भ्रष्ट कति  
युगने करि दिया तौ भी शोभानहीं होती क्योंकि कलियुगको  
राजा परीक्षित ने टिकाया तब कलियुगको राजा कहैथे कि  
हमारे राजमें तुम अपना पराक्रम मति करना ऐसी राजा की  
तथा कलिकी बोली भई थी सो तुरन्त ही कलि वाक्य अपना  
नहीं छोड़ैगा २ वाचक बोले राजा परीक्षित सात वर्ष को बालक  
रहा तब बालकों के खेल खेलते २ पांडवों की सभा में

पावकम् ३ तेनशप्तस्सभास्थेनपांडवानान्निरीक्षताम् ।  
तवापिमृत्युस्सर्पेणभवितादुष्टबालक ४ इति श्री भा०  
प्र० अष्टादशोऽध्याये अष्टादशवेणी ॥ १८ ॥ श्लोक ॥ ३० ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ शापोदत्तश्चमुनिनानृपायसप्तमेहनि  
सर्पेणास्यभवेन्मृत्युरितिवाक्यमुदीरितम् १ तत्कथं स  
प्तदिवसासर्वकार्याः कृतागुरो । श्रुत्वाशापं सुतेराज्यं दत्त्वा  
गाज्जाह्नवीतटं २ प्रयाणमुनिधीराणां शुकस्यागमना  
दि च । पूजानास्वासनं तेषां कथाप्रश्नः पुनः पुनः ३

जो पावक नाम मुनि तिनको सूतके सर्प करिके डराता भया  
३ तब सभा में टिके जो पावक मुनि हैं सो परीक्षितको शाप  
देते भए पांडवोंके देखते देखते कि हे दुष्ट बालक हमको सर्प  
करिके तुने डरवाया है इसवास्ते तेरीभी मृत्यु सर्प करिके होवै  
गी ऐसे मुनिके शाप करिके राजाकी बुद्धि भ्रष्ट होगई तब  
ऐसा बड़ा पाप परीक्षित करता भया ४ इ० भा० प्र० अष्टादशोऽ  
ध्याये अष्टादशवेणी ॥ १८ ॥ श्लोक ॥ ३० ॥

श्रोतापूछते भये परीक्षितको मुनिने शापदिया कि आजुके  
सातवेंदिन सर्प काटे से राजा की मृत्यु होवैगी १ हे गुरुजी तब  
सातदिन में राजा परीक्षित सब काम कैसा करता भया मुनि  
का शाप सुनिके पुत्रको राजदेके परीक्षित गंगा के तटपर गया २  
फिरि सातदिन में मुनियों का आना तथा मुक्तिकी रस्ता में  
चतुर जो प्राणी तिनका राजा के पास आना शुकदेवजी को  
राजाके पास आना आदि जेकै और अनेक प्रकार को काम  
जैसा गंगातटपर आये जो देवमुनि राजाछापि औरभी बहुत  
से प्राणी तिनको पूजन करना तथा सब को आदर करना  
तथा वारंवार कथा में प्रश्न करना ये सब सातदिन में कैसा



वाचक उवाच ॥ श्रुत्वाशापं द्विजराजाभूत्वा व्याकुलमान  
सः । श्रीकृष्णमनसा ध्यात्वा चाश्रुपूर्णक्षितिर्विबहलः ४  
प्रमाणं सप्तदिवसां विज्ञाय चिन्तितो हरिः । दिनानां वर्द्ध  
नं च केन्द्रेण यदुनन्दनः ५ गोलोकस्थो जगत्स्वामी पांड  
वानां सुहृत्सखा ६ इति श्रीभागवते प्र० एकोनविंशोऽध्या  
ये एकोनविंशवेणी ॥ १६ ॥ श्लोक ॥ ३७ ॥

करते भये ३ वाचक बोले परीक्षित ने ब्राह्मणों करिके अपने  
वास्ते मुनिके शापको सुनिके व्याकुल होके मन करिके  
श्रीकृष्ण को ध्यान करता भया परीक्षित की आखों से  
जल बहि रहा है ४ परीक्षित ने अपनी मृत्यु जानि के वि-  
चार किया कि जिस दिन मेरे को शाप मुनिने दिया सो दिन  
आजु है क्योंकि कल मैंने मुनिको अपराध किया था आजु  
मेरेको शाप दिया आज से सातवें दिन मेरी मृत्यु होगी और  
काम मेरे को बहुत करना है ऐसा विचारि के श्रीकृष्ण को  
खितवन किया तब कृष्णने सातदिनों को बढ़ाय देते भए ५ कैसे  
श्रीकृष्ण हैं गोलोक में टिके हैं पांडवों के मित्र हैं तथा बड़े  
प्यारे हैं इस प्रकार से दिन बड़े होगये तब राजा परीक्षित  
सातदिन में सब काम करिलेते भए ६ इति श्री भा० प्रथमस्कंधे  
एकोनविंशोऽध्याये एकोनविंशवेणी ॥ १६ ॥ श्लोक ॥ ३७ ॥

इति श्रीमद्भागवतप्रथमस्कंधशंकानिवारणमञ्जरीसु  
धामयंटीकासहितासमाप्ता श्रीरस्तुशुभम् ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

# श्रीमद्भागवतशंकानिवारणमंजरी

द्वितीयस्कंधे ॥

सुधामयी टीका सहिता विरच्यते ॥

श्रोतारञ्जुः॥शुकःप्रोवाचराजानम्पुराणम्ब्रह्मसम्मितम् । श्रीमद्भागवतन्तत्रलक्षणन्तन्नदृश्यते १ वाचकउवाच ॥ इतिहासान्यनेकानिभूपानाञ्चरितानिच।श्रीमद्भागवतेशास्त्रेप्रोक्तानिमुनिनापुरा २ ब्रह्मज्ञाश्चैव जानन्तिसर्वब्रह्ममयञ्जगत् । भेददृष्ट्यभिमानेनभूरिभावःप्रदृश्यते ३ ब्रह्मवेत्ताशुकोयोगीब्रह्मरूपंचराचरम् ।

श्रोता पूछतेभये श्रीशुकदेव जीने राजा परीक्षित से कहे के भगवान् नाम यह पुराणजो है सो ब्रह्मके गुणसे मिला है एण भागवत में ब्रह्मके लक्षण को वर्णन एक भी नहीं देखि रता १ वाचक बोले व्यासमुनि पाहिले भागवत में अनेक प्रकार को इतिहास तथा राजोंका चरित्र वर्णन किया है २ ब्रह्मज्ञानी मनुष्य सब भले घुरे संसार को ब्रह्मरूप जानते हैं तथा जोप्राणीब्रह्मज्ञानसे हीनहैं वो लोग अभिमान युक्तआत्मा से बहुत प्रकार संसारको देखतेहैं भलाको भला घुराकोघुरा ३ शुकदेवजी ब्रह्मज्ञानी हैं चर अचर सबको ब्रह्मरूप जानते हैं

ज्ञात्वाऽतः प्रोक्तवान्प्रीत्यापुराणम्ब्रह्मसम्मितम् ४ इति  
भागवतशंका निवारण मंजर्यां द्वितीयस्कंधेप्रथमेऽध्याये  
प्रथमवेणी ॥ १ ॥ श्लोक ॥ ८ ॥

द्वितीयस्यद्वितीयादौपुराब्रह्मनिरूपणम् । तत्पश्चादि  
ष्णुभक्तिंचततश्चैवकथारति । मुनिनोक्तंकथन्त्वेतद्भ्र  
तिदंवचनंगुरो १ वाचक उवाच ॥ कथायाश्श्रवणेनै  
भक्तिरुत्पद्यतेसताम् । भक्त्याप्रवर्द्धतेज्ञानंज्ञानेनब्रह्मचि  
न्तनम् २ अतस्त्रीन्कारणानूचे मुनिज्ञानविशारद

इतिहास पुराण राजा का चरित्र इनको भी ब्रह्मरूप जानिबे  
भागवत को ब्रह्म सम्मिति कहे हैं ४ इति भागवतशंका निवा  
रण मंजर्यां बुधेशिवसहाय विरचितायां सुधामयी टीक  
सहितायां द्वितीयस्कंधेप्रथमेऽध्यायेप्रथमवेणी ॥ १ ॥ श्लोक ॥ ८ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरु जी व्यास मुनिने यह शंका देने  
वाला वचन कैसे वर्णन किया है द्वितीय स्कंध के दूसरे  
अध्याय के आदि में पहिले तो ब्रह्म को वर्णन किया तिसके पीछे भगवान् की भक्तिको वर्णन किया तिसके पीछे भग  
वान् की कथा की प्रीति वर्णन किया इसमें शंका यह है कि  
पेश्तर कथा की प्रीति तब भक्ति तब ब्रह्म चिंतन होना च  
हिये १ वाचक बोलते हैं हे श्रोताजनो कथा सुनने से सज्जन  
के हृदयमें भक्ति उत्पत्ति होती है भक्ति करिके ज्ञान होता है ज्ञान  
करिके ब्रह्म को चिंतन होता है २ इसी वास्ते ज्ञान में चतु  
जो व्यास सो मुक्ति होने वास्ते तीनधर्म वर्णन किया है तब  
ब्रह्म के ध्यान में मस्त जो योगी हैं तिनको ऐसा विचार नहीं  
रहता कि यह बात पेश्तर वर्णन करना चाहिये या पीछे  
वर्णन करना चाहिये इस वास्ते पेश्तर वर्णन करने वाले को

पूर्वापरविरोधश्च हृदि नैव प्रवर्तते । योगिनाम् ब्रह्मणोऽध्या-  
नमग्नानान्न कदाप्यहो ३ इ० भा० द्वि० द्वितीयेऽध्या-  
ये द्वितीयवेणी ॥ २ ॥ श्लोक ॥ १ से ३२ ब्रह्मनि०  
श्लो० ३३ भक्तिव० श्लो० ३६ हरिकथा ॥

श्रोतार ऊचुः । म्रियमाणेन किं कार्यमिति पप्रच्छ भूप-  
तिः । अनाष्टः कथं प्रोचे सर्वदेवसुरार्चनम् १ वाचक  
उवाच ॥ संसारिणां सुखाप्तार्थं विचार्य हृदये मुनिः । अना-  
ष्टोऽपिराज्ञा च प्रोचे सर्वसुरार्चनम् २ मयोक्तेन विविधिना  
सुखं प्राप्स्यन्ति मानवाः । स्वकार्यं विचर्य हृदये देवान्सम्पू-  
ज्य भिन्नशः ३ इति ० भा० द्वि० तृ० अ० तृ० वे० ३ श्लो० २  
पीछे वर्णन किये हैं और पीछे वाले को पेशतर वर्णन किये हैं  
इ० भा० द्वि० द्वितीयेऽध्याये द्वितीय वेणी ॥ २ ॥ श्लोक ॥ १  
से ३२ ब्रह्मनि श्लो० ३३ भक्तिव० श्लो० ३६ हरि कथा ॥

वाचक से श्रोता पूछते भये शुकजी से परीक्षित पूछे कि  
महाराज मरने वाले मनुष्यों को क्या कर्म करना चाहिये सो  
प्रश्न को उत्तर मुनि जी पीछे दिहें पण राजा सर्वदेव को पूजन  
नहीं पूछा तो भी मुनि ने सब देवों को पूजन क्यों वर्णन कि-  
ये हैं १ वाचक वाले शुकजी अपने हृदय में विचारे कि सब  
कामना सिद्धि होने के वास्ते जुदा २ देवतों के पूजन की  
विधि हम वर्णन करेंगे तब सब जीवों को सुख होवेगा ऐसा  
विचारि के राजा पूछा नहीं तो भी सब कामों के प्राप्ति होने के  
वास्ते सब देवतों का पूजन जुदा २ कहे हैं २ शुक जी विचा-  
रे कि सब मनुष्य अपने २ हृदय में अपने २ काम को देखिके  
हमारी कही विधि करिके देवतों को पूजन करिके सुख को  
प्राप्त होवेंगे ३ इति भा० द्वि० तृतीयेऽध्याये तृतीयवेणी ॥ ३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ आदौद्वितीयस्कंधस्यशुकेनोक्तो  
 नृपोत्तमः । भूपतेऽयंवरः प्रश्नो न ने मे मुनिरीश्वरम् १  
 तृतीयाध्यायमुल्लङ्घ्यते पृक्काविविधाः कथाः । बहुश्लोकै  
 श्चतुर्थे च कथन्ने मे हरिमुनिः २ वाचक उवाच ॥ श्रुता  
 शुकेन बहुशः परीक्षितद्वैष्णवोत्तमः । न कदा दर्शितस्तेन न च  
 सन्मानितः पुरा ३ नूतनां संगतिं स्वीच्य वरः प्रश्नमुवा  
 च सः । पश्चात्प्रीतिं निश्चयास्य जहर्ष बहुशो मुनिः ४  
 स पर्पवाधाविनाशे च विधिलेखविभाज्जने । शक्तः प्राप  
 यितुं भूपैकुंठे मुनिसत्तमः ५ जगज्जबहुभिश्श्लोकैर्न  
 मन्विष्णुपदां वुजम् ६ इति भा० द्वि० चतुर्थेऽध्याये चतु  
 र्थवेणी ॥४॥ श्लो० १३ ॥

श्रोता पूछते भये द्वितीयस्कंधकी आदिमें शुकजी परीक्षि  
 त से कहें कि राजा यह तुम'रा प्रश्न श्रेष्ठ है पण मुनिने भगवान्  
 को नमस्कार क्यों नहीं किए नमस्कार करना चाहता रहा है ?  
 तीन अध्यायको बिताय कै तथा तीनों अध्यायों में अनेक प्र  
 कारकी कथा कहिकै तथा पीछे से बहुत श्लोकों करिकै चौथे  
 अध्याय में भगवान् को नमस्कार मुनिजी क्यों किए २ वाचक  
 बोले अनेक दफे शुकजी सुनेथे कि राजा परीक्षित बड़ा वैष्ण  
 व है पण कभी राजा को देखे नहीं थे तथा पेश्तर कभी परीक्षि  
 त पूजन भी मुनिको नहीं कियाथा ३ शुकजी राजाकी नवीन  
 संगति देखिकै तारीफ मात्र किया है राजा तुमारा प्रश्न अच्छा  
 है क्योंकि नई मुलाकात में तुरंत मनप्रसन्न नहीं होता पीछे से  
 भगवान् में परीक्षित की प्रीति देखिकै मुनिजी बहुत खुशी  
 भए ४ शापकी भय नाश करने को तथा ब्रह्मको लेख उलाटि  
 देने में तथा परीक्षित को वैकुंठ में प्राप्ति करने में शुकजी

श्रोतार ऊचुः ॥ नारदो विष्णुभक्तश्च वैष्णवानां शिरोमणिः । विस्मृत्य कमलानाथमज्ञवच्च विधिकथम् १ सम्मेने ईश्वरं ज्ञानी देवर्षिर्विष्णुवल्लभः । वाचक उवाच ॥ यत्र कुत्र मुनीन्द्र षट्मायामोहितचेतसः २ सर्वान्वदति देवर्षिः कीदृशी सा विमोहिनी । व्यतीतं चिरकालं वा एव मानयुते मुनौ ३ मायेशो मोहयामास मायाम्प्रेर्य महा मुनिं । मायाग्रस्तश्च देवर्षिस्मेने ब्रह्माणमच्युते ४ इति भा० द्वि० पंचमेऽध्याये पंचमवेणी ॥ ५ ॥ श्लोक १ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ चराचराणां सर्वेषां भगवान्वैपरासमर्थ हैं ५ इस वास्ते बहुत श्लोक करिके भगवान् के चरणों को नमस्कार करिके गर्जते भए ६ इति० भा० द्वि० चतुर्थेऽध्याये चतुर्थ वेणी ॥ ४ ॥ श्लोक ॥ १३ ॥

श्रोता बोलते भए नारद मुनि भगवान् के बड़े भक्त तथा वैष्णवों में शिरोमणि हैं ऐसे नारद भगवान् को भूलिके ब्रह्मा को ईश्वर क्यों मानते भए १ वाचक बोले जिस किसी स्थान पर मुनियों को भगवान् की माया करिके मोहित भये देखिके माया से दुःख को प्राप्ति जो मुनिजन तिन सब से नारद अभिमान से कहते थे कि जो माया तुम सबको मोहिलिया वो कैसी है ऐसा अभिमान करते करते नारद को बहुत दिन बीति गये २ तब भगवान् नारदको उन्मत्त देखिके मायाको आज्ञादेके उसी माया करिके बड़े मुनि जो नारद तिनको मोहित कराय दिया है तब माया से ग्रसित भए जो नारद सो पागल होगये ब्रह्मा को ईश्वर मान लिया ३ ४ इति० भा० द्वि० पंचमेऽध्याये पंचमवेणी ॥ ५ ॥ श्लो० १॥

श्रोता पूछते भये ईश्वर जो है सो तीन लोक चौदा भुवन

यणः। समेतवकुमाराणां भवस्य च परस्य वै १ विज्ञानस्य च धर्मस्य कथमुक्तं परायणम् । विधिनाभिन्नभावश्च बलात्कारः कथं कृतः २ वाचक उवाच ॥ संसारवाचक शब्दो भवशब्दो विकथ्यते । शिवश्चापि भवो ज्ञेयः शब्द शास्त्रानुमानतः ३ भवस्य मध्ये ये जाताः चकारादनुमीय तो जंगमस्थावराश्चैव प्राणिनस्सचराचराः । तेषाम्परायणो विष्णुर्मदुक्तानां विशेषतः ४ इति श्री० भा० द्वि० षष्ठेऽध्याये षष्ठवेणी ॥ ६ ॥ श्लोक ११ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ ब्रह्मणोक्तमसन्मार्गेन पतन्ति ममेन्द्रियाः । स्वात्मजां विन्द्य कामेन रन्तुं चक्रे कथम् मनः १ मैं संपूर्ण चराचर का मालिक है ऐसे भगवान् को नारद से ब्रह्माने क्यों कहा कि हमारा तुमारा तथा सनकादिक को महादेव को विष्णु को विज्ञान को धर्म को मालिक है १ ऐसा भिन्न भाव जवरदस्ती से ब्रह्मा क्यों करते भये श्लोक २ को अर्थ मिला है इसको युग्म कहते हैं व्याकरण के मत से भव संसार को नाम है तथा महादेव का भव नाम है ३ ब्रह्मा ऐसा कहें कि (भवस्य च) इस श्लोक में चकार है उस चकार करिके इस श्लोक का यह अर्थ भया कि भव जो संसार तिसके बीच में उत्पन्न जो चर अचर जंगम स्थावर प्राणी उन सब के मालिक भगवान् हैं पण हे नारद जिसको २ हम तुम से कहा है उनको तो विशेष से मालिक है ४ इति श्रीभा० द्वि० षष्ठेऽध्याये षष्ठवेणी ॥ ६ ॥ श्लो० ॥ ११ ॥

श्रोता बोले कि नारद से ब्रह्मा कहे कि हमारी इन्द्रिय खोटी रस्ता में नहीं प्राप्ति होती सोई ब्रह्मा अपनी लड़की को देखिके उसी के संग रमण करने को मन क्यों किया महा-

वाचक उवाच ॥ एकदा च सुरैः सार्द्धजग्मतुर्गिरिशाल  
यम् । विधिविष्णुमुनिगणैः सुमग्नौ दुःखसागरे २  
तारकस्यवधार्थायप्रार्थितुर्गिरिजापतिं । तस्थतुस्तौ  
शिवस्याग्रेविनयानतकन्धरौ ३ प्रार्थनांचक्रतुस्तस्यता  
रकस्यवधंप्रति । तत्क्षणे गरुडवश्यंहंसीकामविमोहितं ४  
दृष्ट्वामन्दस्मितञ्चक्रेविधिभूरिसभातले । विधेर्मानंच  
विज्ञायशशापगरुडेपितं ५ स्वजात्यांरन्तुकामोऽहंना  
यायंपक्षिणाञ्चनः । भवान्स्वतनुजांवीक्ष्य रन्तुकामोभ  
वेष्यति ६ एवंशापवशीभूतो तनुजांरन्तुमुद्यतः । नो  
बडाल कर्म १ वाचक बोलते भये तारक नाम राक्षसको किया  
दुःख को समुद्र तिसमें डूबेहुये जो ब्रह्मा तथा विष्णु सो एक  
देन देवतों को मुनियों को संगठके ब्रह्मा तथा विष्णु कैला-  
स को जाते भये २ तारक नाम दैत्य के मारने वास्ते शिव  
जीकी प्रार्थना करनेवास्ते शिवके सामने ब्रह्मा विष्णु देव मुनि  
साहित टिकते भये बारंवार ब्रह्मा विष्णु शिव को नमस्कार  
करते भये ३ तारक को मारने वास्ते शिवकी प्रार्थना ब्रह्मा  
विष्णु करते भये उसी समय में बड़े जितेंद्रिय जो गरुड़  
तिनको हंसीके कामकरिके मोहित ४ ब्रह्मा देखिके उसी शिव  
की सभा में मुस्कियाते भये ब्रह्मा के अभिमान को जानि  
के गरुड़भी ब्रह्माको शाप देते भये ५ अपनी जाति के संग  
हमने क्रीड़ा करने को विचार किया है तथा हमसब  
पक्षियों को अन्याय यह कर्म नहीं है तौभी तुमने हमारी  
मस्करी कियाहै ऐसेही हमारे शापसे तुम अपनी कन्याको  
देखिके उसी के संग रमण होनेको मन करोगे ६ इस प्रकार  
के शापवश ब्रह्मा होके अपनी लड़की के संग रममाण



स्वेच्छया विधिस्सुज्ञश्श्रोतारः कारणं त्वदम् ७ इति  
भा० द्वि० सप्तमेऽध्याये सप्तमवेणी ॥ ७ ॥ श्लो० ३२

श्रोतार उचुः ॥ न केष्वपि च शास्त्रेषु श्रुतं कैश्चापि  
पुनैः । दिधि क्षोस्त्रिपुरं शम्भो मार्गं सिंधुर्ददौ किल १ वि  
धिना तत्र रामाय सिंधुर्भार्गं ददौ तदा ॥ पुरं दिधि क्षिषोः शंभो  
रिव शंका महीयसी २ वाचक उवाच ॥ स्याच्छंभुः सर्वद  
मग्नो भक्ते प्रेमे पयोनिधौ । कदापि कुरुते क्रोधं सिंधुर्भार्गं  
ददाति न ३ दिधि क्षोस्त्रिपुरं शम्भो भक्ते प्रेमो घवारिधिः

होने को मन करता भया हे श्रोता जन आपनी इच्छा से ब्रह्म  
नहीं ऐसा चंडाल कर्म करने लगा ॥ ७ ॥ इति भा० द्वि० सप्त  
मेऽध्याये सप्तमवेणी ॥ ७ ॥ श्लोक ॥ ३२ ॥

श्रोता पूछते भये किसी शास्त्र में भी कोई सज्जन भ  
नहीं सुने कि त्रिपुरासुर के पुर को जलाने की इच्छा शिव ने  
किया तब शिव को पुर के सामने जाने वास्ते समुद्र ने रस्ता दिया  
१ तथा नारद से ब्रह्मा कहा कि, रामजी को लंका में जाने वा  
स्ते समुद्र ने रस्ता दिया जैसा तीनों पुर को जलाने की इच्छा  
किहे जो महादेव तिनको समुद्र ने रस्ता दिया यह बड़ी शंका  
है २ वाचक बोले हे श्रोता हो सुनो शंकर के चरणों में शंकर  
के भक्तों को बहुत प्रेम सोई समुद्र है उसी समुद्र में शिव सर्व  
काळ मस्तरहत हैं जब कभी भक्तों के ऊपर शिव को धरते हैं तब  
प्रेम रूप समुद्र शिव के भक्तों के पास जाने वास्ते क्रोध को रस्ता  
नहीं देता ३ जब तीन पुर जलाने के वास्ते विष्णु आदि सब  
देवता महादेव की प्रार्थना किया तब शिव जी अपने हृदय में  
थोरा त्रिपुर जो भक्त तिसके ऊपर नाराज होते भये उस नाराज  
होने के कारण से प्रेम समुद्र ने रस्ता दिया रस्ता देना यह

निष्टुरत्वाद्ददौमार्गे विधिनोक्त्वमतोवचः४इति० भा०  
द्वि० सप्तमेध्यायेऽष्टमवेणी ॥ ८ ॥ श्लो० ॥ २४ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ धियमाणस्स्वयंराजा कथम्प्रच्छ  
सर्वशः । चराचराणां सर्वेषां कर्माणिविविधानिच १  
वाचकउवाच॥ऋषिणानुगृहीतंचज्ञात्वात्मानन्नुपोत्तमः  
धियमाणोपिप्रच्छ सर्वकर्मविनिर्णयम् २ इति० भा०  
द्वि० परीक्षितप्रश्नेअष्ट०नवमवेणी ॥ ६ ॥ श्लो० ॥ १ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ हरिणाप्रेरितोब्रह्मा तपःकर्तुंसमुद्य  
तः । किन्नामसस्तपश्चक्रे संस्थितोजलजासने १ वाच  
कउवाच ॥ समागृह्यहरेराजांसमाधायमनोविधिः । स  
है कि त्रिपुर को जलाने वास्ते विलकुल निश्चय शिव करि  
लिहे इसी वास्ते ब्रह्मा ने कहा कि शिव को समुद्र ने रस्ता  
दिया ४ इति भा०द्वि०सप्तमेऽध्यायेअष्टमवेणी॥८श्लो०॥२४॥

श्रोता पूछते भये परीक्षित राजा मरवेयोग्य ही रहा है तौ  
भी भगवान् कोचरित्र छोड़िके सब चराचर जीवों के कर्म को  
क्यों पूछता भया क्योंकि मरण समयमें तौ मूर्ख भी जं जाल  
छोड़ि कै ईश्वर में मन लगाता है और परीक्षित तो बड़ा  
बुद्धिमान्था १ वाचक बोले परीक्षितनेजाना कि मेरेऊपरशुक्  
जीकीकृपाहोगई अबमेरीदर्गति नहीं होगी येसाजानिकैमरवे  
योग्यहोगा तौभी सबकर्मोंके निर्णयको पूछता भयाकि संसार  
में यह सब कर्मों का निर्णय बना रहैगा २ इतिश्री भा०  
द्वितीयस्कंधे अष्टमेऽध्याये नवम वेणी ॥ ६ ॥ श्लोक ॥ १ ॥

श्रोता पूछते भये भगवान् की आज्ञा को पायकै ब्रह्मा कम-  
ल के फूल पर बैठि के तपस्या करते भये पण उस तपस्या को  
क्या नाम है तप तो गनती से हीन है इसवास्तेब्रह्माने कौन

नभोच्चारणं विष्णोस्तपश्चक्रेऽतिप्रेमतः २ इति० भा०  
द्वि० नवमाऽध्याये शंकानि० मं० तपस्तपीयानित्यस्य  
शंकानिवृत्तौ दशमवेणी ॥ १० ॥ श्लो० ॥ ७ ॥

श्रोतारुचुः॥ विपश्चितो न गृह्णन्ति मायासृष्टेऽभेपि च ।  
शंकायुक्तमिदं वाक्यं तौ कौब्रह्मन् च दस्वनः १ वाचक उवाच  
संसारं व्याप्य ब्रह्मांशो जीवरूपश्चराचरे ॥ द्वितीयस्सगुणो  
देवस्सविरंचिमहेश्वरः । एते चोभे न गृह्णन्ति मायासृष्टेऽवि-  
पश्चितः २ इति० भा० द्वि० उभेऽपि न गृह्णन्तीत्यस्य शं-  
कानि० दशमेऽध्याये एकादशवेणी ॥ ११ ॥ श्लो० ॥ ३५ ॥  
सा तप किया १ वाचक बोले भगवान् की आज्ञा को ब्रह्मा पा-  
यके अपने मन को हृदय में स्थिर करिके बड़े प्रेम से भगवान्  
के नाम का जप करते भये सोई तप ब्रह्मा किया २ इ० भा०  
द्वि० नवमेऽध्याये दशम वेणी ॥ १० ॥ श्लोक ॥ ७ ॥

श्रोता पृच्छते भये शुकजी कहेकि ज्ञानी प्राणी माया करिके  
रखी हुई जो दोषस्तु तिसको नहीं ग्रहण करते हे ब्रह्मन् वो दो-  
षीज क्या हैं सो हम लोगों से आप कहो १ वाचक बोले भगवान्  
को अंश जीव रूप होके चरश्चर संसार में व्याप्त हो रहा है एक  
जीव को ज्ञानी लोग नहीं मानते कि भगवान् का अंश भंगी  
आदि खोटी देहों में क्यों बसेगा तथा दूसरी चीज गुण  
सहित बिष्णु ब्रह्मा शिव इनको भी नहीं मानते कहते हैं कि  
ये भी सुखी दुखी होते हैं तथा जन्मते मरते हैं इस दोष चीज को  
ज्ञानी लोग नहीं ग्रहण करते ॥ २ ॥ इति भागवत शंकानिवारण  
मंजरी द्वितीयस्कंधे दशमेऽध्याये एकादशमवेणी ११ श्लोक ३५  
समाप्ताचेयं श्रीमद्भागवत द्वितीयस्कंधशंकानिवारण  
मंजरी ॥ श्रीरस्तु शुभम् ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

# श्रीमद्भागवतशंका निवारणमंजरी

तृतीयस्कंधे ॥

सुधामयी टीका साहती विरच्यते ॥

श्रोतारुचुः ॥ निजराज्येसदाप्रीतिर्यमस्यहृदये  
गुरो । तद्रूपोविदुरोजातस्तार्थसेवनसत्क्रियाः । कथंच  
कारसर्वेषांप्रकृतिर्दुस्त्यजासदा १ वाचकउवाच भव  
द्भिश्चैवसत्योक्तःप्राणिनाम्प्रकृतिस्सदा । दुस्त्यजाचैव  
सर्वेषांसद्गतिस्तद्विमाज्जिनी । वेदव्यासांशसम्भूतोयमः  
क्रूरप्रशासनः २ अतःक्रूरमतिन्त्यक्त्वा विदुरस्तत्क्रिया  
रतः । बभूवभगवद्भक्तो व्यासस्यकृपयानिशम् ३ इति

श्रोतापूछते भये हे गुरुजी यमराजके हृदय में अपने राज  
में सदाप्रीतिवनी रहती है सोई यमराजविदुरहोते भये तथा  
विदुरहोके तीर्थसेवन आदिलेके सुंदरक्रिया क्यों करतेभये यम  
को अकतिआर चलते तौ दूसराजीव भी सुंदर कर्म नहीं कर  
ने पावता आपु यम क्योंकिया तथा सबजीवभी जिसी योनिमें  
जाँयगे उसी योनि में प्रकृति बड़े दुःख से छुटैगी यम की  
प्रकृति क्यों छुटिगई कि तीर्थ करते भयेश्वाचक बोलते भये  
हे श्रोताहो तुम सबजन सत्य कहतेहोसब प्राणियों की प्रकृति  
बड़े दुःखसे छुटती है पण उसी बड़े दुःखसे छुटनेवाली प्रकृ-  
तिको साधु लोगों की संगति बुरी प्रकृति को सुंदरि प्रकृति

श्रीमद्भागवततृतीयस्कंधशंका निवारणमंजरीशिव  
 सहायबुधवि० प्रथमाध्याये प्रथमवेणी ॥ १ ॥ श्लो० ॥ १७ ॥  
 श्रोतारञ्जुः ॥ सर्वेषु विष्णुभक्तेषु सर्वशास्त्रेषु ज्ञानिषु ।  
 उद्धवः कथितोऽत्यन्तममङ्गज्ञानशिरोमणिः १ बोधितोऽ  
 पिमहाबुद्धिः कृष्णेनापि कृपालुना । शुशोच विरहाक्रान्त  
 रस कथमर्खवत्प्रभो २ वाचक उवाच ॥ विष्णोर्विरहज  
 न्दुःखं कलौ रूपापयितुं सुधीः । विष्णुभक्तो महाजानी च  
 कारशुचमुद्धवः ३ ॥ इति० भा० तृ० द्वितीयाऽध्याये  
 द्वितीयवेणी ॥ २ ॥ श्लो० ॥ १ ॥

करिदेती है दुष्ट जीवोंको त्रास करनेवाले यम हैं पण व्यास  
 के अंशसे विदुर होकै जन्मते भये हैं २ इस वास्ते यमराज  
 विदुररूप होकै दुष्टमति त्यागि कै सुंदरि किया करते भये  
 व्यासकी कृपासे विदुर भगवान् के भक्त होते भये ३ इति  
 श्रीमद्भागवततृतीयस्कंधशंकानिवारणमंजरीशिवसहायबुध  
 विरचितायां सुधामयीटीकासहितायां प्रथमेऽध्याये प्रथमवेणी  
 १ ॥ श्लोक ॥ १७ ॥

श्रोताबोलते भये सब विष्णुके भक्तों तथा सब ज्ञानियोंमें तथा  
 सब शास्त्रोंमें उद्धव बड़ा ज्ञानी तथा बड़े भक्त १ कृपाके सागर श्री  
 कृष्णजीने उद्धवको ज्ञानभी दिया ऐसे बड़े ज्ञानी उद्धव विदुरसे  
 श्रीकृष्णबलदेव तथा सब यदुवंशियोंको नाशसुनिकै मुखसरीके  
 कैसा शोक करते भये २ वाचक बोले उद्धवने विचार कि हे जो मैं  
 भगवान् के विरहको सुनिकै शोक करोंगा तो मेरा चरित सुनि  
 कै कलियुग में सब जीव भगवान् को विरह सुनिकै शोक करें  
 गे प्रेमसे तब सब जीवोंको कलियुग में बैकुण्ठ मिलेगा इस  
 १ ॥ उद्धव ज्ञानी हैं विष्णुभक्त भी हैं तो भी शोक करते भये

श्रोतार ऊचुः ॥ विदुरश्चोद्धवेनोक्तो ब्रह्मविद्यामवाप्तवान् । सान्दीपनेश्च श्रीकृष्णस्तत्कथम्मुनिसत्तम १ वाचक उवाच ॥ चतुष्पष्टिकला आप्तास्तस्मात्कृष्णेन निश्चितम् । सर्वचराचरमिदम्ब्रह्मांशेन प्रकाशितम् २ दृश्यते नाण्णमात्रं हितं विनायाद्विचेष्टितम् । अतो वाचोद्धवो धीमान् ब्रह्मविद्यामधीतवान् ३ इति० भा० तृ० तृतीयाऽध्याये तृतीयवेणी ॥ ३ ॥ श्लो० ॥ २ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ उद्धवो विदुरम्प्रोचे महद्यं स भगवान्परः । प्रोवाच सा च का ब्रह्मन्नात्मनः परमस्थितिम् १ कलियुगमें जीवों को सुख होने के वास्ते ॥ ३ ॥ इति श्रीभागवते तृतीयस्कंधे द्वितीयेऽध्याये द्वितीये वेणी ॥ २॥ श्लोक ॥ १०॥

श्रोता पूछते भये हे मुनिसत्तमजी उद्धव विदुर से कहते हैं कि सां दीपन नाम गुरु के पासते श्रीकृष्ण मोक्ष प्राप्त होने की विद्या प्राप्त होते भये सो मोक्ष विद्या प्राप्त हुये फिर रागद्वेष क्यों जीवों से करते भये १ वाचक बोलते भये सां दीपन गुरु से श्रीकृष्ण चौसाठ कला को प्राप्त होते भये पणतीन लोक चौदह भुवन ब्रह्म के अंश करिके प्रकाशमान हो रहा है चरअचर चौसाठ कला भी २ ऐसी कोई संसार में वस्तु नहीं है कि, जो वस्तु ब्रह्म के अंश से हीन होवे ऐसा ज्ञान चौसाठ कला के भिस करिके कृष्ण सिखते भये तब जिस जीव को जैसी इच्छा रही तिसके संग तैसी लीला किहें फिर रागद्वेष कहाँ रहा इस वास्ते उद्धव ब्रह्मविद्या प्राप्ति होने को कहते भये ३ इति श्रीभा० तृ० तृतीयाऽध्याये तृतीयवेणी ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ २ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी उद्धव विदुर से कहे कि, हे विदुर भगवान् मेरे को बड़ी सुन्दर स्थिति आपनी बताते भये सो

वाचकउवाच ॥ भक्तौवसतिविश्वात्मा भगवान्जग  
दीश्वरः । परमास्थितिश्चसातस्यताम्प्रोवाचोद्धवाय  
सः २ इति० भा० तृ० चतुर्थेऽध्यायेचतुर्थवेणी ४ श्लो १६

श्रोतार ऊचुः ॥ मैत्रेयोक्तामिदंवाक्यं वीर्यमाधत्तवो  
र्यवान् । स्वमायायांजगत्स्वामी स्वात्मरुद्धस्यतच्च  
किम् १ वाचकउवाच॥आधारपात्ररहितन्नच किंचिच्च  
राचरे । सृष्टिपात्रमतोमायां कृत्वात्रिभुवनेश्वरः २ त  
स्यामाधत्तस्ववीर्य मिच्छारूपंजगत्पतिः । नचात्रग्रहणं  
कार्यं रेतसोवीर्यशंकया ३ इति० भा० तृ० पंचमाऽध्या  
येपंचमवेणी ॥ ५ ॥ श्लो० ॥ २६ ॥

भगवान्की बड़ी सुंदरस्थिति टिकना क्या है १ वाचक  
बोले भगवान्की बड़ी सुंदर स्थिति भक्ति में है सबको  
स्यागिकै भक्तिमें ईश्वरबसते हैं भगवान्की बड़ीस्थिति-  
सोई है उसीबड़ी अपनी स्थिति को भगवान् उद्धव से कहा  
तेभये ॥ २ ॥ इ० भा० तृ० चतुर्थेऽध्याये चतुर्थवेणी ॥ ४ ॥  
श्लोक ॥ १६ ॥

श्रोतापूछते भये कि, विदुर से मैत्रेय ऐसा वाक्य कहेकि  
अपनी माया में भगवान् वीर्य को स्थापना करते भये तब  
अपने शरीरमें सबवस्तु टिकाये जो भगवान् सोकभी शरीर  
के बाहेर किसी वस्तुको नहीं जानेदेते तौ मायामें कैसावीर्य  
को धारण करते भये १ वाचक बोले हे श्रोताजनो तीनलोक  
चौदहभुवन में आधारके पात्रसे हीन कोईभी चीज नहींहै  
इसवास्ते ईश्वर सृष्टिको आधारको पात्रमायाको बनायकै २  
मृष्टि की रचना करनेको भगवान् की इच्छाहै सोई इच्छा  
प वीर्य माया में भगवान् धारणकरतेभयेइसवीर्य के धारण

श्रोतार ऊचुः॥ मुनिःप्रोवाचविदुरम्भ्रातुः क्षेत्रेभुजि  
 प्यया । जनितोसिमहाबाहो तस्यक्षेत्रं कथंचसा १ क  
 दाप्युद्वाहिताशूद्री नक्षत्रेणश्रुताचनः । वाचक उवाच ॥  
 अर्थो नैवात्र कर्तव्यो क्षेत्रशब्दस्य पौर्विकः २ क्षेत्रधर्मा  
 वनेभ्रातुर्भुजिप्यागर्भसंभवः । बभूवविदुरोज्ञानी वंशे  
 नष्टेऽनुजस्यच ३ इति श्री भा० तृ० षष्ठेऽध्याये षष्ठवेणी  
 ॥ ६ ॥ ॥ श्लोक २० ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ सृष्टिविस्तारप्रश्नेन किमापविदुरः  
 रूप मैत्रेय के वाक्य में बौर्य को ग्रहण नहीं करना जैसा  
 जीवोंको बौर्य होता है उस बौर्यकी शंका नहीं करना ॥ ३ ॥ इति०  
 भा० तृ० पंचमेऽध्याये पंचमवेणी ॥ ५ ॥ श्लोक ॥ २६ ॥

श्रोतापूछते भये मैत्रेय विदुरसे कहे कि हे विदुर व्यासके  
 भाईको क्षेत्रजो दासी तिसमें तुमजन्मेहो तब व्यासको भाई  
 जो शन्तनु राजाको तथा सत्यवती को पुत्र तिसका क्षेत्रदासी  
 कैसे होतीभई क्योंकि हमसब शास्त्र तथा लोकमें नहीं सुने  
 कि कोईभी चत्री होके शूद्रीकेसंग अपना विशाह किया है  
 १ वाचक बोले कि (भ्रातुः क्षेत्रे) इस श्लोकमें पेशतरजो क्षेत्रशब्द  
 को अर्थ नहीं किया जावेगा २ इस श्लोक में क्षेत्र कहे धर्म  
 कीरक्षा करने वास्ते दासीके गर्भसे विदुर बड़े ज्ञानी जन्मते  
 भये क्या धर्म नष्ट होतारहा जिसकी रक्षा करने वास्ते विदुर  
 जन्मे व्यासके छोटेभाई जो चित्रांगद तिसका वंश नष्ट होता  
 रहा तिसकी रक्षा करने वास्ते विदुरजन्मे रक्षाकरना ये है कि  
 धृतराष्ट्र तथा पांडुको ज्ञानसिखाना चेष्टीरक्षा ॥ ३ ॥ इ० भा०  
 तृ० षष्ठेऽध्याये षष्ठवेणी ॥ ६ ॥ श्लोक ॥ २० ॥

श्रोतापूछते भये हेगुरुजी भक्तिज्ञान वैराग्य प्राप्त होने का



फलम् । ज्ञानभक्तिविरागादित्यज्यपप्रच्छयंसुधीः १ वा  
चक उवाच ॥ भगवद्भयानवेलायां योगिनो हृदये निशम ।  
स्वकीये चैव पश्यन्ति ब्रह्मसृष्टिचराचरम् २ अश्रुत्वा सृ  
ष्टिरचनां कथम्पश्यन्ति ते हृदि । योगिनोऽतो विपृच्छन्ति  
सृष्टिसंकल्पनाम्मुदा ३ इति श्री भा० तृ० सप्तमेऽध्याये  
सप्तमवेणी ॥ ७ ॥ श्लो० ॥ १५ से २६ तक ॥

श्रोतार उचुः ॥ मंत्रे यो वर्णं यामास शृंगारं नरवद्धरेः ।  
महायोग्यमिदं मन्ये भूषतेस्त्वाशनं यथा १ वाचक उ  
वाच ॥ अज्ञानिनाम्प्रलाभाय शृंगारं नरवद्धरेः यं श्रुत्वा

भगवद्भक्तिन्तेपिकुर्वन्तिमोहिताः २ मुनिभिर्वर्णित  
 श्यातश्शृंगारोनरवद्धरेः ३ इति श्री भा० तृ० शंकानि०  
 अष्टमेऽध्याये अष्टमवेणी ॥ ८॥ श्लो० ॥ २३ से ३१ तक ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ हरिः प्रोवाच ब्रह्माणं सर्गमुद्यममा  
 वह । पुरःस्थितो दर्शयित्वा स्वरूपं जगदीश्वरः १ स्व  
 वाक्याद्दर्शनाच्चैव श्रेष्ठमत्वोद्यमकथम्प्रेरयामास ब्रह्मा  
 णं कर्तुं यंकमलापतिः २ वाचक उवाच ॥ विनोद्यमन्नसि

ज्ञानी जनतो भगवान् को त्रिलोकनाथ जानतेही हैं पण अ-  
 ज्ञानी जन भगवान् को कुछभी नहीं जानते सुंदरि चीज को  
 भगवान् करिके जानते हैं उन अज्ञानियों को लोभ करने  
 वास्ते मनुष्य सरीके ईश्वर को शृंगार वर्णन भया है जिस  
 भगवान् के शृंगार को सुनिके अज्ञानी जन भी मोहको प्राप्त  
 होवेंगे जानेंगे कि ऐसे बड़े लक्ष्मीवान् भगवान् हैं ऐसा जा-  
 निके अज्ञानी भी भगवान् की भक्ति करेंगे धनवान् होने वा-  
 स्ते फिरि धीरेधीरे ज्ञानी होजावेंगे २ इस वास्ते मुनिजनोंने  
 मनुष्य की पोशाक सरीके भगवान् को शृंगार वर्णन करते हैं  
 ३ इति श्री भा० तृ० अष्टमेऽध्याये अष्टम वेणी ॥ ८ ॥ श्लोक  
 २३ ॥ से ३१ तक ॥

श्रोता पूछते भये ईश्वर ने ब्रह्माके सामने खड़े होके अपना  
 रूप ब्रह्मा को दिखायके ब्रह्मासे बोले कि हे ब्रह्मा संसारके बनाने  
 वास्ते तुम उपाय करो १ तब ईश्वर ने अपने स्वरूपते तथा  
 अपने दर्शन देने से उद्यमको बड़ा क्यों मानते भये जिस  
 उद्यम करने वास्ते ब्रह्मा को आज्ञा दिया क्या ईश्वरका दर्शन  
 ब्रह्मा किया तथा ईश्वरका वचन इन दोनोंसे ब्रह्मा संसार को  
 न बनाय सकता उद्यम बिना यह बड़ी शंका होती है २ वाचक

द्वयंति सर्वेऽर्थाभवसागरे । अङ्गोभगवतश्चाय मुद्यमो  
भगवत्तनुः ३ नवाक्याद्दर्शनाच्छ्रेष्ठो हरेर्भवसुखाकरः  
अतोस्यहरिणा प्रोक्तमधिकत्वञ्चब्रह्मणे ४ इति श्रीभा०  
शं० तृ० नवमेऽध्यायेनवमवेणी ॥ ६ ॥ श्लो० ॥ २६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ पुनःप्रच्छमैत्रेयंविदुरस्सृष्टिकल्प  
नां । कथमेतन्महाबाहो शंकेयम्भारगर्विता ॥ वाचकं  
उवाच ॥ मणिहीनोयथासर्प्यो गतवित्तोयथाजनः । नष्ट  
पुत्रोयथाप्राणी बभूवविदुरस्तथा २ श्रीकृष्णविरहा  
वालेकि हे श्रोताहो इस संसाररूप समुद्रमें विना उद्यम कोई  
भी काज नहीं होसक्ता क्योंकि यह उद्यम जो है सो ईश्वरकी  
देह है ३ ईश्वरके दर्शनते तथा वचन से बड़ानहीं है परंतु सं-  
सार में उद्यम जो है सो सुखकी खानि है इसवास्ते ब्रह्मा से  
ईश्वर उद्यमकी बड़ाई करिके उद्यम करनेको ब्रह्माको कहते  
हैं ४ इति श्री भा० शंकानि० मं० तृतीयस्कंधे शिवसहायबुध  
विरचितायां नवमेऽध्याये नवमवेणी ॥ ६ ॥ श्लोक ॥ २६ ॥

श्रोतापूछते भये विदुरने मैत्रेय से फिरि सृष्टिकी रचना  
क्यों पूछते भये हे गुरुजी यह शंका बड़ेभारसे गर्वकरती है कि  
मेरेको काटनेवाला कोई बुद्धिमान् संसार में नहीं है १ वाचक  
बोले जैसा मणिको नष्टदेखिके सर्प दुःखी होता है तथा धन  
को नष्टदेखिके मनुष्य दुःखी होता है पुत्रको नष्टदेखिके सब  
जीवदुःखी होते हैं तैसेविदुरभी २ उद्धवसे श्रीकृष्ण को तथा  
चदुवंशियों को औरवपांडवों को तथा सबराजोंको नाश सुनि  
के कृष्णके विरहकरिके बहुत दुःखी विदुर होगयेविह्वल  
भये पर किसी चीजकी सुधि नहीं रहती तैसेविदुरकी सुधि

क्रान्तस्सश्रुत्यचोद्धवातक्षयम् । यादवानांकुरूणांच त  
थाचसर्वभुजाम् ३ इतिश्री भा० तृ० दशमेऽध्याये  
दशमवेणी ॥ १० ॥ श्लो० ॥ १ ॥

श्रोतार ऊचुः । मुनिनोक्तं कथं ब्रह्मन्संभवस्सर्वदेहिनां ।  
बभूव कर्मभिस्सृष्टेः पूर्वं कर्म न जायते १ वाचक उवाच ॥ क  
र्मशब्दोपि संप्रोक्तो मुनिभिर्ज्ञानतत्परैः । कृत्यंच सर्वयोनी  
नान्तु प्रारब्धमुच्यते । जनिर्बभूव भूतानां कर्मभिर्भवकार  
णैः २ इतिश्री भा० तृ० एकादशेऽध्याये एकादशवेणी ॥ ११ ॥  
॥ श्लो० ॥ २५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ विधेर्वै दशपुत्राश्च कथं जाताः पृथक्  
नहीं रही कि यह प्रश्न पाहिले हम कि हे रहे हैं विद्वज हो के सृष्टि  
की रचना पुनि पूछते भये ॥ ३ ॥ इ० भा० तृ० दशमेऽध्याये  
दशमवेणी ॥ १० ॥ श्लोक ॥ १ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी मैंने ये मुनि विदुरसे कहे कि सब  
प्राणियों की उत्पत्ति अपने २ कर्म करिके भई पण जब प्रलय  
में सब चर अचर नष्ट होगया एक ईश्वर बचे कलु दिन पीछे  
ईश्वर की नाभिसे कमलको पुष्प भया उस फूलमें ब्रह्मा जन्मले  
के सृष्टिको बनाने लगे तब सृष्टि के पेश्तर कर्म कहाँ रहा कर्म तो  
प्राणी जन्ममेंगे कर्म करेंगे तब होवैगा यह बड़ी शंका है १ वा-  
चक बोले इस लोक में ज्ञानवान् जो मुनि हैं सो कर्म को प्रारब्ध  
नहीं कहते सब योनिके करनेके उपायको कर्म कहते हैं जिस  
योनिका जैसा उपाय ब्रह्मा देखे हैं उसी योनिको उसी प्र-  
कारको रूप शब्द चखना खाना पीना आदि सब कारण करिके  
जुदा २ सब योनियों को बनाये हैं ॥ २ ॥ इति० भा० तृ० ए-  
कादशेऽध्याये एकादशवेणी ॥ ११ ॥ श्लोक ॥ २५ ॥

द्वयंति सर्वेऽर्थाभवसागरे । अङ्गोभगवतश्चाय मुद्यमो  
भगवत्तनुः ३ नवाक्याद्दर्शनाच्छ्रेष्ठो हरेर्भवसुखाकरः ।  
अतोस्यहरिणाप्रोक्तमधिकत्वञ्चब्रह्मणे ४ इति श्रीभा०  
शं० तृ० नवमेऽध्यायेनवमवेणी ॥ ६ ॥ श्लो० ॥ २६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ पुनःपप्रच्छमैत्रेयंविदुरस्सृष्टिकल्प  
नां । कथमेतन्महाबाहो शंकेयम्भारगर्विता ॥ वाचक  
उवाच ॥ मणिहीनोयथासर्प्यो गतवित्तोयथाजनः । नष्ट  
पुत्रोयथाप्राणी बभूवविदुरस्तथा २ श्रीकृष्णविरहा  
बोलेकि हेश्रोताहो इस संसाररूप समुद्रमें विनाउद्यम कोई  
भी काज नहीं होसक्ता क्योंकि यहउद्यम जोहैसो ईश्वरकी  
देहहै ३ ईश्वरके दर्शनते तथा वचन से बड़ानहींहै परंतु सं-  
सार में उद्यम जोहैसो सुखकी खानिहै इसवास्ते ब्रह्मा से  
ईश्वर उद्यमकी बड़ाई करिकै उद्यम करनेको ब्रह्माको कहते  
हैं ४ इति श्री भा० शंकानि० मं० तृतीयस्कंधे शिवसहायबुध  
विरचितायां नवमेऽध्याये नवमवेणी ॥ ६ ॥ श्लोक ॥ २६ ॥

श्रोतापूछते भये विदुरने मैत्रेय से फिरि सृष्टिकी रचना  
क्यों पूछते भये हे गुरुजी यह शंका बड़ेभारसे गर्वकरती है कि  
मेरेको काटनेवाला कोई बुद्धिमान् संसार में नहीं है १ वाचक  
बोले जैसा मणिको नष्टदेखिकै सर्प दुःखी होताहै तथा धन  
को नष्टदेखिकै मनुष्य दुःखी होता है पुत्रको नष्टदेखिकै सब  
जीवदुःखी होतेहैं तैसेविदुरभी २ उद्धवसे श्रीकृष्ण को तथा  
चदुवंशियों को कौरवपांडवों को तथा सबराजोंको नाश सुनि  
कै कृष्णके विरहकरिकै बहुत दुःखी विदुर होगयेविदुर  
भये पर किसी चीजकी सुधि नहीं रहती तैसेविदुरकी सुधि

क्रान्तस्सश्रुत्यचोद्धवात्तत्तयम् । यादवानांकुरूणांच त  
थाचसर्वभुजाम् ३ इतिश्री भा० तृ० दशमेऽध्याये  
दशमवेणी ॥ १० ॥ श्लो० ॥ १ ॥

श्रोतार ऊचुः । मुनिनोक्तंकथं ब्रह्मन्संभवस्सर्वदेहिनां ।  
बभूवकर्मभिस्सृष्टेः पूर्वकर्मनजायते १ वाचक उवाच ॥ क  
र्मशब्दोपिसंप्रोक्तो मुनिभिर्ज्ञानतत्परैः । कृत्यंचसर्वयोनी  
नां नतुप्रारब्धमुच्यते । जनिर्बभूवभूतानां कर्मभिर्भवकार  
णैः २ इतिश्री भा० तृ० एकादशेऽध्याये एकादशवेणी ॥ ११ ॥  
॥ श्लो० ॥ २५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ विधेर्वैदशपुत्राश्चकथंजाताः पृथक्  
नहीं रही कि यह प्रश्न पाहिले हमकिहेरहेहैं बिह्वल होके सृष्टि  
कीरचना पुनि पूछते भये ॥ ३ ॥ इ० भा० तृ० दशमेऽध्याये  
दशमवेणी ॥ १० ॥ श्लोक ॥ १ ॥

श्रोतापूछते भये हेगुरुजी मैंत्रेयमुनि विदुरसे कहेकि सब  
प्राणियोंकी उत्पत्ति अपने २ कर्मकरिके भई पण जब प्रलय  
में सब चर अचर नष्ट होगया एक ईश्वर बचे कुछ दिन पीछे  
ईश्वरकी नाभिसे कमलको पुष्पभया उस फूलमें ब्रह्माजन्मले  
के सृष्टिको बनाने लगे तब सृष्टि के पेश्तरकर्म कहारहा कर्मतो  
प्राणी जन्मैंगे कर्मकरैंगे तब होवैगा यह बड़ीशंका है १ वा-  
चक बोले इसलोक में ज्ञानवान् जो मुनिहैं सो कर्म को प्रारब्ध  
नहीं कहते सब योनिके करनेके उपायको कर्म कहते हैं जिस  
योनिका जैसा उपाय ब्रह्मादेखे हैं उसी योनिको उसी प्र-  
कारको रूपशब्द चक्षुषा खाना पीना आदि सब कारण करिके  
जुदा २ सब योनियों को बनाये हैं ॥ २ ॥ इति० भा० तृ० ए-  
कादशेऽध्याये एकादशवेणी ॥ ११ ॥ श्लोक ॥ २५ ॥

पृथक् । शरीरात्किमभिप्रायाद्ब्रह्मन्वदसविस्तरम् १  
 वाचकउवाच ॥ मानसानकृताः पुत्रानारदाद्याविरंचिना ।  
 ज्ञात्वासांसारिकांस्तांस्तुविद्यापक्षविवर्जितान् २ कदा  
 मोहंकदाक्रोधमित्यादितत्परान्ध्रुवम् । शरीरांगात्पृथक्  
 चक्रे तेषांजन्मस्वभावतः ३ इतिश्री भा० तृ० शं० नि०  
 द्वादशोऽध्यायेद्वादशवेणी ॥ १२ ॥ श्लो० ॥ २२ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ सृष्टिपूर्वकथंजाता राक्षसाःकनकाद  
 यः । येषांभारसमाक्रान्ता गताभूमीरसातलम् । रसातल

श्रोता पूछते भये हे आचार्यजी ब्रह्मा अपनी देहते जुदा २  
 अंगसे दश १० पुत्र क्यों उत्पन्न करते भये देहके एकअंगसे  
 क्यों नउत्पन्न किया दश १०पुत्रोंको जुदा जुदा उत्पन्न करने  
 का क्या अभिप्राय है १ वाचक बोले नारद आदि दशपुत्रोंको  
 ब्रह्मा ध्यानसे जानिलिहोके येहमारेपुत्र मोक्षविद्याको नहीं  
 जानेंगे संसारके कर्ममेंबड़ेचतर होवेंगेब्रह्मा ऐसाजानिकै नारद  
 आदि दशपुत्रों को मनकरिकै नहीं उत्पन्न किहे २ ब्रह्मा जा-  
 निलिहोके निश्चय करिके हमारे दशपुत्र कभी मोहको कभी  
 क्रोधको कभी कामको इन आदिलेकै अनेक जो संसारको  
 कर्म तिसमें चतुर होवेंगे इसवास्ते देहके जिसअंगको जैसा  
 स्वभाव उस अंगकरिकै वैसही पुत्रब्रह्मा उत्पन्न करते भये ३  
 इ० भा० तृ० द्वादशाध्यायेद्वादशवेणी ॥ १२ ॥ श्लोक ॥ २२ ॥

श्रोतापूछते भये हेगुरुजी भागवत तृतीयस्कंध वीसअध्या-  
 यके तेरहश्लोकके अर्थसे मालूमपरताहैकि हिरण्यकाशिपुआदि  
 राक्षसोंके मरेपीछे सृष्टि रचना ब्रह्मा न किये हैं तब सृष्टिके  
 पेश्तरहिरण्यकशिपु आदिराक्षसकैसे जन्मते भये जिनराक्ष-  
 सोंके भारकरिकै पृथ्वी रसातलको चलीगई तथा रसातलको

गताभभिर्न ज्ञाताब्रह्मणाकथम् १ वाचकउवाच ॥ मनु  
नोक्तादिनेपूर्वं मारीचकुलसम्भवाः । राजसाबहवोजाताः  
सृष्टिश्चाहं प्रवर्द्धिता २ हिरण्याक्षेन वसुधा तपसाद्योति  
तेन वै । हतातूर्णमधस्सप्त कल्पितानविरंचिना ३ व्यती  
ताघटिकैकाच पृथिव्याहरणे कृते । यावदायान्तिविज्ञप्तं  
सुरास्तावत्स्वयम्भुवा । मनुनोक्ताश्रुतातूर्णं हरिराविर्बभू  
वह ४ इति श्री भा० तृ० भूमिहरणशं० मं० त्रयोद०  
त्रयोदशवेणी ॥ १३ ॥ श्लो० ॥ १५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ विहाय सर्वान्सचराचरान्तनून ज  
गन्निवासो जगती विमोचने । दधारकेनैव सुनिन्दितां

गईथकी ब्रह्माको क्यों नहीं मालूम परा मनुराजा पृथ्वीकां  
हाल ब्रह्मासे कहतौ ब्रह्माको मालूम पर यह बड़ी शंका होती है १  
वाचक बोले जिस दिन ब्रह्मासे स्वायंभूमनु कहे कि पृथ्वी को  
तो हिरण्याक्ष हरि ले गया उस दिन मरीच के कुलमें राजस  
बहुत जन्मेथे तथा उसी दिन आधी सृष्टि भी बानिके वृद्धि को  
प्राप्त हो रही है २ हिरण्याक्षने तपस्याके प्रभावसे पृथ्वी को हरि  
ले गया जल्दी नीचे के सात लोकों को ब्रह्मा उस दिन नहीं रचे  
थे केवल नीचे सात लोकों की जगह पर जल भरा था ३ पृथ्वी  
को हरण भये पीछे घड़ी एक बीति गई जब तक देवता पृथ्वी  
का हाल ब्रह्मासे कहने वास्ते आने लगे तब तक मनुने जल्दी  
पृथ्वी का हाल ब्रह्मासे कहते भये तब ब्रह्मा सुनिके दुःखी  
होगये तब उसी वखत ईश्वर प्रगट होके सब काम किया इस  
प्रकार से सृष्टिके पेशतर राजस जन्मते भये ४ इति० भा० तृ०  
शं० मं० त्रयोदशेऽध्याये त्रयोदशवेणी ॥ १३ ॥ श्लो० ॥ १५ ॥

श्रोता पूछते भये ईश्वरने पृथ्वीको हिरण्याक्षसे लुड़ाने



तनुं क्रौडं चिक्कर्मग्रसितो यथा जनः १ वाचक उवाच ॥  
 विज्ञायतं ब्रह्मवरप्रमादिन्नमृत्युभावांगमितासुरेश्वरः । लो-  
 के सजीवैस्सचराचरैरहो विरांचिकृत्यैरपि क्रौडवर्जितैः २  
 विचार्यैर्वरमानाथो धृत्वा क्रौडतनुं हरिः । जघाना शुजला  
 दूदैत्य मुज्जहार क्षिति हरिः ३ इति श्री भा० तृ० शूकर  
 रूपधारणशं० मं० चतुर्दशेऽध्या० चतुर्दशवेणी ॥ १४ ॥  
 श्लो० ॥ १ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ न सन्ति सर्वे रिपवो विकुंठिनो वैकुंठ  
 लोके मदनादयो गुरो । प्रचकृतुर्भेदमतिजयो कथं शेषु द्विधे  
 जाश्चाप्यरुणाननाश्चतौ १ वाचक उवाच ॥ हरिर्विज-  
 वांस्ते अनेक प्रकारके सुंदर २ शरीरको त्यागिके जैसा कोई  
 जीववुराकर्मकरे उसी जीवको बुरे कर्मकरिके खोटो योनि धारण  
 करना परै तैसे बड़ी निंदित सूकरकी योनि तिसको क्यों धारण  
 किहे सूकरकी योनि बड़ी खराब है १ वाचक बोले कि हे श्रोता  
 हो ईश्वर जान लिहे कि, यह हिरण्याक्ष ब्रह्माके वरदान करिके  
 बहुत प्रमादमें मस्त हो रहा है संसारमें जेतने चरअचर प्राणी  
 ब्रह्माके बनाये हैं तिन्हों करिके यह मरेगा नहीं सूकरको ब-  
 र्जित करिके सूकर से मरेगा यह बड़ी आश्चर्य की बात है  
 २ लक्ष्मीकेनाथ ऐसा विचारिके सूकर का शरीर धरिके ज-  
 लदी हिरण्याक्ष को मारि डाले तथा जलमें डूबती जो पृथ्वी  
 तिसको जलसे उठायके पृथ्वीके स्थान पर पृथ्वी को टिकाते  
 भये ३ इति भा० तृ० चतुर्दशेऽध्याये चतुर्दशवेणी १४ श्लोक ॥ १ ॥

श्रोता पृथ्वी भये हे गुरुजी प्राणियों की बुद्धिके नाश करने  
 वाले कामक्रोध आदिलेके अनेक दुश्मन वैकुंठमें नहीं हैं ऐसा  
 हम सब शास्त्रमें सुना है फिरि जय विजय भेद युद्ध क्यों किया कि

भृगुबल्लभांयदानिरीक्ष्यक्रोधारुणचक्षुषं द्विजाः । तन्तै  
 श्चष्टः करुणाकरो हरिः कथं त्वयीशे मदनानुजोऽप्यरिः २  
 प्राणिनामिन्द्रियाविप्राः प्रबलास्सर्वदेहिनाम् । योगिना  
 मपि चेतांसि मम दीनस्य का कथा ३ आकर्षतीति मुनिभि  
 र्शनकाद्यैर्न स्वीकृतम् । अतो मायावशौकत्वा हरिस्स्वा  
 ये ब्राह्मण ईश्वरके पास जाते हैं कुछ उत्पात करेंगे तथा  
 दूसरे फिर सनकादिमुनि लाजसुखहोके क्रोधसे उनदूनोंको  
 शापदिया यह तो मृत्युलोक से भी वैकुण्ठलोक कामक्रोध भेद  
 आदिको समुद्र होगया १ वाचक बोले भगवान् ने भृगुकी स्त्री  
 को जब मारि डाले तब ईश्वरके नेत्र क्रोधकरिके लाज होगये  
 तबसे ईश्वरके रूपको देखिके सनकादिक भगवान् से पूछते  
 भये हे भगवन् आपु तो बड़े दयालु हो आपुमें कामदेव को  
 छोटा भाई जो क्रोधतो क्यों है २ ईश्वर सनकादिकसे बोले  
 हे ब्राह्मण सब प्राणियोंकी इंद्रियबड़ी जबरदस्त हैं योगियों  
 के चित्तको खींचिके बुरी रस्ते में पटाकि देती हैं तो  
 मेरी गरीबकी क्या कथा है इन्द्री के वशहोके मेरेभी क्रोध  
 होगया ३ ईश्वरके ऐसे सुंदर वचनको सनकादिक सुनिके नहीं  
 मानते भये अभिमान से मनमें विचारे कि क्या इन्द्री करि  
 सकी हैं सनकादिकके मानको जानिके कुछ दिन पीछे ईश्वरने अ-  
 पने दास जय विजय को मायाके वश करिके ४ जयविजय  
 करिके सनकादिकोंको मरवाते भये तथा सनकादिकोंके हृदय  
 में क्रोधकी वृद्धि करायके जयविजय को सनकादिकोंसे शाप

टीप—तृतीयस्कन्धकी भ० १४ श्लोक १ में कारणसूकरात्मनः की शंका  
 है कारणसो शंकायांनिर्घर्ष ॥

नुचरौतदा ४ ताडयित्वाचतांस्ताब्ध्यान्तेषुक्रोधंव्यवर्द्ध  
यत् ५ इतिश्रीमद्भागवततृतीयस्कंधशंकानिवारणमं  
ज्य्याजयादिसनकादिक्रोधकारणे पंचदशेऽध्याये पं-  
चदशवेणी १५ ॥ श्लो० ॥ ३० से ३३ तक ॥

श्रोतारऊचुः ॥ हरिर्ययाचिरोविप्रान चिरेणैवमेऽन्ति  
कम् । इमावायास्यतोविप्रै स्स्वीकृतंतच्चिरंकथम् १ चे  
ज्जन्मत्रयसम्बंधं तथा पितृणमात्रतः । कोटिशोरचितुं  
शक्तो भगवान्जगदीश्वरः २ वाचकउवाच ॥ सुज्ञाजान  
न्तिमांल्लोके नेतराभुवनत्रयोऽनयोः कारणंकृत्वा प्रावि

दिवाते भये जयविजयं को दुःख होवेगा पण सनकादिकों के  
मान नाश होनेके वास्ते यह काम ईश्वर करतेभये ५ इतिश्री  
भा० तृ० शंका० मं० पंचदशेऽध्याये पंचदशवेणी ॥ १५ ॥  
श्लोक ३० से ३३ ॥

श्रोता पूछतेभये भगवान्ने सनकादिकोंसे कहेकि हे ब्राह्मण  
लोगो ये दीनों हमारे पार्षद जल्दी हमारे पासको प्राप्त होवें  
यह धरदान प्रसन्न होके हमको दीजिये सनकादिक बोले  
हे ईश्वर बहुत जल्दी आपुके पास आयजावेंगे फिरि बहुत  
युगतक क्योंराक्षस बनेरहे जल्दी ईश्वरकेपास नहीं आयें ?  
हे गरुजी जो यह कहोकि तीन जन्मकीकरार सनकादिकोंने  
करिदिया इस वास्ते देरभई ईश्वर के पास आने में  
भगवान् तो एक क्षणमेंकोटियों योनिवनानेको समर्थ हैं तीन  
जन्म की क्या बातहै २ वाचक बोलेकि ईश्वरने विचार किये  
कि तीनलोक मेंज्ञानी प्राणीतो हमको जानतेहैंकि ईश्वर

भाविस्त्रिधामम ३ भविष्यतिक्षितौसर्वे मांज्ञास्यन्तिजग  
त्पतिम् । इतिप्रथयितुंकीर्तिविलम्बोहरिणाकृतः ४ इति  
श्री भा० तृ० शं० नि० मं० षोडशेऽध्यायेचिरकालेषो  
डशवेणी १६ ॥ श्लो० ॥ २६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ स्वकट्यातीत्यहेमाक्षोनित्यन्तिष्ठति  
स्वालयेदिनेशनश्रुतोस्माभिरीदृशोनैतियकस्तनुः १ मा  
यिकोविश्रुतोस्माभिःराक्षसानान्त्वनेकधा ॥ वाचकउवाच  
आतरौद्वौमहावीरौसूर्यभक्तौ बभूवतुः २ शरीरवर्द्धनं

जगत्पतिहै परंतु मूर्ख लोग हमको कुछभी नहीं जानते इस  
वास्ते ये दोऊ राक्षस होवेंगे तौ इनके वास्ते तीन दफे  
हम मृत्युलोक में प्रगट होवेंगे ३ तबहमको सब मूर्खभी ज-  
गत्को पति जानेंगे इसवास्ते भगवान् दोनों पार्षदा को अ-  
पने पास आने में देरकिया ४ इति० भा० तृ० शं० मंज०  
षोडशेऽध्याये षोडशवेणी ॥ १६ ॥ श्लोक ॥ २६ ॥

श्रोता पूछतेभये हिरण्याक्ष हिरण्यकशिपु ये दोनों भाई  
अपने २ कर्म करिके सूर्य को नीचे करिके आपनेघरमें टिकते  
भये राक्षसों को शरीर जोनित्य बनारहता है सो ऐसा लंबा  
शरीर किसी राक्षसको हमलोग नहीं सुने मायाकरिके अनेक  
शरीर लंबा राक्षसोंका सुनाहै पण नित्य रहनेवाला शरीर  
ऐसानहींसुना १ वाचकबोले हिरण्याक्ष हिरण्यकशिपु येदोनों  
भाई सूर्यके बड़े भक्त होते भये सूर्यके पूजनको नित्य करते  
भये उस पूजनमें जोकोई विघ्न करनेवाले देवता तिनको घ्रास  
करने वास्ते शरीर को बढ़ातेभये २ शरीरकी लम्बाई देखिके  
विघ्न करने वाले देवता भागि गये इसवास्ते पूजन के बखत

कृत्वा त्रासार्थं विघ्नकारिणाम् । तृ० १० ॥ १७ ॥  
 विवर्द्धनम् ३ इति० भा० तृ० देहवृद्धिं मं० सप्तदशे  
 अध्याये सप्तदशवेणी ॥ १७ ॥ श्लो० ॥ १७ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ हरेर्नानावताराश्च श्रुतानः शांतिं स  
 युताः । प्रचंडमन्युः क्रोडेन ब्रह्मन्कस्मात्कृतस्तदा १  
 वाचक उवाच ॥ येषां भगवतादत्तो यस्स्वभावश्चराचरे  
 न त्याज्यस्तैः कदासश्च इति तस्यानुशासनम् २ स्वभा  
 वं क्रोडवपुषः पालितुं हरिणा कृतः ३ इति० भा० तृ०  
 क्रोधवृद्धिं मं० अष्टादशाध्याये अष्टादश वेणी १८  
 श्लो० ॥ ८ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ जघान कर्णमूले वै प्रथमोऽङ्गकरेण  
 नित्यं शरीरको वहायके पजन करिके घरमें आयके दो घड़ी  
 पीछे छोटी देहकरिके घरमें रहना ३ इति श्री भा० तृ० शं० मं०  
 सप्तदशे अध्याये सप्तदशवेणी ॥ १७ ॥ श्लोक ॥ १७ ॥

श्रोता बोलते भये हे गुरुजी भगवान् के अनेक अवतार हम  
 सबोंने सुने हैं कैसे हैं बड़े चमावान् परन्तु शूकर भगवान् ने युद्ध  
 में बड़ा क्रोध क्यों किया १ वाचक बोले संसारमें जिस प्राणी  
 को जैसा स्वभाव भगवान् ने दिहे हैं उस स्वभावको वह प्राणी  
 कभी नहीं त्यागैगा ऐसी जीवों के वास्ते ईश्वरकी आज्ञा है २  
 शूकरको स्वभाव बड़ा क्रोधी होता है इस वास्ते शूकरके देह  
 की मर्यादा पालन करनेवास्ते शूकर अवतार भगवान् प्रचंड  
 क्रोध करते भये ॥ ३ ॥ इति श्री भा० तृ० अष्टादशाध्याये अष्टा  
 दशवेणी ॥ १८ ॥ श्लोक ॥ ८ ॥

श्रोता पूछते भये पहिले युद्धमें हिरण्याक्षको शूकर भगवान्

तम् । हरिः पश्चात्स्तुतावुक्तः पदाहतकथम्मुने १ वाच  
कउवाच ॥ आहूतोराक्षसस्तस्य पत्प्रपश्यन्मुखन्तथा ।  
तनुंससर्जतस्याय मर्त्योऽव्यासप्रकीर्तितः २ इति० भा०  
तृ० १६ अ० पदाहतशं० नि० मं० १६ वे० श्लोक ॥ २६ ॥

श्रोतारऊचुः ॥ विधिर्देहवितत्याज भूयोभूयः पुनः  
पुनः । रचित्वाचरचित्वाच भूरिशः प्राणिनः कथम् १  
वाचकउवाच ॥ रचित्वामानसं सृष्टिं ग्लानिन्दृष्ट्वा तदु  
द्भवाम् २ ग्लानिबीजंतनुं ज्ञात्वा तत्त्यक्त्वान्यंसमादधौ ।  
तस्मिन्नपि निरीक्ष्यैव पुनस्तत्याजतामपि ३ इति श्री भा०  
तृ० विविधदेहत्यागशंकानि० मं० विंशाऽध्यायविंशवेणी  
२० ॥ श्लो० ॥ २८ से ४७ तक ॥

हाथके थपड़से कानके नीचे मारे तब हिरण्याक्ष मरिगया ऐसा  
वर्णन भया हिरण्याक्षके मरे पीछे शकरकी स्तुति देवतोंने किया  
तब देवतोंने कहे कि शकरके पगसे मारिगया राक्षस ये दो बात  
की बड़ी शंका है १ वाचक बोलते भये (पदाहतः) इसका अर्थ  
व्यासजी ऐसा वर्णन किये हैं कि भगवान् करिके मारा जो  
राक्षस सो भगवान्को चरण तथा मुख देखते २ शरीर को  
त्यागि दिया ॥ २॥ इति श्री भा० तृ० शंकानिवारण मं० एकोन  
विंशेऽध्याये एकोनविंशवेणी ॥ १६ श्लोक ॥ २६ ॥

श्रोता बोलते भये ब्रह्माने अनेक प्रकारके प्राणियोंको बनाय  
कै बारंवार अपनी देहको क्यों त्यागते भये १ वाचक बोले  
ब्रह्माने अपने मनसे प्राणियोंकी सृष्टि बनायके पीछे उसी  
सृष्टिसे उत्पत्ति जो ग्लानि तिसको देखिके ब्रह्मा जानिलिये  
कि यह मेरी शरीर ग्लानिको बीज है ऐसी अपनी देहको जानि

श्रोतार ऊचुः॥महदाश्चर्यमेतन्नःश्रुतम्भागवतगुरो।  
 दशवर्षसहस्रं च चकार कर्दमस्तपः । भार्यार्थेनैव मुनिभिः  
 कृतं कैश्चापि न श्रुतम् । वाचक उवाच ॥ देवहूत्यै वरोदतो  
 बाले वयसि विष्णुना । तवात्मजो भविष्यामि मातर्वै कपिलो  
 ह्यहम् २ ज्ञात्वैवं कर्दमो धीमान् नारदस्योपदेशतः । ना  
 न्यैर्ज्ञातन्तपश्चक्रे भार्यार्थे मुनिसत्तमः ३ इति० भा० तृ०  
 कर्दमविवाहार्थे तपश्चक्रे इत्यस्य शंकानि० मं एकविंशेऽध्याये  
 एकविंशवेणी ॥ २१ ॥ श्लो० ॥ १६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कर्दमोक्तिरियम्ब्रह्मन्मनुप्रतितवा  
 कै उस देहको त्यागि कै दूसरी देह धारण करते भये उस देहमें  
 भी ग्लानि देखै तो उस देहको भी त्यागि देते भये ॥ २१ ॥ इ० भा०  
 तृ० विंशेऽध्याये विंशवेणी ॥ २० ॥ श्लोक ॥ २८ ॥ से ४७ तक  
 श्रोता बोलते भये हे गुरुजी भागवतमें हम सबने ऐसा सुना है  
 कि कर्दम मुनि ने स्त्री प्राप्ति होने वास्ते दश हजार १०००० वर्ष तपस्या  
 करते भये यह बड़ा आश्चर्य है कि कोई मुनि स्त्री प्राप्ति होने  
 वास्ते तप नहीं किया ऐसा हम सबने सुना है । वाचक बोले  
 देवहूती लड़की रही तब भगवान् वरदान दिहो कि हे माता तु-  
 मारा पुत्र हम होवेंगे कपिल हमारा नाम होवेंगा २ इस वरदान  
 का हाल नारद मुनि कर्दमसे कहें और कोई मुनि जानता  
 नहीं रहा इस चरित्र को ऐसा नारद के उपदेश को पाय कै कर्दम  
 मुनि देवहूती को अपनी स्त्री होने वास्ते तपस्या करते भये विचारे  
 देवहूती जो हमारी स्त्री होवेंगी तो कपिल हमारे पुत्र होवेंगे ३  
 भा० तृ० एकविंशेऽध्याये एकविंशवेणी ॥ २१ ॥ श्लोक ॥ १६ ॥  
 श्रोता पृच्छते भये कर्दम मुनि स्वायं भुवमनुसे कहो कि तुमारी

त्मजा । अप्रमत्ताकथंज्ञात्ता मुनिनासावरांगना १ वाच  
कउवाच ॥ आविर्भावोभगवतःश्रुत्वातदुदरेमुनिः । वि  
चार्य्यहृदयेस्वीयेप्रमत्तायास्सुतोहरिः । भविष्यतिकथं  
श्रीशो मुनिनोक्ताप्यतोहिसा २ इति० भा० तृ० अमत्ता  
तवात्मजेत्यस्यशं० मं द्वाविंशाऽध्यायेद्वाविंशवेणी २२  
श्लो० ॥ ११ ॥

श्रोतारञ्जुः॥ पुराययाचेभवनं देवहूतिर्निजंपतिम् ।  
रत्यर्थंकलिपतं दृष्ट्वा नातिप्रीतिमनाः कथम् १ वाचकउ  
वाच ॥ अप्रभावविदापूर्वन्देवहूतिर्बभूवह । दृष्ट्वाप्रभावं  
स्वपतेर्विमानंतपसाकृतं २ किंयाचितमयातुच्छं मोक्ष  
कन्या देवहूती प्रमाद कर्मोंसे हीनहै सुंदरकर्म करनेवाली है  
इसवास्ते हम विवाह करेंगे यहबड़ी शंकाहैकि कर्दममुनि  
देवहूती को कैसे जाने कि प्रमत्त कर्मों से रहित है १  
वाचकबोलतेभये कर्दममुनि नारद के मुखसे देवहूतीके उदर  
से भगवान्को जन्म सुनिकै अपने हृदयमें विचार किहेकि  
घुरे कर्म करनेवाली स्त्रीकेपुत्र भगवान् कैसे होवेंगे भगवान्  
को जन्म सुनिकै कर्दम जानिलियेकि देवहूती उत्तम कर्म  
करनेवाली है इसवास्ते मनसे कहे २ इ० भा० तृ० द्वाविंशेऽ  
ध्याये द्वाविंशवेणी ॥ २२ ॥ श्लोक ॥ १५ ॥

श्रोता पूछते भये देवहूतीने अपने पति जोकर्दम मुनि  
तिनसे पेश्तर तो रतिसुख वास्ते सुन्दर मकान बनाने वास्ते  
याचना की जब कर्दम मुनि ने अद्भुत मकान बनाये तब  
मकान को देखिकै उदास क्यों होगई १ वांचक बोलते भये पे-  
श्तर देवहूतीने अपनेपतिके प्रभावको नहीं जानतीथी तपस्या



मार्गेनयाचितः । एनंप्राप्य महावृद्धिमित्यप्रतिमना  
भवत् ३ इति० भा० तृ० अप्रीतमनेत्यरयशं० त्रयो  
विंशाऽध्यायत्रयोविंशवेणी ॥ २३ ॥ ॥श्लो० ॥ २३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ उवाच कर्दमोजायां सस्त्वयाराधि  
तोहरिः । सुतस्तेभविताविष्णुर्हरिः कुत्रार्चिचतस्तथा १  
वाचक उवाच ॥ इह जन्मनिसाविष्णुं पूजयन्ती दिवानि  
शं । पुत्रार्थे हृदये स्वीये तद्ज्ञातं कर्दमेन वै २ इति श्री भा०  
तृ० त्वयाराधितः अस्य शं० मं चतुर्विंशाऽध्याये चतु  
र्विंशवेणी ॥ २४ ॥ श्लो० ॥ ४ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ देवहूतिः सुतं प्राह निर्विषाहं

करिके कदम मुनिने विमान बनाया तिसको देखिके अपने  
पतिके प्रभावको जानती भई कि ये सिद्ध हैं २ मैंने ऐसा स-  
मर्थ पति पायके तुच्छ मकान मांगा मोक्ष नहीं मांगा इस  
वास्ते उदास होगई ३ इति श्री भा० तृ० त्रयोविंशेऽध्याये  
त्रयोविंशवेणी ॥ २३ ॥ श्लोक ॥ २२ ॥

श्रोता पूछते भये कर्दमने देवहूती को कहे कि तुमने ईश्वर  
को पूजन किया इस वास्ते भगवान् तुमारे पुत्र होवेंगे यह भ्रम  
होती है कि किस जन्ममें परमेश्वर को पूजन देवहूती करती  
भई १ वाचक बोले इसी जन्ममें देवहूती अपने हृदयमें राति  
दिन भगवान् को अपना पुत्र होने वास्ते मानसिक पूजन करती  
रही यह देवहूती के कर्मको कर्दम मुनि जानिले ते भये ॥ २ ॥  
इ० भा० तृ० चतुर्विंशेऽध्याये चतुर्विंशवेणी ॥ २४ ॥ श्लोक ॥ ४ ॥

श्रोता पूछते भये देवहूतीने कपिलसे कही कि हे पुत्र खोटी

सुतेन्द्रियात् । असतश्चैवपप्रच्छपुनर्मुक्तिसुतंकथम् १  
 वाचक उवाच ॥ निर्विण्णापिसुतंदृष्ट्वा हरिनारायणं प्र  
 भुम् । मुक्तिलुब्धा च पप्रच्छ पुनस्तत्प्राप्तेहेतवे २ इति०  
 भा० तृ० पंचविंशोऽध्यायेपंचविंशवेणी २५ श्लोक७॥

श्रोतार ऊचुः ॥ सर्वेन्द्रियास्सुरैसाद्धतमुत्थापितुमोज  
 सा । यत्नंचक्रुश्चनोत्तस्थौसविराट्कोमुनीश्वर १  
 वाचक उवाच ॥ सोविराडत्रनज्ञेयोयस्माज्जातमिदं ज  
 गत् । विराड्देहोत्रविख्यातोयश्चैतन्येनचेतितः २  
 इति० भा० तृ० विराडित्यस्यशं० नि० मं० षड्विंशाऽ  
 ध्याये षड्विंशवेणी २६ ॥ श्लो० ॥ ६१ ॥

इन्द्रियोसेतौ मैं निर्विण्ण कहेछूटिगईहोंतो फिर फपिलमुनिसे  
 मुक्ति होनेका उपाय क्योंपूछतीभई क्योंकि जो खोटी इन्द्रियों  
 से छूटिगया वोतो संसारसे छूटिगया उसको मुक्तिहोनेका उपाय  
 पूछनेसे क्याकाम है वाचक बोलेतेभये देवहूती खोटीइन्द्रियों  
 से छूटिगईहै तौभी भगवान् को अपनापुत्रदेखिके मुक्तिहोने  
 वालेकामों की लोभकरिके तथा मुक्तिके फमोंको पुष्टकरेनवास्ते  
 पूछती भई १२॥ इति० भा० तृतीयाहंकेपंचविंशोऽध्यायेपंचविंश  
 वेणी ॥ २५ ॥ श्लोक ॥ ७ ॥

श्रोता पूछतेभये हेमुनियों मैं ईश्वर वाचकजी जलमें जो  
 विराट् रूप अंडरहा तिसको उठानेवास्तेसब इन्द्रीगण अपने  
 अपने देवतोंसहित यत्नकरतीभईपण वहतो नहीं उठा उहांसे  
 वह विराट् कौन है वाचक बोले जिस विराट् ईश्वर धारिके  
 ये तीन लोक चौदह भुवन उत्पन्न होतेहैं वह विराट् उसको  
 नहीं जानना चाहियेयहतो विराट् कहेचौरासी लाख योनिकी  
 देहको विराट् मुनियोंने कहेहैं जो देह जीवरिके चैतन्य

श्रोतार ऊचुः ॥ अहंकारेण संग्रस्तो जीवो भवति निश्चितम् । परेच्छया स्वेच्छया च शंके यम्महती च नः १ वाचक उवाच ॥ परेच्छया नैव न चैव स्वेच्छया मानाभि युक्तः प्रबभूव जीवः । कदिन्द्रियाणां नितरां च संगतो विमूढ भावंगमितो निरंजनः २ सुरापात्रे यथा गंगा गंगापात्रे यथा सुरा । अन्योन्या सम्प्रतीतिश्च तथा जीवस्य सज्जनाः ३ इति० भा० तृ० शं० मं० सप्तविंशोऽध्याये सप्तविंशवेणी ॥ २७ ॥ श्लो० २ ॥

होरही है जीवसे हीन नष्ट होजाती है सब इंद्रिय तथा देवता देह में रहते हैं पण जीव बिना नष्ट होजाती है ऐसी देहरूप विराट् जीवको पायकै चैतन्य होगई १।२ इति श्री० भा० तृ० शं० मं० पट्विंशेऽध्याये षडविंशवेणी ॥ २६ ॥ श्लोक ॥ ६१ ॥

श्रोता पूछते भये जीव निश्चय करिकै अभिमानी हो जाता है सो भगवान्की इच्छा करिकै अपनी इच्छा करिकै भ्रष्ट होता है यह हमारे सबके मन में बड़ी शंका है १ वाचक बोले हे श्रोताजनो निरंजन जो जीव है सो न तौ अपनी इच्छा करिकै अभिमानी होता है तथा न भगवान्की इच्छा करिकै अभिमानी होता है खोटी इन्द्रियोंकी नित्यसंगाति करता है उसी संगतिसे मूर्ख होके अभिमानी हो जाता है २ जैसा मदिराके घरतन में गंगाजल रखि जावैगा तौ जल मदिरा नहीं होवैगा जल रहैगा पण मनुष्य मदिरा जानिकै उसको छुवैगे नहीं तथा गंगाजल के घरतनमें मदिरा रखि देवैगा तौ मदिरा गंगाजल नहीं होवैगा मदिरा रहैगा पण मनुष्य जानैगे कि इसमें गंगाजल है इसी प्रकार गंगाजल सरीके जीव मदिराको

श्रोतार ऊचुः ॥ सवीजस्यैवयोगस्यवक्ष्येहलक्षणं  
 शुभम् । इत्युवाचप्रसूम्प्रीत्यानवीजम्प्रोक्तवान्मुनिः १  
 ब्रह्मन्कोयोगवीजश्चकृपांकृत्वावदस्वभो । वाचक उवाच  
 सतांसंगेसतांसंगेयोऽनुरागोविदृश्यते २ निरानुरागः  
 सततंयोगवीजः सउच्यते । नोचेस्वमातरंज्ञात्वामुनिः  
 पक्वहृदं शुभाम् ३ इति० भा० तृ० शं० मं० अष्टविंशे  
 अध्यायेअष्टविंशवेणी ॥ २८ ॥ श्लो० १ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ जननीकपिलेनोक्तासर्वभूतेषुमांस्थि  
 तम् । तिरस्कृत्यार्चतेर्चायांभस्महोतुरिवाफलम् १

पात्र सरीके खोटी इन्द्री तिसकी संगतिसे अभिमानीहोगया  
 ३ ॥ इतिश्री भा० तृ० शं० मं० सप्तविंशेऽध्यायेसप्तविंशवेणी  
 २७ ॥ श्लोक ॥ २ ॥

श्रोताबोले कपिलजी अपनी मातासे बोले कि, हे मैया वीज  
 सहित योगको लक्षण मैं तुमसे कहोंगा ऐसा अपनी मासे  
 कहेंथे पण योगका वीजसहित लक्षणक्यों नहीं कहेंथे हेगुरुजी  
 योगके वीजको लक्षण क्याहै सो कृपा करिकै आप कहो ?  
 वाचक बोले सज्जनोंकी संगति में प्रेम तथा दुष्टोंकी संगति  
 में प्रेम नहीं करना ऐसा विचार करिकै नेत्रसे नित्य भगवान्  
 में स्नेह देखना तथा दुष्टकर्मको दुरादेखना सोई योगके  
 वीजको लक्षणहै कपिलने पेश्तर जानेथेकि, हमारी माता  
 ज्ञानमें कच्चीहै इसवास्ते योगके वीजको लक्षण कहनेकोकहेंथे  
 पीछे संगति किहेपर मालूम करिलियेकि मातातो ज्ञानमें बड़ी  
 पक्की है इसवास्ते योगके वीजको लक्षणनहीं कहें॥ ३ इतिभा०  
 तृ० अष्टविंशे अध्याये अष्टविंशवेणी ॥ २८ ॥ श्लोक ॥ १ ॥

श्रोतापृच्छते भये कपिल मुनि मातासे बोलेकि हेमाता सव

कपिलेनेदृशं वाक्यं कथमुक्तं द्विजोत्तम । अज्ञाश्चैव न्न वे  
दानां वदन्ति वाक्यखंडनं २ वाचक उवाच ॥ सर्व  
ज्ञानासिदं कर्म न त्वपक्वहृदां कचित् । सर्वज्ञा जननी तस्य  
सर्वज्ञः कपिलो हरिः । अतः प्रोयाच स दूब्रह्म व्यापकत्वं  
जगत्पतिः ३ इ० भा० तृ० शं० मं० एकोनत्रिंशे०  
एकोनत्रिंशवेणी ॥ २६ ॥ श्लो० २२ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ पार्श्वध्वागले जीवं विकर्षन्ति यमा  
नुगाः । जीवस्य पुद्गलं नास्ति तदभावे कथं गलम् १

चर अचर जीवोंमें हम टिके हैं हमको तो कोई जानते नहीं  
हमारा अनादर करिके प्रतिमाको पूजन करते हैं उन लोगों  
को कुछ भी फल नहीं प्राप्त होता जैसा राखमें होम करने  
वालोंको कुछ भी फल नहीं होता १ हे मुनियोंमें उत्तम प्रतिमा  
को पूजन वेदको वाक्य मानिके होता है ऐसे वेदोंके वचन  
को छेदन मूर्खभी नहीं करेंगे तथा कपिल मुनि बड़े ज्ञानी  
होके वेदोंके वचनको छेदन क्यों किया कि प्रतिमाको पूजन  
नहीं करना २ वाचक बोले सय देहमें ईश्वरको मानना कि  
ईश्वर सब देहमें टिके हैं यह ज्ञानियोंके कर्म हैं ऐसा मानने  
वाले प्राणी प्रतिमाको नहीं मानेंगे यह कर्म अज्ञानीको  
नहीं है अज्ञानीको कर्म प्रतिमाको पूजन है कपिलकी माता  
ज्ञानी है तथा कपिल ज्ञानी हैं इसवास्ते ऐसा ब्रह्मज्ञानका  
वाक्य कहे हैं अज्ञानीके वास्ते नहीं कहे ३ इति श्री भा० तृ०  
नि० मं० एकोनत्रिंशवेणी ॥ २६ ॥ श्लोक ॥ २२ ॥

श्रोता पूछते भये कपिल मुनि अपनी मासे कहते भये कि  
यमराजके दूत यमके पाश करिके जीवके गलामें बांधिके

वाचक उवाच ॥ वायुनावर्द्धितो देहः कथ्यते पांचभौतिकः । चतुर्णां गुणता देहे वायुः प्रत्यक्षचारितः २ स वायुर्जीवसहितो निर्वायुर्मृतकोच्यते । स्वस्वबुद्ध्यनुसारेण वदन्तिकवयस्सदा ३ वायुरेव शरीरेऽस्मिन् जीव इत्यभिधीयते । वायोः सर्वाणि चांगानि शास्त्रे प्रोक्तानि भूरिशः । तस्मात्पाशैर्गले बध्वा कर्षन्ति यमार्किकराः ४ इ० भा० तृ० शं० मं० त्रिंशोऽध्याये त्रिंशवेणी ॥ ३० ॥

लोक २० ॥

यसीटते २ यमपुरीमें जीवको ले जाते हैं यह बड़ी शंका है कि जीवके देह नहीं है बिना देह गल कैसे भया जिसमें बांधिके सब जीवको यमपुरी को ले जाते हैं १ वाचक बोले पृथ्वी जल अग्नि वायु आकाश इन पांचके अंश करिके चौरासी लाख पौनिकी देह बनी है परन्तु प्रत्यक्ष देखनेमें वायु करिके देह वर्द्धित होती है पृथ्वी जल अग्नि आकाश ये चारितो देह में प्रत्यक्ष देख नहीं परते और वायु प्रत्यक्ष मुखमें नाकमें गुदा में चलता देखता है २ जबतक देहमें वायु चलती है तबतक देह जीवती कहलाती है वायुको चलना बंद भया कि देह मरी कहा वैगी जीव की धार्ताको कविजनोंने अपनी २ बुद्धि माफिक वर्णन किये हैं ३ परन्तु सब शास्त्रों का भी ऐसा मत है कि इस शरीर में वायु जो है सोई जीव है वायुके अंश करिके देहके सब अंग चैतन्य रहते हैं इसवास्ते यमदूत वायुरूप जीवके गलेमें यमके फांससे बांधिके उसी वायुरूप जीवको यमपुरीमें ले जाते हैं ४ इति० भा० तृ० शं० मं० त्रिंशोऽध्याये त्रिंशवेणी ॥ ३० ॥ श्लोक ॥ २० ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ भुक्त्वायमपुरीदुःखंरेतोभूत्वाकणा  
 श्रयः । पुंसः प्रविशतेकालेस्त्रियश्चोदरमंडले १ इत्युक्तं  
 महदाश्चर्यं कपिलेन श्रुतं च नः । कथम्भवति जीवस्य रूपं  
 जलनिभम्प्रभो २ गलित्वाधातुवत्केन प्रविष्टः प्रमदो  
 दरम् । वाचक उवाच ॥ वायुरूपस्य जीवस्य सर्वत्रगम  
 नसदा ३ प्रविष्टस्सर्वभूतेषु सूक्ष्मेणैव चराचरे । अतो वै  
 पुद्गलं वायोर्भुक्त्वा दुःखं मालये ॥ भूत्वा तोयनिभं रेतः  
 प्रविष्टः प्रमदो दरम् ४ इति० भा० तृ० शं० नि० मं०  
 एकत्रिंशोऽध्याये एकत्रिंशवेर्णी ॥ ३१ ॥ श्लो० १ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ पितृन्यजं तिसर्वैकमात्मानो जिते  
 द्रियाः । कपिलोक्तिरियं ब्रह्मन् हरिं विस्मृत्य संततम् ।

श्रोता पृच्छते भये हे प्रभुजी, कपिल अपनी माता से कहे कि  
 जीवयमपुरी में दुःख को भोग करिके पुरुष के रेत स कहे धीर्य  
 होके स्त्री के उदर में प्रवेश करता है १ ऐसा हम सब सुने हैं  
 वड़े आश्चर्य की बात है कि वायुरूप जीव सो शीसारांगा सरीके  
 गलिके जलरूप कैसे हो गया २ वाचक बोलते भये वायुरूप जीव  
 को नित्य सब चीजों में जाना होता है सब चीजों में चर अचर  
 में सूक्ष्म रूप होके प्रवेश करता है ३ इसी वास्ते वायु को देह रूप  
 जीवयमपुरी में दुःख भांगिके जल सरीके होके स्त्री के उदर में  
 प्रवेश करता है क्योंकि वायु तो सब में जीव है तब तैसारु  
 धरिके घसिजाता है ॥ ४ ॥ इति श्री भा० तृतीय स्कंधे शं० नि  
 मंजरीया एकत्रिंशोऽध्याये एकत्रिंशवेर्णी ॥ ३१ ॥ श्लोक ॥ १

श्रोता पृच्छते भये हे गुरुजी कपिल भगवान् अपनी माता से  
 देवहूती तिस से कहे कि सब प्राणियों ने संसार को काम सिंहा  
 दाने वास्ते दुष्ट इन्द्रियों के घश होके नित्य ईश्वर को भूषि

सांख्यवेत्ताकथंचैतत्प्रोक्तवान्भेददृष्टिवत् १ वाचक उवाच ॥ पितृरूपो हरिः प्रोक्तो मुनिभिस्सांख्यकोविदैः । स्वस्वरूपे भेददृष्टिं कुरुते कपिलः कथं २ भगवद्भक्तिपुष्ट्यर्थं नराणां सुखहेतवे । उवाच कपिलः स्निग्धं वचनं भेददृष्टिवत् ३ इ० भा० तृ० शं० मं० द्वात्रिंशे० द्वात्रिंशवेणी ॥ ३२ ॥ श्लोक १७ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ त्रिलोकाधिपतिर्विष्णुर्भगवान्कपिलो हरिः । कथं वभूव भो ब्रह्मन् सिंधुदत्तार्हकेतनः १ वाचक उवाच ॥ संस्थापनाय सांख्यस्य कपिलोऽवततार ह ।

पेटरोंको पूजन करते हैं ऐसा भेदरूप वचन सांख्ययोग के जाननेवाले कपिल क्यों कहे सांख्ययोगवाले चरधचरको एकसम देखते हैं १ वाचक बोले सांख्ययोगके जाननेवाले मुनियोंने कहे हैं कि, पितरजो है सो ईश्वरको रूप है तब भगवान् के रूपजो पितर तिसमें भेद कहे पितर और हैं भगवान् और हैं ऐसी दृष्टि कपिल क्यों करेंगे परन्तु २ ऐसा वाक्य इस वास्ते कहें हैं कि जरा भेद कि हे से भगवान्में मनुष्योंको प्रेम वढ़ेगा तो मनुष्य सुख पावेंगे तथा भगवान्की भक्तिको पुष्ट हो जावेगी कि किसी गामको जाना भया तो भटकना क्यों किसीसे सुंदरि रस्ता पूछिके गामको चले जाना तेसे वाक्य कपिल मुनि कहें हैं भेदरूप वचन नहीं कहे ॥ ३ ॥ इ० भा० तृ० शं० मं० द्वात्रिंशेऽध्याये द्वात्रिंशवेणी ॥ ३२ ॥ श्लोक ॥ १७ ॥

श्रोता पृथक्ते भये हे गुरुजी तीन लोकको मालिक कपिल भगवान् सो समुद्रको दीथकी भूमिमें क्यों टिकके तप करते षण् गरीब होता है सो चीज दूसरेसे मांगता है १ वाचक बोले



यथेच्छन्तिप्रजाः सर्वास्तत्सर्वंकुरुतेहरिः । जग्राहात्  
स्सिंधुदत्तंसम्यगर्हणिकेतनम् २ इ० भा० तृ० शं० नि०  
त्रयस्त्रिंशोऽध्याये त्रयस्त्रिंशवेर्णा ॥ ३३ ॥ श्लो० २४ ॥

सांख्ययोगनष्ट होगयाथा तिस सांख्ययोग को प्रगट करिकै  
पृथ्वीमें सांख्ययोगकेटिकाने वास्ते भगवान् कपिल अवतार  
धारणकिहेहैं जैसा चर अचर प्राणी प्रसन्नहोकेँ शुभकर्म करेंगे  
तैसा भगवान् भीकर्म करेंगे किसी जीवमात्रको दुःख नहीं  
देवेंगे इसवास्ते समुद्रको दिया मकान तथा पूजन ग्रहण करते  
भये ॥ २ ॥ इ० भा० तृ० शं० मं० त्रयस्त्रिंशोऽध्यायेत्रयस्त्रिंशवे०  
॥ ३३ ॥ श्लोक ॥ २४ ॥

इति श्रीभागवततृतीयस्कंधशंकानिवारणमंजरी  
समाप्ता ॥ श्रीरस्तु ॥

भीमेशायनमः ॥

# श्रीमद्भागवतशंकानिवारणमंजरी ॥

चतुर्थस्कन्धे ॥

सुधामयी टीका सहिता विरच्यते ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ ब्रह्मविष्णुशिवाः प्रोचुर्भुनिसंकल्प  
सिद्धये । तदर्थं च वयम्प्राप्ता यथातेमानसेकृतः १ सस्सं  
त्पश्यकोब्रह्मन् मानसेयोत्रिणाकृतः २ वाचक उवाच ॥  
तजापप्रणवन्नित्यं ज्ञात्वा तं त्रिगुणात्मकम् । तदात्मकं  
मुतं वाञ्छन्नेहार्हं विचार्य च । मनसा चिन्तितं गुप्तं बभू  
वुस्तनयाश्रिते ३ इति श्रीभा० चतुर्थस्कन्धेशंकानिवारण  
मंजरी ॥ १ ॥ श्लो० ॥ २० ॥

श्रोतापूछते भये हे गुरुजी ब्रह्मा विष्णु शिव अग्नि मुनिसे  
कहेकि जो संकल्प आपने मनमें करिके तपस्या कियोहै उसी  
संकल्प की सिद्धि होनेवास्ते हम तीनों जन आपुके सामने  
प्राप्त भयेहैं ? हे वाचक अग्नि मुनिने अपने मनमें यों संकल्प  
करिके तपस्या किया सो क्या संकल्पहै जिसको अग्नि गुप्त  
राखे तथा विष्णु शिवभी गुप्तराखें २ वाचक बोले अग्निमुनि-  
जी ॐकार अक्षरको ब्रह्मा विष्णु शिवका रूप जानिके तथा  
ॐकारको रूप ब्रह्मा विष्णु शिवको अपना पुत्र होने वास्ते  
ॐकार अक्षरका जपकरते भये गुप्तकरिके ब्रह्मा विष्णु शिव

श्रोतार ऊचुः ॥ मर्यादारक्षकश्शम्भुर्दृष्ट्वादक्षंसमा  
गतम् । स्वासनात्कथमुत्तस्थौ नसतीपितरं यदा १  
वाचक उवाच ॥ दक्षेण निदितास्सर्वे सज्जनाश्चमहीतले ।  
महामानाभिमतनेन प्राप्तराज्येनभूरिशः २ सज्जनैः प्रा  
र्थितो देवस्तन्मानं नाशकारणे । बीजमुत्पादितुं शम्भु  
र्नोत्तस्थावागतन्द्भिजम् ३ इति० भा० च० शं० मं० द्वि  
तीयेऽध्याये द्वितीयवेणी ॥ २ ॥ श्लो० ॥ ६ ॥

अत्रिके हृदयको अर्थ विचारि कै तीनों देवता अत्रिके पुत्र  
होते भये ३ इ० भा० चतुर्थस्कंधे शंकानिवारणमंजर्या शिव-  
महाय बुध विरचितायां सुधामयी टीकासहितायां प्रथमेऽध्याये  
प्रथमवेणी ॥ १ ॥ श्लोक ॥ २० ॥

श्रोता पूछते भये कि शास्त्रों में लिखा है कि ससुर को पिता  
सरीके मानना चाहिये ऐसी मर्यादाके रक्षण करनेवाले जो  
शंकर सो ब्रह्मा की सभामें दक्ष जो सतीको वाप तथा शिवको  
ससुर तिसको देखिके अपने आसनसे क्यों नहीं उठते भये यह  
बड़ी शंका है १ वाचक बोले जब बड़ाराज दक्षको प्राप्त हुआ  
तब दक्ष सब सज्जनोंकी निंदा रातिदिन करता भया बड़ा मस्त  
होगया पृथ्वी में दक्ष २ तब सब सज्जन दक्षको अभिमाननाश  
करने वास्ते शिवकी बिनती करते भये तब शिवजी दक्षके  
मानको नाश करनेको बीज उत्पत्ति करनेवास्ते सभामें आया  
जो दक्ष तिसको देखिके नहीं उठे विचार किहे कि इसको  
देखिके हमको अपने आसनसे उठना चाहिये हम नहीं  
उठेंगे तो यह अभिमानसे हमको खोटा बचन कहेगा तब  
इसके अभिमानको हम नाश करि देंगे ॥ ३ ॥ इति० भा०  
च० शं० मं० द्वितीयेऽध्याये द्वितीयवेणी ॥ २ ॥ श्लोक ॥ ६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ योद्वेष्ट्यभ्यागतान्पापी मदमान  
मोहितः । सस्त्याज्येतिशिवप्रोक्तः केतेऽभ्यागतसत्त  
॥ १ वाचक उवाच ॥ कर्हिचिद्येनजानन्ति देहसौर्यं  
वेदक्षणाः । तेऽभ्यागताः पुनन्ती मंलोकंचसचराचरम् २  
[ति० भा० च० शं० मं० तृतीयेऽध्याये तृतीयवेणी ३ श्लो० ३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ निरीक्ष्यसासतीयज्ञे पित्राशंकरहे  
जनम् । कृतन्दत्तेणकितत्र हेलनंगिरिजापतेः १ वाच  
क उवाच ॥ लिलेखस्तंभमध्ये च योवदेदत्रशंकरम् ।  
सयज्ञवाह्योभविता यदिसाक्षात्पितामहः २ त्रसिता

श्रोता पूछते भये सतीसे शिवजी कहें कि, जो प्राणी अभिमान  
करिके अभ्यागतोंसे द्रोह करता है इसवास्ते उस पापीको  
त्याग करना चाहिये उससे बोलना आदिलेकै सब कामों में  
दुष्टको त्यागि देना चाहिये जिन अभ्यागतोंका ऐसा उत्तम  
माहात्म्य है वह अभ्यागत कौन हैं इस भ्रमको नष्ट करो १ वाचक  
बोले जो प्राणी कभी भी देहके सुख दुःखको नहीं जानते तथा  
भजन करने में बड़े चतुर हैं ऐसे मनुष्योंकी अभ्यागत संज्ञा  
है ये अभ्यागतलोग क्षणभरमें इन तीन लोकों को पवित्र कर  
ते हैं ॥ २ ॥ इति० भा० च० शं० मं० तृतीयेऽध्याये तृतीयवेणी ३ ॥  
श्लोक ॥ ३ ॥

श्रोता पूछते भये दक्षने अपनी यज्ञमें शिवकी निंदा करने  
वास्ते क्याचिन्ह करि राखाथा जिस चिन्हको देखिके सती  
भस्म होगई १ वाचक बोले दक्षने अपनी यज्ञमें एक खंभामें  
अपने हाथसे ऐसा लिखे थे कि सबके वास्ते सूचना किया  
जाता है कि, इस हमारी यज्ञमें जो कोई प्राणी शिवको नाम  
मुखसे उच्चारण करेगा सो प्राणी उसी वखत यज्ञके बाहर

मुनयःसर्वे भावित्वान्नोन्तरन्ददुः । इदंतद्धेलनंदष्ट्वा सती  
क्रोधंसमाददे ३ इति श्रीभा० च० शं० मं० चतुर्थेऽध्याये  
चतुर्थवेणी ॥ ४ ॥ श्लो० ॥ ६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ रक्षितो वेदमंत्रैश्च यज्ञः परमपावनः ।  
ते मंत्रास्तं कथन्नैव ररक्षुर्वेदरूपिणः १ वाचक उवाच ॥  
ते निरीक्ष्य सती देहत्यागं द्विजवरास्तदा । भविष्यज्ञा  
श्च त्वरितं चक्रुर्मंत्रविसर्जनम् २ इति० भा० च० शं० मं०  
पंचमेऽध्याये पंचमवेणी ५ श्लो० ॥ १३ से २६ तक ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ उवाच शंकरं ब्रह्मा यज्ञोच्छिष्टं तवा

निकाला जावैगा जो कदापि हमारा पिता ब्रह्माभी यज्ञमें  
शिवको नाम लेवेंगे तो वोभी यज्ञके बाहर निकाले जावेंगे  
और दूसरे प्राणीकी क्या बात है २ भावी के जोरसे सब मुनि  
भी दक्षसे डरते भये इसीवास्ते उत्तर दक्ष को नहीं दिहेकि  
दुष्ट ऐसा अन्याय क्या करता है ऐसी शंकरकी निंदा खंभा  
में लिखी हुई सती देखिके क्रोध करिके भस्म होगई ॥ ३ ॥  
इति० भा० च० शं० नि० मं० चतुर्थेऽध्याये चतुर्थवेणी ॥ ४ ॥  
श्लोक ॥ ६ ॥

श्रोता पूछते भये दक्षकी यज्ञको ब्राह्मणोंने वेदके मंत्रों  
करिके रक्षा किये तो जब वीरभद्रने यज्ञको नाश करने लगे  
तब वो वेदके मंत्र वेदरूप होके यज्ञकी रक्षा क्यों नहीं करते  
भये १ जब सती भस्म होगई तब मुनियोंने सतीकी देहको  
भस्महुई देखिके भविष्यके जाननेवाले उनसर्वोंने जानिलिये  
कि यज्ञजल्दी अष्टहोगा देर नहीं है ऐसा जानिके बड़ी जल्दी  
से वेदमंत्रोंको विसर्जन करि देते भये ॥ २ ॥ इति० भा० च० शं०  
मं० पंचमेऽध्याये पंचमवेणी ॥ ५ ॥ श्लोक ॥ १३ से २६ तक ॥

स्तुवै । भागस्तेपार्वतीनाथ तंजग्राहकथंशिवः १ वाच  
 कउवाच ॥ भक्ष्यावशिष्टन्नह्यत्र शब्दशास्त्रप्रमाणतः ।  
 सर्वेचराचरेनष्टेयदुर्ध्वविशिष्यते २ तदुच्छिष्टमितिख्या  
 तं स्वानन्दसुखमुत्तमम् । तंवैयजनशीलश्च यज्ञःसंसार  
 उच्यते । तस्मिन्विनष्टेयच्छेषं तद्भागं पार्वतीपतेः ३ इति ०  
 भा० च० शं० मं० षष्ठेऽध्यायेषष्ठवेणी ६ श्लो० ॥ ५३ ॥  
 श्रोतारुचुः ॥ अहम्प्रजेशवालानामघं नैवानुचिं  
 तये । शंकरोक्तिरियम्ब्रह्मन्कथंयज्ञविनाशनम् १ वाचक

श्रोता पृच्छतेभये ब्रह्मा शिवसेकहे कि हे पार्वती नाथ यज्ञ  
 में जो वस्तु सबके खानेमें भोगनेमें बचेसो तुम्हाराभाग ऐसी  
 बुरीचीज शिवजगत्पति होकै क्यों ग्रहण करतेभये १ वाचक  
 बोले व्याकरण शास्त्रके प्रमाणते उच्छिष्ट इस शब्दको जुठा  
 अर्थ नहीं होवैगा उच्छिष्ट शब्दको यह अर्थ है कि, सबतीन  
 लोक चौदहभुवन में चर अचर सब नाशभयेपीछे चीज उत  
 कहे सबके ऊपर बाकी रहे २ अपनी आत्मामें आनंदरूप  
 ब्रह्म तिसकी उच्छिष्टसंज्ञा है उस आनंदरूप ब्रह्मके भजन  
 करनेमें स्वभावहै जिसको तिसको यज्ञ कहना यज्ञनाम संसार  
 को है उस यज्ञरूप संसारको नाशभयेपर जो ब्रह्म आनंद  
 बाकी रहता है सो भागशिवको है ब्रह्माकहे कि हे शिव आपु  
 ब्रह्मानंदहो मुखोंके कर्मको नहीं यादिकरना चाहिये ३  
 इति भा० च० शं० मं० षष्ठेऽध्यायेषष्ठवेणी ६ श्लो० ॥ ५३ ॥

श्रोता पृच्छतेभएकिब्रह्मासे शिवजीकहे कि ब्रह्मामुखों के  
 कर्मोंकोहम चिंतवननहीं करते भलाबुराकर्मजोमुखहमारवास्ते  
 करतेहैं सोसबहम सहिजेतेहैं तब दक्षको बुराकर्म समुझिकै  
 दक्षकी यज्ञको नाश क्यों करतेभए १ वाचकबोले शिवविचार

उवाच ॥ महाघकारीदक्षश्चमानीसर्वविनिन्दकः । यदि  
नप्राप्स्यतेदंडन्तदारक्षोभावप्यति । एतदर्थंमहादंडं  
ददौभुनपतिर्द्विजम् २ इति० भा० च० शं० मं० सप्तमे  
ध्याये सप्तमवेणी ॥ ७ ॥ श्लो० ॥ २ ॥

श्रोतारञ्जुः ॥ कपित्थवदरीशुष्कतृणपर्णकृताशनैः ।  
अव्वायुनाकृताहारश्चत्वारः प्रथामादयः १ वभूवैतै  
श्शरीस्यनतृर्तिर्भोजनैर्गुरोः । उपवासव्रतश्चापिभ्रष्टाभूत्  
उचकेवलम् । नचकारकण्डीमान्ध्रुवोऽस्माकंभ्रमोम  
हान् २ वाचकउवाच ॥ धर्मशास्त्रप्रणीतेयंवाणीसिद्धा

किहेकिदक्षबड़ापापीहै अभिमानीहै सब जीवमात्रकी निंदा  
करताहै ऐसा दक्ष दुष्टहो रहा है जो दंडको नहींप्राप्त होगातो  
वृद्धकर्मछोड़िके राख्सहो जावेगा-ऐसी कृपाकरिकैशिवने दक्ष  
की यज्ञको नाश करिकै दंड देते भए दक्षको वुराकर्म समुक्ति  
कैयज्ञको नाश नहीं किये २ इति० भा० च० शं० नि० मं० सप्तमे  
ध्याये सप्तमवेणी ॥ ७ ॥ श्लोक ॥ २ ॥

श्रोता पृछते भये ध्रुवको यड़ातप करते करते मास चार ४ बीति  
गये पहिले महीनामें तीसरे २ दिन कवीठ तथा बौर को  
फल खायकै तप किहे दूसरे महीना छठयें २ दिन सूखा चारा  
तथा पत्ता खायकै तप किहे तथा तीसरे महीना नवमें २ दिन  
जलमाशा ६ पीके तप किहे तथा चौथा महीना बारहें २ दिन  
वायु पीकै तप किहे १ हे गुरुजी कवीठ बदरीफल सूखा चारा  
जल वायु इन भोजनों करिकै ध्रुवके शरीर में भूखभी नहीं  
गई तथा उपवासको व्रतभी भ्रष्ट होगया तब इन फलोंको  
छोड़िकै कोरा उपवासई करिकै ध्रुवने तप क्यों नहीं किये यह  
हमारे सबके मनमें बड़ी शंकाहै दो श्लोक को अर्थ मिजाहै

सनातनी । यज्ञोपवीतहीनैश्चेदुपवासकरैस्तपः ३  
 कृतं द्विजैर्न तत्सिद्धिं गमिष्यति कदाचन । एतद् ज्ञात्वा  
 ध्रुवश्चक्रैतृणपर्णाशनं सुधीः ४ इति० भा० च० शं०  
 मं० अष्टमेऽध्यायेऽष्टमवेणी ॥ ८ ॥ श्लो० ॥ ७२ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ प्रथमं हृदिसन्दृष्ट्वा पश्चात्सन्निधि  
 मास्थितम् । बभूवा तद्विदो ब्रह्मन्ध्रुवो वीक्ष्य हरिकंथम् १  
 वाचक उवाच ॥ बालः पित्रा च सन्त्यक्तो दुःखितो हर्निशं  
 तथा । प्रेमाश्रुणा वद्धगिरस्स्तोतुन्नैवाशकच्छिशुः । चि  
 त्रेव संस्थितो भत्वासोऽस्तोऽस्तद्विद उच्यते २ इ० भा० च०  
 ग० मं० नवमेऽध्याये नवम वेणी ॥ ६ ॥ श्लोक ॥ ४॥  
 गम है २ वाचक बोले कि हे श्रोताजनो सुनो यह वचन धर्मशा-  
 स्त्र में लिखा है कि ब्राह्मण क्षत्री वैश्य जो यज्ञोपवीत नहीं लिहे  
 १ वेगेंगे तो बिना जनेऊ पहिरे उपवास करिके तप करेंगे ३  
 ॥ उस तपकी सिद्धि नहीं हाँवेगी बड़े बुद्धिमान् ध्रुवने ऐसा  
 गानिके चारा तथा पत्ता खायके तप करते भये ऐसे भोजन  
 के हेपर उपवास भी नहीं भया तथा तृप्ति भी नहीं भई ४ इति  
 गी भा० च० शंकानिवारणमंजरी अष्टमेऽध्याये अष्टम  
 वेणी ॥ ८ ॥ श्लोक ॥ ७२ ॥

श्रोतापूछते भये कि ध्रुवने भगवान् को पेशतर अपने हृदय  
 में देखिके फिर तुरन्त अपने सामने भगवान् को खड़ा देखिके  
 करि मूर्ख क्यों होते भये भगवान् को जरा नाम लेते हैं सो ज्ञानी  
 १ जाते हैं और ध्रुवतो दर्शन किये पीछे फिर मूर्ख क्यों रहा १  
 वाचक बोले पाँचवर्षके ध्रुवको पिता त्यागि दिया इस वास्ते  
 १ ति दिन ध्रुव दुःखी होते भये तथा भगवान् को देखिके  
 १ मसे ध्रुवकी आँखोंसे जल बहने लगा तिस जल करिके ध्रुव



श्रोतार ऊचुः ॥ श्रुत्वोत्तमस्य मरणान्ध्रुवो यत्तगणैः  
 कथम् । महद्युद्धं चकारो ग्रमज्ञवद् भगवात्प्रियः । रा  
 ज्यार्थं क्षत्रियाणाञ्च युद्धो भवति शोभनः । वाचक उवाच ।  
 ज्ञात्वापि कुत्सितं युद्धम् भ्रातुर्मरणकारणम् । तथापि लौ  
 किकं वीक्ष्य क्षत्रियाचरणं सुधीः । यत्तैर्युद्धं चकारो ग्रम  
 गवद्वत्सलोऽपि सः २ इति श्री भा० च० शं० मं० दशमेऽ  
 ध्याये दशमवेणी ॥ १० ॥ ॥ श्लो० ॥ ५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ परमाश्चर्यमेतद्विद्वत्वाय क्षान्ध्रुवश्च  
 से बोलि नहीं गया इस वास्ते भगवान् की स्तुति भी बालक  
 जो ध्रुव सो नहीं करि सके इस वास्ते अतद्विद्वत्वास मुनि ध्रुव को  
 कहें हैं २ इति श्री भा० च० शं० मं० नवमेऽध्याये नवमवेणी ॥  
 श्लोक ॥ ४ ॥

श्रोता पूछते भये कि हे गुरुजी ध्रुवने अपना भाई जो उत्तम  
 तिसके मरणको सुनिके कुबेरके संग बड़ा युद्ध मूर्खसरीके  
 क्यों करते भये भगवान् को प्यारा होके विचारसे हीन काम  
 करना यह बड़ा आश्चर्य है तथा राज्य के वास्ते क्षत्रियोंको  
 युद्ध करना यह बड़ी शोभा है बिना प्रयोजन युद्ध करना यह  
 मूर्खता है १ वाचक बोले भाईके मरणको कारण मानिके युद्ध  
 करना क्षत्रियोंको निंदित है ऐसा ध्रुव जानते रहे तो भी लोक  
 की निंदाको डरे कि संसार कहेंगा कि इनके भाईको यक्षोंने  
 मारि डारा इनने कुछ भी यक्षोंको घास नहीं दिये यह कादर  
 पना क्षत्रियोंको नहीं करना चाहिये ऐसे लोकमें निंदा के  
 डरसे भगवान् के ध्रुव प्यारे हैं तो भी यक्षोंके संग युद्ध करते  
 भये २ इति० भा० च० शं० मं० दशमेऽध्याये दशमवेणी ॥  
 १० ॥ श्लोक ॥ ५ ॥

तान् । परंलोकन्निनायाशुयम्ब्रजत्यूर्ध्वरेतसः १ ब्रह्म  
न्युद्धेहतानांचस्वर्गो भवति निश्चितम् । नह्यूर्ध्वरेतसांलो  
कः कपालभेदिनांतथा २ वाचक उवाच ॥ हतानारा  
यास्त्रेणतत्स्पर्शान्निविशेषतः । अपितर्त्तिककरालोकायक्षाः  
प्राप्ताः परम्पदम् ३ इति भा० च० शं० मं० एका  
दशेऽध्याये एकादशवेणी ॥ ११ ॥ श्लो० ॥ ५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ अनेकेभगवद्भक्तावभूवुर्भुवनत्रये ।

कैश्चापि पदन्दत्त्वामृत्योर्मूर्ध्नि पदंहरेः १ सम्प्राप्तं कल्प

श्रोतापूछते भये बड़ा आश्चर्य यह होता है कि भुवने यज्ञों  
१ मारिके योगियों के लोकको प्राप्त करदिये १ हे गुरुजी  
१ प्राणी युद्धमें मरिजाते हैं उनको स्वर्ग प्राप्त होता है परंतु  
झांडमें प्राणको राखनेवाले तथा ब्रह्मांड को फोरिके परम  
पदको जानेवाले मुनियों के लोकको युद्धमें मरे हुए प्राणी क-  
१ भी नहीं जा सकेंगे भुव यज्ञोंको कैसे उसलोकको भे-  
ते भए २ वाचक बोले भुवजी यज्ञोंको नारायण अस्त्र करि  
१ मारते भए तथा नारायण अस्त्र यज्ञोंकी देहमें लुइ गया  
नारायण अस्त्रके मारेसे तथा उसी अस्त्रको लुइके तथा भग-  
वान्को दास भुव तिसको देखिके यज्ञोंने प्राणको छोड़  
दिया इसवास्ते परमपदको यज्ञ जाते भये ३ इति श्री भा०  
तुर्थस्कंधे शं० मं० एकादशेऽध्याये एकादशवेणी ॥ ११ ॥  
लोक ॥ ५ ॥

श्रोतापूछते भये तीनलोक में अनेक प्रकारके भगवान् के  
भक्त भए परंतु कोई भी भक्त ऐसा नहीं भया कि जो का  
की मस्तकको पगोंसे दाविके भगवान्के लोकको गया होवे  
कल्प कल्पांत तप करते १ मुनियोंको जीतिगये हैं पण कालका

कल्पांतंतपश्चरणकारकैः । ध्रुवश्चमहदाश्चर्यकथंकृत्वा  
 पदङ्गतः २ वाचक उवाच ॥ तपतान्नध्रुवश्च्रेष्ठोनापि  
 भरितरन्तपः । चक्रे निःकाशितं ज्ञात्वा पित्रा बालं कृपा  
 निधिः ३ तस्योपरि कृपां चक्रे चातोदत्त्वा पदंगतः ।  
 मृत्योर्मूर्ध्नि ध्रुवो दीनो योगागम्यं हरेः पदम् ४ इति० भा०  
 च० शं० मं० द्वादशेऽध्याये द्वादशवेणी ॥ १२ ॥  
 श्लो० ॥ ३० ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ अंगस्य हयमेधे च न गृहीतानि दैव  
 तैः । स्वस्वभागान्यतः प्रोचुर्द्विजा अंगन्त्वमप्रजाः १  
 अतो भागं न गृह्णंति सुरास्ते यजने नृप । तत्कथं बहुभि  
 मस्तकको पगसे दाविके कोई मुनिभी परंपदको नहीं गया  
 ध्रुवने बड़ा आश्चर्य किया कि थोरा दिन तपकरिके कालकी  
 मस्तकको पग से दाविके भगवान् के लोकको गये बड़ी  
 शंका होती है २ वाचक बोले तपस्वियों में ध्रुव बड़े तपस्वी नहीं हैं  
 तथा बहुत तपस्या भी ध्रुव नहीं किहे परन्तु भगवान् कृपाके  
 सागर हैं जानि लिये कि ध्रुव बालक है इसके पिताने घरसे  
 इसको निकाल दिया ध्रुवके पिता हमी है ३ ऐसा भगवान्  
 जानिके ध्रुवके ऊपर ईश्वर कृपा करते भये उसी कृपाके प्रभाव  
 से ध्रुव कालकी मस्तकको पगसे दाविके भगवान् के परमपदको  
 जाते भये ॥४॥ इति श्री भा० च० शं० मं० द्वादशेऽध्याये द्वादशवेणी  
 १२ ॥ श्लोक ॥ ३० ॥

श्रोता पूछते भये कि राजा अंगने अश्वमेध यज्ञ किया तब उस  
 राजा अंगको अश्वमेध में देवता अपना २ भाग नहीं ग्रहण  
 किहे तब ब्राह्मणों ने अंगको कहे कि राजा तुमारे पुत्र नहीं है  
 १ इसवास्ते तुमारी यज्ञमें देवता भागको नहीं ग्रहण करते

श्चान्यैरप्रजैर्यजनंकृतम् २ वाचक उवाच ॥ स्वकुला  
चारसंयुक्ताभपाश्चान्येविवेकिनः । अप्रजैश्चापितैर्दत्तं  
भागमात्तंसुरैस्तदा ३ अंगोअष्टकुलाचारस्सुनीथारति  
लालसः । अतोनात्तस्सुरैर्भागश्चाप्रजेनार्पितस्तदा ४  
इति० भा० च० शं० मं० त्रयोदशेऽध्यायेत्रयोदश  
वेणी ॥ १३ ॥ श्लो० ॥ ३१ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ ज्ञात्वातंदुर्मर्तिवेनंमुनयः पृथिवी  
पतिम् । चक्रुःपुनश्चतंभस्मचक्रिरेशापतःकथं१वाचक  
क्योंकि निर्वंशीके हस्तको जल अन्न पितर तथा देवता नहीं  
ग्रहण करते हे गुरुजी तो फिर और अनेक राजा निर्वंशी  
यज्ञकरतेरहेहैं तो उनराजों की यज्ञमें देवता भाग क्यों ग्रहण  
करते भये यह बड़ी शंकाहै२ वाचकाबोले अंगसे दूसरेगनती  
से हीन राजा अपने अपने कुलके धर्ममें निपुणथे बड़े विवेक  
मानथे इसवास्ते पुत्र करिकै हीनथे तोभी उनराजों करिकै  
दिया जो यज्ञमें भाग तिसको देवता ग्रहणकरते भये ३ और  
अंग राजा सुनीथा जो अंगकी स्त्री तिसके संग रातिदिनभोग  
की इच्छा करिकै अपने कुलके धर्मको अष्टकरिदिया नीचबुद्धि  
होगया इसवास्ते अंगको पुत्रहीन जानिकै अंगको दियाभाग  
देवतोंने नहींग्रहणकिये ४ इति० भा० च० शं०मं० त्रयोदशे  
ऽध्यायेत्रयोदशवेणी ॥ १३ ॥ श्लोक ॥ ३१ ॥

श्रोतापूछतेभये हेगुरुजी मुनियोंने वेनकोदुष्टजानिकेपृथ्वी  
को राजा करतेभये फिरिराजावनायकै वेनकोभस्ममुनिलोग  
क्यों करतेभये बालक सरीके तमाशाभया जो कोई कहै कि,  
राजपायकै वेनने सबको दुःखदिया तो वेनकोदुष्टतोपहिजेही  
जानिकै मुनि जन राजदिहैं १ वाचकबोले ब्राह्मणों ने ऐसा

उवाच ॥ ज्ञात्वेतिसङ्गतिम्प्राप्यसज्जनानामयन्त-  
पः । सुबुद्धिर्भवितासुज्ञोऽप्यतोराज्यं द्विजाददुः २ न  
चक्रेशासनं तेषामतश्चक्रुश्चभस्मसात् ३ इति० भा०  
च० शं० मं० चतुर्दशेऽध्याये चतुर्दशवेणी ॥ १४ ॥  
श्लो० ॥ २ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कथन्दुष्टशरीराच्चसंजातः कमला-  
पतिः । नाविर्भावो भगवतो भूमिसम्पीडनं विना १ वाचक  
उवाच ॥ वेदमंत्रेण तद्देहशुद्धिं चक्रुर्द्विजोत्तमाः । तस्मा-  
ज्जातो जगन्नाथ शशीघ्रं वेन विना शिताः । प्रजावीक्ष्य महा-  
दुःखं पीडिताः कृपाया हरिः २ इति भा० च० शं० मं०  
पंचदशेऽध्याये पंचदशवेणी ॥ १५ ॥ श्लो० ॥ २ ॥

विचार किहेथे कि वेन राजा होवैगा तो बड़े बड़े महात्मा लोगों  
की संगति पायके बड़ा ज्ञानी बड़ा बुद्धिमान् होजावैगा इसवास्ते  
मुनि वेनको राजदेते भये २ वेन राजको पायके महात्मा लोगोंकी  
आज्ञा नहीं किया उनको बहुत दुःख भी देने लगा तो राजदेनेवाले  
मुनिजन वेनको शाप करिके भस्म करिदेते भये ३ इति श्री भा०  
च० शं० मं० चतुर्दशेऽध्याये चतुर्दशवेणी ॥ १४ ॥ श्लोक ॥ २ ॥

श्रोता पूछते भये कि महादुष्टजो वेन तिसकी देहसे जल्दी  
नाथजो भगवान् सो क्यों प्रगट होते भए तथा भूमिको  
दुःख देखे विना भगवान् नहीं अवतार लेते वेनके वखत में  
पृथ्वी को क्या दुःख रहा जिसवास्ते जल्दी भगवान् प्रगट भए  
१ वाचकवाले ईश्वरने वेन करिके नाश भई जो प्रजा तिसको  
देखिके तथा जीती प्रजाको बहुत दुःखी देखिके भूमिके  
तथा प्रजाके ऊपर कृपा करिके भगवान् जल्दी प्रगट होनेकी  
इच्छा करते भए तब ब्राह्मणोंने ईश्वरको विचार जानिके वेदों

श्रोतार ऊचुः ॥ येधृताहरिणात्रह्मन्नवतारावभूविरे  
त्रिलोकपतयः सर्वेसूतैरुक्तः प्रथुःकथम् । यावत्सूर्यस्त  
पत्येषस्तावत्त्राताभवेदयम् १ वाचकउवाच ॥ ज्ञात्वावेन  
विनष्टाम्बै पृथिवीं पृथिवीश्वरः । केवलं भूपमर्यादांस्था  
पितुं जगदीश्वरः १ प्रजासुखविदृच्छार्थं पृथुराविर्भवह २  
इति० भा० च० शं० मं० षोडशेऽध्याये षोडशवेणी ॥  
१६ ॥ श्लो० ॥ १४ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ प्रजानां वचनं श्रुत्वा भूमिहंतुं स  
मुद्यतः । अन्योपायम्परित्यज्य व्यज्ञवच्च प्रथुः कथम् १  
के मंत्रकरिके वेनकी देहको शुद्ध करते भएतव उसी शुद्ध  
देह से भगवान् उत्पन्न होते भए २ इति भा० च० शं० मं०  
पंचदशेऽध्याये पंचदशवेणी ॥ १५ ॥ श्लोक ॥ २ ॥

श्रोतापूछते भए जो जो अवतार भगवान् धारण किहे सो  
सब तीनलोकके मालिक होते भए परंतु सूतलोगोंने ऐसा  
क्यों कहे कि जहांतक सूर्य प्रकाश करता है तहांतक राजा  
पृथु रक्षा करेगा १ वाचक बोले तीनलोकके पति ईश्वर वेन  
राजा करिके पृथ्वी को नष्ट भई जानिके तथाराजोंकी सनात-  
नी मर्यादा भी नष्ट जानिके अकेले पृथ्वी को सुख देने वास्ते  
पृथु भगवान् प्रगट होते भए इस वास्ते पृथुराजाको सूतोंने  
केवल भूमिको मालिक वर्णन करते भए २ इति० भा० च०  
शं० मं० षोडशेऽध्याये षोडशवेणी ॥ १६ ॥ श्लोक ॥ १४ ॥

श्रोतापूछते भए प्रजाके वचनको सुनिके उसी वखत राजा  
पृथु कुछ दूसरा उपाय प्रजाके सुख होने वास्ते नहीं विचार  
किया प्रजाको सुख होने वास्ते सब उपाय त्यागिके बड़ा  
मूर्ख सरीके पृथ्वी को मारने वास्ते राजा पृथुने क्यों तयारी

वाचक उवाच ॥ करुणापूर्णहृदयोविचार्यनिजमानसे ।  
 दुष्टान्संशिक्षितुंभूपान्येभविष्यन्तिभूतले २ प्रजार्थं  
 पृथिवींहन्यादन्यानामपिकाकथा । अतोभूमिसमाहन्तु  
 मुद्यतो नतुरोषतः ३ इति भा० च० शं० मं० सप्तदशे०  
 सप्तदशवेणी ॥ १७ ॥ श्लो० ॥ १३ ॥

श्रोतार उचुः ॥ नैवासन्पृथुपूर्वेहिपुरग्रामादिकल्प

किया क्योंकि प्रजाको सुख होने का उपाय लोक शास्त्र में  
 अनेक प्रकारका कहा है तथा पृथ्वी को मारना किसी में  
 नहीं कहा यह बड़ी शंका है १ वाचक बोले बड़े दयावान्  
 पृथुराजा अवतारधरिकै राजगादी पर बैठे तौ क्या देखते भए  
 बड़ा २ घोर २ अन्याय पृथ्वीपर हो रहा है तिसको देखिकै  
 अपने मनमें पृथुराजा विचार किहे कि ये राजा वेनके राजके  
 विगड़े हैं अब अगाड़ी होवेंगे राजा से सब इनको देखिके  
 वोभी राजा विगड़िजावेंगे तौ पृथ्वी तौ रसातलको जावेगी  
 इसवास्ते इनदुष्टराजों को त्रास देखाइकै सिखाना चाहिये  
 २ दुष्ट राजों को ऐसा मालूम परा पृथ्वी ने प्रजा को  
 दुःख दियाथा वेनके राज में से अब पृथुराजा पृथ्वी को  
 प्रजाकी द्रोही जानिकै प्रजाके सुख होने वास्ते पृथ्वी को  
 मारने की तयारी किया दूसरे प्राणी की क्या बात है अरे  
 भाई प्रजाको सुख देवो नहीं तो सब मारेजावेंगे ऐसा दुष्ट  
 राजा सबत्रासकरिकै प्रजाको सुख देनेलगे इसवास्ते पृथ्वी  
 को मारने को पृथु ने विचार किहे है क्रोधकरिकै पृथ्वी को  
 मारने को नहीं विचारे ३ इति० भा० च० शं० मं० सप्त  
 दशे० सप्तदशवेणी ॥ १७ ॥ श्लोक ॥ १३ ॥

श्रोता पूछते भये हे द्विजोत्तम वाचक राजा पृथुकेपेशतर

ना । बभूवुर्भूरिशोभूपाः पृथुपूर्वन्दिजोत्तम १ नगराः  
पत्तनाश्चैव प्राचीनाः पृथिवीतले । कोशपूर्णैश्चैस्तेषां  
मभूद्राज्यादिकर्मच २ वाचक उवाच ॥ कालीनन्तन्न  
मन्तव्यम् पृथुपूर्वपदेवुधैः । वेनराज्यन्तात्कालिकम्पृथु  
पूर्वन्निगद्यते ३ इति श्री भा० च० शं० मं० अष्टादशे  
ऽध्याये अष्टादशवेणी ॥ १८ ॥ श्लोक ॥ ३२ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ अत्रिमुनिवरश्रेष्ठो ज्ञानिनां ज्ञानचन्द्र  
माः । ह्यरक्षाकृतातेन कथन्नयज्ञकर्मणि १ वाचक  
उवाच ॥ शताश्वमेधं संकृत्य स्वर्गं प्राप शचीपतिः । अतो  
विष्णुप्रियः ख्यातस्सुरेशो हरिवल्लभः २ मानभंगं शची  
पृथिवीमेषु गन्धर्वान् नगरपत्तनये सवनं हीरहेथे तथा पृथुके पेश्तर  
राजा तौ अनेक हो गये १ जो पृथिवीमें पृथुके पेश्तर नगरगांव  
पत्तन शहर किशानों के गांव नहीं थे तौ राजा लोगों के खजाना  
किस चीज से भरता था तथा राजों की कोटियों रुपयों का काम  
काहेते होता था क्योंकि तहसील तो होती नहीं थी पृथिवी में  
जंगल होगया था यह बड़ी शंका होती है २ वाचक बोले विद्वान्  
जन पृथुके पेश्तर इस अर्थ में बहुत दिन नहीं मानते पृथुके  
पेश्तर इस अर्थमें पृथुको पेश्तर वेनको राज मानते हैं कि वेन  
के राजमें नगरगांव आदि जेकै सब नष्ट होगया इस वास्ते  
शंका नहीं करना चाहिये ३ इति० भा० च० शं० मं० अष्टा  
दशे ऽध्याये अष्टादशवेणी ॥ १८ ॥ श्लोक ॥ ३२ ॥

श्रोता पूछते भये कि अत्रिमुनि बहुत मुनियों में बड़े श्रेष्ठ और  
भूतभविष्य वर्तमान जानने में चतुर ज्ञानियों में चन्द्रसरीके  
प्रकाशमान ऐसे अत्रिमुनि के सामने इन्द्र पृथुकी यज्ञमें घोड़ा  
को हरि ले गया उसी वखत अत्रिमुनि क्यों नहीं रक्षण करते भये



भर्तुर्नकरोतिकदापिसः । अतोमंत्रान्वितेयज्ञेविघ्नकर्ता  
नतद्भयम् ३ इतिश्री भा० च० शं० ति० मं० एको  
नविंशेऽध्याये एकोनविंशवेणी ॥ १६ ॥ श्लो० ॥ १५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ पूर्वोक्तंतुस्वयंविष्णुः पृथुर्भूपोब  
भूवहायज्ञान्तेविष्णुनाचोक्तः पृथुस्तेमयिभूपते। भाक्तिर्धी  
श्वसदास्त्वेवंकोविष्णुःकः पृथुर्गुरो १ वाचक उवाच ॥  
दधातिनस्वयंविष्णुरवतारंरमापतिः । श्वासंसम्प्रेर्यभू  
भारहरणायजगत्पतिः २ धृत्वावतारंशतशस्तद्रूपइव  
कारकः । करोतिशिक्षांकरिंमंश्चित्कस्मिन्नैवकरोतिच  
३ इतिश्रीभा० च० शं० कानि० मंजूर्या विंशेऽध्याये  
विंशवेणी ॥ २० ॥ श्लो० ॥ ३२ ॥

वाचकबोले पूर्व जन्ममें इन्द्र सौ १०० अश्वमेध किया तब  
स्वर्गकी राज पायाहै इसीवास्ते इन्द्र भगवान् को बड़ा प्यारा  
भीहै २ यज्ञके प्रभावसे भगवान् इन्द्रको मानभंग कभीभीनहीं  
करते इसीवास्ते मुनियोंने मंत्रों करिके यज्ञकी रक्षा बहुत  
प्रकारसे करतेहैं परन्तु इन्द्रयज्ञमेंविघ्नकरिदेताहै वेदमंत्रोंकी  
तथा ईश्वर की भय नहीं होती क्योंकिपेश्तरके यज्ञोंकी पुण्य  
उसके पास है इसी वास्ते पृथुकी यज्ञमें अत्रिको भी  
घोड़ा की रक्षा करनेमें अस्वित्यार नहीं चला ३ इतिश्रीभा०  
च० शं०मं एकोनविंशेऽध्यायेएकोनविंशवेणी ॥ १६ ॥ श्लो० १५ ॥

श्रोतापूछते भए भागवत में शुकदेवजी पेश्तरतो वर्णन  
कहेकि पृथुराजा विष्णुका रूपहै तथा पृथुकी यज्ञके अंतमें  
पृथुराजासे कह कि हे राजन् हमारे स्वरूपमें तुमारी  
भक्तितथा तुमारी बुद्धि सदाकाज वनी रहैगी इससे मालूम  
परता है कि पृथुभनवान् को अवतार नहींहै आदमी सराके

श्रोतार ऊचुः ॥ वेदेषु सर्वगोत्राणि लिखितानि श्रुतानि नः । किं तदच्युतगोत्रञ्च यन्न दंडन्ददौ पृथुः १ चेद्विख्यातान् लोकेस्मिन्साधवोऽच्युतगोत्रिणः । तथापि त्रियुगे ब्रह्मन् त्रिवर्णा एव साधवः २ वाचक उवाच ॥ इन्द्रियाणां सुखैर्हाना व्रतं सार्ष्णिपकमाश्रिताः । पश्यन्तोऽजमयं विश्वन्ते प्रोक्ता च्युतगोत्रिणः ३ इति भा० च० शं० मं० एकविंशोऽध्याये एकविंशवेणी ॥ २१ ॥ श्लो० ॥ १२ ॥

भगवान् वरदान दिहे हे गुरुजी आपु कहो कौन विष्णु है कौन पृथु है यह बड़ी शंका होती है १ वाचक बोले आपु खुद भगवान् अवतार नहीं धारण करते पृथ्वी को भार नाश होने वास्ते आपने अंश करिके अवतार लेते हैं २ भगवान् को अंश अनेक प्रकारको रूप धरिके भगवान् सरीके कार्य करते हैं किसी अवतारमें भगवान् अपने अंशको सिखाते हैं भूमिमें आयके किसी अवतारमें नहीं सिखाते सिखाना क्या भगवान् कहते हैं कि तुम हमारे अंश हो हमको भूलना नहीं इस वास्ते पृथुको भी सिखाय गये हैं कि हमारे रूप में तुमारी भक्ति तथा बुद्धि सदा बनी रहैगी ॥ ३ ॥ इति० भा० च० शं० मं० विंशोऽध्याये विंशवेणी ॥ २० ॥ श्लोक ॥ ३२ ॥

श्रोता पृच्छते भये चारों वेदों में सब गोत्र लिखा है और हम लोगोंने सुना भी है परन्तु अच्युत गोत्र क्या है जिस अच्युत गोत्रसे कुछ अपराध भी होगया तौ भी पृथुराजा नहीं दंड दिहे छोड़ दिहे १ जब ऐसा कोई मर्त्यलोक में कहैगा कि साधुकी अच्युतगोत्र संज्ञा है तौ भी हे गुरुजी सतयुग त्रेता द्वापर में ब्राह्मण क्षत्री वैश्य साधु होते थे तो ये अच्युतगोत्र कैसे हो सकेंगे क्योंकि इन तीनोंका तौ जो गोत्र गृहस्थ में रहा सोई

श्रोतार ऊचुः ॥ न केषांस्तुतिर्निन्देच कुर्वीत सनकादयः ।  
इति श्रुतं च सर्वत्र पृथुशीलं कथंचते । प्रशंसिरे महाश्चर्यं  
मिदं न्नो हृदये गुरो १ वाचक उवाच ॥ विष्णोस्स्तुतिं सदा  
चक्रुर्मनुजस्सनकादयः । तदंशश्च पृथुर्भूषो नातो योग्य  
प्रशंसने २ इति श्री भागवते च० शं० नि० मञ्जर्यां द्वा  
विंशोऽध्याये द्वाविंशवेणी २२ ॥ श्लो० ॥ ४२ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ श्लोके त्रयोदशे प्रोक्तं ब्रह्मभूतः क  
लेवरम् । तत्प्रेमैव पतिः कस्मादग्निना संस्कृतः स्त्रिया १  
वनारहैगा यह षड़ी शंका है इस वास्ते गुरुजी इसकी आपु  
शान्तिकरो २ वाचक बोले हे श्रोता जनो यों प्राणियों को इन्द्रिय  
१० को सुख न मालूम परै तथा अजगर सरीके परारहना जो  
प्राप्ति भया सो खाना नहीं प्राप्ति भया तो चिन्ता नहीं करना  
तथा तीन लोक में सब देहों में भगवान् को रूप देखना ऐसे  
जो जीव उन को अच्युत गोत्र शास्त्र में कहा है ऐसा अच्युत  
गोत्र भगवान् को प्राण है ॥ ३ ॥ इति० भा० च० शं० नि०  
मं० एकविंशेऽध्याये एकविंशवेणी ॥ २१ ॥ श्लोक ॥ १२ ॥

श्रोता पृच्छते भये हे गुरुजी ऐसा हम सब शास्त्र में सुना है कि  
सनकादि मुनिजनन किसी की तारीफ करते हैं न किसी की  
निंदा करते हैं सब देहों में भगवान् को रूप देखते हैं फिर  
पृथु की तारीफ क्यों करते भये १ वाचक बोले सनकादि कमुनि  
नित्य भगवान् की स्तुति करते हैं तथा पृथु भी भगवान् को अंश  
हे इस वास्ते सनकादि मुनियों ने पृथु की तारीफ किया तो कुछ  
अयोग्य नहीं योग्य है ॥ २ ॥ इति भा० च० शं० मं० द्वाविंशेऽ  
ध्याये द्वाविंशवेणी ॥ २२ ॥ श्लोक ॥ ४२ ॥

श्रोता पृच्छते भये कि श्लोक १३ तेरह में कहा था कि शुकदेव-

नदाहोब्रह्मभूतानांश्रुतोऽस्माभिः कदाचन ॥२॥ वाचक  
उवाच ॥ पतिव्रतातद्देहेनदग्धुमात्मानमिच्छती । अत  
श्चकारतद्देहदाहमप्रीत्यापतेश्चसा ३ इति० भा० च०  
शं० नि० मं० त्रयोविंशेऽध्याये त्रयोविंशवेणी ॥ २३ ॥  
श्लो० ॥ २१ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ प्राचीनवर्हिषाराज्ञायज्ञेयज्ञेविचिन्व  
तः । प्राचीमुखैः कुशैर्ब्रह्मन्नास्तृतं पृथिवीतलम् १ अस  
म्भाव्यमिदं वाक्यं सप्तद्वीपवतीमही । कथं कुशैरास्तृताऽ

जीने राजासे कहे पृथुराजा ब्रह्ममें लीनहोके शरीरको त्यागते  
भयेफिरि पृथुकी स्त्री अग्निमें पृथुकी देहजलाई क्योंकि ब्रह्ममें  
लीनहोनेवाले प्राणी को अग्नि संस्कार नहीं लिखता है ?  
ब्रह्ममें लीन होनेवाले प्राणियोंकी देह हमलोगोंने आजुतक कभी  
तहीं सुने २ वाचक बोले हे श्रोताजनो तुमारा वचन सत्य है  
ब्रह्ममें लीन होनेवाले प्राणीको दाह नहीं लिखता पण पृथुकी  
स्त्री पतिव्रताथी पृथुकी देहके संग अपनी देह जलाने की इच्छा  
करिकै पतिकी प्रीति करिकै अपने पतिके देहको जलाती भई  
उसी पतिकी देहके संग आपुभी जलिके पतिलोक को गई  
इस वास्ते पृथुराजा ब्रह्म में लीन होगये तौभी पृथुकी देहको  
दाह करती भई ॥ ३ ॥ इति० भा० च० शं० मं० त्रयोविंशेऽ  
ध्याये त्रयोविंशवेणी ॥ २३ ॥ श्लोक ॥ २१ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी राजा प्राचीन वर्हि यज्ञ २ में  
वड़े बिस्तार करिकै पूर्वदिशा को कुशोंको सुलाकिया तथा  
पश्चिम दिशाको कुशोंका मूलकिया इस प्रकारसे कुश बिछाय  
है यज्ञ बहुत किया सातद्वीप पृथ्वी कुशोंके बिछौनाके नीचे  
होगई जैसी पक्षंग बिछौनेके नीचे होती है ? यह वचन वड़े

भून्महत्कौतूहलन्त्वित्तम् २ वाचक उवाच ॥ महीतल  
 न्नमुनिना प्रोक्तां हि वसुधा तलम् । ब्राह्मणानां शरीरन्तुक  
 थ्यते वसुधा तलं ३ योगशास्त्रेऽप्युक्तां हि येश्वरं च वसुन्धते सा  
 प्रोक्ता वसुधा द्विजैः । विष्णुप्रीतिस्तलन्तस्या द्विजानां  
 हृदयं स्मृतम् ४ आत्मदेहन्दर्शयित्वा विदुराय महामुनिः ।  
 चकारांगुलिनिर्देशं ब्राह्मणास्तेन तर्पिताः ५ इति श्री  
 भा० च० शं० नि० मं० चतुर्विंशोऽध्याये चतुर्विंश  
 वेणी ॥ २४ ॥ श्लो० ॥ १० ॥

तमाशा 'सरीके मालूम परता है बड़ा अयोग्य वाक्य है कि  
 सातद्वीप पृथ्वी कुशों के बिलौना के नीचे होगई यह हमारे लोगों  
 को बड़ा तमाशा रूप मालूम परता है २ वाचक बोले मैत्रेय  
 ऋषि ने सातद्वीप पृथ्वी को वसुधा तल नहीं कहे थे ब्राह्मणों का  
 शरीर जो है तिसको वसुधा तल मैत्रेय मुनि कहे थे ३ वसु नाम  
 भगवान् को है उन भगवान् को जो धारण करे तिसका नाम  
 वसुधा है भगवान् में प्रीति होना उसको नाम वसुधा तिस वसुधा  
 कहे भगवान् की प्रीतिको तल कहे मकान ब्राह्मणों का हृदय है  
 ४ चतुर्थ स्कंध अध्याय २४ में श्लोक १० में इदं एसा लिखा है  
 उस इदंको अर्थ यह मैत्रेय मुनि किहे हैं कि आपने हाथ की  
 अंगुली से अपनी देह विदुरको देखाये कि हे विदुर यह हमारा  
 हृदय जो है सोई वसुधा तल है इसी वसुधा तल के प्राचीन बर्हि  
 राजा कुशों के बिलौना नीचे करिके तृप्ति करि दिया क्यों ब्राह्मणों  
 को विना मांगे जबरदस्ती से दान देता भया संकल्प करते वखत  
 हाथ में कुश लेना तौ कुशको मुख पूर्व दिशा तरफ राखना तथा  
 कुशको मूल पश्चिम दिशा को राखना ऐसी शास्त्र की विधि है  
 सो कुश करिके संकल्प करिके ब्राह्मणों के हृदय वसुधा तल को

श्रोतार ऊचुः ॥ नारदोक्तिरियम्ब्रह्मन् जीवास्ते बहवो  
 हताः । ते त्वांसम्यक् प्रतीक्ष्यन्ते मार्गं मार्गं त्वनेकशः १ छे  
 रस्यन्ति त्वांकुठारैश्च मृतमेतत्कथंगुरो । जीवो देहं परित्य  
 ज्यस्वकृतं च समाव्रजेत् २ वाचक उवाच ॥ येन ये निह  
 ता जीवास्तेषां रूपं विधाय च । दास्यंति यमदूता वै दंडं  
 जीवप्रघातिनाम् ३ इति ० भा० च० शं० मं० पंचविंशोऽ  
 ध्याये पंचविंशवेणी ॥ २५ ॥ श्लो० ॥ ८ ॥

कुश के विछोना नीचे करि देता भया ऐसा अर्थ मैत्रेय कहे थे  
 पृथ्वी को नहीं कहे थे ॥ ४ ॥ इति ० भा० च० शं० नि० मंजरी  
 चतुर्विंशोऽध्याये चतुर्विंशवेणी ॥ २४ ॥ श्लोक ॥ १० ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी ऐसा शंका देने वाला वाक्य  
 नारद मुनिने प्राचीनवर्हि राजा से कहा कि हे राजा यज्ञ में  
 तमने बहुत जीव मार हो सो सब जीव तुमारी रस्ता २ में  
 बैठिके अनेक प्रकार से तुमको देखेंगे कि जब राजा मरेगा  
 तो इस रस्ता में आवैगा तो हम सब अपनी दावलेवेंगे १ राजा  
 तुम मरोगे तो तुमारा जीव उसी रस्ता को जावैगा तब तुमको वो  
 सब जीव कुल्हारी से काटेंगे हजारों वर्ष तक हे गुरुजी, यह कैसी बात  
 है जिस बखत देह को जीव त्यागता है उसी बखत जैसा कर्म  
 जीव करि राखता है तैसी योनि में जन्म प्राप्त होता है फिर  
 बहुत दिन रस्ता में बैठना बैरी को देखना कुल्हारी से काटना  
 यह सब नारद ने क्यों कहे हैं यह बड़ी शंका है २ वाचक  
 बोले जो प्राणी जिस प्रकार के जीव को मारता है उसी प्रकार  
 को रूप यमराज के दूत धारण करि के मारने वाले प्राणियों  
 को बड़ा दुःख देते हैं उस जीव को ऐसा मालूम परता है कि  
 जिसको मैंने मारा सो यही है यह नहीं मालूम परता कि वो

श्रोतारञ्जुः ॥ राइयांकर्मप्रकुर्वन्त्यांपश्चात्कारीपुरं  
जनः । कथंजायाम्परित्यज्यगतवान्काननंनृपः १ वाचक  
उवाच ॥ विचाररहितोजालमोवंचितोव्याकुलोनिशम्र ।  
मृगासक्तमतिर्मूढस्तांविस्मृज्यवनंगतः २ इति० भा०  
च० शं० मं० षड्विंशोऽध्याये षड्विंशवेणी ॥ २६ ॥  
श्लो० ॥ ६ ॥

श्रोतारञ्जुः ॥ नारदः कथयामासस्वमात्मानंवृद्ध  
द्रुतम् । सःकथम्मोहितोब्रह्मन्स्त्रियाकामालयामुनिः १  
नहीं है यहतोयम को दूतहै इसवास्ते नारदने जीवकोरस्तामें  
बैठनावर्णन किहे हैं ३ इति भा० च० शं० मं० पंचविंशोऽध्याये  
पंचविंशवेणी ॥ २५ ॥ श्लो० ८ ॥

श्रोता पूछते भये पुरंजनीरानी पेरतर जो कर्म करती थी  
तिस पीछे उसी काम को पुरंजन राजाभी करते थे ऐसा  
भागवत में लिखा है फिरि पुरंजनी जो अपनी स्त्री तिसको  
त्यागि कै पुरंजन राजा वनको क्यों चले गये १ वाचक बोले  
पुरंजन राजा विचार से हीन है स्त्री के वशि है ठगि भी गया  
है राति दिन व्याकुल हो रहा है मूर्ख है मृग मारने में बुद्धि  
लगाय कै स्त्री को त्यागि कै चला गया यह नहीं विचारकिया  
कि पीछे से मेरी दुर्गति पुरंजनी करेगी ३ इति० भा० च० शं०  
मं० षड्विंशोऽध्याये षड्विंशवेणी ॥ २६ ॥ श्लो० ६ ॥

श्रोता पूछते भये कि प्राचीनवर्हि राजा से नारद कहे  
कि मैं काम को आपनी देह में से नष्ट करने वाला हों इस  
वास्ते मेरा नाम देव ऋषि है ऐसे नारद काम की घर रूप  
जो स्त्री तिस करि कै क्यों मोहि गये तथा पागल हो कै स्त्रियों  
के पीछे २ रोते फिरे विष्णु पुराण तथा विष्णुसंहिता में यह

वाचक उवाच ॥ मोहात्पूर्वदिनेवाक्यम्प्राचीनवर्हिषम्प्र  
ति । मुनिनोक्तं वचस्सत्यं श्रोतारस्तान्निबोधत २ इति०  
भा० च० शं० मं० सप्तविंशेऽध्याये सप्तविंशवेणी ॥ २७ ॥  
श्लो० ॥ २१ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ चितारोद्धृत्यदाशक्कानदातान्द्विज  
सत्तमः । बोधयामासज्ञानेन प्रथमं किन्न बोधिता १  
वाचक उवाच ॥ मदोनमत्तः पुराभूत्वाबोधितोपिनजगृहे  
मदेसंस्खलितेजातेऽमदिनो बोधग्राहकः २ मदोन्मत्तंस  
माज्ञायज्ञानं नादावुवाचसः ३ इति० भा० च० शं०  
मं० अष्टाविंशेऽध्याये अष्टविंशवेणी ॥ २८ ॥ श्लो० ॥ ५२  
नारद को मोह होने की कथा लिखी है वाचक बोले जिस  
दिन प्राचीनवर्हिष से नारद कहे कि मैंने जितेन्द्रिय हो काम  
देव को नाश करिदिया उस दिन के पीछे नारदको मोह भया  
जिस दिन प्राचीनवर्हि से कहे थे उस दिन तो वैसेई रहेथे  
हे श्रोताहो नारद का वाक्य सत्य है ३ इति भा० च० शं० मं०  
सप्तविंशेऽध्याये सप्तविंशवेणी ॥ २७ ॥ श्लो० ॥ २१ ॥

श्रोता पृच्छते भये जव पुरंजन स्त्री होकै अपने पति के  
संग भस्म होने वास्ते चिता में बैठने लगा तब भगवान्  
ब्राह्मण को रूप धरिके ज्ञान करि कै सब हाल जीव स्त्री हो  
गया था उस को घताते भए परन्तु पेश्तर क्यों नहीं ज्ञान  
दिहे कि ऐसा दुःख जीव पाता है यह शंका है १ वाचक  
बोले पेश्तर स्त्री रूप पुरंजन अभिमान करि कै बड़ा उन्मत्त  
हो रहा था भगवान् ज्ञान दिहे परन्तु सुनि लिया यादिनहीं  
किया जो अभिमान नष्ट होता है तो जीव ज्ञानको सिखताहै  
भगवान् जीवरूप स्त्रीको बड़ा अभिमानी जानिके पेश्तरबार



श्रोतार ऊचुः ॥ सर्वज्ञो नारदश्चैव ज्ञात्वाऽप्यज्ञन्तं  
पोत्तमं । कथं प्रोवाच प्रथमं चालौकिकमथं वचः १  
वाचक उवाच ॥ अपक्व हृदयं ज्ञात्वा सदाचारविवर्जितम् ।  
प्रथमं भूपतिं श्रीक्षयचोन्मत्तमजितेन्द्रियं । ज्ञानी कृत्वा  
क्षणेनैव प्रोवाच राजसत्तमम् २ इ० भा० च० शं० मं०  
एकोनत्रिंशोऽध्याये एकोनत्रिंशवेणी ॥ २६ ॥ श्लो० ॥ २ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ हरिभक्ता महात्मानस्सर्वे ब्रह्मनूप्र-  
चेतसः । भस्मचक्षुः कथं वृत्तांस्ते दयारहिता इव १  
वाचक उवाच ॥ दंडं विना न सिद्ध्यन्ति राजकार्याणि  
वारं ज्ञान नहीं कहे जब माननष्ट होगया तब कहते मात्र ईश्वर  
के वाक्य को मानि लिया ३ इति श्री भा० च० शं० मं० अष्टविंशेऽ-  
ध्याये अष्टविंशवेणी ॥ २८ ॥ श्लो० ॥ ५२ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी नारद मुनिसब के हृदय की बात जानने  
वाले प्राचीन बर्हि राजा को बड़ा मुख जानिलिये तौ भी गूढ़ वचन  
राजा से क्यों बोलते भये क्योंकि गूढ़ वचन को तो चतुर प्राणी सम-  
झते हैं मुख नहीं समझते यह बड़ी शंका है १ वाचक बोले नारद ने-  
पेशतर ही प्राचीन बर्हि राजा को ज्ञान से कच्चा हृदय जानितथा  
सुंदर कर्म से हीन जानिकै उन्मत्त कामी क्रोधी जानिकै राजा के  
ऊपर कृपा करिकै एक क्षण में प्राचीन बर्हिको बड़ा ज्ञानी बनाय  
कै तब गूढ़ वचन राजा से कहें हैं २ इति श्री भा० च० शं० मं०  
एकोनत्रिंशेऽध्याये एकोनत्रिंशवेणी ॥ २६ ॥ श्लो० ॥ २ ॥

श्रोता पूछते भये प्रचेतस भगवान् के बड़े भक्त महात्मा ऐसे  
हो कै दयाहीन प्राणी सरी के वृत्तों को भस्म क्यों करते भये  
महात्मा का कर्म यह नहीं है यह कर्म बड़े चंडाल का है यह बड़ी शंका है  
१ वाचक बोले हे श्रोता हो तुमारा वाक्य सत्य है निर्दयी कर्म चंडाल

कहिंचित् । अतस्तरूपांसन्दाहंचक्रुस्तेकामतत्पराः २  
इति० भा० च० शं० मं० त्रिंशेऽध्यायेत्रिंशवेणी ॥  
३० श्लो० ॥ ४६ ॥

श्रोतारं ऊचुः ॥ दीक्षिताब्रह्मसत्रेण सर्वे ब्रह्मन् प्रचे-  
तसः । ज्ञानोपदेशं कृतवांस्तान् पुनर्नारदः कथम् १  
वाचक उवाच ॥ वैष्णवीमजिताम्मायां ज्ञात्वा सम्यङ्मुनी-  
श्वरः । ज्ञानोपदेशं कृतवांस्तेषां पुष्ट्यर्थं हेतवे २ इति०  
भा० च० शं० मं० एकत्रिंशेऽध्याये एकत्रिंशवेणी ॥  
३१ ॥ श्लो० ॥ २ ॥

हे परन्तु इतना काज राजाको है सो सब काज दंड बिना कभीं  
नहीं सिद्ध होवेंगे अनेक उपाय करै पण प्राप्त दिहे बिना नहीं  
सिद्ध होवेंगे इसी वास्ते प्रचेतस बृह्मोंकी जडकी को अपना  
विवाह करना चाहते थे इस काम करने वास्ते बृह्मों को भस्म  
करते भये कुछ निर्दयपनसे नहीं भस्म किये ॥ २ ॥ इति० भा०  
च० शं० मं० त्रिंशेऽध्याये त्रिंशवेणी ॥ ३० ॥ श्लोक ॥ ४६ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी सब प्रचेतस शिवसे भगवान्से  
नारदसे ब्रह्मज्ञान सिखेथे फिर नारद प्रचेतोंको ज्ञान क्यों  
देते भये १ वाचक बोले पेशतरतो अभिमान से नारदमुनि  
माया को कुछ भी नहीं जानतेथे जब माया बहुत दुखदिया  
तबसे मायाको डरने लगे अपने शिष्यों को भी सिखाने लगे  
मायासे दुसिया रहियो इस वास्ते नारद विचारे कि भगवान्की  
माया बड़ी जबरदस्त है किसीसे जानी नहीं जाती प्रचेतस ज्ञान  
में पक्का तो है पान्तु इनको ज्ञानमें ओर पुष्ट करि दें नहीं तो

माया कभी पटकि देवैगी इसवास्ते नारद दूसरेदफे प्रचेतों  
को ज्ञान देतेभये॥ २॥ इति० ॥भा० च० शं० मं० एकत्रिंशेऽ  
ध्यायेएकत्रिंशवेणी ॥ ३३ ॥ श्लोक ॥ २ ॥

इति श्रीमद्भागवतचतुर्थस्कंधशंकानिवारणमञ्जर्या  
सुधामयीटीकायांशिवसहायबुधविरचितायांचतुर्थ  
स्कंधशंकानिवारणमंजरीसमाप्ता ॥ श्रीरस्तु ॥

---

श्रुतिशेषायनमः ॥

# श्रीमद्भागवतशंकानिवारणमंजरी ॥

पञ्चमस्कंधे ॥

सुधामयी टीकासहिता विरच्यते ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ प्रियव्रतरथश्चैकोयमारुह्याभ्रम  
नृपः । सूर्यस्यानुदिनं कर्तुरेजनाशनाय च १ न कृत  
न्दिवसन्तेन कथं रात्रिर्ननाशिता । आकाशे भ्रमतानेन भू  
मौते सिन्धवः कृताः २ द्वीपाश्चैव कथञ्च सन् पूर्वस्मा  
दुत्तरोत्तरम् । द्विगुणास्सिन्धवश्चैव बभूवुः कथमद्भुतं ३

श्रोता पृच्छते भये प्रियव्रत राजा कोरथ १ जिस रथ में  
बैठिकै राति को नाश करने वास्ते तथा प्रहर आठ ८ दिन  
करने वास्ते सूर्य के पीछे पीछे राजा प्रियव्रत भ्रमण करता  
भवा १ क्यों राजा प्रियव्रतने रातिको नाश नहीं किया तथा  
दिनभी क्यों नहीं किया तथा राजा प्रियव्रत रथ में बैठिकै  
आकाश में भ्रमण करता था फिर रथके पहिआ करि कै  
जमीन में सात समुद्र कैसे होते भए भूमिमें रथ भ्रमण  
करता होता तब तौ रथ के पहिआ करि कै समुद्र होते भए  
तब शंका नहीं होती परन्तु आकाश से जमीन में पहिआ करि  
कै समुद्र ७ तथा द्वीप ७ भए यह बड़ी शंका है २ तथा रथ १  
रथकी चौड़ाई ऊँचाई एक माफिक फिर सात समुद्र तथा ७  
सात द्वीपये पहिले से दूसरा दूना लंघाभया दूसरे से दूना

नेमिनैकेनचक्रेणरथेनभूपतेस्तदा । शंकात्रयमिदं नित्यं  
वर्तते हृदये च नः ४ वाचक उवाच ॥ दिनं रात्रिभगवता  
मर्यादावैपुत्राकृता । पश्चान्नृपो विचार्यैवं न चकार द्वयं सु-  
धीः ५ आकाशे भ्रमतस्तस्य पृथिवीमपि तत्क्षणात् । यदा  
यातः क्षितिं राजा तदा द्वीपाश्च सिन्धवः ६ भ्रमतारथवेगस्य  
तीसरा भया तीसरे से दूना चौथा भया चौथे से दूना पांचवां  
भया पांचवें से दूना छठा भया छठे से दूना सातवां समुद्र  
तथा द्वीप होते भये ये भी बड़ी शंका है ३ रथ १ रथ की पहिआ  
एक माफिक रथ की चौड़ाई लंबाई एक माफिक ऐसे रथ  
करि कै एक सरीके समुद्र सात ७ द्वीप ७ को होना चाहिये  
दूना २ बढ़ते क्यों गये हे गुरु जी यह तीन शंका राति दिन  
हमारे सबके हृदयमें बसी रही हैं श्लोक तीन को अर्थ मिला  
है कुलक श्लोक है वाचक बोले पेशतर तो प्रियव्रत राजा  
तपस्या के अभिमान ते विचार किया कि राति को  
में नाश करि देऊंगा अकेला दिन संसार में रहेगा ऐसा मन  
में विचारि कै सूर्य के पीछे २ फिरने लगा परन्तु फिरते वखत  
राजा को ज्ञान भया कि दिन रातिकी मर्यादा भगवानने  
किया है इसको मैं नष्ट करों गा तो ईश्वर मेरे को दंड देवेंगे  
ऐसा डरि कै रातिको नाश नहीं किया तब अकेला दिन भी  
नहीं किया ५ राजा प्रियव्रत तपस्या के जोर करि कै आकाश  
में भ्रमण करता भया तथा भूमिमें भी भ्रमण करता भया  
कुम्हार को चक्र सरीके रथ को फेरता भया जब भूमिमें रथ  
को फेरने लगा तब बड़े वेग करि कै भ्रमण करता जो रथ  
तिसके चक्र करि कै जमीन में समुद्र ७ तथा द्वीप ७ होते  
भये सात दफे राजा रथ को फेरता भया श्लोक दो को अर्थ  
मिला है युगम है ६ नक्षत्री के पति भगवान् भूमि में अपनी

चक्रनेमिकृतास्तदा॥सनातनींस्वमर्यादांनष्टांवीक्ष्यरमा  
पतिः ७ सिंधवस्सप्तद्वीपाश्चभूमावेतेसनातनाः । एत  
दर्थस्वयंविष्णुस्ताराथनिर्जिमायया ८ बभूवसारथि  
हृत्यनचाज्ञातोन्पेनह । रथंनेमिचचक्रंचविस्तार्यस्वेच्छ  
याहरिः ९ स्वेच्छयाचालयित्वाश्वान्द्विगुणम्पूर्वपूर्वतः।  
चकारसिंधुद्वीपांश्चयथापूर्वरमापतिः १० इतिश्रीभा०  
पंच० शं० नि० मंजर्याप्रथमेऽध्यायेप्रथमवेणी ॥ १ ॥  
श्लो० ॥ ३१ ॥

श्रोतारऊचुः ॥ स्त्रीप्राप्त्यर्थतपश्चक्रेचाग्नीध्रोमहददू

बनाई सनातन की जो मर्यादा सात ७ समुद्र ७ द्वीप एक  
से एक दूना तिसको नष्ट देखिके ७ सात ७ समुद्र तथा ७  
द्वीप ये पृथ्वी में सदासे हैं ब्रह्मा स्वायंभू मनुसे सृष्टिकी रचना  
कराया तब ७ समुद्र तथा सात ७ द्वीप नहीं बनेथ इस वास्ते  
अपनी माया करि कै भगवान् प्रियव्रत राजा के सारथी होते  
भये ८ राजा को मालूम नहीं परा राजा के सारथी को हरि  
कै दूसरे स्थान पर बैठाये देते भये आपु सारथी होके अपनी  
इच्छासे रथकी लंबाई चौड़ाई तथा पहिआ तथा रथकी कील  
इन सबको जैसा चाहता था तैसा विस्तार करिके ९  
भगवान् घोड़ों को अपनी इच्छासे चलायके एक दफेसे दूना  
दूसरीदफेसे दूना तीसरीदफे इसी प्रकारसे समुद्र द्वीप एकसे  
एकदूना दूना जैसा पेशतर रहातैसा वनायके वैकुण्ठ लोकको  
गये इसीवास्ते समुद्र तथा द्वीप दूना दूना भया है १० इति  
भागवतेपंचमस्कंधेशंकानि० मं०सुधामयीटीकायांप्रथमेऽध्याये  
प्रथमवेणी ॥ १ ॥ श्लोक ॥ ३१ ॥

श्रोतापूछने भए चड़ी आश्चर्यकी बात है राजाआग्नीध्र

भुतम् । दीनाश्चैवन्नकुर्वन्ति विवाहार्थं तपःप्रभो १ जम्बु  
 द्वीपपतिरसश्च कथन्तस्मैददुर्नते । कन्यां भूपतयः सर्वे त  
 द्वंशाश्च विशेषतः २ वाचक उवाच ॥ मृष्यादौ क्षत्रियान  
 स्युस्स्वायम्भुवसुतान्विना । जज्ञिरे क्षत्रियाः पश्चाद्यदा  
 सृष्टिश्च मैथुनी । एतदर्थं तपश्चक्रे विवाहार्थं नृपोत्तमः ३  
 इ० भा० पं० शं० मं० द्वितीयाऽध्याये द्वितीयवेणी  
 २ ॥ श्लो० ॥ २ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ आविर्भूतं जगन्नाथं स्वकार्यसिद्धि  
 हेतवे । स्वीयेयज्ञकथं नृपानननामतु तोषन १ ऋषि  
 भिरसंस्तुतो देवो राजाऽपरद्वयस्थितः । एषानो महर्त  
 स्त्रीप्राप्ति होनेवास्ते तपस्या किया है हे गुरुजी गरीबभी विवाह  
 होनेवास्ते तप नहीं करेगा १ राजा आग्नीध्र जंबूद्वीप को माधि  
 कथा उसको राजा लोगों ने लड़िकी क्यों नहीं दिहे सवराज  
 लोग आग्नीध्र राजा के अख्ति आरमें थे फिर विवाह होनेवास्ते  
 तप क्यों किहे वाचक बोले सृष्टिकी आदि में कोई भी चर्त्र  
 नहीं रहे थे अकेले स्वायंभुवके पुत्र क्षत्री रहे थे जब मैथुनी सृष्टि  
 ब्रह्माने बनाया तब पीछे से क्षत्री जन्मते भये जो क्षत्री रहे न थे  
 तो आग्नीध्र को लड़िकी कौन देवै इसवास्ते आग्नीध्र विवाह  
 होनेवास्ते तपस्या करते भये ॥ ३ ॥ इति० भा० पं० शं० मं०  
 द्वितीयेऽध्याये द्वितीयवेणी ॥ २ ॥ श्लोक २ ॥

श्रोता पढ़ते भये राजानाभिने अपनी यज्ञमें प्रगट जो भग-  
 वान् तिनको देखिके नमस्कार किया तथा स्तुति भी नहीं किया  
 यह क्यों न किया १ ऋषियों ने भगवान् की स्तुतिकी है और  
 राजा तो दूसरा आदमी सरीके खड़ा रहा जैसा कुल यज्ञमें दावा  
 नहीं ऐसा खड़ा रहा यह बड़ी शंका है इस शंका को आप

शंकावचसातान्निवारय २ वाचक उवाच ॥ दृष्ट्वायज्ञ  
समायान्तं सभाय्यो नृपतिर्हरिः । प्रेमाश्रुपूर्णनयनो ध्यान  
मग्नो बभूव ह ३ अशक्नो वचनोच्चारेऽपतद्भूमौ सगद्गदः ।  
ईदृशं नृपतिं चादिद्यतत्पक्षे ऋषयोस्तु वन् ४ इति श्री  
भा० शं० सं० पं० तृतीयेऽध्याये तृतीयवेणी ॥ ३ ॥  
श्लो० ॥ ४ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ क्षत्रियाणां शिशोर्नाम ब्राह्मणैः कि  
यते सदा । श्रुतन्नो वेदमार्गेण नाभिश्चक्रे कथं स्वयम् १  
छिंधि शंकां मिमांसां ब्रह्मन्त्वं स्ववाक्यासिना गुरो २ वाच  
क उवाच ॥ युगत्रये द्विधानां मकृतं च सर्वप्राणभिः ।  
अपने वचन करिके निवारण करो २ वाचक बोले राजानाभि  
अपनी यज्ञमें भगवान्को देखिके स्त्रीसहित राजाके नेत्रोंसे  
जल बाहि रहा है भगवान्को दर्शन करिके ध्यान में मस्त  
होगये ३ जब नाभि स्त्रीसहित बोले नहीं सके थे भूमि  
में पड़ि गये प्रेम करिके शरीरमें रोमांच खड़ा होगया ऐसा  
राजा को प्रेम करिके आतुर देखिके तब राजा नाभिकी तरफ  
से ऋषियों ने भगवान्की स्तुति करते भये इस वास्ते नाभि  
राजाने भगवान्को नमस्कार तथा स्तवन नहीं किया ॥ ४ ॥  
इति० भा० पं० शं० नि० सं० तृतीयेऽध्याये तृतीयवेणी ॥ ३ ॥  
श्लोक ॥ ४ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरु जी हम सवने ऐसा सुना है कि  
क्षत्री के बालक होता है तौ उस बालक को नाम ब्राह्मण लोग  
वेदकी रीति से करते थे परन्तु नाभि राजा अपने पुत्रको  
नाम आप क्यों करते भये १ हे गुरु जी आप अपने  
वचन रूप तरवार करिके इस शंका को काटो २



वेदमार्गेणविप्रैश्चापित्रामात्राचकर्मभिः३विप्राज्ञातोऽनृप  
श्चक्रेकर्ममर्वाद्यसुतस्यवै । विप्रान्सन्तोष्यदानेननाम  
पुत्रस्यनिर्मलम् ४ इति० भा० शं० मं० पं० चतुर्थे  
ऽध्यायेचतुर्थवेणी ४ ॥श्लो० ॥ २ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ पुरीषवर्णनंशास्त्रेनकेषांकविभिः कृ  
तम् । हरेश्चाप्यवताराणान्नोश्रुतं च कदापिनः १ तत्सौ  
गन्धर्महाश्चर्यमभितोदशयोजनम् । सौरभ्यंवायुने  
तद्धिकृतमेतत्सुकौतुकम् २ पिपलिकानाम्पृष्ठेचयथैव  
गिरिधारणम् । सिंधोर्विशोषणन्दंशैस्तथेदमपिभाव्यते३  
वाचक बोले सतयुग त्रेता द्वापर में सब प्राणी बालकों के  
दो नाम करते थे वेदकी रीतिसे तौ ब्राह्मणों से नाम कराते  
थे तथा बालकको कर्म देखि कै माता पिता बालकको नाम  
करते थे ३ ब्राह्मणों की आज्ञा लेकै तथा अपने पुत्रके कर्म  
देखि कै दानकरि कै ब्राह्मणों को प्रसन्न करि कै तब राजा  
नाभि पुत्रको नाम करते भये मानसे वेदरीति नहीं त्यागे ४  
इति० भा० पं० शं० मं० चतुर्थेऽध्याये चतुर्थवेणी ॥ ४ ॥  
श्लोक २ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी पुरीष को वर्णन शास्त्र में किसी  
को कविलोग नहीं किए भगवान् के अनेक अवतार भये तिन  
के भी पुरीष वर्णन कवि लोग नहीं किये तथा हम सब ने  
सुनाभी नहीं कभी १ उस पुरीषकी सुगंधि वायु बहती है तौ  
चारोतरफ कोश ४० चालीस तक अतर सरीके खश्बोयजाती  
है यह आश्चर्यमें आश्चर्य होता है कि मलमें सुगंधि कैसी भई  
२ जैसा कीड़ी अपनी पीठि पर पर्वत लेकै चलै तथा मसामापी  
ढंस ये सब समुद्रको सुषायदेवै यह बड़ी आश्चर्य सरीकी बात है

वाचक उवाच ॥ बालानारोगशान्त्यर्थयथायत्नमनेक  
धा । कुर्वन्ति पितरो नित्यं लोभानि विविधानि च ४ दर्शयि  
त्वासुमिष्टादीन् कट्वादीन् दापयन्ति च । एवं जीवस्वमोक्षा  
यद्हरिर्लोभम्प्रदर्शिवान् ५ मोक्षमार्गावेन ह्यसस्समीक्ष्य  
ऋषभो हरिः । जीवानां लोभनार्थाय महाश्चर्यं व्यदर्श

तैसे उस मलमें सुगंध होना यह भी बड़ा आश्चर्यमानना चाहिये  
तथा जिस जगह पर मल पड़ा रहेगा उसी जगह से चारों तरफ  
वालीस ४० कोश तक सुगंधि होना यह बड़ा आश्चर्य है हे  
गुरुजी यह बड़ा गप्य शास्त्र में लिखा है वाचक बोले जैसा  
बालकों को रोगनाश होने वास्ते माता पिता भाई भौजाई  
आदि लैकै बहुत यत्न करते हैं बालक दवाई नहीं  
खाता तो उसको दुलार करिके सुन्दर २ चीजों को लोभ देखा-  
ते हैं ४ बालकों को माता पिता मीठी २ चीज देखायकै रोग  
नाश होने वास्ते कटुकटु चीज पिलाय देते हैं तैसेही जीव भ्रष्ट  
होरहे हैं तिन जीवोंको मोक्ष होने वास्ते भगवान् लोभ देखाते  
भये ऋषभदेव भगवान् मोक्ष मार्गको नष्ट देखिकै विचार  
किये कि हमको तो बहुत दिन मर्त्यलोकमें रहना है नहीं और  
बिना बहुत दिनके सत्संग मोक्ष मार्ग प्रगट नहीं होगा ऐसा  
विचारिकै जीवोंको लोभ देखाने वास्ते विष्णुमें सुगंधि उत्पत्ति  
करिकै संसार को देखाते भये ऐसी चमत्कारी देखिकै सब  
प्राणी लोभको प्राप्ति भये कहने लगे कि हे भाइयो मोक्षमार्ग  
को सेवन करो देखो ऋषभदेव मोक्षमार्ग को सेवन करते हैं  
तो जिस की विष्ठा वालीस ४० कोश तक अतर सरीके खुश  
बोय करती है तो उनको यम की भय क्यों होगी आपना सब  
मोक्ष मार्ग सेवन करेंगे तो अपनी भी ऐसी कीर्ति होगी ऐसे

यत् ६ इति श्रीभा० शं० नि० मं० पंच० पंचमेऽध्याये पंचमवेणी ॥ ५ ॥ श्लो० ॥ ३३ ॥

श्रोता रञ्जुः ॥ हरेस्सर्ववताराश्चशुकदेवेनवर्णिताः ।  
नकानपिनमश्चक्रेकथन्नेमेतमश्वरम् १ वाचक उवाच ॥  
चक्रुस्सर्ववताराश्चकर्मसंसारकारणम् । कैवल्यशिक्षणञ्च  
क्रेस्वयंचकृतवांस्तदा २ इति० भा० शं० मं० पंच०  
षष्ठेऽध्याये षष्ठवेणी ॥ ६ ॥ श्लो० ॥ १६ ॥

श्रोतार रञ्जुः ॥ भरतः पूजनंचक्रेपुलहाश्रमसंस्थितः ।  
तुलसीपत्रपुष्पैश्च कस्यरूपस्यवैहरेः १ अनेकरूपो  
विचारि कैसव प्राणी मोक्ष में आनंद करने लगे हे श्रोताजनों  
इस वास्ते मल में सुगंधि होती भई ६ इति भा० शं० मं०  
पंचमस्कंधे पंचमेऽध्याये पंचमवेणी ॥ ५ ॥ श्लोक ॥ ३३ ॥

श्रोता पूछते भये शुकदेवजी ने भागवत में भगवान् के  
सव अवतार वर्णन किये परन्तु नमस्कार किसी अवतार को  
नहीं किये ज्ञानमें चतुर बैरागको फुल्लायमान मान करने में  
सूर्य ऐसे शुकदेव जी ऋषभ देवको नमस्कार क्यों करते भये  
१ वाचक बोले भगवान् अनेक अवतार धरिके जैसा मनुष्य  
संसार को कर्म करताहै तैसा ईश्वरभी करतेभये और ऋषभ  
देवने प्राणियोंको मोक्षकी रस्ता सिखाये तथा आपुभी मोक्ष  
होनेको कर्म किये इसवास्ते बड़ेज्ञानी शुकदेव जीने ऋषभ  
देवको विषय मार्गसे हीन जानिके परमहंस मानिके नमस्  
कार करतेभये ॥ २ ॥ इति० भा० शं० मं० पं० षष्ठेऽध्याये षष्ठ  
वेणी ॥ ६ ॥ श्लोक ॥ १६ ॥

श्रोता पूछते भये पुलह मुनिके आश्रम में टिकिके भरत  
तुलसीपत्र तथा पुष्प करिके पूजन करते भये परन्तु कौन से

भगवान्कथितो वेदपारगैः २ वाचक उवाच ॥ ध्यात्वा सु-  
मनसा विष्णुं वैकुण्ठस्थं जगत्पतिम् । तस्मै समर्प्य यत्सर्वं  
तं मंत्रेणैव प्रेमतः ३ इ० भा० शं० मं० पं० सप्तमेऽध्या-  
ये सप्तमवेणी ॥ ७ ॥ श्लो० ॥ ११ ॥

श्रोतारञ्जुः ॥ यदर्थं राज्यमुत्सृज्य जगाम भरतो  
वनम् । तन्मृगीपुत्रव्याजेन त्यक्तवान्सकथन्तपः १ चेत्त-  
न्मोहसमाग्रस्तस्तथापि महद्भुतम् । रुरोहपर्वतं पङ्गु-  
रेति नोभातिमानसे २ वाचक उवाच ॥ मृगरूपं मुनिं  
दृष्ट्वा धवलं लोकलज्जया । स्वपत्नीं च मृगीं कृत्वा रमन्तं  
तानने नृपः ३ जहास भरतः शीघ्रं तेन शप्तस्त्रिजन्मना ।  
भगवान् की मूर्ति को पूजन किये १ वेदके जानने वाले मुनि-  
पौने भगवान् को अनेक रूप कहे हैं २ वाचक बोले भरतने  
स्थिरमन करिके वैकुण्ठवासी जगत् के पति ऐसे भगवान् को  
ध्यान करिके उन्हीं भगवान् के मंत्रों करिके जो अपने मन  
में वस्तु सो सब वस्तु वैकुण्ठनाथके चरणों में अर्पण करिके  
वैकुण्ठनाथको पूजन करते भये बड़े प्रेमसे ॥ ३ ॥ इति० भा०  
शं० मं० पं० सप्तमेऽध्याये सप्तमवेणी ॥ ७ ॥ श्लो० ॥ ११ ॥

श्रोता पछते भये भरत राजा जिस भगवान् को पूजन  
भक्ति करिके करनेवास्ते राजको त्यागि कै धनको गये सो  
पूजन अति संदर कर्म मृगी के बालक के वास्ते क्यों छोड़ि  
दिये १ जो कोई कहै कि मृगी के बालक के मोह करिके व्या-  
कुल हो करिके भगवान् का पूजन त्यागि दिये तो भी बड़ा आश्चर्य  
होता है राजको कुटुम्बको मोह छोड़ि दिया और पशुके मोहसे  
व्याकुल होना यह कैसा है कि जैसा पग करिके हीन आदमी  
पर्वतपर चढ़ि जावे तैसा आश्चर्य हमारे सबके मनमें होता है २

अवनान्मृगपुत्रस्य मोक्षं प्राप्स्यत्यतो हि सः । मोहि  
तः परिचर्या च हरेस्तत्याजकौतुकम् ४ इ० भा० शं० मं०  
पं० अष्टमेऽध्याये अष्टमवेणी ॥ श्लो० ॥ १५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कश्यपं सृष्टिकर्तारं स्वर्जयित्वा च सौ  
भरिम् । न श्रुतो नश्च शास्त्रेषु महत्कौतूहलं त्वदम् १  
द्विपत्नीको मुनिः कश्चित्कथं तस्य च द्वाऽभवत् २ वाचक  
उवाच ॥ अपक्व हृदयो विप्रो गृहीपत्यां सुताननम् । अ  
दृष्टा चैव पुत्रार्थं पुनरूढा तपस्विनी ३ सा यदोढा द्विजस्यैव  
वाचक बोले जब भरतराजा एक दिन वनको गये तब  
वनमें क्या देखते कि धवलनाम मुनि संसारकी लज्जा करिके  
आप मृगहोके और अपनी स्त्रीको मृगी बनाय के रमण करि  
रहे हैं तिनको राजा भरत देखिके ३ इसते भये तब जलदी  
धवलमुनि शापदिहे कि हे दुष्ट मृगीके बालककी तरफा करैगा  
उसीरक्षाके कारणसे तेरी एकजन्म में मुक्ति नहीं हाँवैगी तीन  
जन्ममें मोक्षको प्राप्त होवैगा हे श्रोताहो इस शापते भरतने  
तमाशा सरीके मृगीके बच्चेमें चित्त लगायके उसी के मोहसे  
भगवान्को पूजन आदि त्यागि देते भये ॥ ४ ॥ इति श्री भा०  
शं० मं० पंचमस्कंधे अष्टमेऽध्याये अष्टमवेणी ॥ २ ॥ श्लोकः ॥ १५ ॥

श्रोता पूछते भये कि हम सबोंने शास्त्र में ऐसा सुना है कि  
मुनियों में स्त्री कश्यप मुनिके बहुत रही हैं सृष्टि करने वास्ते  
तथा सौभरि ऋषि के स्त्री ५० रही हैं १ और किसी ब्राह्मण  
को नहीं सुने कि दो स्त्री रही हैं सो इस ब्राह्मणके दो स्त्री  
क्यों होती भई यह बड़ी तमाशा सरीकी बात है २ वाचक  
बोले हे श्रोता ब्राह्मण यह स्थ था गवार था कुछ पढ़ा नहीं  
था पहिली स्त्री में पुत्र नहीं भये तब पुत्र होने वास्ते दूसरी

बभूवुस्तनयाद्वयोः ४ इति भा० पं० शं० मं० नवमे  
 अध्यायेनवमवेणी ॥ श्लो० ॥ १ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ मूकवाक्यद्वयाश्चर्य्यशिविकावाह  
 न्वेषणम् । कारयामासविप्रेन्द्रकथंराजारहूगणः १ महा  
 दरिद्रीभूपोपितस्याऽपिवद्वस्सदा । शिविकावाहकास्स  
 न्तितस्यासन्नकिमुतेनहि २ वाचक उवाच ॥ ज्ञानलब्धि  
 भविष्याच्चयोजिताश्चसहस्रशः । नृपेनखंडितश्चैक  
 स्सम्बभूव पुनः पुनः ३ सप्तावशेषितान्दृष्ट्वावाहकान्वेष  
 स्त्री से विवाह कर लिया ३ जब दूसरी स्त्री को विवाह कर  
 लिया तब ब्राह्मण के दोनों स्त्री के पुत्र होते भये ४ इति श्री  
 भा० पं० शं० मं० नवमेऽध्याये नवमवेणी ॥ ६ ॥ श्लोक १ ॥

श्रोता पृछते भये हे गुरुजी राजा रहूगण मिआना ले चलने  
 वाले आदमी को क्यों शोध लगवाया एक खंडित होगया  
 तो क्या और पालकी ले चलने वाले नहीं रहे राजा होकै एक  
 आदमी इयादा नहीं राखा जैसा गंगा वाक्य बोले तब लोगों  
 को आश्चर्य मालूम परता है तैसा ये भी आश्चर्य है क्योंकि  
 १ बड़ा दरिद्री राजा होगा तिसके भी पालकी ले चलने वाले  
 आदमी बहुत रहते हैं और रहूगण राजा के बहुत क्यों नहीं  
 रहे कि एक दुःखी हो गया तो पालकी जंगल में रह गई दूसरे  
 को पकरि मँगाय तो पालकी चलती भई यह क्या तमाश की  
 बात है २ वाचक बोले राजा रहूगण के हजारों आदमी पालकी  
 ले चलने वाले रहे ये एक दुःखी हो गया तो दूसरेको तैयार  
 किये ओभी दुःखी होगया इसी प्रकार हजारों आदमी पालकी  
 ले चलने में जोड़ते भये परन्तु भरत के मुखारविंद से राजा  
 को ज्ञान प्राप्ति होना लिखा था इस वास्ते जिसी को पालकी

यन्तदा । कारयामासतीर्थेषु देवाद्भरतमागमत्  
इति श्री भा० पं० शं० मं० दशमेऽध्याये दशमवेणी ॥  
१० ॥ श्लो० ॥ १ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ मनोविभूतयश्चासन्सर्वा जीवस्य  
नित्यशः । भरतेन कथम्प्रोक्तं मायया कल्पितस्य च १ न  
मायारचितो जीवो जीवस्साक्षात्स्वयम्प्रभोः । अंशो माया  
वशीभूतो न तु मायाविकल्पितः २ वाचक उवाच ॥ यो  
यस्मात्प्राप्तमाप्नोति तन्न्यूनमापिमन्यते । श्रेष्ठं मे नेतदा  
मायां जडस्सर्वगरीयसीम् ३ स्वात्मानं च तया ग्रस्तं वीक्ष्या  
ले चलने की आज्ञा देवै तव सात आदमी अच्छे रहें एक  
दुःखी हो जावै ३ बहुत उपाय राजा किया परन्तु सात आदमी  
खुशी रहें एक दुःखी हो जावै पालकी में कंधादिये कि एक  
दुःखी भया तथा राजा को तीर्थ जाने की जल्दी इच्छा इस  
वास्ते अपनी पालकी ले चलने में कोई वाक्की नहीं रहा तब  
दूसरे आदमी को हुंढ़वाया दैवयोग से भरत मिलिगये इसी  
वास्ते विघ्न होता था काम हो गया इस कारण दूसरे आदमी  
का शोध लगाया है कुछ दरिद्रपना नहीं ४ इ० भा० पं० शं०  
मं० दशमेऽध्याये दशमवेणी ॥ १० ॥ श्लोक १ ॥

श्रोता पूछते भये कि रद्गुण से जड़ भरत कहे कि माया  
करि कै बनाया हुआ जो जीव तिसको जेतना मनको पदार्थ  
है सो सब होता है उसी पदार्थ को जीव भोगता है परन्तु भरत  
ने जीवको माया करि कै बनाया क्यों कहे थे १ जीवमाया  
करि कै रचित नहीं है जीव तो भगवान् को अंश है परन्तु  
मायाके वशि हो गया भरतने जीवको माया रचित क्यों कहे थे २  
जो प्राणी जिस से भय मानता है सो प्राणी अपना प्राप्त

तः ४ इति श्री भा० पंच० शं० मंजरी एकादशेऽध्याये  
एकादशवेणी ॥ ११ ॥ श्लो० १२ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ संसारे स्थूल कृश्यादिसदसद्बृह  
दादि च । यत्सर्वयुग्मभावं च तदुक्तं मायया कृतम् । भरतेन  
कथं स्वामिन्नेतदीश्वरवैकृतं १ वाचक उवाच ॥ बीजं वि  
नानकस्यापि समुत्पत्तिर्विजायते । ईश्वरप्रेरिता माया सा  
शक्तिरितिकथ्यते २ तज्जातो भ्रम बीजश्च तेनोत्पन्नमिदं  
देनेवाला छोटा भी होगा तौ भी उसको सबसे बड़ा करिकै  
मानेगा ज्ञानियोंके सामने माया बिल्कुल छोटी है परन्तु जड़  
भरत को बारंवार माया दुःख देती है मायासे भरत डरिगये  
तब सब चीजोंसे मायाको भरत बड़ी मानते भये ३ जड़ भरत  
ने आपने को माया करिकै दुःखी देखिकै मायासे बहुत डरे  
इसी डरसे जीवको माया करिकै बनाया कहे हैं क्योंकि उस  
बखत भरत ऐसा मायासे डरे थे कि आपने मन में विचारते थे  
कि ब्रह्मा विष्णु शिव मायासे बड़े नहीं हैं माया सबसे बड़ी  
है ॥ ४ ॥ इति० भा० पं० शं० मं० एकादशेऽध्याये एकादश  
वेणी ॥ ११ ॥ श्लोक ॥ १२ ॥

श्रोता पृच्छते भये कि हे गुरुजी संसार में जो वस्तु मोटी  
तथा पतली सुंदर खराब बड़ी छोटी पाप पुण्य राति दिन  
हानि लाभ जन्म मरण आदिके जोड़ी कहे दोको जोड़ है  
सो सब माया को बनायो है ऐसा रदूगण राजा से भरत क्यों  
कहे क्योंकि यह तो सब भगवान् को बनायो है १ वाचक बोले  
कि बीज बिना कोई भी प्राणी नहीं जन्मलेता इसी वास्ते  
ईश्वरकी आज्ञा को प्राप्ति हुई माया उसी को शक्ति भी मुनि



जगत् । प्रोवाचातोमहायोगीभरतोमाययाकृतम् ३  
इतिश्री भा० पं० शं० मं० द्वादशेऽध्याये द्वादशवेणी॥  
१२ ॥ श्लोक ॥ १० ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ चत्वारोवर्णिताःस्कंधाश्शुकेननृपविं  
श्रुताः । हेराजनूराजशार्दूलचेत्याद्यन्यसंबोधनैः १ स  
मुच्चार्यमुनिर्भूपंकथयामासवैकथाः । तेनोक्तश्चोत्तरा  
मातः कथमत्रमहाभ्रमः २ वाचक उवाच ॥ हरिकीर्तन  
संलुब्धं पृच्छन्तन्तम्पुनः पुनः । धन्यास्यचोत्तरामाता

जन कहते हैं २ तिस माया करिके भ्रमभय भ्रमयह है कि,  
विश्वास किसीको नहीं मानना सोई भ्रम करिके यह संसार  
उत्पन्न होता भया इस वास्ते बड़े योगी जड़भरतने मायासे  
किया कहे हैं ॥ ३ ॥ इति० भा० पं० शं० मं० द्वादशेऽध्याये  
द्वादशवेणी ॥ १२ ॥ श्लोक ॥ १० ॥

श्रोता पृच्छते भये शुकदेव जीने भागवत को चारिस्कंध  
वर्णन किहे तथा राजाभी चारों स्कंधोंको सुनता भया शुकने  
राजाको ऐसा दुलार नामलेके कथा चारोंस्कंधमें वर्णन करते  
भये हे राजन् हे राजशार्दूल हे नृपशिरोमणे हे कौरवोत्तम  
ऐसा आदिले के अनेक प्रकार को संबोधनसे दुलार करिके  
कथा कहते भये परन्तु पंचमस्कंधके अध्याय १३ श्लोक २४में  
परीक्षित् को उत्तरा मातः क्यों कहे उत्तरा माता को अर्थ  
यह है कि उत्तरा है तुम्हारी माता ऐसे हे परीक्षित् यह  
बड़ी शंका होती है जो और कभी परीक्षित् की माता को  
नामलेके राजा को दुलार शुक किहे होते तो शंका नहीं होती  
गुरु जी शंका कहो दो श्लोक को अर्थ मिला है युग्म है वाचक  
बोले शुकदेव जी ने परीक्षित् को भगवान् के कीर्तनमें बड़ा

जनयामासयात्त्रिमम् । ज्ञात्वैवमुत्तरामात्तन्मुनिर्हर्षादुवा  
चह ३ इति श्रीभा० पं० शं० मं० त्रयोदशेऽध्याये त्रयो  
दशवेणी १३ ॥ श्लो० ॥ २४ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ सर्वान्जीवान्परित्यज्य संसारे मोहिता  
न्मुनिः । वानरस्योपमादत्ताकुटुम्बभरणे कथम् १ वाचक  
उवाच ॥ सर्वे चराचरे जीवाः कुटुम्बभरणेरताः । तथा  
पि वानराणां वै केषामपि न गीयते । कुटुम्बपोषणे प्रीति  
स्सदृशी नीतिसंचये ॥ २ ॥ इति० पं० शं० मं० चतुर्दशे  
ऽध्याये चतुर्दशवेणी ॥ १४ ॥ श्लो० ॥ ३० ॥

जो भी जानिके तथा देह नाश होने की चिंता को त्यागि कै  
बारंबार भगवान् के चरित्र को पूछि रहे हैं परीक्षित भगवान्  
में ऐसा प्रीतिमान् परीक्षित को देखि कै शुकजी विचारते भये  
कि परीक्षित की माता जो उत्तरा तिसको धन्य है ३ जो  
उत्तरा परीक्षित को जन्माती भई तिसको धन्य है ३ ऐसा  
बड़ा हर्ष करि कै राजा को (उत्तरा मातः) इस पद से दुलार  
करि कै कथा वर्णन करते भये ॥ ३ ॥ इति० भा० पं० शं० मं०  
त्रयोदशेऽध्याये त्रयोदशवेणी ॥ १३ ॥ श्लोक २४ ॥

श्रोता पृथक् भये चौरासी लाख योनि में सब जीव मोहके  
धाँसि हो कै अपने अपने परिवार के पालन करने में रातिदिन  
जगिरहे हैं परन्तु शुकजीने सब जीवों को त्यागि के परिवार  
के पालन करने में वानर की उपमा क्यों दिया क्या वानर  
सब जीवों से ज्यादा परिवार को पालन करता होगा यह  
शंका है १ वाचक बोले संसार में सब जीव परिवार के पाल  
ना करने में चतुर हैं परन्तु नीति शास्त्र में लिखा है कि वानर

श्रोतार ऊचुः ॥ समदृष्टिः समाख्यातो व्यासपुत्र-  
 मुनिः । कथं प्रोवा- ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  
 वाचक उवाच ॥ राक्षसैर्नाशितावेदाश्च त्वारश्च युगत्रये  
 कलौ पाखंडिभिर्ग्रस्तास्ते भविष्यन्ति निश्चितम् २  
 ज्ञापनाय जीवानां कलिजानाम्मुनीश्वरः । ॥ ॥ ॥  
 यैव प्रोचे पाखंडिनो जनान् ३ इति श्री भा० पं० शं० मं०  
 पंचदशेऽध्याये पंचदशवेणी ॥ १५ ॥ श्लो० ॥ १ ॥

सरीके परिवार का मोह तथा पालना काई प्राणी नहीं करेगा  
 इस वास्ते शुकजी वानर की उपमा परिवार पालन करने में  
 देते भये ॥ २ ॥ इ० भा० पं० शं० मं० चतुर्दशवेणी ॥ १४ ॥  
 श्लोक ॥ ३० ॥

श्रोता पृच्छते भये शास्त्र में तथा लोक में मुनिजन शुक-  
 देव को समदृष्टि कहते हैं कि शुकदेवजी भला बुरा को एक  
 रकम देखते हैं ऐसा परमहंस शुक जी दूसरे प्राणी को अज्ञानी  
 सरीके पाखंडी क्यों कहते भये १ वाचक बोले कि शुक जी  
 अपने मन में विचार किये कि सतयुग त्रेता द्वापर में चारों वेदों  
 को राक्षस नाश करते हैं तथा कलियुग में पाखंडी प्राणी  
 निश्चयसे चारों वेदों को नाश करेंगे २ कलियुग में जो प्राणी  
 जन्मे हैं उन प्राणियों को वेदकी रीति सिखाने वास्ते तथा  
 हुलियार करने वास्ते तथा कलियुग के प्राणी चतुर होवेंगे तो  
 वेदकी रक्षा होवैगी इस वास्ते दूसरे को पाखंडी कहे हैं क्यों  
 कि अपने धर्मकी रक्षा करने वास्ते परमहंस भी थोरा भेद  
 करते हैं ॥ ३ ॥ इति श्री भागवते पं० शं० मं० पंचदशेऽध्याये  
 पंचदशवेणी ॥ १५ ॥ श्लोक ॥ १ ॥

श्रोतारज्जुः ॥ कदम्बाम्रजम्बवटानां चरित्रन्तथातद्  
 १० दीनांहृदांच । विश्रुत्वामनोनस्सदाभ्राम्यते  
 कम्पतेशंकयात्रासितम्भीतिमग्नं १ वाचक उवाच ॥ यदा  
 ब्राह्मणक्षत्रविच्छद्रवर्णास्स्वकर्मस्थितास्संस्थिता वेदमा-  
 र्गोतदासर्वमेवंक्षितौ संस्थितवैपरीत्याहतं विष्णुना तत्सम-  
 स्तम् २ इति श्रीभा० पं० शं० मं० षोडशेऽध्याये  
 षोडशवेणी ॥ १६ ॥ श्लो० १६ से ॥ २५ ॥ तक ॥

श्रोतारज्जुः ॥ आत्मना कथमात्मानं तुष्टुर्वज्रगदी-  
 श्वराः । एषानो महती शंका नाय्या नाय्यारतिर्यथा १

श्रोता पूछते भए हे गुरुजी कदंब, आम, जामुनि, वट, इन वृक्षों  
 को चरित्र सुनिकै तथा इन वृक्षों करिकै उत्पात्ति भये जो  
 नदी तथा कुंड सब चीज देनेवाले को सुनिकै हमारा सप को  
 मनचकरखाय रहा है शंका करिकै कांपता है शंकासे डरिकै  
 उसी शंका की भय में छिपिगया क्योंकि ऐसी बात सुनने में  
 नहीं आई नदी में तथा कुंड में सब पदार्थ भरे हैं हर ३ १  
 वाचक बोले जब ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र अपने अपने धर्म  
 में तथा वेदके मार्ग में ठिकेधे तब कुंडोंको नदियों को वृक्षों  
 को प्रभाव जो भागवत में लिखा है सो सब सत्य रहा जब  
 चारोंवर्ण कलियुग में अपने २ धर्म को तथा वेदोंकी मार्गको  
 त्यागि देते भये पाखंडी होगये तब भगवान् कुंडोंको नदियों  
 को वृक्षों को प्रभाव हरि लेते भये ॥ २ ॥ इति० भा० पं० शं०  
 मं० षोडशेऽध्याये षोडशवेणी ॥ १६ ॥ श्लो० ॥ १६ से २५ तक ॥

श्रोता पूछते भए अपने मुखकरिके भगवान् के शक्तियों  
 की स्तुति क्यों करते भए बड़ी शंका होती है जैसा श्रीके  
 संग स्त्री रमण करते क्या सुख प्राप्त होवेगा कुछभी नहीं

वाचक उवाच॥ हरेर्नामा निरूपयिष्ये ॥ नि३.

अज्ञानज्ञापयितुंतानि स्वात्मनात्मानमश्वराः ।  
वन्तिसदास्तोत्रैरेतदर्थं च नान्यथा २ इति श्रीभा० पं०  
शं० नि० मंजय्यासप्तदशेऽध्याये सप्तदशवेणी ॥ १७ ॥  
श्लो० ॥ १६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ सिंधुजोक्तिश्च भगवान् वत्पादसेव  
नं विना । न मां प्राप्नोति त्रैलोक्ये कोपीति वचनं कथं १  
दुरात्मानो न जानंति विष्णुं चैव चतुर्युगे । दैत्यादिमानवा  
स्तु सर्वे तेषां श्रीरचलामुने २ वाचक उवाच ॥ सेवका

तैसे अपने मुख से अपनी स्तुति करने में क्या महत्त्व होवे-  
गा १ वाचक बोले तीन लोक में भगवान् को नाम तथारूप  
अनेक हैं उन नाम रूपों को ज्ञानी जन तो जानते हैं परंतु अ-  
ज्ञानी नहीं जानते अज्ञानियों को अपने नामरूप की महि-  
मा मालूम करने वास्ते भगवान् अपने मुख से अपनी स्तुति  
करते हैं क्योंकि वो अज्ञानी जन ऐसे मुख शिरोमणि हैं  
कि दूसरे की बात मानते नहीं २ इ० भा० पं० शं० मं० सप्त  
दशेऽध्याये सप्तदशवेणी ॥ १७ ॥ श्लो० ॥ १६ ॥

श्रोतापूछने भए लक्ष्मी भगवान् से कही कि हे भगवन्  
जो प्राणी तीन लोक में आपको पूजन सेवन भजन नहीं  
करते वो प्राणी मेरे को कभी भी नहीं प्राप्त होवेंगे जन्म  
जन्म दरिद्री बने रहेंगे ऐसा वाक्य लक्ष्मी ने क्यों कहीं क्योंकि  
१ हे मुनि दुष्ट जीव जैसे दैत्य दानव दुष्ट मनुष्य ये सब चारों  
युग में विष्णु को नहीं जानते कि विष्णु क्या चीज हैं और  
सेवन तो धरारहा परंतु तिनके घर में लक्ष्मी अचल होके टिकी  
हैं तो लक्ष्मी का वाक्य झूठा भया हे गुरुजी इस शंका को

वासुदेवस्य ते नराः पूर्वजन्मनि।स्वस्वकर्मानुसारेण तपो  
 भ्रष्टाऽभवन् क्षितौ ३ कुयोनिं च सुयोनिं च प्राप्तास्स्वेनैव  
 कर्मणा । तपसैश्वर्यमापन्ना भ्रष्टा दुर्बुद्धयोऽभवन् ४  
 यावद्धारिकृतासेवा तावदैश्वर्यमद्भुतम् । भवेयुस्ते च  
 तत्क्षीणे दुःखिनोऽतोरमोदितम् ५ इति० भा० पं० शं०  
 मंजर्यां अष्टादशोऽध्याये अष्टादशवेणी १८ ॥ श्लो० ॥ २२ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ वर्णिताः क्षुद्रनद्योऽपि यालोकैर्न वज्ञा  
 यते । अवन्त्यंतिकगच्छि प्राग्गीताशास्त्रेषु भूरिशः । सालोकै  
 रपि विख्याता नोक्ता भागवते कथम् १ वाचक उवाच ॥

आप नाश करो २ वाचक बोले जो दैत्य आदि दानव तथा  
 जेष्ठ और कोई दुष्ट मनुष्य भगवान् को नहीं जानते तथा  
 लक्ष्मी को सुख भोगते हैं वो जीव पूर्व जन्म में भगवान्  
 से सेवक थे मर्त्यलोक में आपके अपने अपने कर्म से भ्रष्ट  
 हो गये हैं भगवान् को भूलि गये हैं ३ तपसे भ्रष्ट होके दुष्ट बुद्धि  
 होके कोई सुंदरि योनि को प्राप्त भए कोई खराब योनिको  
 प्राप्त भए परंतु भगवान् के सेवनरूप तपस्या करिके अचल  
 लक्ष्मी को सुख भोगिरहें ४ जब तक भगवान् की सेवाको  
 पुण्य उन लोगों के पास रहेगा तब तक अचल लक्ष्मी को सुख  
 भोगेंगे जब सेवाकी पुण्य नष्ट हो जावेगी तथा इस जन्म में  
 भगवान् को पूजन नहीं करते हैं इस वास्ते बहुत दुःख पावेंगे  
 खाने को अन्नभी नहीं मिलेगा इस वास्ते लक्ष्मीने भगवान्  
 से कहीथी की आपु को सेवन नहीं करते हैं सो जीव मेरे को  
 नहीं प्राप्त होते ॥ ५ ॥ इ० भा० पं० शं० मंजर्यां अष्टादशोऽ  
 ध्याये अष्टादशवेणी ॥ १८ ॥ श्लोक ॥ २२ ॥

भोता पूछते भये कि मर्त्य लोक में जो छोटी २ नदी हैं जिन

पश्चिमोत्तरतोमार्गन्दर्दोक्षिप्रानचागतान्। मुनीन्पूजयि  
तुंशम्भुमेकदाशम्भुरात्रिषु २ पूजनंभ्रष्टमन्वीक्ष्यतैश्श  
ताचादरन्नते। भवेद्भागवतेशास्त्रेमुनिनातो न वर्णिता  
३ इति श्रीभा० पं० शं० मं० एकोनविंशोऽध्याये एको  
नविंशवेणी ॥ १६ ॥ श्लो० ॥ १८ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ दर्भशास्त्रमल्लुत्तानां शाकपुष्करशा  
खिनाम् । जम्बोरपिचविस्तारं श्रु वावर्द्धतिनोभ्रमः १  
को नाम भी कोई नहीं जानता उनको तो भागवतमें वर्णन  
व्यास जीने किया तथा उज्जैन के सामने वहनेवाली क्षिप्रा  
नदी जिस को शास्त्र में नाम लिखा है तथा लोक में प्रजाभी  
क्षिप्रा को जानते हैं ऐसी क्षिप्राको वर्णन भागवतमें व्यास  
जीने क्यों नहीं किये १ वाचक बोले एकदिन शिवरात्रिके समय  
मुनिजन शंकर के पूजन करनेवास्ने पश्चिम दिशासे आतेभये  
उसीदिन दैवयोगसे क्षिप्रा भीजल करिकै पूर होरही है मुनि  
जन उतरने लगे तौ क्षिप्राने रस्तानहीं दिया मुनिजन पश्चिम  
में दिशा के तटपर बैठे रहिगये २ शिवरात्रि को शिव को  
पूजन मुनियों ने भ्रष्ट देखिकै क्षिप्रा को शाप देतेभये हेदुष्टे  
नदि भागवत में जिसका वर्णन भया सो धन्य है तेराआदर  
भागवत शास्त्रमें नहीं होगा हे श्रोताहो ऐसा मुनियों को  
शाप जानिकै व्यासजी ने भागवत में क्षिप्रा को वर्णन  
नहीं किया ३ इति भा० पं० शं० मं० एकोनविंशोऽध्याये  
एकोनविंशवेणी ॥ १६ ॥ श्लोक ॥ १८ ॥

श्रोता पूछते भये कुश को सेमला को पाकरि को शाकको  
कमल को जामू को इनवृक्षों की लम्बाई चौड़ाई सुनिकै  
हमारे सबके मनमें दिन २ राति शंका बाढ़ती है क्योंकि  
येवृक्ष हैं कि तमाशा है १ वाचक बोले किराजा प्रियव्रत करि

वाचक उवाच ॥ प्रियव्रतकृतं कर्म शंकीयं कदापि न ।  
 ईश्वरेण कृतं सर्वान्निमित्तकृत्यभूपतिम् २ पंचमेप्रथमेप्रो  
 क्तं श्लोकेचैकोनखाब्धिके । कर्मप्रियव्रतं कर्तुमीश्वरात्को  
 पि न क्षमः ३ इति० भा० पं० शं० मं० विंशेऽध्याये  
 विंशवेणी ॥ २० ॥ श्लोककोनेमनहीं ॥

श्रोतार उचुः ॥ आकाशेभूम्यधो नैव सविताश्रूयते  
 चनः । त्रिलोकीन्तपतेसूर्यः कथं मुनिरुवाचह १ वाचक  
 उवाच ॥ भूम्यधस्सप्तलोकानां गाथानोक्ताशुकेन सा ।  
 मर्त्यादूर्ध्वं त्रिलोकानां लोकाभ्यन्तः प्रवर्तिनी । सा त्रिलो  
 के क्रिया जो कर्म तिस कर्म में शंका कभी भी नहीं करना  
 चाहिये क्योंकि जो आश्चर्य करने लायक कर्म प्रियव्रतने किया  
 है सो सब कर्म भगवान् ने किया है २ राजा प्रियव्रत को निमित्त  
 करिके २ क्योंकि पंचम स्कंध के प्रथम अध्याय श्लो ३६ में  
 व्यासजी कहे हैं कि राजा प्रियव्रत करिके किये जो कर्म  
 तिन कर्मों को करने वास्ते ईश्वरकी सामर्थ्य है और दूसरे  
 प्राणीकी किसीकी नहीं है ऐसे व्यासके वाक्यसे मालूम परता  
 कि जो आश्चर्य रूप काम प्रियव्रतने किया सो सब भगवान्  
 ने किया है इसवास्ते प्रियव्रत के किये कर्म में शंका नहीं करना  
 चाहिये ॥ ३ ॥ इति० भा० पं० शं० मं० विंशेऽध्याये विंशवेणी ॥  
 २० ॥ श्लोक को नेम नहीं अध्याय भरेमें शंका है ॥

श्रोता पूछते भये सूर्य आकाशमें हैं भूमिके नीचे सूर्य नहीं  
 हैं फिर व्यास कैसे कहें कि तीन लोक में प्रकाश सूर्य करते हैं ?  
 वाचक वाले भूमिके नीचे जो सात लोक हैं तिन लोकों की  
 कथा शुकजी नहीं कहेथे मर्त्य लोक के ऊपर जो लोक हैं  
 तिन लोकों के बीचमें जो लोक हैं तिनको त्रिलोकी कहेथे



कीसमाख्यातातपस्येताम्प्रभाकरः २ इति ० भा० पं० शं०  
मं० एकविंशेऽध्याये एकविंशवेणी २१ ॥ श्लो० ॥ ३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ भूमौ तपः प्रकुर्वन्ति सर्वे ब्रह्मर्षिस्त-  
माः । शास्त्रे श्रुतं च नो ब्रह्मन् केचोर्ध्वं ये समाश्रिताः । वाचक  
उवाच ॥ समाप्य तपसां सिद्धिं भूमिन्त्यक्त्वा च ये गताः ।  
तत्र तिष्ठन्ति ते सर्वे शिष्यास्तेषां क्षितिं श्रिताः २ इति श्री  
भा० पं० शं० मं० द्वाविंशेऽध्याये द्वाविंशवेणी ॥ २२ ॥  
श्लो० ॥ १७ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ शिशुमारस्य हृदये ग्रहाणाम्मध्यसं  
स्थितः । नारायणः को भगवान् महाश्रव्यमिदं श्रुतम् १  
उंसी त्रिलोकी कहे तीन लोक में सूर्यप्रकाश करते हैं २  
इति भा० पंचमस्कंधे शृं० नि मंजरीया एकविंशेऽध्याये एक  
विंशवेणी २१ ॥ श्लो० ॥ ३ ॥

श्रोता पूछते मये हम सब शास्त्र में ऐसा सुना है कि सब ऋषि  
जन पृथ्वी में तपस्या करते हैं परंतु हे गुरुजी मुनिजन ऋषि  
लोक में टिकिकै तप करते हैं वो मुनि भूमि में तप करने वाले  
हैं कि दूसरे कोई हैं १ वाचक बोले भूमि में तप करने वाले  
जो मुनि सो तपस्या की सिद्धि की समाप्ति करिकै  
पृथ्वी को त्यागि कै ऋषिलोक को जाते भए ऋषिलोक में  
भगवान् को ध्यान करने लगे कठिन २ तप छोड़ि दिए परंतु  
उन्होंने ऋषियों के शिष्य भूमि में टिके हैं अपने २ गुरुओं के  
आश्रम पर तप कर रहे हैं २ इति भा० पं० शं० मं० द्वाविंशेऽ  
ध्याये द्वाविंशवेणी ॥ २२ ॥ श्लोक ॥ १७ ॥

श्रोता पूछते भर्षे शिशुमार चक्रके हृदय में नवग्रहों के  
बीच में नारायण भगवान् टिके हैं ऐसा भागवत में हम

वाचकउवाच ॥ बद्रिकायान्तपस्तेपेयश्चिरन्धन्मनन्दनः ।  
 शिशुमारस्थितानांसः शिञ्जार्थतत्रसंस्थितः २ इति श्री  
 भा० पं० शं० मं० त्रयोविंशेऽध्याये त्रयोविंशवेणी २३ ॥  
 श्लो० ॥ ७ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ वत्सरेवत्सरेदुष्टौ सूर्यौ पीडयते निशम ।  
 चक्रस्यापि भवेत्कष्टन्नजघ्नेतौ हरिः कथम् १ चेत्ताभ्यां च  
 सुधापीता तथा पितृकृता सुधा २ ॥ वा. उ. ॥ चक्रपूतौ हरि

सबने सुना है हे गुरुजी नारायण भगवान् कौन हैं बड़ी  
 शंका होती है क्योंकि जो वैकुण्ठ नाथ नारायण हैं सो ग्रहों के बीच  
 में कैसे टिकेंगे ? वाचक बोले धर्म के पुत्र जो नारायण हैं जिन्होंने  
 ने बद्रिकाश्रम में बहुत दिन तक तप किये सो नारायण  
 शिशुमारचक्र में टिके जो सब देवता तिनको सुंदर धर्म सि-  
 खाने वास्ते ग्रहों के बीच में टिके हैं २ इति भा० पं० शं० मं०  
 त्रयोविंशेऽध्या० त्रयोविंशवेणी २३ ॥ श्लो० ७ ॥

श्रोता पूछते भगवान् केतु ए. दोनों दुष्ट वर्ष २ सूर्य को तथा  
 चन्द्र को पीड़ा करते हैं तथा इन दोनों से सूर्यचंद्र की रक्षा करने  
 वास्ते भगवान् को सुदर्शनचक्र आता है तो हमेशा आने जाने  
 में रक्षा करने में सुदर्शन को भी कष्ट होता है ऐसे दुख देने  
 वाले राहुकेतु को भगवान् क्यों नहीं मार डाले कि किसीको  
 दुःख नहीं होता १ यह जो को ? कहै कि राहु केतु अमृत  
 पिये थे किसी के मारे न मरते तो सत्य है परंतु अमृत भी भगवान्  
 का बनाया है भगवान् मारा चाहते तो अमृत रक्षा नहीं कर  
 सका २ वाचक बोले भगवान् सुदर्शन चक्र करिके राहु को मारते  
 थे तबसे राहु केतु चक्र को छुड़के पवित्र होगये भगवान् सुदर्शन  
 चक्र करिके पवित्र राहुकेतु को जानिके नहीं मारते भय तथा

ज्ञात्वा चासुरौ नावधीक्षरः । चक्रचिह्नं विलोक्यैव हरिः प्री  
तो द्वयोरभूत् ३ इति श्री भा० पं० शं० मं० चतुर्विंशोऽध्याय  
चतुर्विंशवेष्टी ॥ २४ ॥ श्लो० ॥ १ ॥ से ॥ ३ ॥ तक ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ मुमुक्षुरन्यंकं सेवेच्छेष्टादन्यमिति  
प्रभो । न कुत्रापि श्रुतं चैतद्बालवन्मुनिनोदितम् १  
वाचक उवाच ॥ शेषशब्दस्य द्वैधार्थो मुनिना संकृतः पुरा ।  
शब्दशास्त्रविहीनैश्च ज्ञायते पृथिवीधरः २ तत्कृतश्रमविद्ध  
द्भिर्नष्टे सर्वे चराचरे । यश्शेषो ज्ञायते सस्तु मुमुक्षूणां सुख  
प्रदः ३ भूमिभारधरं शेषं निमित्तं कृत्य वै मुनिः । राजानं  
दोनो की देहमें चक्रको चिह्न देखिके राहु केतुके ऊपर प्रसन्न  
होगये ३ इति भा० पं० शं० मं० चतुर्विंशोऽध्याये चतुर्विंशवेष्टी  
२४ ॥ श्लोक १ से ३ तक ॥

श्रोता पृच्छते भये हे गुरुजी शुकदेवजी राजा से कहें कि मुक्ति  
होने की इच्छा किहें जो प्राणी हैं सो शेषसे दूसरो देव कौन  
है जिसको सेवन करेंगे मुक्ति देनेवाला शेष । सिवाय दूसरा  
देवता कोई नहीं है ऐसा वाक्य कभी भी हम लोग नहीं सुने कि  
मुक्ति देनेवाले शेष भगवान् हैं शुकजी बालकसरीके क्यों ऐसे  
वचन कहे १ वाचक बोले व्यास मुनिने शेष शब्दको दो अर्थ  
किये हैं व्याकरणको जो मनुष्य नहीं जानते वो मनुष्य तो शेष  
अपनी मस्तक पर भूमिको धरे हैं उसको शेष कहेंगे २ तथा  
जो मनुष्य व्याकरण को जानते हैं वो सब शेष शब्द को अर्थ  
ऐसा करेंगे कि तीन लोक चौदह भुवन चरअचरको नाश भये  
पीछे जिस भगवान् को नाश नहीं होता उसको शेष कहेंगे  
सोई शेष भगवान् मुक्तिकी इच्छा करनेवाले जीवों को सुख देने  
वाला है इसी वास्ते मुक्तिकी इच्छा करनेवाले जीव शेष भगवान्

कथयामास नष्टशेषमुनीश्वरः४इतिश्री भा० पं० शं०  
मं० पंचविंशेऽध्यायेपंचविंशवेणी २५॥ श्लोक ॥ ११॥

श्रोतार ऊचुः ॥ द्विजादयोनविश्रुताः कदाऽस्माभि  
मुनीश्वर । स्वगर्द्धभानांम्पतयो मुनिनोक्तंकथन्त्वित्दं १  
वाचक उवाच ॥ समीचीनश्शुनामर्थो भ्रमोऽस्तिगर्द्ध  
भेपदे । प्रोक्तस्सर्वेषुकोशेषु वस्तोऽपिगर्द्धभोच्च्यते २  
त्रिवर्णैःपाल्यतेवत्सस्तस्मात्तेपतयस्स्मृताः । स्वगर्द्ध  
भानाम्पतयः चातःप्रोक्ताद्विजातयः ३ इ० भा० पं०

शं० मं० षड्विंशेऽध्यायेषड्विंशवेणी २६॥ श्लो०॥ २४॥

को त्यागिकै दूसरे देव को किसको पूजन करेगे ऐसा मुनिने कहे हैं ३  
पृथिवी जीवों को धारण किये जो शेष तिन को व्याज करिके  
संसार के नष्ट भये पीछे जो शेष भगवान् तिनके वास्ते राजा  
से शुक जी कहे हैं ॥ ४ ॥ इति० भा० पं० शं० नि० मं०  
पंचविंशेऽध्यायेपंचविंशवेणी ॥ २५ ॥ श्लोक ॥ ११ ॥

श्रोता पूछते भये कि हम सबों ने ऐसा कभी नहीं सुना कि  
ब्राह्मण क्षत्री वैश्य कुत्ता गदहा आदि जेकै और पशु हैं तिन  
को पति होते भये मुनिने ऐसा वाक्य क्यों कहे १ वाचक बोले  
श्वान को पति होना तो ब्राह्मण क्षत्री वैश्य के वास्ते प्रगट है  
क्योंकि उस श्वान को तीनों वर्ण पालते हैं गर्धभ को पति होना  
तीन वर्ण को नहीं चाहिये तौ भी बड़े बड़े कोशों में बकरा  
को भी गर्धभ कहते हैं ब्राह्मण क्षत्री वैश्य बकरा को पाल  
न चारों युगमें करते भये कोई यज्ञ वास्ते कोई जीव दया  
मानि कै इन आदि कारण से बकरा को पालते भये इस वास्ते  
मुनिने तीनों वर्णों को श्वान तथा गर्धभ को पति कह्ये क्यों  
कि तीन वर्णों को कुत्ता बकरा पालना बड़ा बुरा कर्म शास्त्र में

लिखा है परन्तु जो प्राणी प्रमाद से उनकी पालना करेंगे सो  
 दुःख भोगेंगे ॥ ३ ॥ इति० भा० पं० शं० मं० षड्विंशोऽध्याये  
 षड्विंशवेणी ॥ २६ ॥ श्लोक ॥ २४ ॥

इति श्रीभागवतशंकानिवारणमंजरी शिवसहाय  
 बुधविरचितासुधामयीटिकासहितासमाप्ता  
 श्रीशंकरार्पणमस्तु ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

# श्रीमद्भागवतशंकानिवारणमंजरी॥

षष्ठस्कंधे ॥ ६ ॥

सुधामयीटीकासहिताविरच्यते॥

श्रोतार ऊचुः ॥ विद्वानजामिलोज्ञानीगुर्वग्नितिथि  
सेवकः । दृष्टमात्रः कथंशूद्रीं स्वधर्माद्विररामह । मह  
दाश्चर्यमेतद्विवर्तते हृदयेचनः १ वाचक उवाच ॥ ऋषि  
म्पराशरन्दृष्ट्वाच्युतवीर्य्यजहासवै । योनौचनीचकन्या  
यागंगामध्येसुविह्वलमूर्तेनशप्तस्त्वमप्येवंचणाच्छूद्रो

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी अजामिल बड़ा पण्डित था  
ज्ञानीथा गुरुकी अग्नि की महात्मा की सेवा करने वालाथा  
ऐसा अजामिल शूद्री को देखतेई मात्र अपने धर्मसे भ्रष्ट  
होगया यह बात सुनिकै हमारे सबके मनमें बड़ा आश्चर्य  
मालूम परता है क्योंकि कोई मूर्ख भ्रष्ट होता है तोभी एक  
क्षणमें नहीं होता यह तो बड़ा चतुरथा क्षणएकमें क्यों भ्रष्ट  
हुआ १ वाचक बोले गंगा की बीच धारा में पराशर मुनि  
काम करिकै दुःखी होगये तब भील की कन्याके संग रमण  
करतेभये ऐसे पराशर मुनिको अजामिल देखिकै बहुत हंसता  
भया २ अजामिल को हसता देखिकै पराशरमुनि अजामिल  
को शाप देते भये हे दुष्ट हमेसरीके तूभी किसी समयमें शूद्री  
को देखिकै कामसे व्याकुल होके ब्रह्मकर्म से भ्रष्ट होजावेगा

भविष्यति । शूद्रीकामेनसंतप्तश्चातश्शीघ्रंविमोदितः ३  
इति श्रीभा० ष० शं० मं० प्रथमेऽध्यायेप्रथमवेणी १  
श्लो० ॥ ६१ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ अजामिलोयदाशुद्धो नारायणप्रकी  
र्तनात् । तंवक्तुंस्वात्माभिर्विच्य तद्वृताश्चकथंगताः १  
वाचक उवाच ॥ नारायणेतिशब्दस्य कीर्तनाद्यमत्रास  
तः । विमुक्तो न च पापैश्च सर्वैश्शुद्धो बभूव ह २ चेच्छुद्ध  
स्तन्नयन्तिस्मते वैकुण्ठतदाक्षणात् । ब्रह्महत्यासमपापं  
हमतो एकदफे भ्रष्टहो शरीर को शुद्ध करिलेवैगे परन्तु तंतो  
बिलकुल ब्राह्मण नहीं रहैगा चंडाल एक क्षणमें होजावैगा  
हे श्रोताजनो इसवास्ते अजामिल क्षणमें भ्रष्ट होगया ॥ ३ ॥  
इति श्रीमद्भागवतशंकानिवारणमंजरीशिवसहायबुधविरचित  
तायां सुधामयीटीकायां षष्ठस्कंधे प्रथमेऽध्याये प्रथमवेणी ॥ १ ॥  
श्लोक ॥ ६१ ॥

श्रोता पूछते भये कि नारायणको नाम मरते वखत अ-  
जामिलने लिया तौ अजामिलको पातक सब नष्ट होगया  
अजामिल शुद्ध होगया तौ भगवान् के दूतोंसे कुछ बात करनेकी  
इच्छा अजामिल किया तौ दूतोंने विचार किये कि यह हमसे  
बोलैगा तौ हमारे सबको पाप लगेगा ऐसा जानिके क्यों  
चले गये क्योंकि अजामिल तो पापसे छूटि गया था यह शंका है  
१ वाचक बोले नारायणके नामको अजामिल लिया तब उसी  
नामके पुण्यसे यमराज के त्राससे छूटि गया तथा सब पाप  
करिके नहीं छूटा २ जब पापसे छूटि गया होता तौ उसी  
वखत भगवान् के दूतोंने अजामिलको वैकुण्ठको एक क्षणमें  
लेजाते पृथ्वीमें तपस्या करनेको फिर क्या काम था दूतोंने

पापिनाम्भाषणेन च । एवं ज्ञात्वा गतास्सर्वे तपस्तप्तुं  
द्विजोगतः ३ इति० भा० ष० शं० मं० द्वितीयेऽध्याये  
द्वितीयवेणी २ ॥ श्लो० ॥ २३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ ऋषयो नैव जानन्ति धर्मं भागवत  
भट्टाः । वयं द्वादशजानीमः प्रह्लादजनकादयः १ इमे  
नोक्तमिदं वाक्यमहदाश्चर्यदायकम् । प्रह्लादादृषयो  
न्यनाहरिर्येषां च किंकरः २ वाचक उवाच ॥ न न्यना ऋषयः  
सर्वे ते श्रेष्ठा भुवनत्रये । मानिनो नैव पश्यन्ति धर्मं भागवतं  
विचार किये कि पापी के संगवात करनेवाले प्राणी का ब्राह्मण  
मारसे जो पाप होता है सो पाप उसको लागता है ऐसा जानि  
कै अजामिल को छोड़िके चले गये तब अजामिल पाप नाश  
करने वास्ते तप करने को गया ३ इति भा० ष० शं० मं० द्वि  
तीयेऽध्याय द्वितीय वेणी ॥ २ ॥ श्लो० ॥ २३ ॥

श्रोता पूछते भये कि यमराजने अपने दूतों से कहे कि हे  
दुत लोगो भागवत रूप धर्म को ऋषजोग भी नहीं जानते हैं  
प्रह्लाद तथा जनकराजा को आदिल के हम वारह १२ जन  
भागवत रूप धर्म को जानते हैं हे गुरुजी बड़े आश्चर्य की बात  
यह है कि जिन मुनियों को भगवान् दास है सो मुनिजन  
भगवान् के धर्म जानने में प्रह्लाद से भी मूर्ख होगये यह बड़ी  
शंका होती है २ वाचक बोले मुनिजन भगवान् से बड़े हैं दूसरे  
प्राणी से किसी काम से छोटे क्यों होवेंगे तीन लोक में सब से  
बड़े हैं परंतु तपस्या के अभिमान से भागवत रूप धर्म को नहीं  
देखते विचारते हैं कि क्या हमारे तप से भागवत धर्म बड़ा है  
अपि जन तप करिके अभिमानी हो रहे हैं इस वास्ते भागवत  
धर्म को नहीं जानने और प्रह्लाद जनक आदि ये गरीब हैं इनको



शुभम् ३ तपसामानिनस्सर्वे प्रह्लादाद्यास्तु किंचनाः ॥  
इति० भा० ष० शं० मं० तृतीयेऽध्याये तृतीयवेणी ॥ ३  
श्लो० ॥ १६ ॥ से ॥ २० ॥ तक ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ प्रचेतससुतानचे द्विपदानांचतु  
ष्पदः । अन्नं कथमिति ब्रह्मन् महाश्रयं निशाकरः १  
उवाच ॥ न ह्यत्र शशिना प्रोक्ताः पशवश्च चतुष्पदः । भक्षभो  
ज्यौ चोष्यलेह्यौ पदास्स्वादन्निगद्यते २ चत्वारैतत्पदो  
यस्मिन्कथ्यते सश्चतुष्पदः । सुभोजनोक्तश्शशिनानप  
शूनाम्प्रभक्षणम् ३ इति० भा० ष० शं० मं० चतुर्थेऽ  
ध्याये चतुर्थवेणी ४ ॥ ॥ श्लो० ॥ ६ ॥

भगवान् सिवाय दूसरा आधार कोई नहीं है इस वास्ते भागवत  
धर्म जानने को यमराज अपने दूतों से कहें ३ इ० भा० ष०  
शं० मं० तृतीयेऽध्याये तृतीयवेणी ॥ ३ ॥ श्लो० ॥ १६ ॥ से २० ॥

श्रोता पूछते भये चंद्रमाने प्रचेतसके पुत्रों से कहें कि मनुष्य  
को आहार पशु है बड़े आश्चर्य की बात है हर १-१ वाचक  
बोले हे श्रोता हो (द्विपदानां चतुष्पदः) इस श्लोक को अर्थ चन्द्रमा  
चतुष्पदयाने चारि पगवाले पशु नहीं किये ऐसा अर्थ किहे कि  
चतुः कहे चारि प्रकारको भोजन भक्ष्य १ भोज्य २ चोष्य ३  
लेह्य इन चारों प्रकार भोजनों को पदकहे सोई स्वाद मनुष्यों  
को आनंदसे आहार है २ इन चारों भोजन को पदकहे स्वाद  
जिस भोजन में होवै उस भोजन को चतुष्पद कहें चतुष्पद  
नाम बहुत सुंदर भोजनको है चंद्रमाने मनुष्य को पशु खानेको  
नहीं कहें ॥ ३ ॥ इति० भा० ष० शं० मं० चतुर्थेऽध्याये चतुर्थ  
वेणी ॥ ४ ॥ श्लोक ॥ ६ ॥

श्रोता पूछते भये हर्यक्ष जो दक्षके पुत्र हैं सो सब भाई

श्रोतार ऊचुः ॥ प्रजावितृद्दयेयुक्कान्द्वय्यश्वाभारदो

। तान्निवार्यप्रजासृष्टेयौगमार्गैष्वप्रेरयत् १ वाचक

॥ तेषामिच्छाप्रजासृष्टौ नाभवत्पितुराज्ञया । कर्तुं

। तेषाम्मनोगतम्भा

२ इति श्री भा० ष० शं० मं०

वे० ॥ ५ ॥ श्लो० ॥ ६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ तिमिश्रचसरमेलाचसुरसाद्यामुनेस्त्रि

ः । तृणादिगृहजलजाशुनोयासांसुतास्स्मृताः १ किन्त्वा

सन्ताश्चब्राह्मण्यः किन्तुश्वानादिमातरः । महदाश्चर्ममे

तद्ब्राह्मणीनांकुजातयः २ वा० उ० मुक्ताशुक्त्यांयथोत्पन्ना

मिक्षिकैः सृष्टिं बनाने वास्ते तपस्या करनेजगे तब तिनसबको

नारद ने सृष्टि बनाने वास्ते मना करिकै योगकरने को

क्यों आज्ञा देते भये सृष्टि बनाने में नारद को क्या हर्जा

होताथा १ वाचक बोले दक्षपुत्रोंकी इच्छा सृष्टि बनाने की

नहींथी योग करने की इच्छाथी परन्तु पिताकी आज्ञा मानि

के सृष्टि बनाने वास्ते तपकरने को गये तब नारद उनके

हृदयकी बातको विचारिकै तिनके मनकी बात जानि के

सृष्टि बनाना मनाकरिकै योगकरने को उपदेश करतेभये ॥ २ ॥

इ० भा० ष० शं० मं० पंचमेऽध्यायेपंचमवेणी ॥ ५ ॥ श्लोक ६ ॥

श्रोता पृच्छते भये कि कश्यप मुनिकी तिमिसरमाइला सुर-

सा आदिस्त्री होतीभई जिन्होंके तृण सर्प गंध जल के जान-

वर सब तथा कुत्ता ऐसे २ पुत्रहोते भये १ हे गुरु जी जिनके

ऐसे पुत्रभये सो सब स्त्री ब्राह्मणीथी कि कुत्ता आदिजो जन्मे

तिनकी माता को रूप धारण कियेथी कैसारूप तिन्होंकाथा

बड़ा आश्चर्य होता हे कि ब्राह्मणियों के पेटसे ऐसेस्वराष पुत्र

गजमुक्तागजश्रवे । मृगनाभ्य ३  
 चनम् ३ वंशवृक्षेचवंशाक्षि मुनिस्त्रीषुप्रजज्ञिरे । तथा  
 प्येतेचब्राह्मण्य स्ताविधेर्वलवानुगतिः ४ इतिश्रीभा०  
 ष० शं० मं० षष्ठेऽध्यायेषष्ठवेणी ॥ ६ ॥ श्लो० ॥ २६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ युगाव्यतीताबहवश्चेन्द्रे राज्यं प्रशा  
 सति । अयासीत्सदसन्नित्यमिन्द्रस्य भगवानुगुरुः १  
 नोच्चालासनादिन्द्रस्तद्दिने गर्वितः कथम् । वाचक  
 उवाच ॥ वलिनाकारयामास शत्रुं जयमखंगुरुः २ तत्स  
 माप्तिदिनन्तत्तु सुरेशस्तेन सोद्विहितः । गुरोरनादरादन्य  
 जन्मते भये हर ३-२ वाचक बोले जैसे सीप में मोती होता है  
 तथा हाथी के कान में गजमोती होता है जैसा मृगाकी नाभी  
 में कस्तुरी होती है गायके कानमें गोरोंचन होता है ३ जैसा  
 बांसमें वंशलोचन होता है तैसा ब्रह्माकी इच्छा करिके तिमि  
 सुरसाइला आदिलेके कश्यप मुनिकीस्त्री थीं ब्राह्मणीथीं पशु  
 पक्षिणी रूप नहींथीं परन्तु ब्रह्मा का कर्म बड़ा जबरदस्त है  
 इसवास्ते ब्राह्मणियोंके उदरसे ये सब जानवर जन्मते भये ॥  
 ४ इ० भा० ष० शं० मं० षष्ठेऽध्यायेषष्ठवेणी ॥ श्लोक ॥ २६ ॥

श्रोता पूछते भये तीन लोकको राज करते करते इन्द्रके  
 बहुत युग बीतिगया तथा बृहस्पति जो गुरु सोनित्य इन्द्रकी  
 सभाको आतेथे कभी भी गुरुको अनादर इन्द्रने नहीं किया,  
 परन्तु उसदिन अनादर क्यों किया बुद्धिभ्रष्टहोगया यह बड़ी  
 शंकाहोती है हर ३ वाचकबोले कि बलिको दुखी देखिके शुक्रा  
 चार्य शत्रु को जीतने वास्ते बलिसे यज्ञ कराते भये जिस  
 दिन यज्ञकी समाप्ति होगई उसीदिन इन्द्रकी पुण्यनष्ट होगई  
 तब बलि की यज्ञकी पुण्य से इन्द्र पागल होगया २

दुपायं नैव तज्जये । कारयित्वाप्यतस्तस्यतिरस्कारो मखो  
गतः ३ इति श्री भा० ष० शं० मं० सप्तमेऽध्याये सप्तम  
वेणी ॥ ७ ॥ श्लो० ॥ ८ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ प्राप्तकालो नृपोऽपृच्छन्मुनिं ब्रह्म क  
गुरो । कथाप्रश्नं परित्यज्य हरेर्नारायणस्य च १  
वाचक उवाच ॥ आत्मार्थं सज्जनाः कर्म न कुर्वन्ति कदा  
पेच । नदीगिरितरूणाम्बे स्वाभावमिव सो नृपः २  
बलिकी यज्ञमें विचार किया कि जब इन्द्र अपने गुरुको  
प्रनादर करेगा तब इन्द्रको बलि जीतैगा इस उपायसे दू-  
सरा उपाय इन्द्रके जीतने का नहीं है ऐसा विचारिके बलि  
की यज्ञ इन्द्रको मोहिके इन्द्रसे वृद्धस्पतिको अनादर कराय  
के चला गया इस कारणसे उस दिन इन्द्रगुरुको अनादर  
किया ३ इति भा० ष० शं० मं० सप्तमेऽध्याये सप्तमवेणी ॥  
७ ॥ श्लो० ॥ ८ ॥

श्रोता पूछते भए राजा परीक्षित को मरण नगीच आया  
था तब राजा भगवान्की कथाको पूछनातौ छोड़ि दिया  
नारायण वर्म क्यों मुनिसे पूछा नारायण वर्मतौ शरीर की  
रक्षा है सो शरीरतौ राजाका छूटने वाला फिरि क्यों पूछा १  
वाचक बोले सज्जन पुरुष अपने सुख होने वास्ते कुछभी  
कर्म नहीं करते दूसरे को सुख होने वास्ते काम करते हैं  
राजा परीक्षित नदीको पर्वतको वृद्धको स्वभाव ग्रहण किया  
जैसी नदी राति दिन जलसे भरी रहती है पण अपने वा-  
स्ते नहीं भरी रहती है दूसरे जीवोंको सुख देने वास्ते जल  
से भरी रहती है तथा पर्वत चारा लकड़ी आदि अनेक  
वस्तु अपने ऊपर राखता है परंतु अपने वास्ते नहीं दूसरे  
जीवों को सुख देने वास्ते जैसा वृद्ध दूसरे वास्ते फलपत्ता

सुखायसर्वजीवानां पप्रच्छकरुणापरः ३ इति श्रीभा० ष०  
शं० मं० अष्टमेऽध्याये अष्टमवेणी ॥ ८ ॥ श्लो० ॥ २ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ ववृधे सततमृत्तश्चतुर्दिक्षुकथंगुरो ।  
इषुमात्रं महाश्रयमिदं च कौतुकं किमु १ वाचक उवाच ॥  
इषुशब्दोत्र चापश्च विद्वद्भिर्न च गृह्यते । इषीकेषुश्च स  
प्रोक्ता विश्वकोशादिमंडले २ मात्रं स्थूलमिति प्रोक्त  
मिषीकास्थूलसंचयः । दिनेदिने सो ववृधेन तु चापप्रमा  
णतः ३ इति श्रीभा० ष० शं० मं० नवमेऽध्याये नवम  
वेणी ॥ ९ ॥ श्लो० ॥ १३ ॥

फूल आदि राखते हैं तैसा परीखित् भी २ आपुतो मरबे  
योग्य होगया परंतु सबजीवों को सुख होने वास्ते नारायण  
वर्म पूछे हैं ३ इति० भा० ष० शं० मं० अष्टमेऽध्याये अष्ट-  
मवेणी ॥ ८ ॥ श्लोक ॥ २ ॥

श्रोता पूछते भये कि पूर्व पश्चिम दक्षिण उत्तर इनचारों  
दिशा की तरफ नित्य चारि चारि हाथ सोरह १६ चारों  
तरफ वृत्रासुरकी देह बाढ़ती थी रोज यह बात बड़े आश्च-  
र्य की है तमाशासुरीके मालूम परता है क्यों वर्ष १ को हिसा-  
ब जोड़ो तौ कितनी मोटी देह होवैगी और वृत्रासुरतो  
लाखों वर्ष जीता रहा तब कैसी देह भई होगी हर ३ वाचक  
बोले इषुमात्र इस श्लोक में विद्वान् जन इषुको वाण नहीं  
कहते क्योंकि विश्वकोश कमंडलुकोश आदि कोशों में इषु  
को सकिभी लिखते हैं २ मात्रको मोटा अर्थ लिखते हैं इस  
प्रमाण से इषुमात्र कहे सीकैसरी के ज्यादा वृत्रासुर की देह  
नित्य चारों तरफ बाढ़ती थी चार हाथ प्रमाण एक धनुषको

दीप-सीक वांसकी सजाई को कहते हैं-

श्रोतार ऊचुः ॥ विश्वरूपस्सुरानूचेसः शोच्यस्स्था  
वरैरपि । शोकादयो न दृक्षाणां कथं शोचन्ति तेनरान् १  
वाचक उवाच ॥ स्थावरास्तरवः प्रोक्ता नान्यत्र भगवत्प  
दात् । स्थापयन्ति मनोयेते मुनयः स्थावराः स्मृताः । तेऽ  
पिशोचन्ति मुनयस्त्वाष्टेन भाषितं नरम् २ इति० भा०  
ष० शं० मं० दशमेऽध्याये दशमवेणी ॥ १० ॥ श्लो० ॥ ८ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ वृत्रासुरस्य शब्देन लोकाश्चासन्  
विचेतसः । कथमेतच्छुकेनोक्तं लोकाश्च बहुविस्तृताः १  
है सो धनुष प्रमाण माने चारि हाथ नहीं नित्य देह बाढ़-  
तीथी ३ इति भा० प० शं० मं० नवमेऽध्याये नवमवेणी ॥  
६ ॥ श्लोक ॥ १३ ॥

श्रोता पूछते भये विश्वरूप देवतों से कहे कि ऐसे प्राणी  
को वृक्ष भी शोच करते हैं कि इसकी सुंदरि गति किस  
प्रकार से होगी यह बड़ा दुष्ट है तो यह शंका होती है कि  
वृक्ष तो जड़ हैं उनको तो किसी बातको शोच आदि लगे जो  
दुःख सुख सो नहीं है फिर वो वृक्ष मनुष्यको शोच क्यों करेंगे ?  
वाचक बोले (सः शोच्यः स्थावरैरपि) इस श्लोक में व्यासजी  
वृक्षों को स्थावर नहीं कहे थे भगवान् के चरणों में जो मुनि  
लोग नित्य मनको टिकाते हैं तिनको व्यासजी स्थावर  
कहे थे ऐसे मुनिजन जो हैं सो विश्वरूप करिके कहा जो  
मनुष्य तिसका शोच करते हैं २ इति भा० प० शं० मं०  
दशमेऽध्याये दशमवेणी ॥ १० ॥ श्लोक ॥ ८ ॥

श्रोता पूछते भए शुकदेवजी परीक्षित से कहे कि हे राजन्  
वृत्रासुरके शब्द करिके सब लोक व्याकुल होगया ऐसा वाक्य  
सुनिके बड़ी शंका होती है क्योंकि लोक तो बहुत हैं वृत्रासुर  
कैसा शब्द किया जिस करिके सब लोक व्याकुल होगया

तथापिविष्णुर्भगवान् विरंचिशंकरो गुरौ । महात्मानश्च  
 मुनयो लोकेष्वेव वसन्ति च २ वाचक उवाच ॥ लोक  
 शब्दः प्रजावाची लोको लोकोपि कथ्यते । युद्धस्य परितो  
 लोकास्संस्थितास्ते विचेतसः ३ इति श्री भा० ष० शं०  
 मं० एकादशेऽध्याये एकादशवेणी ॥ ११ ॥ श्लो० ॥ ६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ यावच्चिच्छेदवृत्तस्य मूर्ध्नि नमय न द्वय  
 म् । तावद्व्यतीतवज्रस्तु महदाश्चर्यकौतुकम् १ चतुर्यु  
 गेव भवुश्च राक्षसानेकशो गुरो । न केषामीदृशं कर्म श्रुतम  
 स्माभिरुत्तमम् २ वाचक उवाच ॥ न ह्यत्र ज्योतिषामर्थो

यह बड़ी शंका है १ जो सब लोक शब्द से व्याकुल भये तो  
 लोक ईमें तौ विष्णु ब्रह्मा शिव ऋषि बड़े बड़े महात्मा मुनि  
 ये सब रहते हैं तो ये सब जन व्याकुल होगये होवेंगे २ वाचक  
 बोले लोक शब्द लोक को नहीं मुनियों ने कहे हैं तथा प्रजा को भी  
 लोक मुनि जन कहते हैं तब लोक को व्यास जी ऐसा कहे हैं कि  
 इन्द्र वृत्रासुर के युद्ध के चारों तरफ जो लोक कहे प्रजा  
 सो सब व्याकुल होगये सब लोक को व्याकुल होने वास्ते व्यास  
 जी नहीं कहे थे ३ इति० भा० ष० शं० नि० मं० एकादशे  
 अध्याये एकादश वेणी ॥ ११ ॥ श्लोक ॥ ६ ॥

श्रोता पूछते भये इंद्र को बज्र वृत्रासुर के मस्तक को चारह  
 महीने में काटा यह बड़े आश्चर्य की बात है १ हे गुरुजी  
 सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग इन चारों युग में अनेक राक्षस  
 भये हैं परंतु किसी के मस्तक काटने में महीना चार १२ नहीं  
 बीता हम सब किसी शास्त्र में ऐसा आश्चर्य सुना भी नहीं  
 २ वाचक बोले (ज्योतिषां अयने) इस श्लोक में ज्योतिष को  
 अर्थ ज्योतिष शास्त्र नहीं व्यास किये ज्योतिष को अर्थ ऐसा

ज्योतिश्शास्त्रस्य गृह्यते । ज्योतिषान्नेत्रदीप्ती नाम्निष्णु  
पादौ सुकोमलौ ३ अयनौ मुनिभिः प्रोक्तौ यावत्तौ तेन वर्ण  
यते । अहर्गणक्षणे तावद्वज्रश्चिच्छेदतच्छिरः ४ इति०  
ष० शं० मं० द्वादशेऽध्याये द्वादशवेणी १२ श्लो० ३३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ ऋषिभिर्महदाश्चर्यं मुक्तामिष्ट्वा  
हरिप्रभो । हयमेधेन मुच्येत चराचरवधादपि । पितृगो  
गुरुमातृघ्नो ब्रह्मघ्नः श्वानभक्षकः । चांडालोऽपि विमुच्येत  
तद्यज्ञेन शचीपते २ वाचक उवाच ॥ नीतिशास्त्रेषु वेदेषु  
पुराणेष्वपि सर्वशः । आत्मघातेशिशोर्घाते धेनुस्त्रीघातके  
व्यासजी किहेहैं कि ज्योतिष जो आंखों का प्रकाश तिसको  
अयने मानें स्थान भगवान्को कोमल २ पगहै ३ सोई  
भगवान् के पगको मरते वखत वृत्रासुर जबतक देखने लगा  
तबतक राति दिनके एक २ क्षणमें वह वृत्रासुरके मस्तक  
को वज्रनेकाटि डाला ऐसा अर्थ व्यासजीने किहेथे वारहमास  
१२ नहीं किये ४ इति श्री भा० ष० शं० नि० मंजय्या  
द्वादशेऽध्याये द्वादशवेणी १२ ॥ श्लोक ॥ ३३ ॥

श्रोता पूछते भये कि मुनियोंने इन्द्रसे बड़े आश्चर्य की  
बात कहेहैं कि हे इन्द्र तीनलोक चौदह भुवन में जो चरअचर  
जीवहैं तिनको मारि डाले फिरि अश्वमेध यज्ञकरिके भग-  
वान्को पूजनकरैगा तो पेश्तरकहेहुये जो जीवतिनकी हत्यासे  
छूटि जावेगा । तथापिता गुरुमातृको मारि डालै ब्राह्मणको मारि  
डालै कुत्ता आदि जीवों को खायलेवै ऐसा चांडाल होवै तो भी  
हे इन्द्र अश्वमेध यज्ञकरिके पापसे छूटि जावेगा हे गुरुजी  
ऐसा वचन कहना मुनिको नहीं है चंडालको है तथा सुनने  
वाला भी चंडाल है हर ३ ऐसा अन्याय मुनिहोके बोलना २



तथा ३ नानृतम्विब्रुवन्पापी भवेदितिविचार्यच  
लोभयित्वासहस्राक्षमनृतोक्तेनब्राह्मणाः ४ वृत्रेणदुःखि  
तम्बीक्ष्य विश्वमेतच्चराचरम् । घातयित्वासुरेशेन तम्  
भूवुःसुखान्विताः ५ इतिश्रीभा० ष० शं० मं० त्रयोदशे  
ऽध्यायेत्रयोदशवेणी ॥ १३ ॥ श्लो० ७ से ६ तक ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ दशलक्षस्त्रियोराज्ञश्चित्रकेतोः प्रवर्णि  
ताः । शुकेनैव कथम्ब्रह्मन् तासां रस्यादिपोषणम् १ वाचक  
उवाच ॥ चित्ररूपाः स्त्रियस्सर्वाश्चित्रिताश्चित्रकेतुना ।

वाचक बोले नीति शास्त्र में वेदमें पुराण में धर्मशास्त्र में ऐसा  
लिखा है कि अपने शरीर को नाश होता होवै तथा बालक  
मारजाता होवै तथा गौमारी जाती होवै स्त्रीमारी जाती होवै  
और झूठबोलेसे ये सब बचिजावैं तौ झूठ बोलिकै इन सबके  
प्राणकी रक्षा करना वह झूठ नहीं लिखा जावैगा ३ ऐसा  
ब्राह्मणोंने विचारि कै इन्द्रको यज्ञका लोभ देखाय कै झूठा  
वचन बोलिकै इन्द्रकरिकै वृत्रासुर को मराते भये ४ क्यों  
कि वृत्रासुर ने तीनलोक चर अचर सब को दुःखदेरहा है  
तीनलोक की रक्षा करने वास्ते गनती से हीन जीवों की रक्षा  
करने वास्ते झूठ बोलिकै इन्द्रसे वृत्रासुर को मराय कै  
सब सुखी होतभये इस वास्ते अश्वमेध की तारीफ इन्द्रसे  
मुनिजन करते भये ॥ ५ ॥ इति० भा० ष० शं० मं० त्रयो  
दशेऽध्यायेत्रयोदशवेणी ॥ १३ ॥ श्लोक ॥ ७ ॥ से ६ तक ॥

श्रोता पूछते भये हेगुरु जी राजा चित्रकेतुके दश १००००००  
लाखस्त्री परीक्षितसे शुकदेव जी कहे कि हे परीक्षित चित्रकेतु  
राजा के दशलाखस्त्री थीं तब उनस्त्रियों को रति आदिबेकै  
और अनेक प्रकारको पोषण भरण कैसा होताथा वड़े

१. देवर्षि २. चित्रज्ञेन पृथक् पृथक् २ जाना  
 ते वि० २ च चित्रसंजीवनीमपि । यदेच्छति तदा ता  
 सां कृत्वा संजीवनं क्षणात् ३ हास्यादिक्रीडां संकृत्य पुनश्चै  
 व विसर्जयेत् । विवाहितो यदा राजा तत्पश्चाच्चित्रिता  
 स्त्रियः ४ दृष्ट्वा पुत्रमुखं राजा नित्यन्तासां जीवनम् ।  
 करोति जीविताश्चेताः पंचमेदिवसेतदा ५ स्वस्वमा  
 र्जनकर्त्री भिष्यति चोक्ता सर्वा निरादरम् । एकदा जीविता  
 र्सर्वा दैवान्नैव विसर्जिताः ६ गरन्ददुःकुमारा यशोकार्ते  
 आश्चर्य की वात है शिव २-१ वाचक पोले राजा चित्रकेतु  
 चित्रवनाने में बड़ा चतुर था सो अपने सोनेवाले महल में  
 दशलाख मकान में जुदा २ दशलाख स्त्रियों की तसवीर चित्र  
 की मूर्ति लिखी थी २ चित्रविद्या जानता था राजा तथा चित्र  
 को सजीवन करने की विद्या भी जानता था जब चित्रकेतु  
 इच्छा करौ कि इन स्त्रियों को सजीवन करना चाहिये तब उसी  
 बखत स्त्रियों को सजीवन करिके ३ तिनके संग, हास्यविलास  
 करिके फिरितुरंत विसर्जन करि देता रहा जब राजा को विवाह  
 भया तब इन स्त्रियों की चित्रकी मूर्ति बनाता भया विवाहके  
 पेश्तर नहीं घनाता था ४ जब राजा चित्रकेतुके पुत्र नहीं  
 भया तब तो नित्य स्त्रियों को सजीवन करता था पुत्रभय पीछे  
 पुत्रको मुखदेखिके आनंद में मस्त होगया तब नित्य स्त्रियों  
 को सजीवन नहीं किया जब कभी यादि आवे तब पांचव  
 दिन कभी सातवें दिन सजीवन करने लगा ५ एकदिन चित्र-  
 केतु स्त्रियों को सजीवन करिके पेश्तर सरीके सब काम करता  
 भया देवयोगसे विसर्जन नहीं किया तब तो सब स्त्रियों ने  
 उन स्त्रियों की झारनेवाली जो दासी थी सो सब कहती भई

ननृपेनच । विसर्जितानसर्वास्तायोषिद्भावञ्चसं-  
ताः । ब्राह्मणैर्बालहत्यायाव्रतंचेरुर्निरूपितम् ७  
भा० ष० शं० मं० चतुर्दशेऽध्याये चतुर्दशवेणी ॥  
१४ ॥ श्लोक ॥ ११ ॥

श्रोतार ऊचुः॥मुनीकथंकौपप्रच्छ युवांराजाविचक्ष-  
णः । चित्रकेतुर्मुनीन्सर्वान्जानीतेभुवनत्रये १ वाचक  
उवाच ॥ यद्यप्याश्वासितोराजामुनिभ्यांचतथापिवै ।  
पुत्रशोकार्तहृदयो ननुबोधमुनीश्वरौ २ इ० भा० ष०  
शं० मं० पंचदशेऽध्याये पंचदशवेणी ॥ १५ ॥ श्लोक  
१० से ॥ १५ तक ॥

कि जबसे राजा के पुत्र हुआ तबसे तुम सबको अनादर  
करि दिया अनादर क्या नित्य तुमारा सजीवन करताथा सो  
अब पांचसात दिन में सजीवन करता है हमसब तुमसब को  
नित्यभारती हैं सफा करती हैं ऐसे दासियोंके वचन सुनिके  
बालक को बिषदेती भई बालक नष्ट होगया तब राजाशोकसे  
दुःखी होके उन स्त्रियों को विसर्जन नहीं किया इसवास्ते  
जीतारहगई ब्राह्मणों ने बाल हत्या को शांति होनेवास्ते जो  
उपाय बनाये सो करती भई हे श्रोता हो इस प्रकारकी दश-  
लाख स्त्री चित्रकेतुकीथीं आदमी रूप नहीं रहीं ७ इति०भा०  
ष० शं० मं० चतुर्दशेऽध्यायेचतुर्दश वेणी॥१४ श्लोक ११ ॥

श्रोता पूछते भये राजा चित्रकेतु बड़ा चतुरथा तथा तीन  
लोकमें जो मुनिजनथे तिनको जानताथा फिरि नारदको  
तथा अंगिराको क्यों पूछाकि तुम दोजने कौन हो तुमारा  
क्या नामहै १ वाचक बोले राजा चित्रकेतु को नारद तथा  
अंगिरा ज्ञान देते भये तौभी पुत्र शोकसे राजा बहुत दुःखी



क्षणसंयुक्तो मूर्खवद्विजहासच । जगतःपितरौदृष्ट्वा मि  
 रिजाशंकरौकथम् २ वाचक उवाच ॥ बलिवत्कृतवान्क  
 र्म पूर्वविद्याधरस्यसः । जहाराक्षीणपुण्यस्य राज्यमंत्र  
 प्रभावतः ३ अतोभगवतोनुज्ञाम्प्राप्यमायाविमोहिनी।  
 विद्याधरंमोहयित्वा कार्यमेतदकारयत् ४इति० भा० ष०  
 शं० मंजर्यांसप्तदशोऽध्यायेसप्तदशवेणी १७॥श्लो० ५॥

श्रोतार ऊचुः ॥ इन्द्रनाशायसागर्भन्दधौक्रोधेनका  
 मतः । कथंतयानविज्ञातस्सहस्राक्षोन्यरूपवान् १  
 वाचक उवाच ॥ ईश्वराज्ञांसमुल्लंघ्य कार्यकर्तुंसमुद्यता  
 शेषकी कृपा चित्रकेतुकेऊपर बहुतथी १ इतना लक्षणों करिकै  
 युक्त चित्रकेतु जगत्के माता पिता जो शिव तथा पार्वती को  
 देखिकै क्यों हंसता भया २ वाचक बोले जैसा बलि राजा यज्ञ  
 करिके इन्द्र के राजको छोरिलिया आप इन्द्र होगया तब जिस  
 पुण्य करिकै इन्द्र राज पाया था वो पुण्य नष्ट नहीं भईथी थोरी  
 बाकी थी इस वास्ते भगवान् वामन रूप धरिकै इन्द्रको राज  
 देते भये तैसा कर्म चित्रकेतु भी किया विद्याधरों के राजकी  
 पुण्य नष्ट नहीं भईथी परंतु चित्रकेतु मंत्र जपिकै विद्याधरों  
 का राजा हुवा ३ इसी वास्ते भगवान् अपनी मायाको आज्ञा  
 देकै मायांस चित्रकेतुको मोहित करिकै शिवको द्रोहकरायके  
 चित्रकेतुको नष्ट किया ४ इ० भा० ष० शं० मं० सप्तदशोऽध्याये  
 सप्तदशवेणी ॥ १७ ॥ श्लोक ॥ ५ ॥

श्रोतापूछते भये दितिने इन्द्रको नाश करने वास्ते गर्भको  
 धारण किया तब इन्द्रने दितिको गर्भ नाश करने वास्ते कपट  
 करिकै दिति को सेवन करने लगा पणदिति को क्यों नहीं  
 मालूम पराके यह इन्द्र है क्योंकि दिति कुछ गँवारि नहीं

अतोमुमोहमोहेन नवबोधशचीपतिं २ इति० भा० ष०  
शं० मं० अष्टादशेऽध्याये अष्टादशवेणी १८ श्लो० ५६॥

श्रोतार ऊचुः ॥ विष्णोरावाहनाद्यर्चा मंत्रश्चोकार  
संयुतः । उक्तंचसप्तमश्लोक आहुतिश्चाष्टमेतथा । सो  
प्याकारयुतो ब्रह्मन्कथम्पाठ्याविमोक्षिया १ वाचक  
उवाच ॥ तदुच्चारंस्वपतिना कारयित्वा पतिव्रता ।

धीबड़ीचातुरथी यह शंकाहोती है १ वाचक बोले जब दिति ने इंद्र के  
नाश करने वास्ते उपाय किया तब भगवान् मना किया है अंवाजी  
अभी इंद्र की पुण्य बहुत है अभी इंद्र का नाश नहीं होगा परिश्रम  
मतिकरो भगवान् की आज्ञा को नहीं मानी इंद्र के नाश होने वास्ते  
गर्भधारण किया भगवान् के वचन को नहीं माने इस वास्ते  
इंद्र को कपट नहीं जानती भई पागाली होगई ॥२॥ इ० भा०  
ष० शं० मं० अष्टादशेऽध्याये अष्टादशवेणी १८ ॥ श्लोक ॥ ५६ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी पष्ठस्कंधके अध्याय १६ श्लोक  
७ में विष्णु को आवाहन आदि पजन को मंत्र ओंकार सहित  
दितिसे कश्यप कहेथे तथा श्लोक ८ । ६ में होम करने की  
विधि कहेथे परन्तु ओंकार को तथा वेदके मंत्रोंको स्त्री कैसे  
पठन करेगी क्योंकि स्त्रियोंको वेद पढ़ना तथा ओंकार का पढ़ना  
सुनना दोऊ मना है दिति को कश्यप सुनाये तो ठीक है महा-  
त्मा हैं पण दिति पठन कैसा किया होगा यह शंका है १ वाचक  
बोले दिति पतिव्रता थी अपने पति जो कश्यप तिनसे ओंकार  
को तथा वेदमंत्र को पढ़ायकै आपु दूसरा जो अच्छरहे स्तोत्र  
में जैसा नमो भगवते इस आदिले तिनको पढ़ती भई इस वास्ते  
दोष नहीं भया ओंकार तथा वेदमंत्र आपु पढ़ती तबतो दोष

क्षयसंयुक्तो मूर्खवद्विजहासच । जगतःपितरौदृष्ट्वा मि  
 रिजाशंकरौकथम् २ वाचक उवाच ॥ बलिवत्कृतवान्क  
 र्भं पूर्वविद्याधरस्यसः । जहाराक्षीणपुण्यस्य राज्यमंत्र  
 प्रभावतः ३ अतोभगवतोनुज्ञाम्प्राप्यमायाविमोहिनी।  
 विद्याधरंमोहयित्वा कार्यमेतदकारयत् ४इति० भा० प०  
 शं० मंजर्यासप्तदशेऽध्यायेसप्तदशवेणी १७॥श्लो० ५॥

श्रोतार ऊचुः ॥ इन्द्रनाशायसागर्भन्दधौक्रोधेनका  
 मतः । कथंतयानविज्ञातस्सहस्राक्षोन्यरूपवान् १  
 वाचक उवाच ॥ ईश्वराज्ञांसमुल्लंघ्य कार्यकर्तुंसमुद्यता  
 शेषकी कृपा चित्रकेतुकेऊपर बहुतथी १ इतना लक्षणों करिके  
 युक्त चित्रकेतु जगत्के माता पिता जो शिव तथा पार्वती को  
 देखिके क्यों हंसता भया २ वाचक बोले जैसा बलि राजा यज्ञ  
 करिके इन्द्र के राजको छोरिलिया आप इन्द्र होगया तब जिस  
 पुण्य करिके इन्द्र राज पाया था वो पुण्य नष्ट नहीं भईथी थोरी  
 बाकी थी इस वास्ते भगवान् वामन रूप धरिके इन्द्रको राज  
 देते भये तैसा दर्म चित्रकेतु भी किया विद्याधरों के राजकी  
 पुण्य नष्ट नहीं भईथी परंतु चित्रकेतु मंत्र जपिके विद्याधरों  
 का राजा हुवा ३ इसी वास्ते भगवान् अपनी मायाको आज्ञा  
 देके मायासे चित्रकेतुको मोहित करिके शिवको द्रोहकरायके  
 चित्रकेतुको नष्ट किया ४ इ० भा० प० शं० मं० सप्तदशेऽध्याये  
 सप्तदशवेणी ॥ १७ ॥ श्लोक ॥ ५ ॥

श्रोतापूज्यते भये दितिने इन्द्रको नाश करने वास्ते गर्भको  
 धारण किया तब इन्द्रने दितिको गर्भ नाश करने वास्ते कपट  
 करिके दिति को सेवन करने लगा पण दिति को क्यों नहीं  
 मालूम पराकि यह इन्द्र है क्योंकि दिति कुछ गँवारि नहीं

अतोमुमोहमोहेन नवबोधशचीपतिं २ इति० भा० ष०  
शं० मं० अष्टादशेऽध्याये अष्टादशवेणी १८ श्लो० ५६॥

श्रोतार ऊचुः ॥ विष्णोरावाहनाद्यर्च्चा मंत्रश्चोकार  
संयुतः । उक्तंचसप्तमश्लोक आहुतिश्चाष्टमेतथा । सो  
प्योकारयुतोब्रह्मन्कथम्पाठ्याविमोस्त्रिया १ वाचक  
उवाच ॥ तदुच्चारंस्वपतिना कारयित्वा पतिव्रता ।

भीषड़ीचातुरथी यह शंकाहोती है १ वाचक बोले जब दिति ने इंद्र के  
नाश करने वास्ते उपाय किया तब भगवान् मनः किया है अंवाजी  
अभी इंद्र की पुण्य बहुत है अभी इंद्र का नाश नहीं होगा परिश्रम  
सतिकरो भगवान् की आज्ञा को नहीं मानी इंद्र के नाश होने वास्ते  
गर्भधारण किया भगवान् के वचन को नहीं माने इस वास्ते  
इंद्र को कपट नहीं जानती भई पागल हो गई ॥२॥ इ० भा०  
ष० शं० मं० अष्टादशेऽध्याये अष्टादशवेणी १८ ॥ श्लोक ॥ ५६ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी पष्ठस्कंधके अध्याय १६ श्लोक  
७ में विष्णु को आवाहन आदि पूजन को मंत्र अंकार सहित  
दितिसे कश्यप कहे थे तथा श्लोक ८ । ६ में होम करने की  
विधि कहे थे परन्तु अंकार को तथा वेदके मंत्रों को स्त्री कैसे  
पठन करेगी क्योंकि स्त्रियों को वेद पढ़ना तथा अंकार का पढ़ना  
सुनना दोऊ मना है दिति को कश्यप सुनाये तो ठीक है महा-  
त्मा हैं पण दिति पठन कैसा किया होगा यह शंका है १ वाचक  
बोले दिति पतिव्रता थी अपने पति जो कश्यप तिनसे अंकार  
को तथा वेदमंत्र को पढ़ायें आपु दूसरा जो बचर है स्तोत्र  
में जैसा नमो भगवते इस आदिले तिनको पढ़ती भई इस वास्ते  
दोष नहीं भया अंकार तथा वेदमंत्र आपु पढ़ती तब तो दोष



पठेदन्न्याक्षरंसाध्वी नदोषोऽनेनसंभवेत् २ इतिश्रीभा०  
 ष० शं० मं० एकोनविंशेऽध्यायेएकोनविंशवेणी १६॥  
 श्लो० ७ से ६ तक ॥

होता पतिसे पढ़ायकै कामकरि सिया ॥ २ ॥ इति० भा० ष०  
 शं०मं० एकोनविंशेऽध्यायेएकोनविंशवेणी ॥ १६ ॥ श्लोक ॥  
 ७ से ६ तक ॥

इतिश्रीभागवतषष्ठस्कंध शंकानिवारणमंजरीशिवस-  
 हायबुधविरचितासुधामयीटिकासहितासमाप्ता  
 श्रीशंकरार्पणमस्तु ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

# श्रीमद्भागवतशंकानिवारणमंजरी ॥

सप्तमस्कंधे ॥ ७ ॥

सुधामयीटीकासहिताविरच्यते॥

श्रोतार ऊचुः ॥ शुकनोक्तं नमस्कृत्य कथयिष्ये हरेः कथा  
म् । कृष्णस्मुनिप्रोक्तं पूर्वा ननु गाथा हरेश्च सा १ वाचक  
उवाच ॥ अस्य पूर्वमथोक्तायान तादृशिकाः स्मृताः ।  
न विचार्यैव मूचे सः कथयिष्ये हरेः कथाम् २ प्रह्लादरत्न  
णार्थं विष्णुराविर्भविष्यति । सिंहरूपेण भगवान्तः

श्रोता पूछते भये कि हे गुरुजी राजासे शुकदेवजीने कहा  
कि व्यासको नमस्कार करिके हरिकी कथा अबमें कहोंगा  
बड़ी शंका है ऐसे वाक्यसे मालूम परता है कि सप्तमस्कंध के  
पहिले जो स्कंध ६ वर्णन भये हैं उन्होंनेमें हरिजो भगवान् तिन  
की कथा नहीं है १ वाचक बोले शुकदेवजी ऐसा विचारिके  
नहीं कहें परीक्षितसे कि स्कंध ६ में भगवान् की कथा नहीं  
है अब भगवान् की कथा में कहता हूं २ शुकजीने जानिलिया  
कि प्रह्लादकी रक्षा करनेवास्ते भगवान् सिंहको रूप धरिके  
प्रगट होवेंगे शास्त्रमें सिंहको हरिनाम है इसवास्ते शुक कहें  
कि हे राजन् अब हरिकहे सिंह रूप भगवान् की कथा में

प्रोक्तामिदं वचः ३ इति श्री भा० सप्त० शं० मं० शिव  
सहायवृधविरचितायां प्रथमेऽध्याये प्रथमवेणी ॥ १ ॥  
श्लो० ॥ ५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ त्रिलोके मुनयश्च कर्तुः खिते सुखितेऽ  
पिवा । उपदेशं कदापीत्ययमेनापि कृतं श्रुतम् । नश्च क्रेतः  
कथं पत्न्या स्सुयज्ञस्योपदेशकं १ वाचक उवाच ॥  
वाल्मीकिमस्य सा भार्गवो चकार नृपवल्लभा । अतो यमस्स  
मागत्य हत्वा शोकं ददौ गतिम् ॥ २ ॥ इ० भा० स० शं०  
मं० द्वितीयेऽध्याये द्वितीयवेणी ॥ २ ॥ श्लोक ॥ ३६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ स्वेच्छया प्रददौ ब्रह्मा सर्वेषां च  
कहताहं ऐसा कहे हैं ३ इति भा० स० शं० मं० सुधामयी टीका  
यां प्रथमेऽध्याये प्रथमवेणी ॥ १ ॥ श्लोक ॥ ५ ॥

श्रोता पृच्छते भये कि प्राणी दुःखी होवै चाहै सुखी होवै परंतु  
तनिलोकमें प्राणीको सुख होनेवास्ते मुनिजन उपदेश करते थे  
ऐसा शास्त्रमें सुना है परंतु यमराज किसीको नहीं उपदेश कि हे  
ऐसा भी सुना है सो यमराज सुयज्ञ राजाकी स्त्रियोंको उपदेश  
क्यों किये ॥ गुरुजी यह बड़ी शंका है १ वाचक बोलते भये  
सुयज्ञ राजाकी स्त्री बालपनसे यमराजकी सेवन करती थी  
इसी वास्ते रानीको दुःखी देखिकै यमराज रानी के सामने  
आयकै ज्ञान देकै शोकको हरिकै सुंदर गतिकहे पतिके लोक  
को रानीको भेज देते भये रानी ज्ञान पाइकै अपने पतिके  
पास गई इस वास्ते यमराज उपदेश करते भये २ इति० भा०  
स० शं० मं० द्वितीयेऽध्याये द्वितीयवेणी ॥ २ ॥ श्लोक ॥ ३६ ॥

श्रोता पृच्छते हैं हे मुनिजी जो जो प्राणी ब्रह्माकी तपस्या  
किया उन सबको अपनी इच्छासे ब्रह्मा घर देते भये ब्रह्माको

अनाज्ञप्तस्सुरैश्चास्य ज्ञापितो देवतागणैः ।

वि० वि० १ वाचक उवाच ॥

भावन्दातुं वरं हि सः । न इयेष सुराणां

ननु तत्रादौ वरम् ॥ २ ॥ इ० भा० स० शं० मं०

तृतीये ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ १४ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ हिरण्यकशिपुर्लभे वरं यदि तदा

॥ धर्मो विष्णोः सुरेसाधौ गविवेदेषु ब्रह्मसु १ द्वेषं च

॥ यदैतेषु हिरिणोक्तमिदं कथम् । द्वेषकारी स भविता तत्त्व

ना ॥ २ वाचक उवाच ॥ पृथक् द्वेषम् प्रचक्रे

देवतोने प्रार्थना नहीं किया कि तुम वर देवो और इस

हिरण्यकशिपु को देवतोने कहे वर क्यों दिया यह बड़ा

अर्थ है १ वाचक बोले हिरण्यकशिपु ऐसा विचारिके तप-

स्या करने लगा कि वरदान लेके भगवान् को वधन करोंगा

हिरण्यकशिपु के मन की बात जानिके ब्रह्मा के हिरण्यकशिपु

के वास्ते वरदान देने की इच्छा नहीं थी परंतु जब देवतोने

ब्रह्मा से कहे कि हम सब दुष्ट के तप के तेज करिके जलते हैं ऐसा

देवतोको दुःख देखिके तब ब्रह्मा वर देते भये इस वास्ते देवतो

की प्रार्थना से ब्रह्मा दिहे हैं २ इति भा० स० शं० मं० तृतीये ५

ध्याये तृतीय वेणी ॥ ३ ॥ श्लो० ॥ १४ ॥

श्रोता पूछते भये हिरण्यकशिपु जिस दिन ब्रह्मा से

वरदान पाया उसी दिन से धर्म से भगवान् से देवताओं से

साधुओं से गाय से ब्राह्मणों से वेदों से इन सब से १ वैर करता

भया तब भगवान् देवतो से क्यों कहे कि हे देवता जोगा डरो

मति जब हम से धर्म से देवतो से गौ से वेद से ब्राह्मण से साधु से

वैर करेगा तब उसी वखत हम हिरण्यकशिपु का मार

स स्सर्वेष्वेतेषुराक्षसः । युगपद्भगवत्प्रोक्तो ।  
 श्यति ॥ ३ ॥ इति श्री भा० स० शं० नि० मं  
 ध्यायेच्चतुर्थवेणी ॥ ४ ॥ श्लोक ॥ २७ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ शक्रादयश्चकम्पन्ति  
 रंतरम् । जीवन्तिराक्षसास्सर्वे यत्कृपादृष्टिर्व  
 तस्यपुत्रः कथम्प्रोक्तोमुनिनाराजसेवकः । चे  
 स्तस्यसदीनश्चकथम्मुने २ वाचक उवाच ।  
 रोहितायेधैतेषान्तेसेवकाः स्मृताः । य १ ॥

डालेंगे यह बड़ी शंकाहै २ वाचक बोले इन  
 ज़ुदा वैर राक्षस करता था राजनीति विचारिके



श्रमोनारदस्यनतस्यस्थिरताश्रुता । तयाकृतः  
 सशंकेयम्महतीहिनः २ वाचक उवाच ॥  
 नार्थम्बैवद्रिकायांशुभाश्रमम् । नात्पुनः । ति ॥  
 न्त्वासोभुवनत्रये । करोतिभजनंविष्णोस्तत्रत्या  
 यम् ३ इतिश्री भा० स०शं० नि० मंजुर्व्या सप्तमे  
 ये सप्तमवेणी ॥ ७ श्लोक ॥ १२ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ जग्रद्दुर्दै ॥ ७ ॥ १२ ॥  
 शासनम् । लोकेवेदेपितेषाम्बैननामाऽपिश्रुतंचनः  
 न्यनानामपिश्रेष्ठानामन्येषांचतपस्विनाम् ।  
 नारदके आश्रममें टिकतीभई जबतक मेरापिता  
 आया नहीं तबतक १ हेगुरुजी हमलोगोंने ऐसा सुनाहै  
 खोंमें कि नारदमुनिके आश्रम नहीं है तथा नारदमुनि  
 स्थानपर घड़ीदोचार टिकतेभी नहीं तब नारदके अ  
 प्रह्लादकी मा कैसे बहुत दिनतक टिकती भई यह व  
 शंकाहै २ वाचकबोले भगवान्को भजन करनेवास्ते व  
 श्रममें नारदको गुप्त आश्रम है तीनलोकमें नारद अ  
 करिके अपने आश्रमपर आयेकै ईश्वरकोभजन करतेहैं ।  
 के आश्रमपर जोजीव वसतेहैं उनको किसीकी भयनहींहै  
 इसवासते प्रह्लाद दैत्यके बालकोंसे कहेहैं ३ इति भा०  
 शं० नि० मंजुर्व्या सप्तमेऽध्याये सप्तमवेणी ७ श्लोक १०

श्रोता पूछतेभये राक्षसोंके लड़िकोंने प्रह्लादसे  
 सिखतेभये परंतु ज्ञानियोंका नाम लोकमें तथा शास्त्रमें  
 जीवोंके मालूम परता है परंतु उनको तो नाम  
 तथा लोक में हम तो नहीं सुने किधरगए वो लड़  
 हेगुरुजी छोट्टा तपस्वीको चड़ा तपस्वीको और जो

श्रुतन्नश्च कुत्रतेसंगताःप्रभो २ वाचक उवाच ॥ आग  
त्यभार्गवोदृष्ट्वादित्यपुत्रान्विरागनः।पुनस्ताडिच्छन्नया  
मास तद्धर्माच्छापत्रासतः ३ बालत्वात्तत्पुत्रसर्वे  
प्रह्लादशिष्यन्तथा । राक्षसंकर्मतेचक्रुरतो नैवतपस्वि  
नः ४ इतिश्री भा० स० शं० मं० अष्टमेऽध्यायेअष्टम  
वेणी ८ श्लो० ॥ १ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ प्रह्लादेप्रीतिगधिका हरेरद्भुतक  
र्मणः । तत्कथंनददौशीघ्रम्बरंचतत्यजेरुषम् । विलंबकृत  
वान्भूरि भ्रमोयम्बर्तते च नः १ ॥ वाचक उवाच ॥  
तथा ब्रह्मज्ञानीहै उन सबको नाम हमलोग सुनाहै परंतु  
प्रह्लाद के शिष्योंको नाम हम नहीं सुना प्रह्लाद से ज्ञानलेकै  
वो लोग किस लोकको गये यह भ्रमहै २ वाचक बोले यह उत्पा  
त प्रह्लाद की तथा हिरण्यकशिपुकी यज्ञ होना प्रारंभ भया  
तब शुक्राचार्य उसके पास नहीं थे पीछेसे आयकै सब उत्पात तथा  
राक्षसों कं लड़कों को सुंदर कर्म करता देखिकै लड़कों से शुक्र  
बोले कि यह कर्म तुम सब जने त्यागि देवो नहीं त्यागोगे तो हम तुम  
सबको भस्म कर देवेंगे ऐसा डरपाय कै लड़कोंको फिर राक्षस  
कर्म सिखाते भये ३ बालक लोग तपस्या में कच्चे थे इस वास्ते  
डरकै सुंदर कर्म त्याग दिहे और राक्षस कर्म करने लगे इस  
वास्ते तपस्वी नहीं भये बिना तपस्वी भये नाम कैसा मालूम  
पड़ेगा ४ इति भा० स० शं० नि० मं० अष्टमेऽध्याये अष्टम  
वेणी ॥ ८ ॥ श्लोक ॥ १ ॥

श्रोता पृथंत भये नृसिंह रूप भगवान् की बड़ी प्रीति प्र-  
ह्लाद के ऊपर थी फिर जल्दी क्रोधको त्यागिकै प्रह्लादको  
धरदान क्यों नहीं दिहे ऐसी प्रीति करिकै फिर धर देने में



शीघ्रं न तत्प्रेजे क्रोधं न चतूर्णम्बरन्ददौ । लोकान्ख्यापायितुं  
चक्रे विलम्बञ्जगदीश्वरः २ इति० भा० स० शं० मं०  
नवमेऽध्यायेनवमवेणी ६ श्लो० ॥ २ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ सार्द्धं कनककेशेन चत्वारः पितरो  
गताः । प्रह्लादस्यैकविंशैश्च पितृभिः कथमुक्तवान् । हरि  
स्तन्ते पितापूतः शंकास्ति दारुणाचनः । वाचक उवाच ॥  
व्यतीतांश्चतुरो ज्ञात्वा भविष्यन्दशसप्तच । एकविंश

विलंब क्यों किये यह बड़ी शंका है । वाचक बोले श्रीनृसिंहजी  
जल्दी क्रोध नहीं त्याग किये तथा प्रह्लादको जल्दी वरदान  
भी नहीं दिहे तिसका कारण यह है कि लोकमें प्रह्लादकी  
भक्तिकी बड़ाई कराने वास्ते क्रोध त्यागनेमें तथा वरदान  
देनेमें देर किये लोकमें सब ऐसा वचन कहेंगे कि सब देवता  
नृसिंहजीकी स्तुति किये परन्तु क्रोध नहीं शांत भया जब  
प्रह्लाद स्तुति करते भये तब उसी वखत क्रोधको त्याग देते  
भये ऐसा भगवान् को प्रह्लाद प्यारा है इस वास्ते क्रोध देर  
को त्यागते भवे तथा वरदान भी देनेमें देर किये है २ इति  
भा० स० शं० मं० नवमेऽध्याये नवमवेणी ॥ ६ ॥ श्लो० ॥ २ ॥

श्रोता पूछते भये प्रह्लादसे नृसिंहजी कहे कि तुमारा बाप  
एक बीस पीढ़ी को संग लेके बैकुण्ठको गया हे गुरुजी इस  
बातमें हमारे सबको बड़ी शंका होती है क्योंकि हिरण्यकशि-  
पु सहित गने तब चारि पीढ़ी होती हैं क्योंकि ब्रह्मा १ मरीचि  
२ कश्यप ३ हिरण्यकशिपु ४ ये चारि भये तो एकविंश पीढ़ी  
भगवान् क्यों कहेथे । वाचक बोले चारि पीढ़ी बीती जानिके  
तथा सतरह १७ पीढ़ी अगाड़ी की लेके इस प्रकारसे पीढ़ी १७

मिताश्चैते हरिणोक्तास्तदाध्रुवम् २ इति० भा० स०  
शं० मं० दशमेऽध्याये दशमवेणी १० ॥ श्लो० ॥ १८ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ युगत्रये द्विजास्सर्वे गुणज्ञाः कमला  
पतेः। येन्यनाजानवार्तायान्तेऽपि नारायणेरताः १ जानन्ति  
त्वद्विधा विप्राश्चरित्रं कमलापतेः । नारदं प्रत्युवाचै  
वन्धर्मराजः कथं गुरोर्वाचक उवाच ॥ ब्राह्मणान्तपसो  
न्मत्तान्केचिद्भूपांश्च राज्यतः । धर्मराजो विचार्यैवम्प्रो  
वाच नारदं प्रति ॥ ३ ॥ इ० भा० स० शं० मं० एकादशे  
ऽध्याये एकादशवेणी ॥ ११ ॥ श्लोक ॥ ४ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ न कस्यापि श्रुतं लोके लौकिकेनावलो  
भगवान् कहे हैं २ इति श्री भा० सप्तमस्कन्धे शं० नि०  
मंजरी सुधामयी टीकायां दशमेऽध्याये दशमवेणी ॥ १० ॥  
श्लोक ॥ १८ ॥

श्रोता पूछते हैं कि हे गुरुजी सतयुग धेता द्वापरमें सब ब्रा-  
ह्मण भगवान् के गुणको जानते थे जो कोई ब्राह्मण ज्ञान की  
घात में थोरा समझता था सो भी भगवान् के चरणों में प्रीति  
करता था १ हे गुरुजी तब फिर नारदसे युधिष्ठिर क्यों कहे थे  
कि भगवान् के चरित्रको आपसरीके ब्राह्मण जानते हैं दूसरा  
नहीं जानैगा यह बड़ी शंका है कि नारद ज्ञानी भये और सब  
ब्राह्मण अज्ञानी भये २ युधिष्ठिरने किसी किसी ब्राह्मणों को  
तपस्या करिके उन्मत्त जानिके तथा किसी किसी राजोंको  
भी राजसे उन्मत्त जानिके नारदसे ऐसा वचन कहे ३ इति भा०  
स० शं० मं० एकादशेऽध्याये एकादशवेणी ॥ ११ ॥ श्लो० ॥ ४ ॥

श्रोता पूछते भये ॥ हे गुरुजी यह यात शास्त्रमें हम लोग नहीं  
सुना तथा लोकमें देखा भी नहीं कि गुरुजी श्री शिष्य के

कितम् । गुरुस्त्रीभिश्च शिष्यस्य कृतमभ्यंजनादिकं । कार  
येन्न गुरुस्त्रीभिरात्मनोऽभ्यंजनादिकम् । कथं मुनिरुवाचे दं  
युवा वै धर्मनन्दनम् २ वाचक उवाच ॥ ज्ञात्वा कलियुगं  
घोरमागतं सन्निधौ मुनिः तज्जानां शिष्यार्थाय वीक्ष्य  
मेतदुवाच ह ॥ ३ ॥ इति० भा० स० शं० नि० मं० द्वादशेऽ  
ध्यायेद्वादशवेणी ॥ १२ ॥ श्लोक ॥ ८ ॥

श्रोतार उचुः ॥ मुनिना जगरेणोक्तं सर्वम् भुंजिमपरे  
च्छया । ददातिकोपि चेदुष्टः प्रमदाद्यन्यकुत्सितं १

देहमें मालिश करिकै स्नान करायकै तेज फुलेज शिष्यके देह  
में लगावै तथा शिष्यके वार भार देवै श्रृंगार करिवै आंखों  
में अंजन लगाय देवै ? फिरि नारद मुनि धर्मराजसे क्योंकहे  
कि जवान शिष्य होजावे तो अपनी देहको मंजन आदि कर्म  
गुरुकी स्त्रीसे न करवाना तथा करवावैगा तो भ्रष्ट होजावैगा  
यह बड़ी शंकाहै २ वाचक बोले हे श्रोताहो जब नारदको  
युधिष्ठिरको संवाद भया उसी दिनके थोरेही दिन पीछे कलि-  
युगको भूमिमें राज नारद मुनि जानिकै ऐसा वचन युधिष्ठिर  
से कहि रहेथे कलियुगमें जन्मैगे मानुष्य तिनको सिखाने  
वास्ते क्योंकि कलियुगमें ज्ञान रहना कठिनहै ३ इ० भा०  
स० शं० मं० द्वादशेऽध्याये द्वादशवेणी ॥ १२ ॥ श्लोक ॥ ८ ॥

श्रोता पृच्छते भये अजगर मुनि प्रह्लादसे कहेकि हमारे  
वास्ते कोई चीज भली बुरी कोईभी प्राणी देताहै तब उस  
चीजको हम ग्रहण करतेहैं परन्तु इच्छा किसी चीजकी हम  
नहीं करते हे गुरुजी संसारमें अनेक प्रकार के जीवहैं जो  
कोई दुष्ट जीव मस्करी करने वास्ते स्त्री आदि लैके और जो  
खराब चीज है जैसा मदिरा आदि लैआयकै अजगर मुनि को

भविष्यातिमहादुःखम्मुनिनोक्तंकथंत्विदम् । तदाकिं  
 केयतेतेनतद्गृहागृहणेपिचरवाचक उवाच ॥ सत्यम्मुनि  
 रेशोक्तंसर्वभोक्ताहिसस्मृतः । यश्चैवंकर्तुमिच्छेच्चतं  
 वेधच्यतितत्क्षणे । हरेस्सुदर्शनन्तस्य रक्षणेयोजित  
 सदा ॥ ३ ॥ इति० भा० स० शं० मं० त्रयोदशेऽध्या  
 येत्रयोदशवेणी ॥ १३ ॥ श्लोक ॥ ३६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ लोकेवेदेश्रुतन्दृष्टन्नचैवंनश्चकर्हि  
 चित् । योऽयर्थेविजहौप्राणान् जघानपितरंगुरुम् १  
 मैथिल्यर्थेरावणश्च द्रौपद्यर्थेचकौरवाः । एवन्नेवच  
 देवेना तौ ग्रहण करते कि त्याग करते २ तौ अजगर  
 मुनि कैसा कौंगे बड़ा दुःख होवैगा ग्रहण कौंगे तब नरकमें  
 पड़ेंगे त्याग कौंगे तो भेददृष्टि कहावैगे २ वाचकबोले अज-  
 गर मुनि सत्यकहेहैं सब चीजके भोग करनेवाले अजगर मुनि  
 हैं परन्तु जो कोई ऐसा दुष्ट कर्म करनेको विचारभी करैगा  
 तब उसको उसी वखत भगवान् को सुदर्शन चकू भस्म करि  
 देवैगा क्योंकि अजगर मुनिकी रक्षा करने वास्ते सुदर्शन  
 चकूको भगवान् सदाहुक्म करिदिहेहैं कि इनकोकोई उपद्रव  
 देवै उसको तुरत भस्म करना ३ इ० भा० स० शं० मं० त्रयो  
 दशेऽध्याये त्रयोदशवेणी ॥ १३ ॥ श्लोक ॥ ३६ ॥

श्रोता पृच्छते भये वेदमें ऐसा हमलोग नहीं सुना तथा  
 लोकमें देखाभी नहीं कि स्त्री वास्ते कोई अपना प्राण त्यागि  
 दिया होवै तथा पिता को गुरु को मारि डाला होवै १  
 जो कोई ऐसा कहे कि जानकी के वास्ते रामचंद्र रावण  
 बाह्मणथा उस को मारिडाले तथा द्रौपदी के वास्ते पांडवमें  
 १ द्रोणाचार्य आदि गुरुको मारिडाले तो ऐसा नहीं मानना

मन्तव्यो जीवानाम्मुनिनोदितम् २ वाचक उवाच  
 तृष्णास्त्री नारदेनोक्ता नत्विंलौकिकी तदा । त्यजन्त्यसू-  
 नगुरुंहन्ति सर्वेतृष्णासमन्विताः ३ इ० भा० स० शं०  
 मं० चतुर्दशेऽध्याये चतुर्दशवेणी १४ ॥ श्लो० ॥ १२ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ भोक्तव्यौ द्वौ द्विजौ दैवे त्रयः पैत्र्ये च  
 नाधिकं । नारदोक्तिरियम्व्रह्मन् कस्मिन् भोज्याश्च भूरिशः  
 १ वाचक उवाच ॥ न ह्यत्र द्वौ द्वयोरर्थौ द्वौ प्रकारौ प्रगृह्यते ।  
 जितेन्द्रियाश्च क्षुधिता भोजनीयास्त्वेकशः २ तथा त्रीन्  
 त्रिप्रकारांश्च पुत्रस्त्रीशिष्यसंयुतान् । पैत्र्ये प्रभोज-

चाहिये क्योंकि रामकृष्ण तो पूर्णब्रह्म थे पामर जीवोंके  
 वास्ते नारदकहे हैं २ वाचक बोले तृष्णारूप स्त्री वास्ते नारद  
 कहे हैं संसार की स्त्रीके वास्ते नहीं कहे तृष्णा स्त्रीके वास्ते  
 प्राणियोंने जीवको त्यागि दिया है तथा पिताको गुरुको मारि-  
 डालते हैं ॥ ३ ॥ इ० भा० स० शं० मं० चतुर्दशेऽध्याये चतुर्द-  
 शवेणी ॥ १४ ॥ श्लोक ॥ १२ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरु जी नारद मुनि युधिष्ठिर से को-  
 कि ब्राह्मण दो २ देवकार्य में भोजन कराना चाहिये तथ  
 पितृकर्म में तीन ब्राह्मण भोजन कराना चाहिये तो देवकर्म  
 पितृकर्म से और दूसरा कर्म कौन है जिसमें बहुतसे ब्राह्मण  
 भोजन कराना चाहिये १ वाचक बोले (द्वौ) इसका दो ब्राह्मण  
 अर्थ नहीं है (द्वौ) को यह अर्थ है कि दो प्रकार को ब्राह्मण भो-  
 जन कराना देवकर्म में एक तो जितेन्द्रिय दूसरा भूखा इस  
 प्रकार ब्राह्मण देवकर्म में बहुत भोजन कराना चाहिये २  
 तिसी प्रकार से चतुर प्राणी पितृकर्म में पुत्र स्त्री शिष्य संयुक्त  
 ऐसा तीन प्रकार को ब्राह्मण भोजन कराना चाहिये पुत्र ।

येद्विप्रान् सरूपातान्सुकौशलः ३ इति० भा० स० शं०  
मं० पंचदशेऽध्यायेपंचदशवेणी १५ ॥ श्लो० ॥ ३ ॥

स्त्री २ शिष्य ३ ये तीनप्रकार ऐसा अर्थ उसश्लोकको है दो  
ब्राह्मण तथा तीन ब्राह्मण नहीं है जो दो ब्राह्मण तीन ब्राह्मण  
अर्थ होतातो पहिले युगोंमें राजा लोग असंख्य ब्राह्मण कर्षों  
भोजन कराते ॥ ३ ॥ इति भा० स० शं० मं० पंचदशेऽध्याये  
पंचदशवेणी ॥ १५ ॥ श्लोक ॥ ३ ॥

इतिश्रीमद्भागवतसप्तमस्कंधशंकानिवारण  
मंजरीशिवसहायबुधविरचितासुधामयी  
टीकासहितासमाप्ता ॥

श्रीशङ्करार्पणमस्तु ॥

# श्रीमद्भागवतशंकानिवारणमंजरी॥

अष्टमस्कंधे ॥ ८ ॥

सुधामयीटीकासहिताधिरच्यते ॥

श्रोतारञ्जुः ॥ त्रिविष्टपश्चकस्स्वामिन् यमशास  
द्रमापतिः । यज्ञोहत्वासुरगणान् भक्षितुं चागतान्म  
नुम् १ वाचक उवाच ॥ त्रीन्त्रिभ्यश्चैवयोपाति लो  
काञ्छत्रुभ्यएव च । त्रिविष्टपस्यविज्ञेयस्संतोषश्च शची  
पतिः २ कस्याऽपिमन्यतेशिक्षामिन्द्रो नैव जगत्पतिः ।

श्रोता पूछते भये हे स्वामिन् स्वायंभुव मनुको खानेवास्ते  
आये जो राक्षस तिनको मारि कै त्रिविष्टप को भगवान्  
सिखाते भये सो त्रिविष्टप क्या चीज है १ वाचक बोले चोर  
जारी जुवारी इनतीन दुष्टसे तीनों लोककी रक्षा जो करै तिस  
को नाम त्रिविष्टप है त्रिविष्टप इंद्रको शास्त्र में कहा है तथा  
दूसरा अर्थ यह है कि काम क्रोध लोभ इन तीन दुश्मनों से  
जो तीन लोककी रक्षा करै तिस को त्रिविष्टप नाम है संतोष  
को भी त्रिविष्टप शास्त्र में कहा है क्योंकि काम क्रोध लोभ  
इनको नाश संतोष सिवाय दूसरा कोई भी नहीं करसकेगा २  
हे श्रोता हो इन्द्रतो अभिमान में डूबि गया है किसी को भी  
सिखावन नहीं मानता इसवास्ते यज्ञ भगवान् संतोष को  
सिखाते भये कि भाई तुम काम क्रोधलोभ इनदुष्टों से तीन

अतोऽन्वशासत्संतोषं त्वञ्जीवान् रक्ष सर्वदा ३ इति श्री  
भा० अ० शं० मं० प्रथमेऽध्याये प्रथमवेणी ॥ १ ॥  
श्लोक ॥ १८ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ महादाश्चर्यमेतद्विहरयश्चापिष्ठावि  
ताः । गजैर्द्रुगंधमाघ्राययेतेषाम्मदनाशकाः १ वाचक  
उवाच ॥ भवद्भिश्चैव सत्योक्तं हरयो घ्नन्ति वै गजान् ।  
गजः प्राकृतिको नायन्तपो रक्षत्यिमं सदा । अतो दृष्ट्वा द्रव  
न्त्येनं हरयो गंधतापितः ॥ २ ॥ इति भा० अ० शं० मं०  
द्वितीयेऽध्याये द्वितीयवेणी ॥ २ ॥ श्लोक ॥ २१ ॥

लोक की रक्षा करो हे श्रोता हो त्रिविष्टप संतोष है ३ इति भा०  
अ० शं० मं० प्रथमेऽध्याये प्रथमवेणी ॥ १ ॥ श्लोक ॥ १८ ॥

श्रोता पढ़ते भये हाथियों के अभिमान को नाश करने  
वाले जो सिंह सो सब सिंहों ने उस गज की देह की सुगंध को  
सुंधिके वन छोड़िके भगिजाते भये बड़े आश्चर्य की बात है एक  
सिंह को देखिके हाथियों को यूथप भागता है सो उसके गंध को  
सुंधिके सब सिंह भागते भये गुरुजी काल को जीव खाने लगा  
१ । वाचक बोले हे श्रोता हो आप सब जने सत्य कहते हो  
हाथियों को सिंह मारते हैं सिंह के सामने हाथी कभी भी  
नहीं खड़ा हो सकेगा सिंह के वन में हाथी जाता भी नहीं  
यह बात जो खुद प्राकृत हाथी होता है तिस की है यह  
हाथी तो तपस्वी था शाप से हाथी भया था परन्तु इसको  
राति दिन इसका पेश्तर का तप रक्षा करता था उस तप की  
सुगन्ध से भस्म होते जो सिंह सो सब भागि गये २ इति  
भा० अ० शं० मं० द्वितीयेऽध्याये द्वितीय वेणी ॥ २ ॥  
श्लोक ॥ २१ ॥



श्रोतार ऊचुः ॥ न्यूनकार्यैःपिदुद्राव भगवान्कमला  
पतिः । तुच्छोभूमिनरेशोऽपि नैवन्द्रवतिकर्हिचित् १  
वाचक उवाच ॥ ज्ञानवैराग्ययज्ञादि तपोदानजपादिभिः ।  
अन्यैस्सुकर्मभिस्तूर्णमाविर्भवतिनद्रुतम् २ स्वनामो  
च्चारणंश्रुत्वागोवत्समिवधावति । अतोदुद्राववेगेनना  
मोच्चारणमात्रतः ३ इति भा० अ० शं० मं० तृतीये०  
तृतीयवेणी ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ ३० ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ अनेकेहरिणास्पृष्टाऽनेकजन्मतप  
स्विना । विष्णुरूपन्नप्राप्तन्तैर्गजेन्द्रःप्राप्तवान्कथम् १

श्रोता पूछते भये कि हे गुरुजी थोरा भी काम करने वास्ते  
भगवान् आपु से भागि कै गजेन्द्र को लुड़ाते भये यह बड़े  
आश्चर्य की बात है किसी देवता को भेजिकै काम कराय  
देते ऐसा ग्राह क्या दूसरा रावणादिक राक्षस भया था ऐसा  
तो थोरे काम के वास्ते कोई पृथ्वी में गरीब राजा भी नहीं  
भागैगा १ वाचक बोले ज्ञान वैराग यज्ञ तप दान आदिकै  
और जो सुंदर कर्म तिन्हकर्मों करिके पुकारे हुये जो भग  
वान् सो जल्दी नहीं प्रकट होते २ परन्तु भगवान् को नाम  
लेकै कोई पुकारता है तो भगवान् कैसा दौड़ते हैं जैसा  
वत्सके शब्द को सुनिकै गाय दौड़ती है इस वास्ते गजेन्द्र  
भगवान् को नाम लेकै पुकारा तब आपने नाम को सुनिकै  
भगवान् जल्दी दौड़ते भये ३ इति भा० अ० शं० मं० तृतीयेऽ  
ध्याये तृतीय वेणी ॥ ३ ॥ श्लो० ॥ ३० ॥

श्रोता पूछते भये अनेक तपस्वी जिन्हों को भगवान् बार  
बार भेटते थे परन्तु वो तपस्वी लोग भगवान् के रूपमें नहीं  
प्राप्त भये और गजेन्द्र भगवान्की देह जरासे लुइकै भगवान्

वाचक उवाच ॥ भक्तिम्प्रकुर्वतो विष्णोर्व्यतीता बहवो  
युगाः । गजेंद्रस्य च श्रोतारो व्यासेनोक्तं न भूरिशः । अतः  
प्रापहेरूपं गजेंद्रस्पर्शमात्रतः २ इति श्री भा० अ०  
शं० मं० चतुर्थेऽध्याये चतुर्थवेणी ॥ ४ ॥ श्लो० ॥ ६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ शप्तस्सुरेशो मुनिनान त्रिलोकमुनी  
श्वरः । निश्श्रीकं यज्ञहीनं च कथं तदभवत्तदा १ वाचक  
उवाच ॥ मुनिशप्ते सहस्राक्षे बलिरिन्द्रो बभूव ह । तस्मा  
न्निशाचरैर्यज्ञास्स श्रीकाश्च विनाशिताः २ इति०  
भा० अ० शं० मं० पंचमेऽध्याये पंचमवेणी ५ श्लो० १६ ॥

के रूप में प्राप्त हो गया यह बड़े आश्चर्य की बात है  
वाचक बोले हे श्रोता हो गजेंद्र को तपस्या करते करते बहुत  
युग बीति गये परन्तु गजेंद्र की तपस्या को व्यास जी बहुत  
प्रकार से नहीं वर्णन किये तप बलसे गजेंद्र भगवान् के रूप  
को प्राप्त भया २ इति भा० अ० शं० मं० चतुर्थेऽध्याये चतुर्थ  
वेणी ॥ ४ ॥ श्लोक ॥ ६ ॥

श्रोता पूछते भये कि हे मुनि जी दुर्वासा मुनि ने अकेल  
इंद्र को शाप दिये थे कि हे इन्द्र तेरी लक्ष्मी नाश हो जाय  
गी तथा तीन लोकको शाप नहीं दिया था तब तीन लोक फिर  
लक्ष्मी से क्यों हीन हुआ १ वाचक बोले मुनि की शाप इंद्र  
को भई तब तीन लोकको राजा बलि होता भया इस कारण  
से तीन लोक को यज्ञ करिके तथा लक्ष्मी करिके राक्षस लोग  
हीन कर दंते भये इस वास्ते तीन लोक यज्ञ करिके तथा  
लक्ष्मी करिके हीन भया २ इति भा० अ० शं० मं० पंचमेऽ  
ध्याये पंचमवेणी ॥ ५ ॥ श्लो० १६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ हारनूपुरकेयूरवलयादिविभूषणः । शिशुस्त्रियोरेलंकारा धृता भगवता कथम् १ वाचक उवाच ॥ ब्रह्मादीनां सुराणां च बालरूपस्य वैहरेः । उपासना प्रियानित्यमतो बालविभूषणम् । धृत्वा भूत्वा शिशुर्विष्णुस्तूर्णमाविर्भविष्यति २ इति श्री भा० अ० शं० मं० षष्ठेऽध्याये षष्ठवेणी ॥ ६ ॥ श्लो० ॥ १ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ सुरान्विमूर्च्छितान्दृष्ट्वा सर्पश्शवासविषाग्निना । किं वृषुर्धना ब्रह्मन् भगवद्वशवर्तिनः १ वाचक उवाच ॥ कुमारौ ददतु शीघ्रं विषवीर्यहरान् रसान् । तान्मिलित्वा जले तूर्णमेधावृष्टिम्प्रचक्रिरे २ इति भा० अ० शं० मं० सप्तमेऽध्याये सप्तमवेणी ॥ ७ ॥ श्लो० ॥ १५ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी भगवान् ने हार तथा पायजेब तथा कंकन कुंडल कंगना आदि जोके बालक को तथा स्त्री को ऐसा गहना क्यों धारण करते भये १ वाचक बोले ब्रह्मा आदि देवतों को बालक रूप भगवान् की उपासना बड़ी प्यारी है इस वास्ते जल्दी बालकरूप होके तथा बालक को सब गहना धारण करके ब्रह्मादिको दर्शन देते हैं इस वास्ते बालक को गहना धारण करते हैं २ इति भा० अ० शं० मं० षष्ठेऽध्याये षष्ठवेणी ॥ ६ ॥ श्लोक ॥ १ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी सर्प के मुख की श्वास से निकला जो विष तिस विष की अग्नि करिके मूर्च्छित जो देवता तिनको देखिके भगवान् की आज्ञा करनेवाले जो मेघ सो काहे की वर्षा करते भये १ वाचक बोले जहर के वीर्य को नाश करनेवाला रस अश्विनी कुमार वैद्य मेघों को देते भये उसी रस को मेघों ने

श्रोतार ऊचुः ॥ बभूवुर्दानिनस्सर्वेभूपाश्चैव युगे युगे ।  
 दीर्घायुषश्चार्थपूर्णेन तेषामुपमाकृता १ यथोपमाशुकैर्नैव  
 कृताराज्ञः परीक्षितः । सुरवृत्तार्थपूर्णेवै कथमेतद्गुरो  
 वद २ वाचक उवाच ॥ न तु संसारिकार्थानामर्थिना  
 मर्थपूर्तये । उपमैषा प्रज्ञातव्या श्रीमद्भागवतार्थिनः ।  
 कथाप्रश्रद्धिना चोक्तस्सुरवृत्तसमो नृपः ३ इति श्रीभा०  
 अ० शं० मं० अष्टमेऽध्याये अष्टमवेणी ॥ ८ श्लो० ६ ॥

जलमें मिलायकै अकेले देवतोंके ऊपर जलकी वर्षा करते भये २  
 इति भा० अ० शं० मं० सप्तमेऽध्याये सप्तमवेणी ७ श्लो० १५ ॥

श्रोता पूछते भये सनगुग त्रेता द्वापरमें बड़े बड़े दानी राजा  
 होते भये जिनकी बड़ी अ.युष होती भई परंतु सब प्राणियों  
 की आशा पूरण करने में तिनकीभी ऐसी उपमा मुनियोंने  
 नहीं किया १ जैसी उपमा याचकोंका मनोरथ पूरण करनेवास्ते  
 [शुकदेवजीने कल्पवृक्षकी उपमा परीक्षितकी किया ऐसी उपमा  
 ऐसी राजोंकी नहीं भई यह बड़ी शंका होती है शिव ३।२ वाचक  
 ने संसारके सुखको जो याचना करनेवाले प्राणी उसकी  
 आशा पूरण करने में यह उपमा मुनिने परीक्षितकी नहीं  
 किया यह उपमा तौ जो कोई भागवत की याचना करते हैं उन  
 ही याचना पूरण करने में परीक्षितको शुकदेवजी कल्पवृक्ष  
 की कहे हैं क्योंकि परीक्षित राजा भागवत को सुनिके  
 सुखि पंखि बहुत कथाका विस्तार किया इसवास्ते कल्पवृक्ष  
 की उपमा राजा परीक्षितको शुकदेवजीने दिये हैं ३ इति भाग  
 वत अष्टमस्कंधे शंका निवारण मंजरी अष्टमेऽध्याये अष्टम  
 वेणी ॥ ८ ॥ श्लोक ॥ ६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ वंचनेराक्षसानाम्बैधृता भागवता  
 कथम् । अन्यरूपान्परित्यज्यनिन्दितास्वैरिणीतनुः १  
 चेत्तेषाम्मोहनार्थाय तथापिमाययान्यथा २ वाचक  
 उवाच ॥ भगवान्नारदंचक्रेसुंदरीम्प्रमदाम्पुरा । बहुवर्ष  
 सहस्राणिव्यतीतानिमुनेस्सदा ३ मायामुक्कश्यतेशेपेत्वं  
 मप्येवम्भाविष्यासि । अतोधृताचहरिणानिन्दितास्वैरि  
 णीतनुः ४ इति भा० अ० शं० मं० नवमेऽध्याये  
 नवमवेणी ॥ ६ ॥ श्लोक ॥ ६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ नप्रापुश्यामृतंसर्वेवासुदेवपराङ्

श्रोता पूछते भये राक्षसों को छलनेवास्ते भगवान् सब  
 रूप त्यागिके संसार में बड़ी निंदायोग्य वेश्याको शरीर क्यों  
 धारण करते भये १ जो कोई कहौकि राक्षसों को मोहने  
 वास्ते माया करिके वेश्या भये तौभी अन्याय है क्योंकि  
 दूसरे रूप करिके राक्षसों को न मोह करि सक्ते थे भगवान्  
 बड़े बड़े महारमों को मोहकरि देतेहैं तौराक्षसों के मोहकरने  
 में क्या कठिनथा २ वाचक बोले सतयुग में भगवान् नारद  
 मुनिको माया करिके स्त्री बनाय दिया देवीभागवतमेंलिख  
 है तब नारद को स्त्रीभयेबहुत हजारोंवर्षवीतिगये ३ नारद  
 मायासे छूटिगये तब पुरुष रूपहोके भगवान् को शाप देते  
 भये कि हे भगवन् तुम हमेसरीके कभी स्त्रीरूप होजावोगे  
 हे श्रोताहो इसवास्ते भगवान् वेश्या को शरीर धारण  
 करतेभये ॥ ४ ॥ इतिश्री भा० अ० शं० मंजय्यांनवमेऽध्यायं  
 नवमवेणी ॥ ६ ॥ श्लोक ॥ ६ ॥

श्रोता पूछतेभये कि हेगुरुजी राक्षसतो भगवान्के बैरी

खाः । दितिजाविष्णुभक्तश्चकथन्नप्राप्तवान्बलिः १  
 ॥ वाचक उवाच ॥ अमृतस्यबलेर्नेच्छाराजधर्म्मन्समी  
 त्यच।कुलधर्म्मन्ज्ञातिधर्म्नानतस्तेनेदमाकृतम्इति  
 श्री भा० अ० शं० मं० दशमेऽध्यायेदशमवेणी॥१०॥  
 लोक॥ १॥

श्रोतार ऊचुः ॥ यदासृतासुराञ्छुक्रोजीवयेद्विद्य  
 पास्वया । तदातेषांकथंनाशोभविष्यतिदुरात्मनाम् १  
 वाचक उवाच ॥ यावत्तेजोराक्षसानामधिपस्यप्रवर्तते।

इसवास्ते वह अमृतको नहीं पाये परन्तु बलि राजा तौ भग-  
 वान्को भक्तथा इसवास्ते वो अमृत क्यों नहींपाया यह बड़ा  
 धर्म होताहै १ वाचक वाले अमृत लेनेकी इच्छा बलिराजा  
 को नहींथी जो कोई कहै कि अमृत लेनेकी इच्छा नहींथी तो  
 यह काम क्यों किया उत्तर राजाको धर्म देखिकै कि राजाको  
 सबकामकी परीक्षा लेना चाहिये तथा जाति धर्म देखिकै  
 जातिकी आज्ञा बलि न मानता तौ जाति नाराज होजाते,  
 इसवास्ते यह काम बलिने किया तथा बलिको अमृत नहीं  
 प्राप्त हुआ २ इति भा० अ० शं० मं० दशमेऽध्याये दशम  
 वेणी ॥ १० ॥ श्लोक ॥ १ ॥

श्रोता पूछते भये शुकजी मरेहुये राक्षसों को अपनी विद्या  
 रिकै जिआय देतेथे तव राक्षसोंको नाशकैसाहोताथा? वाचक  
 ले जबतक राक्षसों के मालिक के तेजकी वृद्धि रहती थी  
 व शुक्याचार्य राक्षसोंको जीताकरि सकेथे जब राक्षसों के  
 मालिक को तेजनष्ट होजावैगा तव शुक्याचार्य राक्षसोंको  
 भी भी नहीं जिआय सकेंगे क्योंकि समयके प्रताप को

तावज्जीवयते दैत्यान् तद्विनष्टेन सः क्षमः २ इति भा०  
 अ० शं० मं० एकादशेऽध्याये एकादशवेणी ॥ ११० ॥  
 श्लोक ॥ ४७ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कोमहा भगवाञ्छ्रम्भुः कथं काम  
 वशो भवत् । एषानो महती शंका छिन्ध्याचार्य्यवचो  
 सिना १ वाचक उवाच ॥ युगानाम्बहुसाहस्रं मायाचक्रे  
 तपःपरम् । शिवेनोक्ता वरम्ब्राहि तयोक्तस्त्वं वशीभव २  
 शिवेनोक्तपुनर्माया क्षणैकम्बशगस्तव । भविष्यामि च श्रो  
 तारश्चातः कामवशो भवत् ३ इति श्री भा० अ० शं० मं०  
 द्वादशेऽध्याये द्वादशवेणी १२ ॥ ॥ श्लो० ॥ २७ ॥

भगवान् भी मानते हैं तो शुककी क्या बात है ॥ २ ॥ इति-  
 भाग० अ० शं० मं० एकादशेऽध्याये एकादशवेणी ११ श्लोक ४७ ।

श्रोता पृच्छते भये महादेव कामके नाश करने वाले हैं  
 फिर भगवान् को स्त्रीरूप देखिकै कामकी वश क्यों होगये  
 यह हमारे लोगों को बड़ी शंका है हे गुरुजी आप अपने  
 वचन रूप तरवारि करिकै इस शंकाको काटो ।  
 वाचक बोले अनेक हजारों युग (नमः शिवाय) इस मंत्रको जाप  
 के माया तप करती भई तब एक दिन शिवजी बोले हे माया  
 जो वर तेरेको चाहै सो माँगु तब माया बोली हे शंकर तीन  
 लोकमें जो देहधारी प्राणी तथा देवता विष्णु ब्रह्मा आदिके  
 सब मेरे वश हैं एक आपु मेरे वश नहीं हो सो आधी घड़ी  
 के वास्ते आपु भी वशि हो जावो २ शिवजी माया से कहेकि  
 श्रृणु १ तेरी वश हम रहेंगे हे श्रोता हो इस वास्ते शंकर काम  
 के वश भये हैं कुछ कामी होके कामके वश नहीं भये ३  
 इति भा० अ० शं० मं० द्वादशेऽध्याये द्वादशवेणी १२ श्लोक २७ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ प्रभाकरसुतश्चामीमान् सावर्णेननुजः  
 शनिः । कथम्पीडांकरोत्यस्य सततं जगतः प्रभो १ वाचक  
 उवाच ॥ ज्ञात्वोन्मत्तं त्रिभुवनं वरं लब्ध्वा पितामहात् तेषां  
 ममदविनाशाय शनिः पीडांकरोति वै २ इति भा० अ०  
 शं० मं० त्रयोदशोऽध्याये त्रयोदशवेणी ॥ १३ ॥ श्लो० १० ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ अस्तान् पश्यन् नृषयो वेदान्कालेन भो  
 गुरो । चतुर्युगान्तो किं स्याद्वै फलन्तेषाम्प्रदर्शने १ वाचक  
 उवाच ॥ वेदानां यावदुत्पत्तिः पुनश्चैव भविष्यति । तावत्स  
 मीक्ष्य मनुष्यो वेदधर्मं चतुर्विधम् २ कथयन्ति मनुष्येभ्यो  
 धर्मा लोपो भवेद्भ्रुवम् । एतदर्थं प्रपश्यन्ति अस्तान्वे

श्रोता पूछते भये शनिश्चर सूर्य के तौ पुत्र तथा सावर्णि  
 मनुके छोटे भाई ऐसे कुल के वंश होकें फिरि नित्य संसार  
 को दुःख क्यों देते हैं १ वाचक बोले तीन लोक को उन्मत्त  
 शनिश्चर देखिके बिचार किये कि सब प्राणी अभिमान करि  
 कै ईश्वरको भूलि गये ऐसा शनिजी बिचारि कै ब्रह्मा से वर  
 दान जेकै उन्मत्त जो जीव तिन को अभिमान नाश करने  
 वास्ते दुष्ट जीवों को दुःख देते हैं और जो सज्जन हैं उन  
 को नहीं दुःख देते २ इति भा० अ० शं० निवारण मंजरी  
 त्रयोदशोऽध्याये त्रयोदशवेणी ॥ १३ ॥ श्लोक ॥ १० ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी चारियुगके अन्त में काल करि  
 कै प्रसित हुआ जो वेद तिनको अपि लोग देखते हैं परन्तु तिन  
 अपियोंके देखने में क्या फल हुआ १ वाचक बोले जब तक चारि  
 वेदों की उत्पत्ति फिर होवैगी तब तक अपियोंने वेदमें से चारो  
 युगके धर्मको देखिके २ मानुष्योंको कहते हैं मानुष्यलोग सुनिके  
 धर्मको नाश नहीं करते जब अपियोंसे मनुष्यलोग धर्म नहीं सुने



दानमुनीश्वराः ३ इति श्री भा० अ० शं० मं० चतुर्दशेऽध्याये चतुर्दशवेणी ॥ १४ ॥ श्लो० ॥ ४ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ विनाशताश्वमेधेन कृतेनेन्द्रासनं मुने । नरेणाधिष्ठितं कश्चिन्न श्रुतं शास्त्रसंचये १ इन्द्रो वशीकृतस्सर्वै राक्षसैरसकृच्छ्रुतम् । कथं शुक्रार्चनेनैव बलिः प्राप्तस्तदासनम् २ वाचक उवाच ॥ रे मेऽहिल्यांसहस्राक्षोयदिनेकामतापितः । तद्विनेषाष्टिमेधस्य फलन्नष्टं भूवह ३ चत्वारिंशावशिष्टं च हिरण्यकशिपुस्तदा । तस्थौ तदासने पश्चाद्बलिनाधिष्ठितं च तत् । यथा पुण्यन्तथा विष्णुस्सहायं कुरुते सदा ४ इति भा० अ० शं० मं० पंचदशेऽध्याये पंचदशवेणी ॥ १५ ॥ श्लो० ॥ ३३ ॥ तब वेद तो उस वखत थे नहीं नष्ट हो जाते हे श्रोता हो इस वास्ते प्रसित हुये वेदों को ऋषिजोग देखते हैं ३ इति भा० अ० शं० मं० चतुर्दशेऽध्याये चतुर्दश वेणी ॥ १४ ॥ श्लो० ४ ॥

श्रोता पूछते भये जो मनुष्य तथा जीव अश्वमेध यज्ञ नहीं करते सो प्राणी इन्द्र नहीं कभी होता बिना इन्द्र भये इन्द्र की गादी पर क्यों बैठेगा ऐसा हमने सब शास्त्र में सुना है १ तथा ऐसा भी हम सुना है कि अनेक दफे राक्षसों ने इन्द्र को अपने अस्त्रियार में करि लिये हैं परंतु यह बड़ी शंका भई कि अकेले शुक्र को पूजन करिके बलिने इन्द्र को राज छीनि लिया तथा इन्द्र की गादी पर बैठ गया बिना अश्वमेध किये २ वाचक बोले जिस दिन अहिल्या के संग इन्द्र ने खोटा कर्म किया उसी वखत ६० यज्ञ की पुण्य नष्ट होगई ३ चालीस ४० अश्वमेध को पुण्य इन्द्र के पास रही तब हिरण्यकशिपु इन्द्र के आसन पर बैठता भया तिसके पीछे बलि बैठता भया जैसी

श्रोतार ऊचुः ॥ स्त्रीणान्नैवाधिकारोस्तिवेदमंत्रेषु  
 कर्हिचित् । अदितिकश्यपः प्रोचेनाग्नयश्चहुतास्त्वया  
 अचिनूमायिसंप्राप्तेशंकेयम्महतीचनः १ वाचकउवाच  
 षितेस्वपतौवालातद्धोमविघ्नशान्तयोजुहुयात्स्वपते  
 म्ना धर्मशास्त्रमतेनच । ज्ञात्वैवंकश्यपः प्रोचेस्वप्रि  
 मादितिस्मुनिः २ इति भा० अ० शं० नि० मं० षो  
 शेऽध्याये षोडशवेणी ॥ १६ ॥ श्लो० ॥ ६ ॥

द्रुकी पुण्य तिसप्रकार इंद्रकी रक्षा भगवान् करते भये हे  
 गीताहो इसवास्ते बिना अश्वमेध किये बलिने इन्द्रका राज  
 णीनि लिया ४ इति भा० अ० शं० मं० पंचदशेऽध्याये पंच-  
 शवेणी १५ श्लोक ३३ ॥

श्रोता पूछतेभये अदिति से कश्यपमुनि कहेथे कि हे प्रिये  
 हम किसी दूसरे ग्रामको चलेगयेथे तब तुमने अग्निमें होम  
 नहींकिया इसवास्ते उदासीन बैठीहो हे गुरुजी बिना वेदमंत्रों  
 सेतौ होम होवैगा नहीं और वेदोंको मंत्र पढ़नेको स्त्रियोंको  
 अधिकार भी नहीं है तौ फिर ऐसा वाक्य कश्यपमुनि क्यों  
 कहेथे यहशंका हमारे सबके मनमें है १ वाचक बोले प्रायश-  
 चित्त कदंब श्लोक लक्ष १००००० तथा विधान पारिजातक  
 लक्ष १००००० श्लोक तथा अष्टादशस्मृति श्लोक ५२०००  
 इन आदि जेकै और जो अनेक बड़े २ धर्मशास्त्रहैं तिन धर्म  
 शास्त्रों में ऐसा लिखाहै कि जो स्त्रीको पति मास १ के वास्ते  
 दूसरे ग्रामको चलाजावे तथा अपनी अग्निहोत्रकी अग्नि  
 आदि सामगी नलैजावै तब अपनेपतिके नामको मंत्र मानिके  
 उसी नामसेस्त्री होमकरिदेवै पतिके होमको विघ्न न होनेपावै  
 ऐसा धर्मशास्त्रों को मत जानिकै कश्यपमुनि अदिति से पूछेहैं  
 २॥इतिभा०अ०शं०नि०मं०ज०षोडशेऽध्यायेषोडशवेणीश्लोक१॥

श्रोतार ऊचुः ॥ २५ ॥ विना वीर्यं न तज्जनिः ।  
 पः । अदित्यां विष्णुसूत्यर्थं विना वीर्यं न तज्जनिः १  
 वाचक उवाच ॥ सहित्वानेकदुःखानि मर्यादां स्वकृतां हरिः  
 सदैव रक्षते नो वै वीर्यं सृष्टिप्ररक्षणात् । वीर्याश्रयं स  
 माश्रित्य स्वाविर्भावं करोति सः २ इति भा० अ० शं० मं  
 सप्तदशेऽध्याये सप्तदशवेणी ॥ १७ ॥ श्लो० ॥ २३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ युगत्रये ददुर्दानं याचिताश्च नृपा द्वि  
 जैः । तथापि गुरुमापृष्ट्वा विचार्य शतधा पुनः १ तत्कथ  
 न्दातुमुद्युक्तस्सस्तेनायाचितो बलिः २ वाचक उवाच ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी भगवान् के जन्म होने वास्ते  
 अदितिके शरीरमें कश्यप मुनि वीर्य स्थापन करते भये  
 यह बड़ी शंका होती है कि बिना वीर्य स्थापन किये भगवान्  
 को जन्म नहीं होता क्योंकि वीर्यको जन्म तो चौरासीलक्ष  
 योनिको होता है और भगवान् तो सर्वव्यापी हैं उनके जन्म  
 होने वास्ते वीर्य स्थापन को क्या कामथा ? वाचक बोले  
 भगवान् अनेक प्रकारको दुःख सहिके आपन बिनाई मर्यादाकी  
 रक्षा करते हैं यह बात शास्त्र में लोक में भी सबको जाहिर  
 है वीर्य बिना संसारकी उत्पत्ति नहीं होती इस वास्ते वीर्य  
 की मर्यादा की रक्षा करने वास्ते वीर्य करिके आपु प्रगट होते हैं  
 जो वीर्यकी मर्यादा तथा रूपनी बनाई आपही मर्यादा न राखें  
 तो सब वस्तुमें विराज मान है फिरि जन्म लेनेका क्या काम है  
 बैकुण्ठ में बैठे बैठे जो चाहै सो करि लेवै इस वास्ते कश्यप वीर्य  
 स्थापन अदिति में करते हुये २ इति श्री भा० अ० शं० मं० सप्तदशेऽ  
 ध्याये सप्तदशवेणी १७ ॥ श्लो० ॥ २३ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी सतयुगत्रेता द्वापरमें ब्राह्मण राजों

गृहस्थैर्याचितोदानं सन्दद्याद्ब्राह्मणैर्नृपः । अयाचि  
 गोविरक्तैश्च धर्मशास्त्रमतान्वितम् । अयाचितो बलिश्चैव  
 तात्वादातुं समुद्यतः ३ इति भा० अ० शं० मं० अष्टा  
 दशोऽध्याये अष्टादशवेणी ॥ १८ ॥ श्लो० ॥ ३२ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ ब्रह्मचारी स्वयम्भूत्वा तथाऽप्यनृत  
 वादनम् । चकार वामनो ब्रह्मन्महत्कौतूहलं च नः १  
 वाचक उवाच ॥ शठं कर्म सदा कुर्याच्छठेन धर्मशास

ले दान मांगते थे तब राजालोग गुरु से अनेक बार पूछिके  
 सुपात्र तथा कुपात्र विचारिके दान देते थे १ जब ऐसे विचारि  
 के दान देते थे तब वामन भगवान् तौ दक्षिसे दान मांगा नहीं  
 बिना मांगे दान देनेको बलि क्यों तैयार हुआ यह भ्रम है २  
 वाचक बोले धर्मशास्त्रको यह मत है कि गृहस्थ ब्राह्मण दान  
 मांगे तब राजा दान देवे तथा विरक्त ब्राह्मण दान न मांगे तौ  
 भी राजा दान देवे ऐसा धर्मशास्त्रके मतको राजा बलि जानिके  
 वामन विरक्त है कुछ मांगे भी नहीं तौ भी बलि दान देनेको  
 तैयार भया ३ इति० भा० अ० शं० मं० अष्टादशोऽध्याये अष्टादश  
 वेणी ॥ १८ ॥ श्लो० ॥ ३२ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी हमारे सधके मनमें बड़ा आश्चर्य  
 होता है कि वामन भगवान् होके तथा ब्रह्मचारी होके थोरेही  
 कामके वास्ते झूठ बोलते भये हरहर ३ हे गुरुजी क्या बलिको  
 एड देनेको दूसरा उपाय नहीं था वाचक बोले कि धर्मशास्त्र  
 ऐसा लिखा है कि दुष्टके संग जो दुष्टता करेंगे उनको  
 दोष नहीं होता राजा दक्षि कैसा दुष्ट है कि वह अपने मन में  
 जानता था कि इन्द्र की पुण्य अभी है हम राज से जेवगे किसी

नम् । शुक्रं पूज्याददेराज्यमिन्द्रस्य च शठो बलिः २ इन्द्रो  
वक्तिसदा विष्णुं पुण्यशेषं च देहि मे । अतो भगवते दम्बैकृ  
तं कर्म विनिन्दितम् ३ इति भा० अ० शं० नि० मंजय्या  
एकोनविंशेऽध्याये एकोनविंशवेणी ॥ १६ ॥ श्लो० १६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ को गृहो मुनिभिः प्रोक्तः कथितो य  
त्पतिर्वलिः । इन्द्रासने समास्थित्वा कथं गृहपतिः स्मृतः १  
वाचक उवाच ॥ ये गृहं तिसदा प्रीत्या भगवन्नामसादरम् ।

प्रभाव से तब भगवान् को दुःख भोगना परैगा ऐसा जानता  
रहा है तौ भी शुक को पूजन करिके इन्द्र को राज लेलिया २  
तब राज से अष्ट इन्द्र भगवान् से नित्य तगादा करने लगा  
कि महाराज मैं अश्वमेध यज्ञ १०० किया हों तब मेरे को आपु  
इन्द्र बनाये हो कुछ फोकट से नहीं बनाये सौ १०० यज्ञ में जो  
मैं राज किया सो तो भोगिलिया अब जो मेरी बाकी पुण्य होवै  
उस पुण्य करिके मेरा राज देवो और न राज देवो तौ मेरी  
पुण्य देवो हे श्रोता हो ऐसे इन्द्र के वचन सुनिके भगवान्  
लज्जा तथा दुःख को प्राप्त होके विचार किये कि बिना छल  
किये बलिसे इन्द्र को राज नहीं मिलेगा ऐसा विचारिके झूठ  
बोलिके इन्द्र को राज देते भये ३ भा० अ० शं० मं० एकोन-  
विंशेऽध्याये एकोनविंशवेणी १६ ॥ श्लोक ॥ १६ ॥

श्रोता पूछते भये शुकदेवजीने राजा बलिको घरको पति  
करिके वर्णन किये हे गुरुजी घर किसका नाम है कि दक्षि  
राजा इन्द्रकी गादी पर बैठिके तीन लोकको पति होके फिर  
गृहपति कहाया ऐसा उत्तम चीज गृह क्या है १ वाचक बोले  
जो जीव नित्य भगवान् को नाम बड़े आदरसे बड़ी प्रीतिसे  
जपते हैं जप करने को गृहण करना भी नाम है उन आर्थोको

ते गृहा मुनिभिः प्रोक्तास्तेषामुक्तोपतिर्बलिः ॥ २ ॥  
 इति श्रीभा० अ० शं० मं० विंशेऽध्याये विंशवेणी ॥ २० ॥  
 श्लो० ॥ १ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ बलिश्च वामनेनोक्तो विशत्वन्निरयं  
 सदा । पश्चात्सुतलमित्युक्तः कथन्तन्नददौ हरिः । वाचक  
 उवाच ॥ यदूचे वामनस्तच्च निरयम्बलयेददौ । अयसो

इनाम है तिन्हों को पति बलिहै क्योंकि० राति दिन बलि  
 तरीके भगवान् के नामका जप करनेवाला कोईभी नहींहै इस  
 वास्ते शुकदेवजी बलिको गृहपति कहेहैं घरको पति नहींकहे  
 इति भा० अ० शं० मं० विंशेऽध्याये विंशवेणी ॥ २० ॥  
 श्लोक ॥ १ ॥

श्रोता पूछते भये वामन भगवान् पेशतर तो बलिको कहे  
 थे कि तूं नरक में वास करु ऐसा पापी है तूं फिरि पीछे  
 सुतललोक बलिको देते भये नरक को क्यों नहीं भेजे पामर  
 जीव तरीके यह तमाशा किया जैसा कोई क्रोधी मनुष्य  
 क्रोध भये पर जो चाहै सो मुखसे बकिदेवै यह बड़ी शंका  
 है । वाचक बोले वामन भगवान् जो लोक बलिको देने वास्ते  
 कहे थे सोई लोक दिये क्योंकि निरयको अर्थ नरकनहीं  
 है तथा जो लोक अयस जो लोह तिस करिके निकहे रहित  
 होवै याने जिस लोक में लोह न होवै उस लोक को भी मुनि  
 यों ने निरय कहा है भगवान् भी निरयको अर्थ ऐसा करि  
 के बलिको कहे थे कि निरयमें वास करोगे इस वास्ते निरय  
 जो सुतल लोक तहां बलिको भेजिदिये क्योंकि सुतल आदि  
 लोकोंमें मणि सिवाय दूसरी धातु कोई नहीं है और लोह

निर्गतं लोकन्निरयं संस्मृतो बुधैः २ इति श्री भा० अ० शं०  
मं० एकविंशोऽध्याये एकविंशवेणी ॥ २१ ॥ श्लो० ॥ ३२ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ बलिः कम्प्रापसंस्थानं यद्दुःप्राप्यं  
सुरैरपि । स्वर्गस्सुराणां सुतलो नागां नामालयं सदा ।  
वाचक उवाच ॥ जीवन्मुक्तः कृतो राजा वामनेन च तत्त्व  
यो। यल्लोकं योगिनो यान्ति तल्लोकं प्रापितो बलिः २ इति श्री  
भा० अ० शं० मं० द्वाविंशोऽध्या० द्वाविंशवेणी २२ श्लो० ३७ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ जगत्कर्तुर्जगद् भर्तुर्जगत्पालयितु  
की कौन गनती हे श्रोताहो निरयको अर्थ विचारिके वामन  
कहेथे नरक में पड़ने को बलिको नहीं कहेथे २६० भा० अ०  
शं० मं० एकविं० एकविंशवेणी ॥ २१ ॥ श्लो० ३२ । से ३४ तक ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी ऐसा कौन लोक है कि जिस  
लोकको देवताभी बड़े ब्रह्मेश से जासक्ते हैं और उसी लोक  
को एकक्षणमें बलिराजा चला गया जो कदापि स्वर्ग लोक  
को बलित गया तो स्वर्ग लोक देवताका है और जो सुतलको  
गया तो सुतल नागाका है हे गुरुजी यह बड़ी शंका है । वाचक  
बोले वामन भगवान् जिस बखत बलिसे दान लिया उसी बखत  
बलि जीता था तो भी संसारसे मोक्ष करि दिया चाहे तो संसार  
में रहै चाहे योगीके लोकको जावे ऐसे लोकको देवता जो  
बड़े दुःखसे भी नहीं जासकेंगे इस वासते शुकजी कहेवि  
जिस लोकको बलि प्राप्त भया सो लोक देवता से दुःख से  
भी नहीं जावे योग्य है २ इति भा० अ० शं० मं० द्वाविंशोऽध्या० द्वाविंश  
वेणी ॥ २२ ॥ श्लो० ३७ ॥

श्रोता पूछते भये जगत् को करने वाले जगत् को स्वामी  
जगत् की पालना करने वाले ऐसे जो भगवान् तिन भगवान्

स्तथा । इन्द्रस्याधःकथंचक्रयभिषेकंपितामहः१वाचक  
उवाच ॥ इन्द्रस्यत्रासनार्थाय लघुत्वेस्थापितोहरिः ।  
विचार्यविधिनासम्यक् प्रेरितेनचविष्णुना २ इतिश्री  
भा० अ० शं० मं० त्रयोविंशेऽध्यायेत्रयोविंशवेणी २३ ॥  
श्लो० ॥ २१ ॥

श्रोतार उचुः॥समूचुर्मनुनयोभूपंभगवद्ध्यानकारणे।  
स्वयंकथन्नतञ्चक्रुर्ध्यानंभागवताद्विजाः१वाचकउवाच॥  
नवैकुर्वन्तिमुनयश्शरीरस्यसुखायच। ध्यानंभगवतोवि

को इंद्र के हाथके नीचे राज ब्रह्मा देते भये मालिक तौ इंद्र  
दिवान भगवान् को ब्रह्मा किये यह बड़ी शंका है १ वाचक  
बोले भगवान् की आज्ञा मानिके ब्रह्मा बहुत प्रकार से विचारि  
के इंद्रको त्रास देने वास्ते भगवान् को इंद्र के हाथ के नीचे  
मालिक बनाए क्योंकि लोक में भी अपनी बराबरी पुत्रको  
भाई को देखिके जांक कुकर्म नहीं करते इसप्रकार से भगवान्  
इंद्र को छोटा भाई है वामन के सामने इंद्र खोटाकर्म नहीं  
करेगा इस वास्ते त्रिलोक के नाथको इंद्र के हाथ के नीचे  
ब्रह्मा मालिक करते भये २ १० भा० अ० शं० मं० त्रयोविं०  
त्रयोविंशवेणी २३ श्लोक ॥२१॥

श्रोता पूछते भये मुनियोंने भगवान्को ध्यानकरने वास्ते  
राजाको कह्ये किराजा भगवान्को ध्यानकरो परन्तुआपु मुनि  
लोग भगवान् को ध्यान क्यों नहीं करते भये यह बड़ी शंका  
है १ वाचक बोले मुनि लोग शरीरके सुख होने वास्ते भगवान्  
को ध्यान नहीं करते मोक्ष के वास्ते ध्यान करते हैं उस यज्ञ



प्राश्नातो नैव कृतन्तु तैः २ इति० भा० अ० शं० मं० चतुर्विंशोऽ  
ध्याये चतुर्विंशवेणी ॥ २४ ॥ श्लो० ॥ ४३ ॥

शरीर की रक्षा को कामयाब इस वास्ते मुनियो ने भगवान् को  
ध्यान नहीं किये २ इ० भा० अ० शं० मं० चतुर्विंशोऽध्याये चतु-  
र्विंशवेणी २४ ॥ श्लो० ॥ ४३ ॥

इति श्रीमद् भागवत अष्टमस्कंध शंका निवारण मंजरी  
शिवसहायबुधविरचिता सुधामयी टीका  
सहिता समाप्ता ॥

श्रीशङ्करार्पणमस्तु ॥

---

# श्रीमद्भागवतशंकानिवारणमंजरी॥

नवमस्कंधे ॥ ६ ॥

सुधामयीटीकासहिताविरच्यते॥

श्रोतार ऊचुः ॥ शम्भुनोक्तंकथम्ब्रह्मन् स्थानमेत  
द्भवेद्भ्रुवम् । प्रविशेत्पुरुषशीघ्रं प्रमदायोऽतिशी  
लिना १ सर्वचराचरंविश्वं स्वस्वकार्यार्थसिद्धये । व्रजं  
तिशिवसंस्थानन्तेभवन्तिनयोषितः २ वाचक उवाच॥  
कैलासस्यचशापान्ते स्थापिताबहवोगणाः । विचार्य्य

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी महादेवजी बड़े शीलवान् होके  
ऐसा क्यों कहेंगे कियह हमारे स्थानके सामने जो कोई पुरुष  
मात्र आवैगा सो जल्दी स्त्री होजावैगा चौरासी लाख योनि  
में जिस योनिको पुरुष आवेगा उसी योनिकी स्त्री होजावैगी  
और तीन लोक में जो सब चर अचर प्राणी हैं सो सब अपने  
अपने कार्यको सिद्ध होने वासुते शिवके कैलासको जाते हैं  
वो सब स्त्री नहीं होते यह बड़ी शंका है २ वाचक बोले शाप  
देके पीछे से महादेव विचारिके कैलास के चारों तरफ एक  
कोशपर बहुतसे अपनेगण टिकाय देते भये ३ जोकोई प्राणी  
कैलासको आता है उसको कोश भरेपर शिवगण खड़ा करिके  
शिव से पूछते हैं कि हे महाराज अमुक २ प्राणी आपके दर्शन  
करने की आये हैं तब शिव आज्ञा देते हैं आनेदेवो तब वह

शम्भुना बाह्ये जनैके चतुर्दिशः ३ आगन्तुकांश्च संस्थाप्य  
गणाः पृच्छन्ति शंकरम् । तेनाज्ञप्तास्समायान्ति तत्रा  
तस्स्युर्न ते स्त्रियः ४ इति० भा० न० शं० सं० प्रथमेऽध्याये  
प्रथमवेणी ॥ १ ॥ श्लो० ॥ ३२ ॥

हृत्तधेनुमृषध्रंच शशापानेन कर्मणा । गुरुस्त्वम्भवि  
ताशूद्रः कथन्तेषामिदन्नहि १ वाचक उवाच ॥ श्येनेन  
मुनिना शप्ता यमभार्या त्रिदंडिना ॥ धेनुयोनिस्तया प्रा  
प्ता द्वादशाब्दं पुरायुगे २ दत्त्वामहाशिषमुक्ता पृषध्रंच  
प्राणी कैलास के भीतर जाते हैं इस वास्ते स्त्री नहीं होते  
कोशभरेपर खड़ा करनेको कारण यह है कि जिस सीमा के  
भीतर आनेसे स्त्री होते हैं उस सीमाके दूर वह कोशपर खड़ा  
करते हैं ४ इति भा० नव० शं० सं० प्रथमेऽध्याये प्रथम  
वेणी १ ॥ श्लो० ॥ ३२ ॥

श्रोता पृच्छते भये गौको बधन किया ऐसा जो पृषध्र तिस को  
वसिष्ठजी ने शाप दिया कि तू गायको मारा है इस दुष्ट कर्मसे  
शूद्र होवैगा ऐसा शाप क्यों दिया क्योंकि गौ मारना यह  
शूद्रका काम नहीं है यह तो चांडालको कर्म है १ वाचक बोले  
सतयुग में त्रिदंडी नाम मुनि वाजपत्नी को रूपधरिके संसार  
में भ्रमण करिरहे हैं एकदिन यमपुरी को अपनी इच्छा से  
तमाशा देखने वास्ते चले गए तब यमकी स्त्री मुनिको चरित्र  
जानि कै तमाशा करने वास्ते गौको रूप धरिके पत्नी रूप  
जो मुनि तिनको अपने शृंगसे मारने दौड़ती भई तब  
मुनिने शाप दिया कि वर्ष १२ तू गौहोवैगी इस वास्ते यम  
की स्त्री गौ होके अयोध्या के राजा की गउवों में रहती थी २  
उसी गौ रूप यमकी स्त्री को पृषध्र दैवयोग से मार डाले तब

जगामसा । मुनिर्ध्यानेन तद्ज्ञात्वा द्वौ कार्यौ संविचार्य च  
 गवाम्माहात्म्यवृद्धयर्थं तन्मोक्षाय शशाप वै । शूद्रश्च  
 जान्दवीभ्राता मानेन रहितस्सदा ४ इति० भा० नवम०  
 शं० मं० द्वितीयऽध्याये द्वितीयवेणी ॥ २ ॥ श्लोक ॥ ६ ॥  
 श्रोतार ऊचुः ॥ एकरूपं समाविश्य सुकन्यात्रीन्  
 पुरस्थितान् । कथं जगाम शरणमश्विनोऽश्वपतिव्रता १  
 वक उवाच ॥ अश्विनोर्मनसा ध्यानं चक्रे पार्श्वं नृणां

नेकी शापसे छोटिके पृषधकी मोक्ष होने वास्ते आशीर्वाद  
 : अपने पतिके पास गई वसिष्ठजी ने ध्यान करिके सब  
 रेत्र जानिके दोकाम विचारिके ३ गौवोंको माहात्म्य बढ़ाने  
 स्ते कि और कोई ऐसा न करै तथा पृषधकी मोक्ष होने वास्ते  
 प दिया तू शूद्र होवैगा शूद्र होने को कारण यह है कि  
 द अभिमान से रहित होते हैं तथा श्री गंगाजीके भाई भी  
 द हैं भगवान् के पगसे शूद्र जन्मे हैं तथा गंगाभी पगोंसे  
 कली हैं इस दो गुण करिके शूद्र को मोक्ष जल्दी होता है  
 श्रोताहो इस वास्ते वसिष्ठ पृषध को शूद्र होना कहेथे ४  
 ० भा० न० शं० मं० द्वितीयेऽध्याये द्वितीयवेणी २ ॥ श्लोक ॥ ६ ॥

श्रोता पूछते भये सुकन्या अपने सामने एकतरिके तीन  
 रूपको खड़ा देखिके अश्विनी कुमार की शरण कैसे प्राप्त  
 है क्योंकि वो तीनों तो एकठारहे थे दीप से दीप जलावे  
 है क्या मालूम परैगा कि यह तिलके तेलको है यह सरसों  
 मलसी पोस्त घीको दीपहै मालूम न परैगा तैसा वो तीनों  
 एक रूप थे १ वाचक बोले सुकन्या अपने मन में अश्विनी-  
 कुमार को ध्यान किया है उन दोनों देवतोंके सामने नहीं गई  
 ध्यान करिके अपने मन में ऐसी प्रार्थना अश्विनीकुमारकी

गता । दर्शयस्वपतिम्मेव युवाम्मेपितरौप्रभू २ इति०  
भा० न० शं० मं० तृतीयेऽध्यायेतृतीयवेणी ३ श्लो० १६॥

श्रोतार ऊचुः ॥ अंबरीषोददौधेनून् षष्टिकोटिमि  
तान्मुने । महादाश्चर्यमेतद्धि वर्ततेमानसेचनः १ वाचक  
उवाच ॥ ज्योतिश्शास्त्रेचार्बुदस्य संख्यादिगकोटिनिर्मि  
ता । धर्मशास्त्रेसहस्राणां पंचप्रोक्तामुनीश्वरैः २ इति०  
भा० न० शं० मं० चतुर्थेऽध्यायेचतुर्थवेणी ४॥ श्लो० ३४ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ अंबरीषस्यचरणौ गृहीतौमुनिना  
कथम् । तप्तेनापिहरेश्चक्र तेजसाभाव्यमेवतत् १

करती भई महाराज आप दोनों जने मेरे बापहो मेरे पतिको  
देखाय देवो ऐसी बिनती करिकै अपने पतिको प्राप्त भई २  
इति भाग० न० शं० नि० मं० तृतीयेऽध्याये तृतीय वेणी ३ ।  
श्लोक ॥ १६ ॥

श्रोता पूछते भये कि राजा अंबरीषने साठि ६००००००००  
कोटि गाय को दान कियो हे गुरुजी हमारे सबके मनमें बड़ा  
आश्चर्य होता है कि साठि कोटि गाय तथा साठि कोटि  
बछड़ा बछड़ी तथा साठि कोटि दान लेनेवाले ब्राह्मण एकठा  
होनेकी बड़ी शंकाहै १ वाचक बोले ज्योतिष शास्त्रमें अर्बुद १  
को दश कोटि लिखाहै तथा प्रायश्चित्त कदंब तथा विधान  
पारिजातक एतच्च श्लोक हैं इन्हों आदि लेकै और भी जो  
धर्म शास्त्रहैं उनमें अर्बुद १ को पांच ५००० हजारसंज्ञा लिखी  
है इसप्रमाणसेती हजार गौ राजा ने दान कियाथा २ इति  
भा० न० शं० मं० चतुर्थेऽध्याये चतुर्थ वेणी ४ श्लो० ॥ ३४ ॥

श्रोतापूछतेभये हेप्रभुजीदुर्वासा मुनि भगवान्केचक्रकेतेज  
करिकैभस्म होरहेहैं तोभी अम्बरीषको पग कैसा ग्रहणकरते

वाचक उवाच ॥ दिग्गहसान्नाद्विजान् गृह्यचरता भुवनत्र  
यम् । दुर्वाससेदं सम्पूर्णं त्रासितं शापकारणात् २ दिश्व  
म्प्रकम्पितन्दृष्ट्वा भगवान्गिरिजापतिः । तन्माननाश  
नार्थाय यत्नमेतच्चकार ह ३ इति श्रीभा० न० शं० मं०  
पंचमेऽध्याये पंचमवेणी ॥ श्लो० ॥ १ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ युवनाश्वः कथं राजा यज्ञतोयम्पपौस्व  
यम् । महदाश्चर्य्यभूतं च शिशुवत्कौतुकम्मुने १ वाचक  
उवाच ॥ सगर्भाजान्दृष्ट्वा पुष्करे सन्तनुप्रियाम् ।

भयेवडा अयोग्य कर्म है कलियुग के ब्राह्मण तौ दुर्वासान ही थे कि  
देह के सुख होनेवास्ते नीच कर्म करना वोतो बड़े प्रतापी थे  
फिरि क्यों नीच काम किये वडा भ्रम होता है शिव ३।१ वाचक  
बोले दश १०००० हजार ब्राह्मणों को संगलेकै तीन लोक में  
दुर्वासा भ्रमण करिकै तीनों लोक को शाप करिकै बहुत दुखी  
करि देते भये जरा से किसी जीव से अपराध होजावै तब  
उस को ऐसा शाप देना कि बहुत वर्ष तक दुःख पावैगा २तीन  
लोक को कंपायमान तथा बहुत दुःखी देखि कै दुर्वासा को  
अभिमान नाश करने वास्ते यह यत्न महादेव करि कै तीन  
लोक को सुखी करते भये क्यों कि अंबरीष को चरित्र राति  
दिन दुर्वासा के हृदय में वशि गया विचारि कै क्रोध करने  
लगे हे श्रोता हो इस वास्ते मोह को प्राप्तहुये दुर्वासा अंबरी-  
ष के पग को ग्रहण करते भये ३ इति श्रीमद्भागवते नवमस्कंधे  
शं० मं० पंचमेऽध्याये पंचमवेणी ॥ ५ ॥ श्लोक ॥ १ ॥

श्रोता पूछते भये हे मुनिजी राजा युवनाश्व आपुसे उठिके  
ब्राह्मणों को सोता देखिकै चोर सरी के यज्ञ को जलपी लि-  
या यह घालक सरी के कर्म किया बड़े आश्चर्य की बात है १

युवनाश्वस्तयाक्षान्तो जहासबहुशोन्मत्पः २ नक्षान्त  
विष्णुनातत्त मयान्मत्पसत्तमम् । मोहयित्वातदुदरे गर्भं  
धारयिताहरिः ३ इति श्रीभा० न० शं० मं० षष्ठेऽध्याये  
षष्ठवेणी ॥ ६ ॥ श्लो० ॥ २७ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ सर्वान्यज्ञान्परित्यज्य पुत्रामिषसमु  
द्भवम् । कर्तुं समुद्यतो राजा यज्ञमेतत्कथंगुरो । वरुणोपि  
महापापी शिशुहत्यांच योगृहीत् १ वाचक उवाच ॥  
पुत्रहीनो नृपो जात्वा स्वात्मानं मनसा सुधीः । राजनीतिं  
विचार्यैव कर्मैतद्वै समाकरोत् २ इति श्रीभा० न० शं०  
मं० सप्तमेऽध्याये सप्तमवेणी ॥ ७ ॥ श्लो० ॥ ८ ॥ से ॥  
६ ॥ तक ॥

वाचक बोले पुष्करजी में राजा युवनाश्व गंगाजी के राजा  
सन्तनु के वीर्य से गर्भ देखिके बहुत हँसता भया परंतु  
गंगाजी युवनाश्व के अपराधको क्षमा किया २ परंतु राजा  
के अपराधको भगवान् नहीं क्षमा किहे इसवास्ते राजा में उ  
त्तम जो युवनाश्व राजा तिसको माया से पागल करिके  
जलापिवायके उसके पेट में गर्भ धारण कराते भए ३ इ०  
भा० न० शं० मं० षष्ठेऽध्याये षष्ठवेणी ॥ ६ ॥ श्लोक ॥ २७ ।

श्रोता पूछते भये राजा हरिश्चंद्रने सवयज्ञको त्यागिके  
पुत्रके मांस करिके बरुणकी जो यज्ञ तिसको करने को कये  
विचार किए और बरुणभी ऐसा उत्तम देवता सो बलिहत्या  
ग्रहण करने को अंगीकार किया बरुणभी बड़ा पापी है गुर  
जी शास्त्रकी अंधेर देखते तो कलियुग अच्छो है इसमें ऐ  
सा २ अन्याय तो कोई भी नहीं करता हर २१ वाचक  
बोले राजा हरिश्चंद्र अपने को पुत्र करिके हीन जानिके

श्रोतार ऊचुः ॥ और्वश्चब्राह्मणोब्रह्मन् नृपभार्या  
 चतांकथम् । निवारयित्वास्वात्मानं पुत्रवन्तममन्यत १  
 वाचक उवाच ॥ परावरज्ञश्चौर्वर्षिज्ञात्वासगरवीरतां ।  
 स्वाशिष्यंचापितंस्वस्य कीर्तिविस्तारणन्तथा । नशिष्य  
 पुत्रयोर्भेदो लोकेशास्त्रेप्रदृश्यते । एवंविचार्यस्वात्मानं  
 पुत्रवन्तममन्यत ३ इतिश्री भा० न० शं० मं० अष्टमेऽ  
 ध्याये अष्टमेवर्णा ॥ ८ ॥ श्लो० ॥ ३ ॥

मनमें राजनीति विचारिके पुत्रके मांस करिके यज्ञ करने को  
 विचार कियाकि अभी मेरे पुत्र नहीं है वरुणको लोभ देखा-  
 यकै जो पुत्र मेरे होजावैगा तो नहीं मारोंगा पुत्रके वास्ते  
 झूठ बोलने का पाप भी नहीं होवैगा हे श्रोता हो इसवास्ते  
 हरिश्चंद्रने पुत्रके मांस करिके यज्ञ करने को विचार  
 किया है २ इतिभा० न० शं० मं० सप्तमेऽध्याये सप्तमवेर्णा ॥  
 ७ श्लोक ॥ ८ ॥ से ॥ ६ ॥ तक ॥

श्रोता पूछतेभए हे गुरुजी और्व ब्राह्मणने राजाकीस्त्री  
 पतिके संग भस्म होने लगी तिसको भस्म होनेको मनाकरिके  
 अपनेको पुत्रवान् क्यो मानतेभए कि यह स्त्रीनहीं भस्महोगी  
 तो हमारे पुत्र होवैगा यह बड़ी शंका है १ वाचकबोले अगाड़ी  
 पिछाड़ी की बात जानने वाले जो और्व ऋषि सो ऐसा जानि  
 कै कि राजा सगर बड़ा वीर होगा तथा हमारा शिष्य होगा  
 संसार में हमारी कीर्ति होवैगी २ लोक में तथा शास्त्र में पुत्र  
 में तथा शिष्य में भेद नहीं देखि परता ये दोनों परोवरि हैं  
 ऐसा विचारिके सगरको पुत्रमानिके अपने को पुत्रवान् मानते  
 भये ३ इ० भा० नं० शं० मं० अष्टमेऽध्याये अष्टमवेर्णा ॥ ८ ॥  
 श्लो० ॥ ३ ॥



श्रोतार ऊचुः ॥ चिरकालन्तपस्तप्त्वा सर्वेभूपमृता  
 ध्रुवम् । नकेनापि क्षितिर्नीता स्वर्धुनीलोकपावनी १ राज्ञा  
 भगीरथेनापिकेननीताक्षितिचसा २ वाचक उवाच ॥  
 पंचवर्षोयदाभूत्वा राजाभागीरथस्तदा । पितॄणांचरि  
 तं श्रुत्वा गङ्गानयनकारणम् ३ गङ्गानामसहस्रं च पठितुं  
 सरसमारभत् । तस्याजतद्दिनान्नैवमतः प्रीता च स्वर्धुनी ४  
 इति भा० न० शं० मं० नवमेऽध्यायेनवमवेणी ६ ॥ श्लोक २ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ नाभूदनिच्छत्तस्मृत्यु रामेराजनि

श्रोता पूछते हैं हे गुरुजी सब राजा सगरके वंश वाले तप  
 स्या करते २ मरि गये परंतु संसारके पापको नाश करनेवाली  
 जो श्रीगंगाजी तिनको भूमिमें कोईभी राजान लेआयसके १  
 परन्तु राजा भगीरथ क्या तप किया जिस तप करि कै भूमि  
 में गंगा जी को लै आया २ वाचक बोले जब राजा भगीरथ  
 पांच वर्ष को भया तब अपने पितरों को चरित गंगा जी को  
 लै आनेवास्ते तप करि कै मारे गये पण गंगा भूमिमें नहीं  
 आई ऐसा सुनिकै ३ पांचवर्ष की अवस्था से श्रीगंगाजी को  
 सहस्र नाम पाठ करने को प्रारंभ किया परन्तु जिस दिन  
 से पाठ करना प्रारंभ किया उसदिन से जब तक गंगाजी  
 नहीं आई तब तक छोड़ानहीं राजा बृद्धा भी हो गया ऐसी  
 पण देखिकै श्रीगंगाजी थोरे दिन तप भगीरथ किया तो  
 भी बालपनसे अपना नाम जपने वाला भगीरथको जानिकै  
 बहुत प्रसन्न होकै थोरेही दिनमें भगीरथके संग भूमि को  
 चर्की आती भई ४ इति भा० नव० शं० मं० नवमेऽध्याये  
 नवम वेणी ६ ॥ श्लोक ॥ २ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी रामचन्द्र के राजमें जो प्राणी

कहिंचित् । महदाश्चर्यमेतद्विमृत्युस्सर्वत्रवर्तते १ वाचक  
 उवाच ॥ शब्दस्यानिच्छतामस्य मृत्युरर्थो न भाव्यते ।  
 तस्यायमर्थो ज्ञातव्यो रामचन्द्रपदोऽभनं २ इति०  
 मा० न० शं० मं० दशमेऽध्याये दशमवेणी ॥ १० ॥  
 श्लो० ॥ ५४ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ यद्विप्रेभ्यो ददौ रामस्तद्विजाः प्रददुः  
 पुनः । रामाय रामचन्द्रेण तद्रहीतं कथम्मुने १ वाचक  
 उवाच ॥ ब्राह्मणानाम्प्रसादाश्च गृहीताः क्षत्रियैस्सदा ।

के मरनेकी इच्छा किया उसको मरणा होता था और जो मरण  
 नहीं होने की इच्छा करता उसको मरण कभी भी नहीं होता  
 था यह बड़े आश्चर्य की बात है क्योंकि मृत्यु तो सब लोकों  
 में है किसी लोक में जल्दी किसी लोक में देरकी परंतु ऐसा  
 लोक कोई भी नहीं है कि जिस लोक में मृत्यु न होवे ?  
 वाचक बोले अनिच्छता इस शब्दको अर्थ मरणकी इच्छा  
 करना नहीं होगा इसका यह अर्थ है कि जो प्राणी राम-  
 चंद्र के चरणारविंदको त्याग करनेकी इच्छा करते थे रात्रि  
 दिन उसी चरणों में मस्त रहते हैं उन प्राणियोंकी मृत्यु  
 नहीं होती २ इति मा० न० शं० मं० दशमेऽध्याये दशमवेणी  
 १० ॥ श्लोक ॥ ५५ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी जो वस्तु रामचंद्रने ब्राह्मणों  
 को दानदिये थे ब्राह्मण दान लिये कल घड़ी तथा दिन पीछे  
 उसी दानवाली वस्तुको ब्राह्मणों ने रामचंद्र के वास्ते  
 प्रीतिसे देते भए तब रामजी अपनी दानदिये वस्तु क्यों लेते भये  
 बड़ी शंका इसमें होती है वाचक बोले ब्राह्मण लोग प्रसन्न होकर  
 अपना प्रसाद तुलसीपत्र आदिके तथा तीनश्लोक को सुन

तदवज्ञाकृतेशीघ्रं शापन्दास्यन्तिब्राह्मणाः २ एवंविचार्य  
रामेण गृहीतन्नचलोभतः ३ इति० भा० न० शं० मं०  
एकादशोऽध्यायेएकादशवेणी ॥ ११ ॥ श्लो० ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कालस्यान्नंजगत्सर्वं कथंराजत्वशे  
षितः । मरुतः कलिनाशेच पुनर्वंशकरः प्रभो १ वाचक  
उवाच ॥ बाल्याद्योगरतोधीरो मरुर्हरिपरायणः । योगि  
नान्नाशनेशक्तिर्नास्तिकालस्य कर्हिचित् २ इ० भा०  
न० शं० मं० द्वादशोऽध्यायेद्वादशवेणी ॥ १२ ॥ श्लो० ६ ॥  
श्रोतार ऊचुः ॥ राजानिभिर्बहाज्जानीवसिष्ठश्चमुनीश्वरः ।  
पर्यंत जव चत्रियों को देते हैं तब उसी बखत चत्रियलोग  
ब्राह्मणों को दिया प्रसाद लेते हैं जो कभी कोई राजा न  
लेवै तब जल्दी ब्राह्मणलोग उस राजाको शाप देवेंगे ऐसा  
रामचंद्र मन में विचारिकै अपनी दईबस्तु ग्रहण करते भये  
लोभसे नहीं ग्रहण किये ॥ ३ ॥ इति भा० नवमस्कंधेशं० नि०  
मं० एकादशोऽध्यायेएकादशवेणी ॥ ११ ॥ श्लोक ॥ ५ ॥

श्रोता पृच्छते भये हेप्रभुजी तीनलोक में जन्मे जो प्राणी  
तिनसब प्राणियों को कालखाय लेता है परन्तु राजा मरुको  
काल क्यों नहीं भक्षण किया कि जो राजा मरु कलियुग को  
नाश भये पीछे सूर्यवंश को फिर उत्पत्ति करेगा आपु कहो ?  
वाचक बोले राजा मरु बाल्यपणसे ईश्वर को भजन करनेलग  
भजन करते २ बड़ायोगी होगया तौ योगियों को खाने की  
सामर्थ कालकी कभी नहीं क्यों कि कालतो योगियोंको देखि  
कै दूरडरि जाता है इसवास्ते राजा मरु कालसे बचिगया २  
इति० भा० न० शं० मं० द्वादशोऽध्यायेद्वादशवेणी ॥ १२  
श्लोक ॥ ६ ॥

श्रोता पृच्छते भये हेगुरुजी राजानिभि बड़ा ज्ञानीथा ।

उवाच ॥ गुरुणाशिक्षितश्चन्द्रो धर्मशास्त्रप्रमाणतः  
स्वीकृतः पुरुषः क्रीडां स्त्रियाकुर्यान्नदोषभाक् २  
शिक्षितातेन प्रमदारमितायदा । परेणस्वरजः प्राप्य  
शुद्ध्यतीति विनिश्चितम् ३ एवं परस्परन्तौ द्वौ महान्याय  
प्रचकतुः ४ इति भा० न० शं० मं० चतुर्दशेऽध्याये  
चतुर्दशवेणी ॥ १४ ॥ श्लोक ॥ ४ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कथं न कृतवान्यज्ञं गाधिः पुत्रस्य हेतवे  
जामातरं यथा चे च तत्पत्नी पुत्रहेतवे १ वाचक उवाच ॥

तथा तारा भी चन्द्रमाकोशाप नहीं दिया बड़ा आश्चर्य होता  
है ऐसा कर्म तौ राक्षस भी नहीं करेगा हर ३।१ वाचक बोले  
बृहस्पति संहिता आदि और धर्मशास्त्रों के प्रमाण से बृह-  
स्पति चंद्रमा को सिखाये थे कि अपनी इच्छा से स्त्री पुरुष के  
संग भोग करने वास्ते मन करती है तथा पुरुष स्त्री की प्रार्थना  
से उसके संग भोग करता है तौ पाप नहीं पुरुष को लगता  
और जो स्त्री की प्रार्थना नहीं मानता तौ पुरुष को बहुत पाप  
लगता है २ तथा तारा को भी बृहस्पति सिखाये थे कि जो पुरुष  
पुरुष के संग स्त्री क्रीड़ा करेगी तौ जब तक स्त्री कपड़ा से नहीं  
होवैगी तब तक तौ अशुद्ध रहेगी और कपड़ा से भई तौ उसी  
तीन दिन में शुद्ध होजावैगी पाप रती भरि भी नहीं रहेगा ३  
हे श्रोता हो इस प्रकार से बृहस्पतिके सिखाये जो चन्द्र तथा  
तारा ये दोनों बड़ा अन्याय करते भये ४ इति भा० न० शं० मं०  
चतुर्दशेऽध्याये चतुर्दशवेणी ॥ १४ ॥ श्लोक ॥ ४ ॥

श्रोता पूछते भए पुत्र होने वास्ते सब राजा यज्ञ करते  
थे पण राजा गाधि पुत्र होने वास्ते यज्ञ क्यों नहीं  
जिस वास्ते गाधि की स्त्री पुत्र होने वास्ते जमाई की ५।

करिष्यामि करिष्यामि नित्यैचिन्तयते नृपः । तावत्सत्य  
वती दत्ता भार्गवाय तपस्विने । ज्ञात्वा जामातरं सिद्धं  
राज्ञीयां चांसमाकरोत् २ इति श्री भा० न० शं० भं०  
पंचदशोऽध्याये पंचदशवेणी १५ ॥ श्लो० ॥ ४ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ रेणुका वृद्धभावापि ददर्श रतिकौतु  
कम् । महादाश्चर्यमेतद्धि विभाति हृदये च नः १ वाचक  
उवाच ॥ रेणुका पितृवेश्मस्था बाले वयसि चंचला । नदीं  
स्नातुं गता बालासखीभिः परिवारिताः क्रीडन्ती मपक्षिणी

किया यह बड़ी शंका है कि राजा की स्त्री होकै जमाई से  
पुत्र मांगना और राजा को पुत्र होने का उपाय नहीं करना यह  
बड़ी शंका है १ वाचक बोले राजा गाधि नित्य ऐसी चिंता  
अपने मनमें करते थे पुत्र होने वास्ते यज्ञ करैंगे ऐसा करते २  
बहुत दिन बीति गया तब तक ऋचीक नाम भृगु वंश में  
तपस्वी था उनके संग राजा गाधि अपनी सत्यवती लड़िकी  
तो विवाह करि दिया तब गनी अपने जमाई को सिद्ध जानि  
है पुत्र की याचना करती भई रानी विचारा कि राजा  
यज्ञ करने को विचारना है परंतु राजा यज्ञ करते नहीं है  
श्रोता हो इस कारण से रानी जमाई की याचना पुत्र होने  
वास्ते किया है २ इति भा० न० स्कं० शं० भं० पंचदशोऽ  
ध्याये पंचदशवेणी ॥ १५ ॥ श्लो० ॥ ४ ॥

श्रोता पूछते भए हे गुरुजी रेणुका बूढ़ी थी तो भी स्त्री  
पुरुष के रतिको तमाशा देखने लगी यह बात हमारे सब  
के मनमें बड़े आश्चर्य सरीकी मालूम परती है १ वाचक  
बोले बालपन में रेणुका बड़ी चंचल थी पिता के महल में रही  
तब एक दिन बहुत सखियों को संग लेके स्नान करने वास्ते

वृद्धामपश्यत्पत्तिणा सह । १५ ॥  
 न करिष्यसि । दृष्टिक्रीडा च सर्वासां क्रीडानां मूल-  
 ते । एतदर्थं तथा पापं कृतन्नान्यद्विचिन्तनम् ४ ॥  
 भा० न० शं० मं० षोडशेऽध्याये षोडशवेणी ॥ १६ ॥  
 श्लो० ॥ ३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कंजुहावगुरुश्चाग्नौ ५ न०  
 नूरजेः । यस्मिन् प्रहूयमाने च सहस्राक्षे गुरो तदा १ वाचक  
 उवाच ॥ तेषाम्भैरजिपुत्राणां गुरुणा शिष्यरक्षिणा । तेज  
 स्याद्वयमाने च सहस्राक्षे वर्धमानान् २ इति ० भा० न०  
 शं० मं० सप्तदशेऽध्याये सप्तदशवेणी १७ ॥ श्लो० १५ ॥  
 नदीको जाती भई २ एक बूढ़ी चिड़िया अपने पति पक्षी तिस  
 के संग क्रीड़ा करि रही है तिसको देखिके रेणुका बहुत हँसती  
 भई तब चिड़िया ने शाप दिया कि हे दुष्टिनी मैं तो अपने  
 पतिके संग रमण करती हूँ और तू वृद्धापन में दूसरे के संग  
 क्रीड़ा करैगी ३ सम्पूर्ण क्रीड़ाको मूल आंखोंसे देखना है सो  
 क्रीड़ा तू करैगी हे श्रोता हो इस वास्ते रेणुका पाप किया बृद्धा-  
 पन में दूसरा कुछ अन्यायको विचारिके नहीं किया ४ इति  
 भा० न० शं० मं० षोडशेऽध्याये षोडशवेणी १६ ॥ श्लो० ॥ ३ ॥

श्रोता पृच्छते भये हे गुरुजी बृहस्पति अग्निमें क्या चीज  
 का होम करते भये जिस चीज के होमके प्रताप से राजा राजा  
 के पुत्रोंको इन्द्र मारि डाला यह शंका है १ वाचक बोले शिष्यकी  
 रक्षा करनेवाले जो बृहस्पति सो राजा राजा के पुत्रोंको तेजमंत्र  
 से अग्निमें होम करि देते भये तब राजा राजा के पुत्र तेज हीन  
 हो गये तब इन्द्र राजा राजा के पुत्रोंको मारि डाला २ इति भा०  
 न० शं० मं० सप्तदशेऽध्याये सप्तदशवेणी ॥ १७ ॥ श्लोक ॥ १५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ ययातिर्लघुपुत्रस्य धवसाशिरमन्त्र  
 पः । तन्मातरिमहापापं कृतं द्वाभ्यां कथंगुरो १ चेदाज्ञा  
 सर्वदाग्राह्यापितुरेपासनातनी । मर्यादासा जकतव्या  
 म्यायान्यायं विचार्य च २ वाचक उवाच ॥ शर्मिष्ठाऽधर  
 पानेन ययातिर्वृद्धिर्वाजितः । पुरुर्देवस्य देहित्रोहो पापा  
 बन्धसम्मतो ३ इति श्री भा० न० श० मं० श्रृष्टादशोऽ  
 ध्यायेत् श्रृष्टादशवेणी ॥ १८ ॥ श्लो० ॥ ४५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ महदन्यायमेतद्धि ज्येष्ठान्पुत्रान्  
 विहाय च । सिपेचलघुपुत्रस्यै राज्ये राजा कथं सुधीः १

वाचक उवाच ॥ कामिनो लोभिनः क्रोधयुक्ता ये प्राणिनः  
क्षितौ । ते विचारन्न कुर्वन्ति सदैव ते स्वार्थतत्पराः २ चकारा  
तो ययातिर्न विचारं पापसंश्रयात् ३ इति० भा० न०  
शं० मं० एकोनविंशोऽध्याये एकोनविंशवेणी ॥ १६ ॥  
श्लो० ॥ २३ ॥

श्रोतार उचुः ॥ कथं विस्मरणं चक्रे दुष्यन्तो चिर  
कालतः । शकुन्तलायाः पुत्रस्य स्वात्मनश्चरितस्य च १  
वाचक उवाच ॥ जानन्नपि नृपो धीमान् लोकभीत्यान

बड़ा अन्याय क्यों किया बड़े पुत्रों को त्यागिकै छोटे को राज देते  
भए यह हमारे सबके मनमें बड़ी शंका होती है १ वाचक बोले  
कामी लोभी क्रोधी ऐसे ० जीव भूमि में हैं परन्तु न्याय अ-  
न्याय को विचार नहीं करते नित्य अपने शरीर को सुख चाहते  
हैं न्याय में दुःख देखेंगे तब न्याय को त्यागि देंगे अन्याय  
में सुख देखेंगे तब अन्याय करेंगे देह को सुख होना उसको  
तो पुरय जानते हैं तथा देह को दुःख होना उसको पाप जानते  
हैं सुकर्म कुकर्म नहीं देखते २ इस पापके प्रभाव से ययाति  
राजा छोटे बड़े को विचार किया नहीं जिसकी देहसे सुख  
पाया उसको राज दिया ॥ ३ ॥ इति भा० नव० शं० मं० एको  
नविंशोऽध्याये एकोनविंशवेणी ॥ १६ ॥ श्लो० ॥ २३ ॥

श्रोता पूछते भये थोरे ही दिनमें राजा दुष्यन्त अपने चरित  
को भूलि गया तथा शकुन्तला को अपने पुत्र को भूलि गया गुरु  
जी यह बड़ी शंका है अगाड़ी के लोग कैसे भोले थे हर १  
१ वाचक बोले कि बड़ा बुद्धिमान् राजा जानता रहा कि हमारा  
पुत्र यह है यह शकुन्तला हमारी स्त्री है परन्तु लोक की निंदा



जगृहे । ज्ञापयित्वानभोवाग्या सर्वानंगीचकारवे २ इति  
भा० न० शं० मं० विंशेऽध्यायेविंशवेणी ॥ २० ॥  
श्लो० ॥ २० ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ समुद्रवाहतनयां शुकस्यक्षत्रियर्ष  
भः । कथञ्चीपोगुरोह्येतन्महत्कौतूहलम्प्रभो १ वाचक  
उवाच ॥ श्रेष्ठाब्रह्मविदांकन्या शुकस्यनान्यमिच्छती ॥  
पतिवत्रेस्वयम्भपन्नृपोऽपब्रह्मवित्तमः २ इति भा० न०  
शं० मं० एकविंशेऽध्यायेएकविंशवेणी २१ श्लोक २५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ भार्गवोरामचन्द्रेण न्यस्तशस्त्रः  
के डर से नहीं ग्रहण किया आकाशवाणी से सबको मालूम  
कराय के तौ ग्रहण किया है २ इति भा० न० शं० मंजर्या  
विंशेऽध्याये विंश वेणी २० ॥ श्लोक ॥ २० ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी राजा नीपक्षत्री होकै शुकदेव  
जी ब्राह्मण थे तिनकी लड़िकी के संग क्यों अपना विवाह  
करता भया क्षत्री की लड़िकी को तौ ब्राह्मण सदैव व्याहि  
जेते थे परन्तु ब्राह्मण की कन्या को क्षत्री नहीं व्याहे कभी  
देवजानी की बाततो शापसे भई है हमारे सब के यह बड़ी  
शंका है १ वाचक बोले तीनलोकमें शुकदेव की लड़िकी सब  
ब्रह्मज्ञानियों में ब्रह्मज्ञानी थी ब्रह्मज्ञानी पुरुष को अपना पति  
करना चाहतीथी दूसरे पुरुष को नहीं तथा राजा नीप बड़ा ब्रह्म  
ज्ञानीथा ऐसा विचारि कै अपनी इच्छा में राजा नीपको  
अपना पति करिलियाथा कुलु संसारकी रीतिसे वह विवाह  
नहीं हुआथा ॥ २ ॥ इति भा० न० शंकानिवारण मंजर्याएक  
विंशेऽध्यायेएकविंशवेणी ॥ २१ ॥ श्लोक ॥ २५ ॥

श्रोता पूछते भये रामचंद्र के सामने त्रेतायुग में परशुराम

कृतःपुरा । नदीजेन कथं युद्धं मकरोद्द्वापरे पुनः १  
 भार्गवो न पणं कृत्वा न्यस्तशस्त्रो बभूव ह । अंबिकां स्वे  
 शरण्याम्बैर्वीक्ष्य विह्वलितामृषिः । कल्पयित्वा स्त्रवृन्दा  
 नियुद्धारं भन्तदाकरोत् २ इति० भा० न० शं० मं० द्वा  
 विंशोऽध्याये द्वाविंशवेणी ॥ २२ ॥ श्लो० ॥ २० ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ दशसाहसूयोषित्सु शशबिंदोः सुता  
 गुरो । शतकोट्यः कथं जाता महत्कौतूहलं विदम् १  
 वाचक उवाच ॥ न ताश्च तनुधारिण्यस्सर्वाश्चैद्रिय  
 जी आपको धनुषबाण रखिकै तप करने को चले गये थे ऐसा  
 रामायण में लिखा गया है फिरि द्वापरयुग में भीष्म जी के  
 संग युद्ध क्यों करते भये क्योंकि उसी वखत परशुराम जी  
 धनुषबाण कहाँ से पाये हे गुरुजी यह बड़ी शंका हमारे सबके  
 मनमें है सो आप कृपा करिके निवारण करो १ वाचक बोले जब  
 परशुराम जी ने रामचंद्रजी के सामने अस्त्रको त्याग किया तब  
 ऐसी शपथ नहीं किया था कि आजु से हम कभी अस्त्रग्रहण  
 नहीं करेंगे इस वास्ते बहुत दुःखी जो अंबिका तिसको अपनी  
 शरण को प्राप्त देखिकै तप करिके दूसरा धनुषबाण बनायके  
 भीष्मके संग युद्ध करते भये ॥ २ ॥ इति भा० न० शं० मं०  
 द्वाविंशोऽध्याये द्वाविंशवेणी ॥ २२ ॥ श्लोक ॥ २० ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरु जी राजा शशबिंदु के दस-  
 हजार स्त्रियों में सौ करोड़ १०००००००० पुत्र होते भये यह कैसे  
 तमाशा की बात है कि कहनेवाले तो महात्मा हैं परंतु सुनने  
 वाले को लज्जा मालूम परती है शिव ३१ वाचक बोले हे  
 श्रोता हो राजा शशबिंदु के दश हजार स्त्रियों सो मानुष्य को  
 शरीरधारण करने वाली नहीं थीं वो तो राजा बड़ा योगी था

सहस्रानन्तवाचीच पुत्रास्तासांसुखादयः ।

चोक्तसंसारहेतवे २ इति० भा० न०  
० मं० त्रयोविंशोऽध्याये त्रयोविंशवेणी २३ श्लो० १४॥

श्रोतार उचुः ॥ मर्त्यलोके प्रजातानां नराणान्नैव  
जन्मनि । हुन्दुभिवादयामासु रसुराश्रयोश्रुतंचनः १  
त कथंवादयामासुर्वसुदेवस्य जन्मनि २ वाचक उवाच ॥  
वसुदेवो यदा जातस्तदा हुन्दुभिसन्निधौ । संस्थितश्चन्द्र

सोदशइन्द्रियोंकी प्रकृति सहस्र कहे गनतीसे रहित सोई राजा  
की स्त्री थीं उन स्त्रियोंमें सौकोटि पुत्र भये सो मनुष्य नहीं भयेवां  
तो योगमें प्रेमसुख आदि असंख्य गुण मानना यपुत्र भये  
व्यासजीने वर्णन तो किया गुप्तकरिके पगन्तु संसार के जीवों  
को ऐसी बार्ता जल्दी नहीं मालूम परती इसवास्ते संसार  
पर घटाय के वर्णन किये हैं ॥ २ ॥ इति० भा० न० शं० मं०  
त्रयोविंशोऽध्याये त्रयोविंशवेणी ॥ २३ ॥ श्लोक ॥ १४ ॥

श्रोता पृच्छते भये हे गुरुजी मर्त्यलोक में जो मनुष्य  
जन्मते हैं तिनके किसी के जन्म भयेपर देवता हुन्दुभी  
नहीं घजाते और हम सबने कभी सुनाभी नहीं कि घजाते  
हैं १ तब वसुदेव को जन्मभयेपर देवता हुन्दुभी क्यों घजाते  
भये जो कोई कहे कि भगवान् वसुदेव के पुत्र होवेंगे इन  
वास्ते अगाड़ी से देवताओं ने हर्ष मानिके घजाये हैं तो दशरथ  
आदि जेके बहुत जने के भगवान् पुत्र भये हैं तो दशरथ  
आदि के जन्ममें हुन्दुभी क्यों नहीं घजाये यह पड़ाभूम हे २  
वाचकवाले जय मधरा में वसुदेव जन्म जेत भये तब उस  
वसुदेव हुन्दुभीके सामने चन्द्रमावदाया चन्द्रमाजानिहियाके  
इसप्रदके पुत्र भगवान् होवेंगे मेरे वंशको प्रकाश करनेवाला

माज्ञात्वा तं स्ववंशप्रकाशकम् । अस्माज्जनिष्यते विष्णुर  
तो वाद्यं चकार सः ३ इति श्री भा० न० शं० मं० चतुर्विं  
शोऽध्याये चतुर्विंशवेणी ॥ २४ ॥ श्लो० ॥ २६ ॥

यह लड़का होवेगा ऐसा जानिकै चन्द्रमा ने दुंदुभी बजाया  
देवतों ने नहीं बजाया तथा दशरथ के जन्मकी समयमें सूर्य  
दुंदुभी के सामने नहीं थे होते तो सूर्य भी बजाते अपने २  
कुलकी वृद्धि देखिकै सबको हर्ष होता है ३ इ० भा० न० शं०  
मं० चतुर्विंशोऽध्याये चतुर्विंश वेणी २४ ॥ श्लोक ॥ २६ ॥

इति श्रीमद् भागवतनवमस्कंधशंका निवारण मंजरी  
शिवसहायबुधविरचिता सुधामयी टीका  
सहिता समाप्ता ॥

श्रीशङ्करार्पणमस्तु ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

## श्रीमद्भागवतशंकानिवारणमंजरी॥

दशमस्कन्धपूर्वार्द्धे ॥ १० ॥

सुधामयीटीकासहिताविरच्यते॥

श्रोतार ऊचुः ॥ सूर्यवंशादभूत्स्वामिन्निशादीप्ति  
करान्वयः । नृपप्रश्नकृतेश्लोके कथं सूर्यो न कीर्तितः १  
वाचक उवाच ॥ चन्द्रवंशे समुत्पन्नं कृष्णं श्रुत्वा मही  
पतिः । स्वस्यापि कुलमान्यत्वात्पुरश्चन्द्रः प्रकीर्तितः २  
इति० भा० दशमस्कन्धपूर्वार्द्धशंकानिवारणमञ्जर्या  
शिवसहायबुधविरचितायां प्रथमेऽध्याये प्रथमवेणी १ ॥  
श्लो० ॥ १ ॥

श्रोता पूछते भये हे स्वामी जी सूर्य वंश करिके चंद्र वंश  
भयाहै और राजा परीक्षित के प्रश्नवाले श्लोकमें पेशतर सोम  
वंशको नामहै पीछे सूर्यवंश क्यों वर्णन भया पेशतर तो सूर्यहै यह  
बड़ी शंकाहै कि पेशतरवालेको पीछे वर्णन करना पीछेवालेको पेशतर  
वर्णन करना छंद भी नहीं भ्रष्ट देखता जो छन्द भ्रष्ट होता हो वैतषतो  
चिंतानहीं १ वाचक बोले राजा परीक्षित चंद्रवंशमें श्रीकृष्णको  
जन्म सुनिके तथा आपने भी कुलको मान्य करने वास्ते श्लोक  
में पेशतर चंद्रमा को कीर्तन किया है २ इ० भा० द० पूर्वार्द्ध  
शं० मं० सुधामयी टीकायां शिवसहायबुधविरचितायां  
प्रथमेऽध्याये प्रथमवेणी ॥ १ ॥ श्लोक ॥ १ ॥

श्रोतार ऊचुः॥ ॥ रोहिण्यावसुदेवस्य चिरन्नाभूच्च  
 संगमम् । विष्णोर्ज्ञातन्नचारित्रं लोके कैश्चापितत्कथम् ।  
 नापकीर्त्तिर्वभवाथ तयोः किं कारणान्द्रो १ वाचक उवाच ॥  
 त्रैलोक्यांच निवासिन्यः प्रजाजाताश्च पुष्करे ॥ स्नानार्थं  
 भोजराजोपि सर्वान् गृह्यकुलांस्तथा २ तेन सार्द्धं च गतवा  
 न् वसुदेवोपि पुष्करम् । रोहिण्यपि गता तत्र नन्दगोपा  
 भिरक्षिता ३ सर्वेषां तत्र संयोगो बभूव पुष्करे तदा । चेन्ना  
 भूद्वसुदेवस्य लोकैर्भूते वज्ञायते ४ इति श्री भा० द० पू०  
 शं० मं० द्वितीयेऽध्याये द्वितीयवेणी ॥ २ ॥ श्लोक १५ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी रोहिणी की तथा वसुदेव की  
 मुलाकात बहुत दिन से नहीं भई थी और बलदेव रोहिणी  
 के गर्भ में जन्मते भये तो लोक में निंदा वसुदेव की तथा  
 रोहिणी की क्यों नहीं भई जो कोई कहै कि योगमायाने सब  
 काम किया है तो ठीक है परन्तु संसार में तो भगवान् के  
 चरित्र को कोई नहीं जानता योगमाया की बात तो कोटियों  
 नर में एक कोई जानैगा इस वास्ते बड़ी शंका होती है १  
 वाचक बोले पुष्करजी के स्नान करने वास्ते तीन लोक के  
 वास करने वाले सब प्रजा पुष्करजी को आते भये तब कंस  
 भी यदु के वंश में जो जो कुलथे सबको संग लेकर पुष्करजी  
 को गया २ कंस के संग वसुदेव भी पुष्कर को गये तथा नन्द  
 आदि गोपों करिके रक्षा को प्राप्त रोहिणी सो भी गई थी ३  
 पुष्करमें सबकी मुलाकात भई परन्तु वसुदेव की तथा रोहिणी  
 की मुलाकात कंस की वास्ते नहीं हुई परन्तु लोक तो जानि  
 लिया कि पुष्कर में वसुदेव की रोहिणी से मुलाकात होगई  
 है इस वास्ते बलदेव को जन्म भये पर कोई भी वसुदेव

श्रोतार ऊचुः ॥ सुखेनमार्गप्रददौ यमुनानकदुन्दुभिः ।  
पतेसिन्धुरिव ददौमार्गपयेनिधिः । कुत्रलक्ष्मी  
पतेश्चैव नरमायसुखेनवै १ वाचक उवाच ॥ बलये  
दर्शनन्दातुन्नित्यंगच्छतिवामनः । पातालपन्थानान्यो  
स्तिसमुद्रविवरादृते । नित्यंददातिसौख्येन पन्थानं  
वामनायसः २ इतिश्री भा० द० पू० शं० मं० तृतीयेऽ  
ध्यायेतृतीयवेणी ॥ ३ ॥ श्लो० ॥ ५१ ॥

रोहिणीकी निंदा नहीं किये कि मुलाकात तौ भईनहींबलदेव  
कैसे जन्मे ४ इति० भा० द० पू० शं० मं० द्वितीयेऽध्याये  
द्वितीयवेणी ॥ २ ॥ श्लोक ॥ १५ ॥

श्रोता पूछते भये मुनिजी राजा से कहे कि कृष्णको जेकै  
वसुदेव व्रजको चले तव जैसा भगवान् को समुद्र बड़े सुखसो  
रस्ता दिया है तैसे यमुना वसुदेवको बड़े सुखसे रस्ता देती  
भई हे गुरुजी किस स्थानपर भगवान् को सुखसे रस्ता समु-  
द्रने दिया यह बड़ी शंकाहै जो कोई कहे कि लंकाको जानेके  
वास्ते रामचन्द्र को दिया तव यह बात अनर्थक है क्योंकि  
रामतो बहुत दुःख सहै हैं समुद्र को शोषणे को तैयार भये  
तौभी पुल बांधिके गये हैं सुखसो रामचन्द्रको समुद्रने नहीं  
जाने दिया वाचक बोले इस स्थानपर भगवान् को सुख से  
रस्ता समुद्र देताहै कि राजाघलिको दर्शन देने वास्ते वामन  
नित्य सुतल लोकको जातेहैं तत्र पाताल जानेको रस्ता एक  
समुद्र में है दूजी नहीं है सो नित्य वामनको सो समुद्र आप  
सुखिके रस्ता देता है इस वास्ते व्यास भगवान् को रस्ता  
देने को समुद्रको कहे हैं २ इति भा० द० पू० शं० मं० तृतीयेऽ  
ध्याये तृतीयवेणी ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ ५२ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ १ ॥ राक्षसैः । भोजराट्स्वहितम्मेने नाहिंस्यम्ब्रह्मकैरपि १  
वाचक उवाच ॥ नतद्ब्रह्मात्रसंज्ञेय आत्रसत्कर्मब्रह्मवै  
यज्ञादिस्नानदानादि रमेशहृदयार्जवम् २ इति भा०  
द० पू० शं० मं० चतुर्थेऽध्याये चतुर्थवेणी ४ श्लो० ४३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ वसुदेवः कथंचक्रे मित्रेण सह वंचनम् ।  
न सत्यकथनेनन्दः किमु बालमरक्षत १ वाचक उवाच ॥

श्रोता पृच्छते भये कंस ने राक्षसों करिकै जिस ब्रह्म को  
बधन कराय कै अपना कल्याण मानता भया सो ब्रह्म कौन  
है क्योंकि सर्वव्यापी अजर अमर चैतन्य कारक ऐसा जो  
ब्रह्म है सो कभी भी किसी के मारे नहीं मरेगा यह मर  
ने वाला ब्रह्म कौन है जो राक्षसों के मारे मरिगया यह बड़ी  
शंका है १ वाचक बोले जो अजर अमर सर्वव्यापी ब्रह्म है सो  
ब्रह्म को (ब्रह्महत्या हिते मेने) इस श्लोक को अर्थ व्यास जी  
नहीं किये इस श्लोक को अर्थ व्यासजी ऐसा किये कियज्ञ  
आदिदान आदि स्नान आदि भगवान् को पूजन आदि अनुराग  
अपने हृदयमें कोमलता दया इनको आदि लेकै और अनेक  
प्रकार को सुंदर कर्म सोई ब्रह्म है तिसको नाश करायकै कंस  
अपना हित मानता भया ऐसा अर्थ व्यासजी किये हैं २ इति  
भा० द० पूर्वा० शं० मं० चतुर्थेऽध्याये चतुर्थवेणी ४ श्लोक ४३ ॥

श्रोता पृच्छते भये वसुदेव ऐसे महात्मा होकै फिरि मित्र  
जो नंदतिन के साथ कपट क्यों करते भये जो सत्य बोलते  
कि हमारे दो पुत्र आपु के पास हैं सो आप रक्षा करो क्यों  
कि विपत्ति में मित्रसिवाय दूसरा कोई भी सहाय नहीं करता  
है ऐसा कहेपर क्या श्रीकृष्ण की रक्षा नंद न करते कपट को



... वै कर्मकुर्वन्ति प्राणिनः । त्रिलोक  
स्थायथाविष्णुस्तथायमपिमोहितः । पूर्वदत्तवरो नन्दो  
यशोदा च तपस्विनी । विष्णुना तोऽनृतम्प्रोक्तम्बसुदेवे  
न गोपतिम् ३ इति० भा० द० पू० शं० मं० पंचमेऽध्याये  
पंचमवेणी ॥ ५ ॥ श्लो० ॥ २३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ चकम्पिरेत्रयो लोकाः कथं शब्देन  
गोकुले । महदाश्चर्यमेतद्धि पूतनायाश्च न श्रुतम् १  
वाचक उवाच ॥ त्रिलोकस्थाः प्रजास्सर्वाः श्रीकृष्णदर्श  
या कामथा १ वाचक बोले तीन लोक में टिके जो प्राणीसो  
सब भगवान् की माया करिके पागल हो रहे हैं तैसा वसुदेव  
भी पागल होगये जो कोई ऐसा कहे बिना कारण माया  
किसी को नहीं मोह करती तौ सत्य है वसुदेवको मोह होने  
में यह कारण था २ पहिले नंदको तथा यशोदाको भगवान्  
वरदान दियेये किहम जन्मेंगे दूसरेके पण बाळक्रीड़ा तुमारे  
पास करेंगे इसवास्ते भगवान् वसुदेव को माया से मोहित  
करिके कपट कराया जो वसुदेव सत्य बोलते तौ नंद कृष्ण  
की पालना करते तौ सही परन्तु जरा भेद दृष्टि तौरहती कि  
दूसरे के पुत्र हैं इसवास्ते नंदसे वसुदेव कपट किये हैं अपनी  
इच्छासे नहीं किये ३ ॥ इति भा० द० पू० शं० मं० पंचमेऽध्याये  
पंचम वेणी ॥ ५ ॥ श्लोक ॥ २३ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी गोकुल में पूतना मरती वखत  
शब्द कियाथा उसी शब्दकरिके तीन लोक कांपने लगा बड़ा  
आश्चर्य मालूम परता है हम लोग तौ कभी नहीं सुना किराचस  
तथा राक्षसी के शब्द करिके तीन लोक कांपने लगा हर ३  
वाचक बोले जिस वखत पूतना मरते वखत शब्द कियाथा

नायच । प्रच्छन्नाश्चसमायाता गोकुलेसमयेतदा २  
 ताश्श्रुत्वातद्रवंशीघ्रं बभूवुःकम्पितास्तदा । अतो लोक  
 त्रयाः प्रोक्ता द्वयोर्भेदो न दृश्यते ३ इति० भा० ३० पू०  
 शं० मं० षष्ठेऽध्याये षष्ठवेणी ॥ ६ ॥ श्लोक ॥ १२ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ चकारनकथंकृष्णः स्वदेहेभारवर्द्ध  
 नम् । दुःखार्दितं व्रजं कृत्वा रोदयित्वा स्वमातरम् । स्व  
 तनौ कृतवान्पश्चाद् भारस्य वर्द्धनं हरिः १ वाचक उवाच ॥  
 वरम्पूर्वददौ ब्रह्मा तृणावर्तार्थं यदैयदा । त्वत्कृतेनानुतापेन  
 यशोदाश्रुनिपातनम् । भविष्यति च ते मृत्युस्तदा तोन

उस समय गुप्तहो कै तीन लोक में टिके जो प्रजा सो सब  
 श्रीकृष्ण को दर्शन करने वास्ते ब्रज में आये थे २ सो सब  
 प्रजा पृतना के शब्द को सुनिकै जल्दी कांपने लगे इस  
 वास्ते तीन लोक कांपने वास्ते व्यास जी कहे थे क्यों कि  
 लोक प्रजा को भी नाम तथा प्रजा लोकको नाम है लोकमें  
 तथा प्रजा में भेद शास्त्र में नहीं देखने में आता ॥ ३ ॥ इति  
 भा० ३० पू० शं० मं० षष्ठेऽध्याये षष्ठवेणी ॥ ६ ॥ श्लोक ॥ १२ ॥

श्रोता पृच्छते भयं श्रीकृष्णने अपनी माता को तथा सब  
 ब्रजवासियों को दुःखी करिकै तथा अपनी माको रोवाय कै  
 अपनी देह में भारको बढ़ाया तौ जब तृणावर्त हरिकै जे चल  
 ने लगा तब अपनी देह में भार क्यों नहीं बढ़ाये कि राक्षस  
 के उठाये न उठते तब सब को दुःख क्यों होता यह शंका है ?  
 वाचक बोले ब्रह्मा ने पहिले तृणावर्त को वरदान दिये थे कि तेरे  
 किये दुःख करिकै यशोदा के आँखों से जब अश्रु परेगा तब तेरी  
 मृत्यु होवैगी इस वास्ते श्रीकृष्णने पेशतर अपने शरीरमें भार नहीं

पुरस्कृतम् २ इति भा० द० पू० शं० मं० सप्तमेऽध्याये  
सप्तमवेणी ॥ ७ ॥ श्लो० ॥ २६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ गर्गो मुनीश्वरो ब्रह्मन् चक्रे नंदेन  
वंचनम् । कथं तद् ब्राह्मणानाम्ब्रै सर्वस्वं हरते क्षणात् १  
वाचक उवाच ॥ विचार्य मनसा गर्गो महोत्पातो भविष्यति  
अत्रोक्ते च मया सत्ये दैत्यैर्ज्ञातो शिशुर्ध्रुवम् । चक्रेऽतो वंचनं  
पापम्परोपकाराय च २ इति श्री भा० द० पू० शं० मं०  
अष्टमेऽध्याये अष्टमवेणी ॥ ८ ॥ श्लो० ॥ ७ ॥

बढ़ाये ॥ २ ॥ इति भा० द० पू० शं० मं० सप्तमेऽध्याये सप्तम  
वेणी ॥ ७ ॥ श्लोक ॥ २६ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी गर्गमुनि नंदके संग कपट  
क्यों करते भये कि हम श्रीकृष्ण को नाम नहीं धरेंगे क्यों  
कि इसी वास्ते तो गये थे हे गुरु जी झूठ वचन क्षण एक में  
ब्राह्मणों के तप आदि सब धनको नाश करि देता है सो गर्ग  
झूठ क्यों बोले हर ३।१ वाचक बोले गर्गमुनि अपने मनमें  
विचार किये कि हम नंद से सत्य २ बोलेंगे और प्रत्यक्ष करि  
कै कृष्ण को नाम धरेंगे तो बड़े उत्साह से बाजन बजवाय के  
और जो अनेक हर्षसो आनंद करेंगे तब कंस आदि दैत्य  
जानि जावेंगे कि यह बालक किसी यदुवंशी को है तो बड़ा  
उत्पात होवेगा इस वास्ते झूठ बोले हैं विना कपट किये नंद  
गुप्त नाम न कराते बड़ा उत्साह करते नाच तमाशा हजारों  
प्रकार का बाजन बाजते इस कारण से गर्ग कपट किये हैं  
तथा पराये जीवके उपकार वास्ते झूठको पाप भी नहीं होता २  
इति० भा० द० पू० शं० मं० अष्टमेऽध्याये अष्टमवेणी ॥ ८ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कृत्वानुबंधनम्प्राप्तोयशोदामुरुदुः  
 खिताम् । पुरःकथन्नतद्भेजे कृष्णश्चैतन्मदृद्भुतम् १  
 वाचक उवाच ॥ सर्वारज्जुनि गोलोकादागताश्चैवदा  
 सिकाः । भत्वागोनाम्ब्रजेतेषां मोक्षार्थेनपुरोहरिः । प्रथमं  
 बंधनंभेजे सर्वासाम्मुक्तिहेतवेरइतिभा०द०पू०शं०मं०  
 नवमेऽध्यायेनवमवेणी ॥ ६ ॥ श्लो० ॥ १६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कैर्नदृष्टश्रुतोवापि लोकेशास्त्रेच  
 सज्जनैः । तत्कथंरेभतुर्थज्ञा वम्भोजवनरांजिनि १

श्रोता पछते भये कृष्णजी यशोदा माताको बहुतदुःखी  
 करिके पीछेसे रस्सीमें बंधिगये तौ पेशतर क्यों नहीं जल्दी ए  
 कई दफेमें बंधे यह बड़ाशंका है माता को दुःखी करिकेरस्सी  
 में बंधिगये इसका कारण क्या है ? वाचक बोले जब गोलोक  
 से श्रीकृष्णके संग सबगौ ब्रजको आनेलगीं तब गोलोक में  
 गौवाँकी सेवन करने वाली दासी रस्सी होकैगौके चरण में  
 सेवनकरि रहीहै नंदजी की गौवाँकी भगवान् बिचारेकि अब  
 इनगौवाँकी दासिनको गोलोकको भेजि देंँ ऐसा बिचारिकै  
 उनगौवाँ की दासियों की संसार से मुक्ति होनेवास्ते फिरि  
 गोलोक को भेजने वास्ते पहिली दफेरस्सी में नद्धीवँ  
 दफे बंधिजातेतौ यशोदा अपने घरकी सवरस्सी क्यों ले  
 इति०, भा० द० पू० शं० मं० नवमेऽध्यायेनवमवेणी ॥ ६ ॥  
 श्लोक ॥ १६ ॥

श्रोता पछते भये हे गुरु जी कोई भी सज्जन नदीमें  
 धन होता है ऐसा शास्त्रमें सुना नहीं तथा लोकमें किसी  
 नदी में कमल को वन देखेनहीं फिरि दोऊ यद्य नदीके  
 में प्रवेश करिकै कमल के वनमें छियोंके संगक्रीड़ा

रमापतिम्प्राणपतिञ्जगत्पतिम्भयो  
मानसे २ इति भा० द० पू० शं० मं०  
एकादशवेणी ११॥ श्लो० ६ ॥

श्रोतार ऊचुः॥ अघासुरस्याधरवर्द्धनं  
नो हृदयं वक्मपते । नरावणस्याः ।  
मपत्तिं मुखवर्द्धनं श्रुतम् १ वाचक उवाच ॥  
न्तमालोक्य पुराऽस्य संचितं तपः । तद्वर्द्धित्वानभ  
चोष्ठं चाकृष्य तेजसा २ अनेन जन्मना पापं संचितं  
पुप्लुवे । अधोगन्तुं क्षितिम्वित्वा चोष्ठं चाकृष्य पूर्ववत्  
देखिकै लक्ष्मीके पति प्राणके व जगत्के पति ऐसे श्री  
वारम्बार नमस्कार करिकै अपनेको धन्य जानिकै मन स  
हँसते भये २ इ० भा० द० पू० शं० मं० एकादशेऽध्याये  
दशवेणी ११ ॥ श्लोक ॥ ६ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी अघ नाम राक्षसके दोनों  
की लंबाई सुनिकै हमारे सबको मन तथा हृदय कांपने  
क्योंकि ऐसी ओठकी लम्बाई रावण की तारक की और  
नेक राक्षसों की हम कभी न सुना बड़ा आश्चर्य होता है  
१ वाचक बोले अघासुर की पूर्व जन्मकी पुण्य है सो  
को दर्शन अपने सामने करिकै बड़े हर्ष से वर्धित होकै  
को प्राप्त भई परन्तु अपने तेज करिकै अघासुर के ऊप  
ओष्ठको खींचिकै संग लेती गई २ तथा इस जन्म करिकै  
जो पाप सो श्रीकृष्ण को देखिकै डरिकै अघासुरकी देह  
छोड़िकै भागता भया पाताल में जाने की तयारी किया  
को भेदन करिकै अघासुर को पाप पातालको गया  
अघासुरके नीचे को ओठको अपने जोरसे खींचिकै संग

कृष्णस्पर्शाद्द्वयं नष्टमप्रविवेश तनौ हरेः । अतो न भासि  
भूमौ च तदा धरविवर्द्धनम् ४ इति श्री भा० द० पू० शं०  
मं० द्वादशेऽध्याये द्वादशवेणी ॥ १२ ॥ श्लो० ॥ १७ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ हरेर्नान्यावतारेषु न मोहो ब्रह्मण  
श्रुतः । मोहमप्रापकं यन्ब्रह्मा कृष्णाविर्भावमंडले १  
वाचक उवाच ॥ स्वसुतन्नारदं दृष्ट्वा मायाग्रस्त  
म्बिधिस्तदा । जहास तेन शप्तश्च मायात्वाग्रसतेपितः २  
कृष्णभोजनमन्वीक्ष्य मोहग्रस्तो भविष्यसि ॥ ३ ॥  
इति भा० द० पू० शं० नि० मञ्जर्या त्रयोदशेऽध्याये  
त्रयोदशवेणी ॥ १३ ॥ श्लो० ॥ १५ ॥

गया पेश्तर सरीके १ अघासुर ने श्रीकृष्ण के शरीरको स्पर्श  
किया तब उसका पुण्य पाप दोनों नष्ट होगया तब अघासुर  
कृष्णकी देह में मिलिगया पाप पुण्य नाश होने का कारण  
यह है जब प्राणी के पास पुण्य रहेगा तब वह प्राणी स्वर्ग  
भोगेगा पाप रहेगा तब नरक भोगेगा दोनों नष्ट होंगे तब ईश्वर  
में मिलेगा इसवास्ते आकाश में तथा भूमि में अघासुर के  
ओठ की वृद्धि हुई थी ॥ ४ ॥ भा० द० पू० शं० मं० द्वादशेऽ  
ध्याये द्वादश वेणी १२ ॥ श्लोक ॥ १७ ॥

श्रोता पृच्छते भये भगवान् के अनेक अवतार भये परन्तु  
किसी अवतारों में ब्रह्माको मोह नहीं भया ऐसा हम सबने  
सुना है परन्तु श्रीकृष्णके अवतार में ब्रह्माको क्यों मोह भया  
यह बड़ी शंका होती है १ वाचक बोले ब्रह्मा जी नारदजी को  
माया से ग्रसित हुआ देखिके हँसते भये तब नारदजीने ब्रह्मा  
को शाप दिया कि हे पिताजी तुमको माया ग्रसित करेंगी २  
एक दिन श्रीकृष्णको भोजन करता देखिके माया से ग्रसित

श्रोतार ऊचुः ॥ स्तुतिंकृत्वागतो ब्रह्मानोवाच भगवान्कथम् । महाश्चर्यमिदम् ब्रह्मन्तिरस्कारो विधेरभूत् ॥ वाचक उवाच ॥ स्वस्तुतिस्वाननेनैव कुर्वन्ति दुर्जनाः । कृष्णोऽनो ब्रीडितो भूत्वा नोवाच कमलोद्भवम् २ इति श्री भा० द० पू० शं० मं० चतुर्दशेऽध्याये चतुर्दश वेणी ॥ १४ ॥ श्लो० ॥ ४१ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ स्वस्य श्रेष्ठं कथंच केशेषं स्वांशं यदूह्यः । एषानो महतीं शंकां वर्तते महती हृदि १ वाचक होवोगे हे श्रोता हो इस वास्ते श्रीकृष्णजी के अवतार में ब्रह्मा को मांह हुआ १ इति भा० द० पू० शं० मं० त्रयोदशेऽध्याये त्रयोदश वेणी १३ ॥ श्लोक ॥ १५ ॥

श्रोता पूछते भये श्रीकृष्णकी स्तुति करिकै ब्रह्मा अपने लोक को गये परन्तु कृष्ण भगवान् ब्रह्मासे क्यों नहीं बोलते भये सब जगह देवतासे बोलते हैं यह बड़ा आश्चर्य भया कि भगवान् खुद ब्रह्माको अन्यादर किया १ वाचक बोलते भये अपने मुखसे अपनी तारीफ दुष्ट जन करते हैं मैं ऐसा हूँ २ इसी वास्ते श्रीकृष्ण पूर्ण ब्रह्म जगत्के नाथ ब्रह्मासे किई अपनी स्तुति सनिकै लज्जायमान होगये ब्रह्मासे कुछ भी नहीं बोले विचार किये कि हमने नाहक ब्रह्माके चरित्रको नहीं माने वरस बालकोंको ब्रह्मा हरि खे गये थे तौ हमको ब्रह्माकी स्तुति करिकै ले आना चाहतार हा है ऐसे दयालु भगवान् लज्जासे नहीं बोले २ इति भा० द० पू० शं० मं० चतुर्दशेऽध्याये चतुर्दश वेणी १४ श्लोक ॥ ४१ ॥

श्रोता पूछते भये कि श्रीकृष्ण भगवान् बिष्णु हो कैसे अपना अंश जो शेष तिनको अपने से बड़ा क्यों किये कि बलदेव

॥ लक्ष्मणेनानिशंरामः सेवितस्तंवरंददौ ।

॥ श्रेष्ठत्वात्सेवानुकारकः । कृष्णनामाभ

। चितश्रेयानहीश्वरः ॥ २ ॥ इति भा० द० पू०

शं० मं० पंचदशोऽध्याये पंचदशवेणी ॥ १५ ॥ श्लो० १४ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ नागेशस्य हृदाद्यातियान्दिशंयमु  
नातदा । संयोगावधिगंगायाः कथन्नासविषान्विता १

को सेवन कृष्ण बड़ा जानि कै करते भये हे गुरु जी हमारे  
सबके मनमें यह बड़ी शंका है वाचकबोले त्रेता में लक्ष्मण  
जी श्रीरामचन्द्र जीकी बहुत सेवन रातिदिन करते भये तब  
भीरघुनाथ जीने लक्ष्मणको वरदान दिये हेभाई लक्ष्मण हम  
तुमको प्रसन्न भये इसवास्ते द्वापर में तुमको अपना बड़  
भाई वनायकै हम तुम्हारा सेवन करेंगे भीकृष्ण हमारा नाम  
होगा हे श्रोताहो इसवास्ते शेषजी विष्णुसे बड़े होते भये इति  
भा० द० पू० शं० मं० पंचदशोऽध्याये पंचदशवेणी ॥ १५ ॥ श्लो० ॥ १४ ॥

श्रोता पूछते भये कालिय नाग के कुंड से जिस दिशाको  
यमुना जी गई हैं गंगाजी को तथा यमुनाको मिलाप भया है  
प्रयाग तक यमुनाके जल में नागको जहर क्यों नहीं मिला  
रहा क्योंकि कुंड को जल जहर से पूर्ण रहाथा सोई जल  
प्रयाग तक आया सो जहर से मिला चाहिये जैसा कुंड में  
जहर से भिलाथा तैसा प्रयाग तक जहरीजल होना चाहिये  
सो क्यों नहीं भया ? तथा भागवतमें लिखा है कि कालियके  
कुंडके सामने यमुनाके तीरपर जो प्राणी जीवधारी तथा वृक्ष  
आदि सब जलित होते हैं तौ कदंबको वृक्षकालिय कुंड के सामने  
रहा सो क्यों नहीं भस्म हुआ यह दोशका हम लोगोंको दुःख देती  
है वाचक बोले जिसदिन कालिय यमुनाके कुंडमें वास किया



श्रोतार ऊचुः ॥ स्तुतिंकृत्वागतो ब्रह्मानोवाचभगवान्कथम् । सहाश्चर्यमिदम्ब्रह्मन्तिरस्कारोविधेरभूत् ॥ वाचक उवाच ॥ स्वस्तुतिस्वाननेनैव कुर्वन्तिदुर्जना जनाः। कृष्णोऽनोब्रीडितोभूत्वानोवाचकमलोद्भवम् २ इति श्रीभा० द० पू० शं० मं० चतुर्दशेऽध्याये चतुर्दश वेणी ॥ १४ ॥ श्लो० ॥ ४१ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ स्वस्यश्रेष्ठं कथंचक्रेशेषं स्वांशं यदूहः । एषानो महतीं शंकां वर्तते महती हृदि १ वाचक होवागे हे श्रोता हो इस वास्ते श्रीकृष्णजी के अवतार में ब्रह्मा को मांह हुआ ३ इति भा० द० पू० शं० मं० त्रयोदशेऽध्याये त्रयोदश वेणी १३ ॥ श्लोक ॥ १५ ॥

श्रोता पूछते भये श्रीकृष्णकी स्तुति करिकै ब्रह्मा अपने लोक को गये परन्तु कृष्ण भगवान् ब्रह्मासे क्यों नहीं बोलते भये सब जगह देवतासे बोलते हैं यह बड़ा आश्चर्य भया कि भगवान् खुद ब्रह्माको अनादर किया १ वाचक बोलते भये अपने मुखसे अपनी तारीफ दुष्ट जन करते हैं मैं ऐसा हूँ २ इसी वास्ते श्रीकृष्ण पूर्णब्रह्म जगत्के नाथ ब्रह्मासे किई अपनी स्तुति सुनिकै लज्जायमान होगये ब्रह्मासे कुछ भी नहीं बोले विचार किये कि हमने नाहक ब्रह्माके चरित्रको नहीं माने वत्स वालकोंको ब्रह्मा हरिभोगयेथे तौ हमको ब्रह्माकी स्तुति करिकै लेआना चाहतारहा है ऐसे दयालु भगवान् लज्जासे नहीं बोले २ इति भा० द० पू० शं० मं० चतुर्दशेऽध्याये चतुर्दश वेणी १४ श्लोक ॥ ४१ ॥

श्रोता पूछते भये कि श्रीकृष्ण भगवान् बिष्णुहो कैसे अपना अंश जो शेष तिनको अपने से बड़ा क्यों किये कि बलदेव

। लक्ष्मणेनानिशंरामः सेवितस्तंवरंददौ ।

॥ ४ ॥ त्वान्तेसेवानुकारकः । कृष्णनामाभ

॥ २ ॥ इति भा० द० पू०

शं० मं० पंचदशोऽध्याये पंचदशवेणी ॥ १५ ॥ श्लो० १४ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ नागेशस्य हृदाद्यातियान्दिशंयमु  
नातदा । संयोगावधिगंगायाः कथन्नासविषान्विता १

को सेवन कृष्ण बड़ा जानि कै करते भये हे गुरु जी हमारे  
सबके मनमें यह बड़ी शंका है वाचक बोले त्रेता में लक्ष्मण  
जी श्रीरामचन्द्र जी/गे बहुत सेवन रातिदिन करते भये तब  
भीरघुनाथ जीने लक्ष्मणको वरदान दिये हे भाई लक्ष्मण हम  
तुमको प्रसन्न भये इस वास्ते द्वापर में तुमको अपना बड़ा  
भाई वनायकै हम तुम्हारा सेवन करैगे भी कृष्ण हमारा नाम  
होगा हे श्रोता हो इस वास्ते शेषजी विष्णु से बड़े होते भये १ इति  
भा० द० पू० शं० मं० पंचदशोऽध्याये पंचदशवेणी ॥ १५ ॥ श्लो० ॥ १४ ॥

श्रोता पृच्छते भये कालिय नाग के कुंड से जिस दिशाको  
यमुना जी गई हैं गंगाजी को तथा यमुनाको मिलाप भया है  
प्रयाग तक यमुनाके जल में नागको जहर क्यों नहीं मिला  
रहा क्योंकि कुंड को जल जहर से पूर्ण रहा था सोई जल  
प्रयाग तक आया सो जहर से मिला चाहिये जैसा कुंड में  
जहर से भिला था तैसा प्रयाग तक जहरी जल होना चाहिये  
सो क्यों नहीं भया १ तथा भागवतमें लिखा है कि कालियके  
कुंडके सामने यमुनाके तीरपर जो प्राणी जीवधारी तथा वृक्ष  
आदि सब जलिजाते हैं तौ कदंबको वृक्ष कालिय कुंड के सामने  
रहा सो क्यों नहीं भस्म हुआ यह दो शंका हम लोगोंको दुःख देती  
हैं १ वाचक बोले जिसदिन कालिय यमुनाके कुंडमें वास किया

कदम्बवृक्षश्च कथन्न बभूवाग्निसान्मुने २ वाचक ३  
 तद्धृदस्थमहिम्नीक्ष्य शतहस्तं चतुर्दिशः ।  
 विधिश्चक्रे हृदन्नान्यत्र संस्थितिः ३ वै ४  
 कदंबोपरि संस्थितः । ५ मे १ ॥ १५ ॥  
 ज्जनाः ॥ इति भा० द० पू० शं० नि० मं० षोडशेऽध्याये  
 षोडशवेणी ॥ १६ ॥ श्लो० ४ से ५ तक ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ तद्धृदः कालियेनैव ज्ञातो नान्यैः कथं  
 प्रभो । सपैरेषा च महती शंका स्मांस्तु दत्ते सदा १ वाचक

उसीदिन कुंडमें टिका जो नाग तिसको ब्रह्मा देखिके विचार  
 किये कि ऐसा विषके जोर करिके यमुनाजीको जलतो जहरी  
 होगया कुंडसे प्रयागतक यमुना गई हैं सो जहरी जलभया  
 श्रीगंगाजीमें मिलीतौ गंगाजलभी जहरी होजावैगा गंगाजी  
 समुद्रमें मिलीहैं सोभी जहरीहोगा जोकभी यमुनाजी बहुत  
 पुर आवैगी तब पीछेकोभी जल जायगा सोभी जहरी होगा  
 ऐसा विचारिके नागके कुंडसे चारोंतरफ पूर्व पश्चिम उत्तर  
 दक्षिण सौ १५० हाथ तक जहर रहैगा सौ हाथके ऊपर जहर  
 नहीं रहैगा ऐसा प्रमाण करिदिये इसवास्ते सबदेशमें यमुना  
 को जल जहरी नहीं भया ३ हे श्रोताहो गरुड़ अमृत को ले  
 आये तब थोरीदर केवास्ते कदंब के ऊपर बैठेथे तब अमृत  
 को कुलुबिंदु पड़गया कदंबपर इसवास्ते नागके जहर करिके  
 कदंब भस्म नहीं हुआ ॥ ४ ॥ इति भा० द० पू० शं० मं०  
 षोडशेऽध्याये षोडशवेणी ॥ १६ ॥ श्लोक ॥ ४ ॥ से ५ तक ॥

श्रोता पूछते भये हेगुरुजी उस कुंडको कालिय जानताथा  
 तथा दूसरे सर्पों को क्यों नहीं कुंडमालमथा यह शंका हमजोगोंको

॥ देवर्षिशिष्यो नागेशः कालियस्तेन ज्ञापितः ।  
 दूदस्तस्मान्नान्यैर्ज्ञातो बभूव ह ॥ २ ॥ इति  
 द० पू० शं० नि० मं० सप्तदशेऽध्याये सप्तदश  
 ॥ १७ ॥ श्लो० ॥ १२ ॥  
 श्रोतार ऊचुः ॥ कदा नाचिन्तयद्ब्रह्मो बधने जगदी  
 प्रलम्बालपस्य हिंसायां कथंचितान्वितो भवत् १  
 क उवाच ॥ शेषेन कल्पितो मृत्युस्तस्य पूर्वविरंचिना ॥  
 ज्ञात्वा चिन्तान्वितो भवत् २ इति भा०  
 द० पू० शं० मं० अष्टादशेऽध्याये अष्टादश  
 वेत्ती १८ ॥ श्लोक १८ ॥

नित्यचैन नहीं लेने देती १ वाचक बोले कि कालियनाग नारद  
 को चेला था इस वास्ते नारद ने कालिय को कुंडवताये थे कि  
 तेरे को कभी आपत् काल पड़े गरुड़ की तरफ से तौ तू यमुना  
 के कुंड में चला जाना कुंड में गरुड़ को जोर नहीं चलेगा हे  
 श्रोता हो इस वास्ते अकेले कालिय को कुंड मालूम था  
 और किसी सपों को नहीं मालूम था ॥ २ ॥ इति भा० द० पू०  
 शं० मं० सप्तदशेऽध्याये सप्तदशवेत्ती ॥ १७ ॥ श्लोक ॥ १२ ॥

श्रोता पूछते भये रावण आदिके अनेक राक्षसों को भग-  
 वान् मारते भये किसी राक्षस के मारने वास्ते चिन्ता नहीं  
 किये छोटे से छोटा प्रलम्बनाम राक्षस तिसको मारने सैंक्यों  
 चिन्ता करते भये यह बड़ी शंका होती है १ वाचक बोले प्रलम्ब  
 को मृत्यु ब्रह्माने पेस्तर शेष करिके किये थे कि तू शेष के मारे  
 मरेगा और किसीके मारे नहीं मरेगा तब ऐसा भगवान्  
 जानिके तथा शेषको हृदय कोमल जानिके कि दया देखिके

श्रोतार ऊचुः ॥ पालनम्बस्तमातृणां महिषीणां च  
निन्दितम् । त्रिवर्णानां कथंचक्रे श्रीकृष्णो नन्दनन्दनः १  
वाचक उवाच ॥ अजावत्सतरीगोनाम्माहिष्यो वृद्धधे-  
नवः । द्वयोश्च मध्यवर्तिन्यो गावः प्रोक्तामुनीश्वरैः । कृष्णे  
नपालितास्ताश्च नमहिष्यो नचाप्यजाः २ इति भा०  
द० पू० शं० मं० एकोनविंशोऽध्याये एकोनविंश-  
वेणी १६ ॥ श्लोक ॥ २ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ सर्वे च गुणिनस्संतिकामिनीभिश्च  
संयुताः । कामिनीभिश्च त्यक्त्वा स्मत्ते श्रुतानो कदापिनः ।

शेष नहीं मारेंगे इस वास्ते भगवान् चिन्ता करते भये ॥ २ ॥  
इ० भा० द० पू० शं० मं० अष्टादशेऽध्याये अष्टादशवेणी ॥ १८ ॥  
श्लोक ॥ १८ ॥

श्रोता पूछते भये कि ब्राह्मण चूत्री वैश्यको बकरी पालना  
तथा भैंसि पालना यह बहुत खराब काम शास्त्र में लिखा है  
फिरि श्रीकृष्ण बकरी तथा भैंसि को पालन क्यों करते भये  
१ वाचक बोले पण्डित जन बकरी को अजा कहते हैं परन्तु  
मुनियों ने अजाको ऐसा अर्थ किये हैं कि बालक जिस में  
न होवै उस को नाम अजा है अजा कहें गौवों की बछी तथा  
महिषी कहें वृद्धी २ गाय बछी के वृद्धी गाइयों के बीच में जो रहने  
वाली गायमाने ज्वानिगौ तिनकी गाय संज्ञा है श्रीकृष्ण  
भगवान् बछी तथा वृद्धी ज्वानिगौ की पालन किये हैं बकरी  
तथा भैंसिको पालन नहीं किये ॥ २ ॥ इति भा० द० पू० शं०  
मं० एकोनविंशेऽध्याये एकोनविंशवेणी ॥ १६ ॥ श्लोक ॥ २ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी संसार में जो गुणी प्राणी हैं  
सो सब अपनी स्त्रियों के संग सुख दुःख गृहस्थी में भोगि

न्तिस्थैर्यं गुणिषुयोषितः १ वाचक  
। प्रोक्ताश्चात्रनकामिन्यः प्रमदाशशास्त्रारगैः ।

प्रीतयोभरिशःक्षितौ । ताःकामि

न्योनकुर्वन्तिस्थैर्यं गुणिषुकार्हेचित् २ इति भा० द०  
पू० शं० मं० विंशेऽध्याये विंशवेणी ॥ २० ॥ श्लो० ॥ १७ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ नद्योरूपान्तरं प्राप्यरेमिरेस्वस्वना  
यके । जलरूपाश्श्रुतानैव मपिकाः कामविह्वलाः । गो  
पीभिश्चकथं प्रोक्तन्नद्यः कामातुराऽभवन् १ वाचक  
उवाच ॥ मनसायेभवन्त्यर्थास्ते सर्वे च मनोभवाः । नत्ये

रहे हैं परन्तु ऐसा किसी गुणी को नहीं सुना कि उसकी  
स्त्री उसको त्यागि दिया होवे तो फिरि शुकदेव जी कहेथे कि  
जैसा गुणी प्राणीमें स्त्री बहुत देर टिकती नहीं तैसा आका-  
श में विजली देरतक नहीं टिकती यह बड़ी शंका है १ वाचक  
श में विजली देरतक नहीं टिकती यह बड़ी शंका है १ वाचक  
बोले (स्थैर्यन्नचक्रुः कामिन्यः) इस श्लोक में शास्त्र के जानने  
वाले मुनियों ने कामिनी को स्त्री अर्थ नहीं किये ऐसा कामिनी  
को अर्थ किये हैं कि संसारके सुखकी तृष्णाकी बहुत प्रीति  
साई कामिनी है सो तृष्णाकी बहुत प्रीतिरूप कामिनी गुणी  
प्राणी में बहुत देरतक नहीं टिकती देरतक मूर्ख में टिकती है  
ऐसा अर्थ शुकदेवजी ने कियेथे २ इति भा० द० पू० शं० मं०  
विंशेऽध्याये विंशवेणी २० ॥ श्लोक ॥ १७ ॥

श्रोता पूछते भये कि ऐसा शास्त्र में हम सर्वों ने सुना है  
कि नदी दूसरा रूप धारण करिके अपने अपने पतिके संग  
क्रीड़ा करती थीं जैसा श्री गंगाजी नर्मदा आदि क्रीड़ा करिके  
फिरि जलरूप होजाती थीं परन्तु ऐसा कभीभी नहीं सुना  
कि कोईभी नदी जलरूप धारण करिके कामदेव करिके

कः कामदेवश्च कथितो वै मनोभवः । अतस्ताः ८

च वभूवुरतिविह्वलाः २ इ० भा० द० पू० शं० मं०  
विंशेऽध्याये एकविंशवेणी ॥ २१ ॥ श्लो० ॥ १५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ जहार वसनन्तासां कथं ८

त्पतिः । तथा दधारस्वस्कंधे तदुच्छिष्टाश्चिरीक्षणम् १  
तासांचक्रे महान्यायं नग्नानांगतिमुत्तमाम् । कर्मभि  
स्त्रिभिरेतैश्च किन्नप्राप्स्यन्ति ताविना २ वाचक ८  
तामिस्संपूजिता देवी चक्रे चिन्तां स्वमानसे । कथंचेमाः  
प्रदास्यन्ति गोपाः कृष्णाय सर्वशः ३ भविष्यति न चेदा

विह्वल होगई तौ फिरि गोपियों ने क्यों कही कि कृष्ण की  
प्रीति से नदी भी काम से विह्वल होगई यह बड़ी शंका है  
वाचक बोले अकेले कामदेव को मनोभव नाम नहीं है मन  
करिके जितने अर्थ उत्पन्न होवें तिन सबको मनोभव नाम  
है नदियों के मन में कृष्ण को प्रेम उत्पन्न भया सोई मनो-  
भव है उस प्रेमरूप मनोभव करिके विह्वल होगई २ इति  
भा० द० पू० शं० मं० एकविंशेऽध्याये एकविंश वेणी २१ ॥  
श्लोक ॥ १५ ॥

श्रोता पछते भये श्रीकृष्ण जगत् के पति ऐसा कर्म क्यों  
करते भये कि गोपकी लड़कियों को वस्त्र हरिलिये तथा  
लड़कियों को धारण किया मल मूत्र लगा ऐसा जो वस्त्र उस  
वस्त्रको अपने कंधे पर रखिलिये तथा नग्न लड़कियोंको देखते  
भये बड़ा पतित भी होगा सो भी ऐसा खोटा कर्म नहीं करेगा हर ३  
१ क्या इस तीन कर्म को भगवान् न करते तो वो सब गोप  
की लड़की वैकुण्ठको न जातीं गुरुजी यह बड़ी शंका है श्लोक  
दोको अर्थ मिला है युग्म है २ वाचक बोले गोपकी कन्या ने

साम्पतिः कृष्णस्तदामम । भूमौ नैव करिष्यंति पूजनं  
 कर्हि चिन्नराः ४ एवं विचार्य सावस्त्रन्तासांहृत्य स्वयं स्थि-  
 ता । भूत्वा वस्त्रमयी देवी यादृशन्तादृशन्तथा ५ लज्जा  
 पनयनार्थाय सर्वमेतत्तया कृतम् । ताभिर्ज्ञातं च न त्वेतत्  
 क्रीडन्त्यस्तानदीजले ६ तासारूपं च सन्धृत्य कृष्णा  
 न्तिकमुपागताः । वरेदत्तेरमानाथे मोहिताश्चापिता  
 ययुः ७ ताभिर्ज्ञातमिदं सर्वं मस्माभिः कृतमेव तत् । ल-  
 ब्ध्वा वरमगुस्सर्वाः कृष्णात्प्राप्तमनोरथाः ८ ज्ञात्वैतद्  
 पिसंचक्रे कृष्णो मायामुपागतः । अतो न दोषो हरणे वस्त्र  
 श्रीकृष्ण को अपना अपना पति होने वास्ते देवी को पूजन  
 करती भई तब तिन लड़कियों करिके पूजित जो देवी सो  
 अपने मन में चिन्ता करती भई कि गोप लोग इन सब ल-  
 डिकियों को विवाह कृष्ण के संग कैसे करेंगे क्योंकि एक  
 पुरुष के संग? लड़िकी को विवाह होता है बहुत को नहीं हो सक्ता  
 जब इन सब लड़िकियों के पति कृष्ण नहीं होवेंगे तब कभी भी  
 मानुष्य पृथ्वी में मेरा पूजन नहीं करेंगे कहेंगे कि देवी को पूजन  
 झूठा है ४ देवी ऐसा विचारि कै तिन लड़िकियों के वस्त्र को  
 हरि कै जैसा जिस लड़की का वस्त्र था तैसा वस्त्र होके जहाँ  
 वस्त्र धरा रहा उसी स्थान पर बैठि गई वस्त्र होके ५ लड़िकियों  
 की लज्जा कृष्ण से त्याग करने वास्ते देवी यह सब काम किया  
 एक दफे स्त्री पुरुष सरीके गोपों की लड़िकी कृष्ण से लज्जा  
 त्यागि देंगी तो चाहै पिता व्याह कृष्ण के संग करे चाहै न करे  
 ये तो कृष्ण की स्त्री हो जावेंगी तथा संसार में हमारे पूजन  
 की माहेमा नहीं घटेगी और लड़िकी जल में हास्य तमाशा  
 आपस में करि रही थी यह देवी को किया कर्म लड़िकियों को



स्वस्कंधधारणे । निरीक्षणेचनगनायां

हंसिः ६ इति भा० द० पू० शं० मं०

द्वाविंशवेणी ॥ २२ ॥ श्लो० १६ से २० तक ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ ४ ॥ १६ ॥ २० ॥

पिच । देहसंगोनराणां वै ताश्चापिरतिकामुकाः ।

कृष्णान्तिकम्प्राप्ताभ्रमोयंहृदयेचनः १ वाचक उवाच

नहीं मालूम परा ६ सब लडिकियों को रूप देवी धरि के कृष्णके सामने गई भगवान् बरदान दिहे तब मायाने सब लडिकियों को मोहि लिया तौ मोह को प्राप्त जो सब लडिकी सो अपना २ वस्त्र पहिरके अपने २ घरको चली गई वस्त्र को रूप तथा लडिकी को रूप देवी भी काम करिके छोड़ि दिया ७ जो जो वस्त्र हरण आदि कर्म भया सो सब काम को वो सब लडिकी जानी कि हम सब किया बरदान लेके भगवान् से मनोरथ को सिद्धि करिके अपने अपने घर को गई = देवी के चरित्रको कृष्ण भी जानिके यह सब काम किया है हे श्रोता हो इसी वास्ते माया रूप जो वस्त्र तिस के हरण में तथा वस्त्र को कन्धा के राखने में नग्न लडिकियों के देखने में कुछ दोष नहीं क्योंकि वस्त्र तथा लडिकी सब देवी थीं और देवी को पति भगवान् है इस वास्ते यह सब काम भगवान् किये हैं खुद गापों की लडिकियों को नहीं किये ६ इति भा० द० पू० शं० मं० द्वाविंशेऽध्याये द्वाविंशवेणी २२ ॥ श्लोक ॥ १६ ॥ से २० ॥ तक ॥

श्रोता पृच्छते भये कृष्णने मथुरा के ब्राह्मणों की स्त्रियों से कहे कि हे ब्राह्मणी लोगो हमारा दर्शन करि लिया अब अपने २ घरको जावो क्योंकि स्त्री पुरुष के अंग संग से स्नेह

॥ २ ॥ इति भा० द० पू० शं० मं० त्रयो  
 विंशवेणी २३ ॥ श्लोक ॥ ३२ ॥  
 श्रोतार ऊचुः ॥ चक्रेनान्यावतारेषु क्रोधमिन्द्रायक  
 । तत्कथंकृतवान्कृष्णो येनतन्माननाशनम् ॥  
 भवत्रिपुल्लोकेषु सर्वदासर्वजन्तुषु १ वाचक उवाच ॥  
 कभीभी नहीं होवैगा इस वचनसे मालूम परता है कि ब्राह्मणी  
 भी कृष्णके संग रमण होने वास्ते कृष्णके सामने आई थीं  
 यह भ्रम हमारे सबके हृदय में बड़ा है १ वाचक बोले  
 कृष्ण वेदके रूपहैं तथा वेदोंकी प्रीति सोई मथुराके ब्राह्मणों  
 की स्त्री भई हैं वो सब वेदोंकी प्रीति ब्राह्मणी रूप होकै वेद  
 रूप श्रीकृष्णके अंगतथा चरणोंको लने वास्ते आई थीं भग-  
 वान् विचारे कि इनके संग वेद होकै हम इनको अपनी देह  
 तथा चरण लने देवैगे तो संसार में हम गुप्त होकै आये हैं  
 सो प्रगट होवैगा इसवास्ते तिन ब्राह्मणी को मनोरथ नहीं  
 किये भगवान् हे श्रोताहो ऐसी श्रंग संगको कृष्ण ने कहेथे  
 रमण होने को नहीं कहेथे २ इति भा० द० पू० शं० मं० त्रयो  
 विंशेऽध्याये त्रयोविंशवेणी २३ ॥ श्लोक ॥ ३२ ॥

श्रोता पढ़ते भये हे गुरुजी शास्त्रोंमें ऐसा हम सबने सुना  
 है कि कभीभी भगवान् इन्द्रके ऊपर क्रोध नहीं किये चाहे  
 पैकुंठ में रहेचाहे शौर अवतार धरिलिये रहें तोभी फिरि  
 श्रीकृष्ण भगवान् इन्द्र के ऊपर क्रोध क्यों किये जिसकोध  
 करिके तीनलोक में जो चौरासी आश्वयानि तिसयोनियों में  
 युग युग इन्द्रके अभिमान को नाश दोगया है यह हमारे  
 सबके मन में परीशंका होती है १ वाचक बोले मर्यादा १२

कदापीन्द्राज्ञयागोपान चक्रुश्चण्डिका चर्चनम् ।

कसम्भूते कृष्णान्दृष्ट्वा सती च तम् २ १२ ।

चं विस्मृतस्तेन वै हरिः ।

ननाशनम् ३ इति भा० द० पूर्वार्द्ध शं० मंजर्या चतुर्विंशोऽध्याये चतुर्विंशवेणी २४ ॥ श्लोक ॥ १२ ॥

श्रोतार उचुः ॥ इन्द्रेण प्रार्थितो विष्णुः ।  
तिहरिः । विस्मृत्य तं कथंचन इन्द्रः कृष्णस्य निन्दनम् ।  
वाचक उवाच ॥ कृष्णपक्षे समाश्रित्य देवीमाया च

जिस दिन पूरण होवै उस दिन सब गोप इन्द्रका यज्ञ  
हैं उसी यज्ञ में गोप लोग देवीको भी पूजन करने को विचार  
करें तब इन्द्र मनाकरि देवीके देवीको पूजन तुम मत करो  
सब देवतोंको रूप हमको जानो हमसे बड़ी देवी नहीं है इस कारण  
से कभीभी गोप लोग देवीको पूजन नहीं किये जब श्रीकृष्ण  
भूमिमें विराजमान भये तब देवीके अनादर को देखिके  
कृष्ण को भी बुरा मालूम परा ऐसा श्रीकृष्णको अपनी तरफ  
देखिके देवीने इन्द्रको २ मोहलेती भई मोहको प्राप्त जो  
इन्द्र सो पागल होके ईश्वर को भूलि गया तब श्रीकृष्ण इन्द्र  
के ऊपर क्रोध करिके इन्द्र के अभिमान को नाश करि दिये  
हे श्रोता हो इस वास्ते कृष्ण जी इन्द्रके ऊपर क्रोध करते भये  
३ ॥ इ० भा० द० पू० शं० मं० चतुर्विंशोऽध्याये चतुर्विंशवेणी ॥  
२४ ॥ श्लोक ॥ १२ ॥

श्रोता पूछते भये इन्द्रकी बिनती से भगवान् पृथ्वीमें  
अवतार लिये हैं सोई इन्द्र कृष्ण की निंदा क्यों किया ?  
वाचक बोले भगवान् की प्रिया जो देवी तिसका अनादर  
अभिमानसे इन्द्र बहुत दिनोंसे करता था उस अपना

॥ स्थापमानंचसंस्मृत्य चिरंचेन्द्रेणसंकृतम् २  
 पतितोभवत् । निनिन्दातो  
 शिः ३ इति भा० द० पू० शं०  
 पंचविंशेऽध्यायेपंचविंशवेणी २५ ॥ श्लो० १ से ६ तक ॥  
 श्रोतारः ऊचुः ॥ कृष्णकर्मण्यहंवेद पृथिव्यांकोपि  
 भोजनाः उवाचेदकथं गर्गस्तदन्ये किं न ब्राह्मणाः १ वाचक  
 उवाच ॥ जातित्वादेकवचनम्प्रोक्तं गर्गेण तद्वचः । नर्षी  
 नमुनीनूतिरस्कृत्य मोहग्रस्ताजनाश्चनो २ इति भा०  
 द० पू० शं० मं० षड्विंशेऽध्याये षड्विंश  
 वेणी २६ ॥ श्लोक ॥ १६ ॥

इन्द्रने किया तिसको देवी यदि करिकै तथा श्रीकृष्णको  
 पक्षभी पायकै पेशतर इन्द्रका उपद्रव देवी नहीं किया अना-  
 दर सहिलेती भई अब श्रीकृष्ण को रखपाय कै २ देवी इन्द्र  
 को मोहिलेती भई मोहको प्राप्त जो इन्द्र सो पागल होकै  
 भगवान् को भूलिकै श्रीकृष्णकी निंदाकिया तथा ब्रजके ऊपर  
 वर्षाभी बहुत करता भया ॥ ३ ॥ द० भा० द० पू० शं० मं०  
 पंचविंशेऽध्यायेपंचविंशवेणी ॥ २५ ॥ श्लोक ॥ १ से ६ तक ॥  
 श्रोता पछते भये नंद से गर्ग मुनि कहे कि श्रीकृष्णके  
 कर्म को हम जानते हैं पृथिवी में और कोई भी नहीं जानते  
 गुरु जी यह बड़ी शंका होती है कि गर्ग तो तपस्वी भये गर्ग  
 से और जो मुनि ऋषि रहे थे सो सब ब्राह्मण नहीं थे गर्ग  
 के वाक्यसे ऐसा मालूम परता है १ वाचक बोले सब मुनियों  
 ऋषियों को अनादर करिके गर्ग जी ऐसा वचन नहीं कहे  
 गर्ग जी अहंपद को यह अर्थ किये थे कि हमारी जाति  
 जितनी है संसार में मुनि ऋषि गृहस्थ किसान सब श्रीकृष्ण

श्रोतारः ऊचुः ॥ शताश्वमेधयज्ञेन प्राप्तराज्यं शची  
पतिम् । तिरस्कृत्य कथंचक्रे कृष्णं स्वेन्द्रं वृषप्रसूः १  
वाचक उवाच ॥ महावृष्टिचकारेन्द्रो गवांघाताय गोकुले ।  
कर्मणा तेन तत्पण्यं दशांशं नाशमापच २ विचार्यैवं  
च सुरभिर्दुष्टो सौ स्वार्थसाधकः । गोघातादपि नोभीतः  
पुनश्चैवं करिष्यति । अतस्त्वेन्द्रं हरिचक्रे नाधीनास्तस्य  
धेनवः २ इति भा० द० पू० शं० मं० सप्तविंशोऽध्याये  
सप्तविंशवेणी २७ ॥ श्लोक ॥ २३ ॥

के कर्मको जानते हैं परन्तु जो ब्राह्मणों से दूसरा मानुष्य  
है माया से प्रसित हो रहे हैं वो प्राणी कृष्ण के कर्म को नहीं  
जानते ऐसा अर्थ किये अपने अकेले वास्ते नहीं किये थे ॥ २॥  
इति० भा० द० पू० शं० मं० षड्विंशोऽध्याये षड्विंशवेणी ॥ २६ ॥  
श्लोक ॥ १६ ॥

श्रोता पूछते भये सौ १०० अश्वमेध यज्ञ करिकै राज  
को प्राप्त जो इन्द्र तिसका अनादर करिकै सुरभी गौ जो है  
सो अपना इन्द्र श्रीकृष्ण को क्यों करती भई क्योंकि गुरु  
जी तीनलोक में एक इन्द्र सिवाय दूसरा इन्द्र हम सब ने  
सुनाभी नहीं यह बात सुनिकै वड़ी शंका भई है १ वाचक  
वाले इन्द्रने गौवों को नाश करने वास्ते गोकुल में वड़ी वर्षा  
किया गौवोंको मारना विचारा दुष्टने उसी कर्म करिकै इन्द्र  
का दशवां अंश पुण्य नाश भई २ इन्द्र की दशवां अंश  
पुण्यको नाश सुरभी विचारिकै अपना इन्द्र भगवान्को करती  
भई सुरभी विचार किया कि इन्द्र ऐसा चंडाल है अपने काज  
के वास्ते धर्म अधर्म नहीं देखता गोघात से भी नहीं डरता  
भया तौ दूसरे पाप को क्या टरेगा अबकी तो कृष्ण रक्षा किये

श्रोतारः ऊचुः ॥ कथंसमभ्यर्च्यहरिंप्रजेश्वरः स्नानं  
विनावैगतवान्नदीतटम् । समर्चनम्प्राणपतेर्जगत्पते  
र्योग्यमस्नानकृतेनप्राणिना १ वाचक उवाच ॥ मन  
सापूजनंकार्थं वासुदेवस्यसज्जनैः । ब्रजेश्वरश्चतत्कृ  
त्वा स्नातुंपश्चाद्गतोहिसः २ इति भा० द० पू० शं०  
मं० अष्टविंशेऽध्याये अष्टविंशवेणी २८ ॥ श्लोक ॥ १॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कथंययाचिरेगोप्यो मोक्षरूपाऽध  
राऽमृतम् । कामाग्निशमनार्थाय भगवन्तन्निरंजनम् ।  
प्रकृताश्चयथानार्थ्यो नरंकामविमोहिताः १ वाचक  
एदुष्ट ऐसा कर्म फिरि कभी करैगा तौ हमारे बालबच्चे मारे  
जावैगे इसवास्ते भगवान् को अपना इन्द्र करती भई ॥ २॥  
इति भा० द० पू० शं० मं० सप्तविंशेऽध्याये सप्तविंशवेणी २७॥  
श्लोक ॥ २३ ॥

श्रोता पृच्छते भये भागवतमें लिखाहै कि, नंदजीएकादशी  
को व्रत करिकै घड़ी ४ राति पीछेजा रही तब भगवान्को पूजन  
करिकै यमुना में स्नान करने गये इस में यह शंका होती है  
कि विना स्नान किये भगवान्को पूजन कैसा करते भयेक्यों  
कि जो प्राणी स्नान नहीं करते वो प्राणी भगवान्को पूजन  
करैगा तौ बड़ी खोटी बात है , वाचक बोले सज्जन पुरुष  
भगवान् को मानसिक पूजन करते हैं तथा मानसिक पूजन  
से भगवान् प्रसन्नभी होतेहैं इसवास्ते नंदजी मानसिक पूजन  
भगवान् को करिकै पीछे से स्नान कर ने को गये थे २ इति  
भा० द० पू० शं० मं० अष्टविंशेऽध्याये अष्टविंशवेणी २८ श्लो० ॥ १॥  
श्रोता पृच्छते भये जैसे कामदेव करिकै दुःखी मानुष्योंकी  
स्त्री मानुष्यों की विनती करतीहैं श्रोष्ठ चुंबन करनेवास्ते तैसे

उवाच ॥ विचारितंचगोपीभिर्विद्याहीनावयंसदा । कथं  
 कृष्णंस्तुमस्स्तोत्रैरिति विह्वलमानसाः २ नश्वरं तं शा-  
 रदावासः श्रीकृष्णाधरमंडले । चेदस्माकं भवेदोष्ठे  
 तस्योष्ठस्पर्शनं शुभम् ३ प्राप्तविद्या भविष्यामशशरदा  
 कृपयावयम् । तदास्तोत्रैश्च विविधैस्स्तोप्यामोजगता-  
 म्पतिम् । अतो यथाचिरे गोप्य श्रीकृष्णाधरचुम्बनम् ४  
 इति भा० दश० पूर्वार्द्धे शं० मं० एकोनत्रिंशोऽध्याये  
 एकोनत्रिंशवेणी २६ ॥ श्लोक ॥ ३५ ॥

गोपी तौ मोक्ष को रूपथी परन्तु कामकी शान्ति होने वास्ते  
 पूर्णब्रह्म सरीके जो कृष्ण तिन से ओष्ठ चुंबन करने वास्ते  
 याचना क्यों करती भई यह बड़ी शंका होती है ब्रह्मरूप कृष्ण  
 मोक्षरूप गोपिका मनुष्य की स्त्री सरीके कर्म करती भई हर।  
 १ वाचक बोले गोपियाँ विचार करती भई कि हम सब कुल  
 भी पढ़ानहीं श्रीकृष्ण को जैसा विद्वान् लोग स्तोत्रों करिके  
 स्तुति करते हैं तैसा हम भी किया चाहती हैं परन्तु बिना विद्या  
 कैसा स्तोत्र करिके स्तुति करेंगी २ परन्तु हम ऐसा सुना है  
 कि श्रीकृष्ण के ओष्ठ में सरस्वती को वास है जो हमारे सब  
 के ओष्ठ में कृष्णको ओष्ठ लुझावे ३ तब हम सबको विद्या  
 प्राप्त होजावेगी तब अनेक प्रकार के स्तोत्रों करिके भगवान्  
 की स्तुति हम सब भी विद्वानों के सरीके करेंगी हे श्रोताहो  
 इसवास्ते गोपियोंने कृष्णके ओष्ठको चुंबन करनेवस्ते याचना  
 करती भई कामकी वशि होके नहीं याचना किई थी ४ इति  
 भा० दशम० पू० शं० नि० मंजरीयाँ एकोनत्रिंशोऽध्याये एकोन  
 त्रिंशवेणी २६ ॥ श्लोक ॥ ३५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ तरवश्चकथन्नोचुः कृष्णम्मार्ग

१ । गोपीपृष्ठामहाश्चर्य्य मिदन्नोभातिमानसे १

उवाच ॥ कृष्णप्रेम्नायथोन्मत्ता वभूवुर्ब्रजयो

१ । तरवश्चापितद्ध्यान मग्नास्स्युर्नस्मरन्ति च ।

परं स्वात्मानमथवानोतरम्प्रददुर्हृतः २ इति भा० द० पू०

शं० मं० त्रिंशोऽध्याये त्रिंशवेणी ॥ ३० ॥ श्लो० ५

से ६ तक ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ प्रमदानांकरस्पर्शं पुरुषस्थमहासु

खम् । स्तनयोर्भवतिसर्वासां ननु तच्चरणाश्रयात् १

कथययाचिरेगोप्यः कृष्णपादात्पर्षणन्तदा । प्रेमातुरश्चे

न्मन्तव्यात्तद्वर्चन्यांगं न तस्य किम् २ वाचक उवाच ॥

श्रोता पृच्छते भये किं वृक्षों से गोपियों ने श्रीकृष्णचंद्र को

पूजाया और वृक्ष जानते थे कि इसी रसूता से श्रीकृष्ण गये हैं

फिर वृक्ष गोपियों से क्यों नहीं बोलते भये कि कृष्णको

हम सवने देखे तथा नहीं देखे चुप क्यों हो गये यह बड़ी शंका है १

वाचक बोले जैसा कृष्ण के प्रेम करिके गोपी उन्मत्त हो रही

हैं कृष्ण सिवाय दूसरी चीज नहीं देखती तैसे कृष्ण के ध्यान

करिके वृक्ष भी मस्त हो रहे हैं वृक्षों को तो अपनी देह को तथा

दूसरी बात को स्मरण नहीं है भगवान् में मन लगाय रहे हैं

इस वास्ते उत्तर नहीं दिये ॥ २ ॥ इति० भा० द० पू० शं०

मं० त्रिंशोऽध्याये त्रिंशवेणी ॥ १० ॥ श्लोक ॥ ५ ॥ से ६ तक ॥

श्रोता पृच्छते भये स्त्रियों के स्तन को पुरुष हस्त से स्पर्श कर-

ता है तो स्त्री को सुख होता है कुछ पुरुष के चरण के स्पर्श से सुख

नहीं होता १ तब गोपियों ने कृष्ण को चरण अपने स्तन पर

स्पर्श होने को क्यों याचना करती भई कि महाराज आपका



कालियन्दमितं श्रुत्वा कृष्णपादार्पणेन च । विचार्य  
हृदये गोप्यो निजे चेत्तत्पदार्पणम् ३ अस्माकं स्तनयो  
र्देवाद्भविष्यति विनाशनम् । कामस्य तद्धि निर्मुक्तानिर्द्वेष्टा  
भवसागरात् ४ वयं भजेमश्रीकृष्णमतस्तच्चरणार्प  
णम् । अयाचिषुस्तदा गोप्यस्साक्षात्ताश्श्रुतिमानिकाः  
५ इति भा० द० पू० शं० मं० एकत्रिंशोऽध्याये एक  
त्रिंशवेणी ॥ ३१ ॥ श्लो० ॥ ७ ॥

श्रोतार उचुः ॥ मित्रोपि भगवान्कृष्णो यासान्ता  
चरण हमारे सबके स्तनों पर अर्पण करो जो कोई कहे कि  
गोपी प्रेमसे आतुर थीं उनको पगकी तथा हस्तकी यादि  
भूलि गई थी इस वास्ते चरणकी याचना किई थी तो फिर  
कृष्ण के दूसरे अंगकी याचना क्यों नहीं करती भई अके-  
ला चरण क्यों सबदेह भरेकी याचना करलेती यह बड़ी शंका  
है २ वाचक बोले गोपियाँ सुनती भई तथा देखती भी भई कि  
श्रीकृष्णके चरणों के स्पर्श करिके कालिय नागको जहर नष्ट  
होगया कालिय नाग निर्विष होगया इसीसे जो हमारे सब के  
स्तन पर कृष्णके चरणों को स्पर्श हो जावे तो ३ हमारे सबके  
कामदेव को नाश हो जावेगा क्योंकि कालियके जहरसे काम  
बढ़ानहीं है काम को नाश भयेपर सब संसारके बाधासे छुटि  
जावेंगे दो श्लोक को अर्थ मिला है युग्म है ४ कामको नाश भये  
पर हम सबभी श्रीकृष्णको भजन करेंगी हे श्रोता हो इस वास्ते  
गोपियोंने श्रीकृष्णके चरण को अपने स्तन पर स्पर्श होने को  
याचना करती भई क्योंकि गोपीभी वेदोंकी आर्चा है ॥ ५ ॥ ६०  
भा० द० पू० शं० मं० एकत्रिंशोऽध्याये एकत्रिंशवेणी ॥ ३१ ॥ श्लो० ७ ॥  
श्रोता पृछते भये जिन्ह गोपियों के मित्र श्रीकृष्ण सो सब

श्चासनंकथं । ददुस्तस्मैस्वभुक्तैश्चवस्त्रैर्गोप्योनदुर्गताः  
१ वाचक उवाच ॥ स्वकार्योन्मत्तचित्तानां नास्ति ज्ञानं  
शुभाशुभे । प्रेमोन्मत्तास्तथा गोप्यश्रीकृष्णपदयोस्त  
दा । ताभिर्ज्ञातमतो नैव मशुद्धं वा शुभं न्त्विदम् २ इति  
भा० द पू० शं० मं० द्वात्रिंशोऽध्याये द्वात्रिंशवेणी ॥  
३२ ॥ श्लो० ॥ १३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ गोपीकृष्णकरौ गृह्यस्तनयोस्संद  
धौकथम् । प्राकृतायाश्च तत्कर्मनार्यैवेदमिदं कृतम् १  
वाचक उवाच ॥ प्रह्लादध्रुवयोर्मूर्धनिकृष्णहस्तमिदं शु  
भम् । अनेन विधृतं पूर्वमतो हंस्तनयोर्दधे । आभ्यां  
गोपी अपना पहिरा जो वस्त्र तिस वस्त्र करिके भगवान्को बैठने  
वास्ते आसन क्यों देती भई क्या गोपी दरिद्र थी नया वस्त्र  
मंगायके भगवान्को आसन क्यों नहीं दिये वड़ी शंका होती  
हे गुरुजी ? वाचक बोले जो प्राणी अपने काजमें उन्मत्त  
हो जाता है उसको नहीं मालूम परता कि यह खराब काम है  
यह अच्छा काम है इसी प्रकार से कृष्ण के चरणों में गोपी  
उन्मत्त हो रही हैं उनको नहीं मालूम परा कि यह वस्त्र हमारा  
पहिरा है कि नहीं पहिरा है हे श्रोता हो इस वास्ते भगवान्को  
गोपियों ने अपने पहिरे वस्त्र करिके आसन देती भई ॥ २ ॥  
इति भा० द पू० शं० मं० द्वात्रिंशोऽध्याये द्वात्रिंशवेणी ॥ ३२ ॥  
श्लो० १३ ॥

श्रोता पूछते भये गोपी श्रीकृष्ण को हाथ अपने हाथ से  
पकाड़िके अपने स्तन पर क्यों रखती भई जैसा मानुष्य की स्त्री  
कर्म करती है तैसा कर्म क्यों करती भई ? वाचक बोले गोपी  
विचार किया कि येई श्रीकृष्ण इसी अपने हस्तोंको प्रह्लाद

मुक्ताभविष्यामि तदाकामोनमानन्दहेतु ।

दधौहस्तं कृष्णस्यस्तनयोश्चसा २ इति भा० द०

शं० मं० त्रयस्त्रिंशोऽध्याये त्रयस्त्रिंशवेणी ॥ ३३ ॥ श्लो० १

श्रोतार ऊचुः ॥ दंशन्ति प्राणिनस्सर्पाः पु

न्त्यैननश्श्रुतम् । स्वभावस्सस्तुतेषां वै

तः १ वाचक उवाच ॥ स्वमुक्तिसमयं वीक्ष्य

शांत्कुयोनिनः । साक्षुधा च तया त्तोहिर्नन्दं जग्राह वेगत

२ इति भा० द० पू० शं० सं० चतुस्त्रिंशोऽध्याये

शवेणी ॥ ३४ ॥ श्लो० ५ ॥

के तथा ध्रुव के मस्तकपर धरेथे तब प्रह्लाद तथा ध्रुव संसा

के दुःख से छूटिके भगवान् को भजन करने लगे इस वास्ते

भी अपने स्तनपर भगवान् को हस्त धरिके इन दोनों हस्त

के प्रताप करिके संसार के दुःख से छूटिके भगवान् को भज

करोंगी का देव मेरे को नहीं दुःख देवेगा पुरुषकी ममता शिर

पर बहुत रहती है स्त्रीकी ममता स्तनपर रहती है ऐसा गोप

विचारिके अपने स्तनपर कृष्णको हस्त धराया कामसे दुःख

होके नहीं रक्खा था २ इ० भा० द० पू० शं० मं० त्रयस्त्रिंशोऽध्याय

त्रयस्त्रिंशवेणी ३३ ॥ श्लो० ॥ १४ ॥

श्रोता पूछते भये सब प्राणियों को सर्प काटते हैं परन्तु

सर्प अपनी भूखकी शान्ति होनेवास्ते नहीं काटते कि प्राणि

को दंशिके क्षुधा जावे सर्पोंको तो स्वभाव है प्राणियोंको घटक

भरना फिर भागवत में लिखा है कि भूखा सर्प नंदको दंशत

भया हे गुरुजी यह बड़ी शंका होती है १ वाचक बोले सर्प पेशत

को देवता था जब इसको मुनिजी शाप दियेथे तब इससे कहेंथे

कि श्रीकृष्णको हाथ तेरी देहमें लुट जायगा तब तू सर्प योनि

नार ऊचुः ॥ गोप्योदिनानिदुःखेन व्यतीयुः  
 जैताः । किंरात्रौमिलितास्तेन तिष्ठन्त्येकत्रगो  
 १ वाचक उवाच ॥ शब्दज्ञैर्वासरोह्यत्रदिवसो  
 ते । वासम्प्रमाणं योरासि वासरस्सोनिगद्यते २  
 ॥ १४ ॥ ज्ञातव्यश्शब्दपारगैः । व्यतीयुस्तां  
 ३ ॥ न श्रीकृष्णरहिताश्चताः ३ इति भा० द० पू०  
 मं० पंचत्रिंशोऽध्याये पंचत्रिंशवेष्टी ॥ ३५ ॥ श्लो० ॥ १ ॥

छटेगा सो सर्पने समय देखा कि आजु योगहै कृष्णके हाथ  
 देहमें छूनेको ऐसी निश्चय सोई भूख भईहै उसीसे दुःखी  
 होके सर्प नंद बाबा को काटता भया २ इति भा० द० पू०  
 शं० मं० चतुस्त्रिंशोऽध्याये चतुस्त्रिंशवेष्टी ३४ ॥ श्लोक ॥ ५ ॥

श्रोता पृच्छते भये किशुकजी परीक्षितसे कहथे कि हे राजन्  
 दिनको गो चराने को जातेथे तब कृष्ण करिके रहित  
 जो गोपी सो सब बहुत दुःखसे दिनको धितातीथीं हे गुरुजी  
 ऐसे वाक्य से मालुम परता है कि सबगोपी व्रजकी रात्रि में  
 पास सभा बनायकै रहतीथीं प्रभातभया जब कृष्ण  
 बनको गये तब सब दुःखी होगई यह बड़ी शंकाहै १ वाचक  
 बोले व्याकरणके पढ़नेवाले विद्वान्जोहैं सो (निन्यदुःखेन वास-  
 रान्) इस श्लोक में वासरको अर्थ दिन नहीं करेंग वास सब  
 वस्तुके प्रमाणको नाम है उसी वासको जो ग्रहण करै तिसको  
 नाम वासर है २ व्याकरण पढ़नेवाले विद्वान् वासर को  
 अर्थ निमित्त किये हैं इसी निमित्त को गोपी बड़े दुःख से धि-  
 ताती भई आंखों के पड़ने उघाने को निमित्त नाम है ३  
 इति भा० द० पू० शं० मं० पंचत्रिंशोऽध्याये पंचत्रिंशवेष्टी ॥ ३५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ १ ॥ वी ॥

वदतः । पतंत्यकाल्तोगर्भा नित्यंगज्जतिसःखलः  
तदासृष्टेर्द्वयोर्नाशः कथन्नामूद्विजोत्तम । १ ॥  
कर्म चान्येषां राक्षसांचनः २ वाचक उवाच ॥  
रेणुसमाज्ञप्तौ सुवीर्यसुरपालकौ । ३ ॥  
रथमतोदैत्योमहावली । ४ ॥  
रणेदिने ३ इति भा० द० पू० शं० मं० षट्त्रिंशे  
षट्त्रिंशवेणी ॥ ३६ ॥ श्लो० ३ से ४ तक ॥

श्रोता पूछते भये वृषभासुरके शब्द करिके गौवोंको ।  
मानुष्यों की स्त्रियों को गर्भ उदरसे पड़िजाता था ऐसा भाग-  
वत में लिखा है तबवो दुष्टों नित्य शब्द करतारहा होगा ,  
तब गौवोंको तथा मानुष्योंको इन्हदोनोंकी सृष्टिको नाश क्यों  
नहीं भया इन्हदोनों को वंशनष्ट होना चाहता था सो क्यों  
नहींभया यह बड़ी शंका है हर ३ तथा ऐसा कर्म किसी राक्ष-  
सोंको हमलोग नहीं सुना २ वाचक बोले वृषभासुरके शब्द  
के प्रभाव को जानिके भगवान् सुवीर्य तथा सुरपालक इन्ह  
दोनों देवतों को आज्ञा दियाकि जो दुष्टशब्द करनेजागें तो  
तुमदोनों उसके गलाको रोकिलेवो ऐसी भगवान् की आज्ञा  
पायके वृषभासुरके आसपास रहने लगे जब वृषभासुर  
ने को विचार करे तब ये दोनों देवता उसके कंठको  
इसी प्रकार सब उमरि वीतिगई वृषभासुर शब्द करने  
पाया जिस दिन मरण होने को प्रमाणथा उसदिन  
करिके भगवान्के हस्त से मारिगया इसवासते नित्य  
करने नहीं पाया ३ इति भा० द० पू० शं० मं०  
षट्त्रिंशवेणी ३६ ॥ श्लोक ॥ ३ से ४ तक ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ बधोपायान्यनेकानि सन्ति शत्रोर्मु  
 १ । तानित्यक्त्वा कथंचके हरिर्बाहुप्रवेशनम् १  
 ५ उवाच ॥ पूर्वन्दत्तवरोदैत्यो ब्रह्मणा ते कदापि न ।  
 १६ स्तृष्टिभ्यो वि- त्यसुरोत्तम २ देहान्तर्भगव-  
 १७ प्रवेशान्मरणान्तव । अतस्तदास्येकृष्णेन कृतं  
 १८ नम् ३ इति भा० द० पू० शं० मं० सप्तत्रिंशे  
 १९ सप्तत्रिंशवेणी ॥ ३७ ॥ श्लो० ॥ ६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ शूद्राणाम्निदितम्ब्रह्मकीर्तनं वेदभा-  
 षितम् । अक्रेण कथं प्रोक्तं शूद्रस्य विषयात्मनः । दुर्लभं  
 कीर्तनं तस्य किं तद्धीनैश्च सौलभम् १ वाचक उवाच ॥

श्रोता पूछते भये बैरी को मारने वास्ते अनेक उपाय शास्त्र  
 में तथा लोक में जाहिर हैं परन्तु केशी को मारने वास्ते सब  
 उपाय त्यागिके श्रीकृष्ण अपनी भुजा केशी के पेट में क्यों  
 करते भये वाचक बोले केशी को ब्रह्माने वरदान दिये  
 थे कि हमारे हाथ की धनाई सृष्टि करिके तेरी मृत्यु नहीं हो  
 वगी २ जब श्रीकृष्ण अपनी बाहुतेरे पेट में प्रवेश करेंगे तब  
 तेरी मृत्यु होवैगी इस वास्ते केशी के मुख में भगवान् अपनी  
 भुजा को प्रवेश करते भये ॥ ३ ॥ इति भा० द० पू० शं० मं०  
 सप्तत्रिंशेऽध्याये सप्तत्रिंशवेणी ॥ ३७ ॥ श्लोक ॥ ६ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरु जी वेदको कीर्तन श्रवण पठन  
 ये सब शूद्रको नहीं करना चाहिये चाहे विरक्त होवै चाहे गृह-  
 स्थ होवै तौ फिर अक्रूर क्यों कहें कि विषय में रमित शूद्र  
 तिसको वेदको कीर्तन आदि वडो दुर्लभ है इस वाक्य से  
 मालूम परता है कि गृहस्थ शूद्र के वेद को कीर्तन आदि  
 दुर्लभ है तथा विरक्त शूद्र को दुर्लभ नहीं है पुण्य है यह

शूद्रजन्मेतिशब्दस्य नार्थोज्ञेयः कदापि च ।  
 श्वशब्दज्ञैः शूद्रेवजन्मयस्यवै २ सशूद्रजन्माविज्ञेय  
 स्तथापिविषयातुरः । द्वाभ्यांकुलक्षणां याम्बैदुर्लभतेन  
 तत्सदा ३ इति भा० द० पू० शं० मं० अष्टत्रिंशोऽ  
 ध्यायेअष्टत्रिंशवेणी ॥ ३८ ॥ श्लो० ॥ ४ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ सत्योक्तेकंसवाक्येच स्वामिद्रोहा  
 घपद्वतिम् । ब्रह्मन्प्राप्नोतिचाक्रः कपटेकृष्णपात  
 कम् । किमुवाचतदाक्रः पृष्टःकृष्णेनवैव्रजे १ वाचक

भ्रम है १ वाचक बोले शूद्रजन्मा इस शब्दका शूद्र अर्थकभी  
 भी नहीं जानना चाहिये शूद्रजन्मा इसको यह अर्थ है कि  
 शूद्र सरीकेजिसको जन्म होवै तिसको शूद्रजन्माजानना चा-  
 हिये २ जन्मतो भया ब्राह्मण क्षत्री वैश्य के कुलमें परन्तु भ्रष्ट  
 सरीके आचरण करै सज्जन प्राणी जानिलीजो यह अर्थ को  
 में गुप्त लिखाहूं एक अष्टदूसरे विषय से इनदोनों खराब ल-  
 क्षणों करिके संयुक्त जो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तिमको वेदको  
 कीर्तन आदि दुर्लभहै ऐसाअक्रकहेथेशूद्रको नहींकहेथे ॥३॥  
 इति भा० द० पू० शं० मं० अष्टत्रिंशोऽध्यायेअष्टत्रिंश वेणी ॥ ३८  
 श्लोकं ॥ ४ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी श्रीकृष्ण ब्रजमें अक्रूरसे पूछे  
 कि आप किस काम के वास्ते वृजको आये हो तब अक्रूर  
 कृष्णसे क्या कहते भये जो कंसका वचन कृष्ण से कहैं कि  
 आपको तथा बलदेव को मारने वास्ते यज्ञ देखने के मिससे  
 कंसने बुलाया ऐसा कहैं तब मानिकके विश्वासघातको पाप  
 अक्रूर को लगेगा क्योंकि यह बात गुप्त करिके कंस अक्रूर से  
 विश्वास जानिके कहाया कि अक्रूर किसीसे नहीं कहेंगे तथा

उवाच ॥ पृष्टः कृष्णेन चाकूरः संकटम् प्राप वै तदा । दारु  
 ण्युभयतो दुःखं ज्वलितेऽन्तः करोयथा २ ध्यानमग्नो  
 बभूवाथ ध्याने कृष्णेन प्रेरितः । कपटम् भोजराजस्य  
 माविः कुरुन दोषभाक् ३ मत्तस्त्रासं त्यजत्वम्बै सर्वज्ञो हं  
 न लौकिकः । अतो वदत्कंसवाक्यं मक्रूरः कपटावृतम् ४  
 इति भा० द० प० शं० मं० एकोनचत्वारिंशोऽध्याये  
 एकोनचत्वारिंशवेणी ॥ ३६ ॥ श्लो० ॥ ६ ॥

जो कंस सरीके कपट करिके कहैं किमहाराज आपको मामा  
 है कंस राजा भी है सो यज्ञको तमाशा देखने को बुझाया है  
 तब भगवान् की तरफ से कपटको पाप भागेंगे १ वाचक बोले  
 जब श्रीकृष्ण अकूर को पूछे कि आपका आना वृज में किस  
 वास्ते हुआ है तब अकूर बड़े दुःखको प्राप्त भये कैसा दुःखी  
 भये जैसा एक लकड़ी दोनों तरफ से जलती होवै उस लकड़ी  
 को कोई आदमी हाथ से पकाड़ि लेवै दोनों तरफ से जलने  
 को योगजगा लकड़ी छोड़ै तो हाथ जलने से बचैगा तैसा अ-  
 कूर होगये कंसको पक्ष करें तो भगवान् के द्रोही होवैं भगवान्  
 को पक्ष करें तो कंसके द्रोही होवैं तब प्राण त्यागनेको विचार  
 करते भये २ अकूरने कृष्णको ध्यान किये उस ध्यानमें कृष्ण  
 अकूर को आज्ञा देते भये कि आप दुःख क्यों सहते हो भक्त  
 के दुःख से हम दुःखी होते हैं कंसकी कपट को आपु मति  
 प्रगट करो हमारी तरफ से कपटको दोष आपु को नहीं होवेगा ३  
 भगवान् कहे हमारी तरफ से कपट की त्रास त्यागि देवो क्यों  
 कि हम सब संसार को कर्म जानते हैं आदमी सरीके हम  
 नहीं हैं हे श्रोता हो ऐसी भगवान् की आज्ञा पायकै अकूर कंस  
 के कपट वचन कृष्ण से कहे यज्ञ देखने को तुम दोनों जनों



श्रोतार ऊचुः ॥ यंसंन्यस्यगमिष्यन्ति योगिनो यो  
 गतत्पराः । सोयंकृष्णः किमिति वा शंकेयम्महतीचनः  
 १ वाचक उवाच ॥ योगिभिश्चाप्यगम्यन्त  
 न्तिमुमुक्षवः । स्वस्वमिष्टं वदन्ति स्म ॥ ३६ ॥  
 अकूरेणाप्यतश्चोक्तः कृष्णो ब्रह्मस्वरूपवान् २ इति  
 द० पू० शं० मं० चत्वारिंशोऽध्याये चत्वारिंशवेणी  
 ४० ॥ श्लो० ॥ ६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कथमुच्छिष्टमन्यस्य  
 दुरात्मनाम् । दधारभगवान्वस्त्रं त्रैलोक्यपतिरीश्वर-  
 को कंसने बुलाया है ४ इति भा० द० पू० शं० मं०  
 चत्वारिंशोऽध्याये एकोनचत्वारिंशवेणी ३६ ॥ श्लोक ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी योग में चतुर बड़े ऐसे  
 जन सब संसारके सुखको त्यागिके जिस ब्रह्म में  
 सो कृष्ण है ऐसी शंका हमारे सब के मन में होती है ।  
 बोले जिस ब्रह्मको मुमुक्षु जीव जाते हैं उस ब्रह्मको  
 नहीं जायसकते वह ब्रह्म बड़ा कठिन है परन्तु  
 अपने इष्टको ब्रह्म के स्वरूप सरीके बड़ाई करिके  
 वर्णन करते हैं इस वास्ते अकूर भी कृष्णको  
 करिके वर्णन करते भये २ इति भा० द० पू० शं०  
 रिंशोऽध्याये चत्वारिंशवेणी ॥ ४० ॥ श्लोक ॥ ६ ॥

श्रोता पूछते भये तीन लोककेपति भगवान् दूसरे  
 उच्छिष्ट माने पहिरा हुआ कपड़ा आप क्या  
 बड़ी शंका होती है हर ३।१ वाचक बोले धर्म  
 लिखा है कि मामा को पहिरा वस्त्र तथा  
 पहिरा वस्त्र तथा ब्रह्मचारीको पहिरा वस्त्र इन्ह वस्त्र

वाचक ॥ मातुलानां कुमारीणां कन्यानां ब्रह्मचारि  
 नोच्छिष्टधारणे दोषं धर्मशास्त्रमनन्विदम् २  
 तेषां मपि धार्यः कदाचन । मातुलस्य दधौ  
 ३ इति भा० द० पू० शं० मं०  
 अध्याये एकचत्वारिंश वेद्यां ॥ ४१ ॥  
 श्लोक ३८ से ३९ तक ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ महदद्भुतमेतद्धिमथुरायाः कुल  
 स्त्रियः । कृष्णदर्शनमोहोत्थस्मरत्तोमाह्विमोहिताः १  
 बभूवुर्नविदुस्ताश्च स्वा मानं वसनादि च । नायन्धर्मकु  
 लस्त्रीणाम्पुंश्चलीनामिदं मतम् २ वाचक उवाच ॥  
 गोवर्द्धनधरादीनि तादृशानिवहूनि च । ब्रजे कृतानि  
 पहिरि लेवैगा तोपाप नहीं होवैगा ३ कमर के नीचे को पहिरा  
 बल्लतौ मामा कन्या ब्रह्मचारी इन्ह को भी कभी नहीं धारण  
 करना दूसरे की क्या बात है श्रीकृष्ण अपने मामा को बल्ल  
 जानिके उच्छिष्ट वस्त्र धारण करते भये ॥ ३ ॥ इति भा० द०  
 पू० शं० मं० एक चत्वारिंशेऽध्याये एकचत्वारिंशे वेद्यां ॥ ४१ ॥  
 श्लोक ॥ ३८ ॥ से ३९ तक ॥

श्रोता पूछते भये बड़े आश्चर्य की बात है कि मथुरा की  
 स्त्रियाँ कृष्णको देखिके कामदेव करिके विह्वल होगई १  
 एसी विह्वल होजाती भई कि अपनी देहकी तथा कपड़ाकी  
 शुद्धि भूलिगई हे गुरु जी पर पुरुष को देखिके विह्वल हो  
 : । यह गृहस्थकी स्त्रियोंको धर्म नहीं है यह धर्मतौ व्यभि  
 चारिणी स्त्रियोंका है यह बड़ी शंका होती है २ वाचक बोले  
 में कृष्ण गोवर्द्धन को उठाये उस सरीके और अनेक कर्म

श्रोतार ऊचुः विभूयात्पि. २८ भि.  
 तम् । शास्त्रेष्ववस्थानियमोनकृतस्तस्यसेवने १  
 कृष्णवाक्येन पितुर्यनश्चसेवनम् । २९  
 शंकेयं धयते मनः ॥ २॥ वाचक उवाच ॥ नैव  
 वृद्धस्तेनोक्तोऽत्र पिता तदा । ३०  
 षोमाता ततः परम् । ज्ञात्वोवाचेति कृष्णो वै ध-  
 न्त्विदम् ३ इति भा० द० पू० शं० मं० ५ च च  
 ध्याये पंचचत्वारिंशो वेणी ४५ ॥ श्लोक ॥ ७ ॥

श्रोता पूछते भये श्रीकृष्णने कहे कि वृद्धा पिताको  
 करना चाहिये परन्तु शास्त्र में ऐसा नियम नहीं है कि  
 पिताको सेवन करना और जवान पिताको सेवन नहीं  
 १ कृष्णके वचन करिकै क्या मालूम परता है कि समर्थ  
 होवै तौभी जवान पिताको सेवन नहीं करना समर्थ होवै  
 वा असमर्थ होवै तब वृद्धा पिताको सेवन करना ऐसा  
 के वचन से मालूम परता है यह शंका हमारे सबके  
 कंपायमान करती है २ वाचक बोले (मातरं पितरं वृद्धं)  
 क में वृद्धको अर्थ वृद्धापन को भगवान् नहीं किये कि  
 वृद्धाको नाम है वृद्धको अर्थ कृष्ण ऐसा कियेथे कि सर्व  
 से पिता वृद्ध कहे श्रेष्ठ है तथा धर्म शास्त्रभी सब धर्मों  
 को बड़ा कहते हैं पिता से माता बड़ी है ऐसा धर्मशास्त्र  
 मत जानिकै श्रीकृष्ण वृद्ध पिताको पूजन करने वास्ते  
 यह नहीं कहेथे कि वृद्ध पिताकी सेवन करना जवान पि  
 सेवन नहीं करना ३ इति भागवते द० पू० शं० मं०  
 चत्वारिंशोऽध्याये पंचचत्वारिंश वेणी ४५ ॥ श्लोक ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ ब्रजगोकुलं यो रेके योजने मथुरापुरी ।  
गोप्यो मथुरां भगवान् ब्रजम् १ नज  
तक्रदीरदधीनिच । नवनीतान्यपितथानाया  
१ २ परस्परं च मित्रार्थे गच्छंति बहुयोज  
। नराश्चैतत्कथं स्वामिन्नंतर्दाहो द्वयोरभूत् ३  
क उवाच ॥ लोकापवादात्संभीतो मायाम्प्रेर्य जग  
ति । मोहयामास ता गोपीर्नायातं तांस्समाकरोत् । मनः  
श्रोता पूछते भये ब्रज से गोकुल से मथुरापुरी चारि कोश  
तथा मथुरा से ब्रज ४ कोश है परन्तु ब्रज को कृष्ण कभी  
गये और गोपी भी मथुरा को कभी नहीं गई १ गोपियां  
छाँछ माखन बेचने को भी मथुरापुरी को नहीं आई  
बेचने को आतीं तौ भी कृष्ण की मुलाकाति हो जाती २  
स्वामिन् परस्पर मित्र की मुलाकाति करने वास्ते स्त्री  
पुरुष हजारों कोश चले जाते हैं और कृष्ण की तथा  
की ऐसी भिताई रही फिर चारि कोश पर मुलाकाति  
नहीं किये कृष्ण के मनमें मोह की ज्वाला जलिरही है  
गोपियों के भी हृदय में मोह की ज्वाला जलिरही है  
बड़ी शंका होती है ३ वाचक बोले भगवान्  
निंदा से डरते भये कि वृजमें लीला किया तब हम  
अब हमारी अवस्था ज्ञान भई जो गोपी वृज से हमारे  
मथुरा को आवेंगी तथा वृज को हम जावेंगे तो पेश्तर  
के चरित्र मथुरा में तथा वृज में करेंगे तो संसार में  
निंदा होवेंगी ऐसा डरके माया से गोपियों को मोह  
भये मोह को प्राप्त भई जो गोपी सोमनही मनमें  
परिताप तो करना परन्तु मथुरा आने को विचार  
नहीं करती भई भूलि गई मथुरा जाने वास्ते तथा निंदा

कदापिमथुरामतो नैव ब्रजं हरिः ४ इति भागवते द०  
शं० मं० षट्चत्वारिंशेऽध्याये षट्चत्वारिंशवेणी ॥ ४६ ॥  
श्लोक ॥ ५ से ६ तक ॥

श्रोतारुचुः ॥ गोपीभिः ५ । १ । १ । १ ।  
भाषिता । मुनीनामपि या ब्रह्मन् दुर्लभा गीयते जनैः  
वंचनाभक्तिर्नोदिता मुनिभिर्मुने १ वाचक उवाच ॥  
हान्तर्वचनावाह्ये भक्तिश्च नवलक्षणा । न सा भि  
विज्ञेया कर्तरी सा विधीयते २ भक्तेश्च लक्षणं वाह  
प्येको न दृश्यते । सर्वमन्तर्विराजन्ते सा भक्तिर्

मानिके कृष्ण भी ब्रजको नहीं गये इस वास्ने हे श्रोता  
गोपी मथुराको नहीं गई और भगवान् ब्रजको नहीं आये ।  
इति० भा० दशम० पू० शं० नि० मंजय्या षट्चत्वारिंशेऽध्याये  
षट्चत्वारिंशवेणी ॥ ४६ ॥ श्लोक ॥ ५ से ६ तक ॥

श्रोता पृच्छते भये हे गुरु जी गोपियां क्या बड़ी भक्ति  
कृष्ण में करती भई जिस भक्ति की तारीफ उद्धव किया बि  
ऐसी भक्ति योगी लोग भी नहीं कर सकेंगे जो कोई कहें बि  
पति आदिसव परिवारसे कपट करिके भगवान् की प्रीति  
गोपियोंने किया तो कुटुंब से कपट करना यह कुलु उत्तम  
कर्म नहीं है इस कर्मको तो मुनिलोग बुरा कर्म कहते हैं १ वाचक  
बोले मनमें तो कपट राखै ऊपरसे नवधा भक्ति करै सो भक्ति नहीं  
है वह तो धर्म को काटने दारते कतरनी है २ मानुष्यके ऊपरसे  
तो भक्तिको लक्षण एक भी न देख परे तथा मनमें सब भक्ति  
को लक्षण होवे ऐसी भक्ति मोक्ष देने वाली है ३ गोपियां  
ऊपरसे तो निंदारूप कर्म करती भई तथा मनमें भक्ति को  
सब लक्षण करती भई इस वास्ने उद्धवने कहे हैं कि गोपीने

यिनी ३ गोपीपुलक्षणं चैतदतोक्ता मुनिदुर्लभा ४ इ०  
भा० द० पू० शं० मं० सप्तचत्वारिंशोऽध्याये सप्तचत्वा  
रिंशवेष्टी ॥ ४७ ॥ श्लो० ॥ २५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ सैरंध्रीकृष्णरमणं श्रुत्वानोभ्रमितं  
मनः । कथमेतत्कृतं तेन कृष्णेन नरवत्त्विदम् १ वाचकं  
उवाच ॥ वर्णाश्रमविहीनश्च क्लीवस्त्रीपुरुषादपि ।

भक्तानाम्प्रेमबद्धश्च नृत्यते जगदीश्वरः २ काष्ठपुद्गल  
बद्धिष्णोश्चरितन्नसिप्रोतवत् । वृषवच्चैव श्रोतारोऽतो

भक्ति भगवान् की किई है सो भक्ति मुनियन को दुर्लभ है  
४ ॥ इति भा० द० पू० शं० मं० सप्तचत्वारिंशोऽध्याये सप्तचत्वा  
रिंशवेष्टी ॥ ४७ ॥ श्लोक ॥ २५ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरु जी कुवरी से श्रीकृष्णको रमण  
सुनिकै हमारा सबको मन बहुत भ्रमित होगया है १ वाचक  
बोले संन्यासी नहोवै ब्रह्मचारी नहोवै वानप्रस्थ नहोवै गृहस्थ  
नहोवै ब्राह्मण क्षत्री वैश्य होवैचाहे चाहे स्त्री पतित होवैचाहे  
नपुंसक होवै सब कर्मसे भ्रष्ट होवै चाहे पुरुष होवै परन्तु भग-  
वान् की सेवनकरै सोई भगवान् को प्यारा है सब कर्मसे नीच  
होवै तो कुछ भगवान् वुरानहीं मानेंगे और बड़ा उत्तम होवै और  
भगवान् की प्रीति नकरै तो उस को भगवान् घेरी करिकै  
मानते हैं भक्त जनोंके प्रेमरूप रस्सी में बंधे हुये हैं जैसी नाच  
भक्तजन नचाते हैं तैसी नाच भगवान् नाचत हैं २ जैसी काष्ठ  
की पुतरी नचाने वाले आदमी की आज्ञा से काम करती है  
तैसा भक्त की आज्ञा से भगवान् सब काम करते हैं तथा जैसा  
बेल की नाकमें रस्सी डालिके आदमी जिधर को खेजाता है  
उधरको खेला जाता है तथा वेद रूप कृष्ण वेदकी श्रुति रूप

यथावद्विवांछना । तथाचक्रेजगन्नाथो वेदस्तादृक्चसा  
स्मृता ३ इति भा० द० पू० शं० मं० अष्टचत्वारिंशेऽ  
ध्याये अष्टचत्वारिंशवेणी ४८ श्लो० ५ से ६ तक ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ महदाश्चर्यमेतद्धि यत्कुंतीमंगले  
ष्वपि । नानीतावसुदेवेन वन्दीमुक्तेनकापिच । स्वाल  
येचकथम्बिप्रदुःखितासापिवैमुहुः १ वाचक उवाच ॥  
सप्तद्वीपेशभार्यासा दुःखितापीशवर्जिता । तथापि  
कुन्त्यानयने शक्तिशशौरेर्नचाभवत् २ इति भा० द०  
पू० शं० मं० एकोनपंचाशत्तमेऽध्याये एकोनपंचाशद्  
वेणी ॥ ४६ ॥ श्लो० ॥ ७ ॥

कुवरी भगवान् की दासी इसवास्ते जैसी कुवरी बांछा किया  
तैसे भगवान् काम करते भये ॥ ३ ॥ इति भा० द० पू० शं०  
मं० अष्टचत्वारिंशेऽध्यायेअष्टचत्वारिंशवेणी ॥ ४८ ॥ श्लोक ॥  
५ से ६ तक ॥

श्रोता पूछते भये वड़े आश्चर्यकी बातमालूमपरती है कि  
वसुदेव बंदीखाना से छूटिगये तथा अनेक प्रकार को मंगल  
वसुदेवके घरमें होताभया तौभी कुंतीको अपने घरमें नहीं  
लेआये लोकशास्त्र की रीति है कि बहिनि तथा लडिकी को  
बापमा भाई अपने घरले आते हैं सुखी होती है बहिनि बेटी  
तब तौ चाहै देरको लेआते हैं परन्तु दुःखी देखिकै तौ बड़ी  
जल्दी लेआते हैं सो वसुदेव कुंती को क्यों नहीं लेआये यह  
तो बड़ी शंका होती है १वाचक बोले कुंती सातद्वीप पृथ्वीको  
राजा जो पांडु तिसकी स्त्रीथी तथा बिधवा रही बहुत दुःखी  
थी तौभी कुंतीको अपनेघर ले आने को वसुदेव की सामर्थ्य  
नहींथी क्योंकि वसुदेव गरीब थे और वह कुंतीतो दुःखीभी

श्रोतार ऊचुः ॥ जरासन्धसमानीतास्त्रयोविंशति  
सन्मिताः । अर्जोहिण्योदतास्तेन कृष्णेन तस्य संगरे १  
हतास्तप्तदशावृत्ता वेतादृश्यः पुनः पुनः । महदाश्चर्यमे  
तद्धि वीरमर्यादनाशनम् । मर्यादारक्षणार्थाय तस्या  
बिर्भाव उच्यते २ वाचक उवाच ॥ अर्जोहिणीनां नि  
र्माणो जरादत्तवरोहिसः । यथेच्छारचितुं शक्नुस्ता  
स्समादाय चागतः ३ ज्ञात्वा तां भगवान् कृष्णश्शूरवीर

होगई तौ भी सात द्वीप पृथ्वीकी रानी थी हे श्रोता हो इस वास्ते  
कुंतीको वसुदेव अपने घर में नहीं लेआये २ इति भा० ६० पू०  
शं० मं० एकानपंचाशत्तमे ० एकानपंचाशद्वेणी ॥ ४६ ॥ श्लोक ७ ॥  
श्रोता पृथ्वी भये तेईस अर्जोहिणी सेनाको जरासंध अपने  
संग लेके श्रीकृष्ण के संग युद्ध करनेको आता भया तब जरा-  
संधकी तेईस अर्जोहिणी सेनाको कृष्ण युद्ध में मारि डालते  
भये १ बड़े आश्चर्य की बात मालूम परती है कि इतनी  
सेना जरासंध किधर से लेआया पृथ्वी में सेनातो बहुत थी  
परन्तु दुष्ट सेना इतनी किधारी जिस को जरासंध १७ दफे  
बेटोरे २ लेआया तथा २३ तेईस अर्जोहिणी सेना १७ दफे  
कृष्ण ने मारि डाले अभी बड़े आश्चर्य की बात है इतनी फौज  
में कोई एक भी शूरवीर नहीं थे इस को मारने में तो क्या  
मालूम परा कि फौज में शूरवीर रहे होंगे परन्तु मर्य धीरों  
की मर्यादा कृष्ण ने नाश करि दिया और मर्यादा पालन करने  
वाले श्रीकृष्णको अदत्ताभी भयाथा फिर धीरोंकी मर्यादा  
क्यों नाश करते भये गुरुजी यही गुंता होनी है ३ वाचक बोले  
जरा नाम राजसी जरासंधको परदान दियाथा कि तू जिनकी  
सेना बनाया था वेही जिनकी सेना बनाए भेगा इस वास्ते



विवर्जिताः । चक्रे विनाशनं तासाम्मर्यादारक्षको हरिः  
४ इति भा० द० पू० शं० मं० पंचाशत्तमेऽध्याये पंचा  
शद्वेणी ॥ ५० ॥ श्लोक ॥ ४३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कथं नृपट्वा प्रदुद्राव यवनं भगवान्  
हरिः । एषामहीयसीशंका तां छिन्धि भ्रमदां च नः १  
वाचक उवाच ॥ यादवानां विनाशाय यदुभिर्द्वासिते  
न च । गर्गेणोत्पाद्यतनयन्ददौ तस्मै वरमुनिः २ स्था  
स्यन्ति यादवा युद्धे यदा ते पुरतस्सुतः । तदा भस्म  
जरासन्ध ते ईस ते ईस अक्षौहिणी सेनावनायकैश्चेत्याया कृष्ण  
से युद्ध करने वास्ते ३ मर्यादा के पालन करने वाले जो श्रीकृष्ण  
सो विचारिलिया कि इस सेना में वीर शूर नहीं हैं इस वास्ते  
जरासन्ध की सेना को नाश करते भये मर्यादा को नाश नहीं  
किये ४ इति भा० द० पू० शं० मं० पंचाशत्तमेऽध्याये पंचाश  
द्वेणी ॥ ५० ॥ श्लोक ॥ ४३ ॥

श्रोता पूछते भये यवन को देखिके भगवान् क्यों भागते  
भये यह बड़ी शंका हमारे सबके मनको भ्रम दुःख देती है  
इस शंकाको आप काटो १ वाचक बोले यदुवंशी सब अपनी  
सभा में गर्ग मुनिको इसते भये आपने कुलकी लड़िकी के  
वचन सुनिके कि गर्ग मुनि नपुंसक हैं यदुवंशीकी कन्या गर्ग  
की स्त्री थी सोई स्त्री यदुवंशियों से कहती भई गर्ग भगवान् के  
पूजन में राति दिन रहैथे स्त्री से प्रीति कम करतेथे इस वास्ते  
गर्ग की स्त्री कहती भई तब यदुवंशियों करिके हसे हुये जो  
गर्ग सो यादवों को नाश करने वास्ते एक पुत्र उत्पन्न करि  
के उसी पुत्रको वरदान देते भये २ कि हे पुत्र युद्धमें यदुवंशी  
तेरे कुल के सामने तथा तेरे सामने जो खड़े होवेंगे तौ उसी

नित्यसत्यमेतन्मयोदितम् । एतद्ज्ञात्वासुदुद्राव  
 ३ इति भा० द० उ० शं० मं० एक  
 एकपञ्चाशत्तमवेणी ॥ ५१ ॥  
 श्लोक ॥ ६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ मर्त्यलोकेस्थिते कृष्णे कथञ्चुद्रादिल  
 णाः । पृथिव्यां समवर्तन्तमहत्कौतूहलन्त्वित्त्वदम् १  
 वाचक उवाच ॥ यत्प्रमाणाः प्रजास्तस्मिन् द्वापरे विधि  
 नाकृताः । तत्तथावर्तितास्सर्वा न न्यूनानाधिकास्तथा  
 २ कृष्णदर्शनप्रेम्णैव हर्षितो नृपसत्तमः । पर्वतानप्य  
 वलत भस्म होजावैंगे हे श्रोताहो इस बातको श्रीकृष्णजी  
 जानिकै भागते भये कुछ डरिकै नहीं भागे ३ इति भा० द०  
 उ० शं० मं० एकपञ्चाशत्तमेऽध्याये एकपञ्चाशत्तम वेणी ॥ ५१ ॥  
 श्लोक ॥ ६ ॥

श्रोता पृच्छते भये श्रीकृष्ण जी मर्त्यलोकमें विराजेथे फिरि  
 पृथ्वीमें मानुष्य पशु वृक्ष पर्वत आदिके जो सब वस्तु पेशतर  
 बड़ी बड़ी थीं सो वस्तु छोटी २ क्यों होगई यह बड़ा आश्च-  
 र्य होता है क्योंकि कृष्ण भगवान् मर्त्यलोक से वैकुण्ठ को  
 गये हांते तब पेशतरकी बड़ी २ वस्तु छोटी २ होजाती  
 तब शंका नहोजाती परन्तु कृष्णके साम्ने घिपरीत होनेलगा  
 यह बड़ी शंका होती है १ वाचक बोले द्वापर युगमें जैसी  
 प्रजा ब्रह्मा बनायेथे तैसी प्रजा मृत्युलोक में उस वलत थी  
 नतौ तिलप्रमाण कम और न तिलप्रमाण ज्यादा परन्तराजा  
 मुचकुंदने श्रीकृष्णके दर्शन के प्रेम करिकै खुशीहोके पर्वतको  
 भी छोटा जानि लेते भये और चीज की तो क्या बात है इसका  
 यह अर्थ है कि कृष्णके दर्शन से सब वस्तुको राजा थोरी

एतन्नात्वा चान्येषांचैवकाकथा ३ इति भा० द० उ०  
शं० सं० द्विपंचाशत्तमेऽध्याये द्विपंचाशत्तमवेणी ॥  
५२ ॥ श्लो० ॥ २ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ नापश्यद्रुक्मिणीब्रह्मन् नमस्कारा  
दृतेतदा । ब्राह्मणायचदातुम्ब्रै नमुनिश्चैवसोद्विजः १  
धनादिवाञ्छासततं तस्यचेतसिवर्तते । साकथन्नददौ  
वित्तन्नमश्चक्रेचकेवलम् २ वाचक उवाच ॥ तत्पिता  
सागरःपीतस्तत्पतिःपदताडितः । तदातस्यानुजोविप्रै  
श्छेदितःपूजनायच ३ ब्राह्मणेनकृतानेतान् ज्ञात्वा  
जानता भया एक कृष्ण के प्रेमको बड़ा मानता भया ॥ ३॥  
इति भा० द० उ० शं० सं० द्विपंचाशत्तमेऽध्यायेद्विपंचाशत्तमवेणी  
॥ ५२ ॥ श्लो० ॥ २ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी ब्राह्मण को देनेयोग्य वस्तु  
तीनलोकमें रुक्मिणी नहीं देखीकि यह वस्तु ब्राह्मण को देना  
चाहिये इसवास्ते हारिमानिके कोरानमस्कार करतीभई बड़ी  
शंका इसमें होती है किवो ब्राह्मण मुनितौरहा नहीं उसको  
तो जोई वस्तुदेती सोईलेता फिर क्यों नहींदी १ उसब्राह्मण  
के तौ धनआदिलेकै जोवस्तु संसारमें है सब चीजको लेनेकी  
मनमें इच्छाथी फिररुक्मिणी धन आदि वस्तु क्योंनहींदिई  
कोरानमस्कार करिलिया है २ वाचक बोले लक्ष्मी को बाप  
जोरुमुद्र तिसको ब्राह्मण ने पीलिया तथा लक्ष्मीके पति जो  
भगवान् तिनको ब्राह्मण ने लात से मारा लक्ष्मी को छोटा  
भाई कमल तिसका ब्राह्मण देवतों के पूजन वास्ते तोड़ते  
भये ३ ब्राह्मणों को किया ऐसा कर्म कौ समुझिकै लक्ष्मी  
ब्राह्मणोंसे रूठिगई ब्राह्मणोंको धन आदि पदार्थ नहीं देती

भा० शंकानिवारण मंजरी ।

रुष्टाचसिंधुजा । नददातिधनन्तेभ्यश्चातश्चक्रेनमस्तु  
४ इति भा० द० उ० शं० मं० त्रयःपंचाशत्तमेऽ  
त्रयःपंचाशत्तमवेणी ॥ ५३ ॥ श्लो० ॥ ३१ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कथंबभूवसावाला रुक्मिणीदुःख  
संयुता । प्रभावज्ञाभगवतः कृष्णस्यपरमात्मनः १  
वाचक उवाच ॥ आत्मनःकारणंज्ञात्वा युद्धेवीरवर  
क्षयम् । कलंकाज्जन्मतोभीता बभूवदुःखितासती २  
इति भा० द० उ० शं० मं० चतुःपंचाशत्तमेऽध्याये चतुः  
पंचाशत्तमवेणी ॥ ५४ ॥ श्लो० ॥ ४ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ यदुप्रवीरेणसुपालितांपुरीन्दुर्गस्य  
हे श्रोताहो इसवास्ते लक्ष्मीको रूप रुक्मिणी ब्राह्मणको धन  
नहीं दिया नमस्कार करि लेती भई ४ इति भा० द० उ०  
शं० मं० त्रयःपंचाशत्तमेऽध्याये त्रयः पंचाशत्तमवेणी ॥ ५५ ॥  
श्लोक ॥ ३१ ॥

श्रोता पृच्छतेभयेकि श्रीकृष्णकीस्त्री तथा कृष्णके प्रभावको  
जाननेवाली फिरि रुक्मिणी युद्ध देखिके दुःखी क्यों होगई  
यह बड़ीशंका होती है १ वाचक बोले युद्ध में बड़े बड़े शूरों  
को तथा वीरोंको नाश हुआ रुक्मिणी के स्वयंवर मेंतोरुक्मि  
णी विचार कियाकि यह कलंक मेरेको जन्म जन्म तक होग-  
या कि रुक्मिणी के विवाह में बहुत से शूरवीरोंको नाशहुआ  
हे श्रोता हो ऐसा कलंक अपने ऊपर विचारिके रुक्मिणी  
बहुत दुःखी होगई ॥२॥ इति भा० द० उ० शं० मं० चतुःपंचा  
शत्तमेऽध्यायेचतुःपंचाशत्तमवेणी ॥ ५४ ॥ श्लो० ॥ ४ ॥  
श्रोता पृच्छते भये श्रीकृष्ण करिके पालना हुई द्वारका

भावामरिभिस्सवंचनैः । अहर्निशंचैवसुदर्शनेनवै वि  
 आमितांचैवचतुर्दिशस्सदा । कथम्प्रविश्यासुचतांच  
 शम्बरो जह्वारशीघ्रंतनयंरमापतेः १ वाचक उवाच ॥  
 पणःकृतश्रीयदुनंदनेनवै द्विजस्समायातिसवंचनोय  
 दि । कुशस्थलीम्मेति प्रियाम्मनोहरान्नवारणीयश्च  
 त्वयासुदर्शन २ इतिज्ञात्वासुरशशीघ्रन्धृत्वारूपंद्विज  
 स्यवै । प्रविश्यसंजह्वाराशु प्रद्युम्नंभयवर्जितः ३ इति  
 भा० द० उ० शं० मं० पंचपंचाशत्तमेऽध्याये पंचपंचाश  
 त्तमवेणी ॥ ५५ ॥ श्लो० ॥ ३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कथान्नवेशयामास सत्राजिदेव

पुरी तथा कपट करिके द्वारका के भीतर कोईभी जावै तौ  
 भस्म होजावै अथ २ में द्वारका पुरीके चारों तरफ सुदर्शन-  
 चक्र रक्षा करि रहाथा ऐसी कठिन द्वारका पुरीमें शंबरनाम  
 दैत्य कैसा प्रवेश करिगया तथा भगवान् के पुत्र को कैसा  
 हरिलेगया गुरुजी बड़ी शंका होती है १ वाचक बोले कृष्णने  
 द्वारका को बसायेथे तब ऐसी प्रतिज्ञा लियेथे कि हे सुदर्शन-  
 चक्र तुम राति दिन द्वारका पुरी के चारों तरफ रक्षा करने  
 वास्ते भ्रमण करो परन्तु ब्राह्मण वंश चाहै तौ असिज आवै  
 द्वारकाको तौ उसको मनानहीं करना जो कभी कोई कपट  
 करिके द्वारकाको ब्राह्मण को रूप धरिके आवै तौउसकोभी  
 मति मनाकरना २ एसी कृष्णकी प्रतिज्ञा को शंबरसुर जानि  
 कै ब्राह्मणको रूप धरिके द्वारका में प्रवेश करिके श्रीकृष्ण के  
 पुत्र को हरिलेगया ३ इति भा० द० उ० शं० मं० पंचपंचाश  
 त्तमेऽध्यायेपंचपंचाशत्तमवेणी ॥ ५५ ॥ श्लोक ॥ ३ ॥

श्रोता पृछते भये हे गुरु जी सत्राजित यादव देवता के

मंदिरे । मणिविप्रैस्स्वयंकस्मान्नचस्थापितवान्सुधीः १  
 वाचक उवाच ॥ सूर्योवाचमणिन्दत्त्वानायन्धार्यस्त्वया  
 सदा । स्थाप्योयन्देवसदने पावकाच्चासमन्विते २  
 इत्युक्तश्चमणिगृह्य चाजगामनिजालयं । स्नानं कर्तुं समु-  
 द्युक्तो यावत्तावद्द्विजैर्मणिम् ३ स्थापयित्वाजगामाशु-  
 कृतस्नानस्तदालयम् । एतदर्थं मणिविप्रैः स्थापयामा-  
 सतद्गृहे ४ इति भा० द० उ० शं० मं० षट्पंचाशत्तमेऽ-  
 ध्याये षट्पंचाशत्तमवेणी ॥ ५६ ॥ श्लो० ॥ १० ॥  
 श्रोतार ऊचुः ॥ महदाश्चर्यमेतद्वितत्रतत्रैववर्षति ।

मंदिर में ब्राह्मणों करिके मणिको क्यों स्थापना करते भये  
 आपु क्यों नहीं रखिदिया देवमंदिर में मणिको यह बड़ी  
 शंका है १ वाचक बोले सूर्यसत्राजितको मणिदेके पीछेसे सत्रा-  
 जित से कहेकि, इस मणिको रातिदिन धारण मति करना  
 जो तुमारी अग्निहोत्र की कोठरी है उसमें इस मणिको  
 रखिदेना २ सत्राजित सूर्यके ऐसे वचन सुनिके अपने घर  
 का आया विचार कियाकि पितादूसरास्नान किये देवमंदिर  
 में कैसा जावों ऐसा विचारि के जब तक स्नान करने की  
 तपारी किया तब अपिजोगोंसे मणिको रखायके आपुस्नान  
 करिके तब अग्नि होत्रकी कोठरी में होम करने वास्ते गया  
 है ३ हे श्रोता हो इसवास्ते ब्राह्मणों करिके देवमंदिर में सत्रा-  
 जित मणिको रखाता भया दोश्लोक को अर्थ एक में मिला  
 है यगम है ॥ ४ ॥ इति भा० द० उ० शं० मं० षट्पंचाशत्तमेऽ-  
 ध्याये षट्पंचाशत्तमवेणी ॥ ५६ ॥ श्लोक ॥ १० ॥  
 पत्तने भये गुरुजी बड़ी बड़ी आश्चर्य की बात

यत्रयत्रैवसोकूरो नोपतापानमारिका १ सप्तद्वीपेनचा  
 क्रूरो द्वारिकायांसदासते । कथम्बर्षतिदेवेशशंकेयम्ब  
 र्द्धतेचनः २ वाचक उवाच ॥ तपःकृत्वावरंलब्ध्वा गा  
 न्दिनीवैपितामहात् । यत्रत्वन्तवमर्ता चत्वत्सुतोपिच  
 वर्तते ३ मनसाचेच्छतेयत्रतत्रवृष्टिर्महीयसी । अतोऽ  
 क्रूरोमहाबुद्धिः प्रजासौख्यप्रकारकः ४ इति भा० द०  
 उत्तरार्द्धशं० मं० सप्तपंचाशत्तमेऽध्यायेसप्तपंचाशत्तम  
 वेणी ॥ ५७ ॥ श्लो० ॥ ३३ ॥

भागवतमें सुनि परतीहै कि जिस जिस गांवमें अक्रूर वास  
 करतेहैं उसी उसी गांवमें इन्द्र जलकी वर्षा करताहै तथा  
 उस गांवमें कोई उत्पात तथा महामारी की बीमारी नहीं  
 होती १ तब अक्रूर तो मथुरामें जन्मे मथुरा छोड़िके दूसरे  
 गांवको नहीं गये मथुरा छोड़िके द्वारकामें वास करतेभये  
 दूसरे ग्राममें वास नहीं किये फिर सातद्वीपमें तो अक्रूर  
 नहींहै तब सातद्वीपमें इन्द्र जलकी वर्षा क्यों करताहै यह  
 बड़ी शंकाहै २ वाचकबोले अक्रूर की माता गांदिनी ब्रह्माके  
 तप करिके ब्रह्मासे वरदान लेती भई ब्रह्मा कहे हे गांदिनी  
 जिस स्थानपर तू तथा तेरापति तथा पुत्र टिकेरहेगें ३ और  
 मन करिके वर्षा होनेकी इच्छा करेंगे उस स्थान पर वर्षा  
 बहुत होगी और मनमें अभिमान करिके प्रजाकी चुराई  
 विचारेंगे वर्षा होनेकी इच्छा नहीं करेंगे तब उसीवखत  
 प्राणभी तुमारा छूटि जावेगा हे श्रोताहो इस वास्ते बड़े  
 बुद्धिमान् अक्रूर रातिदिन प्रजाको सुख होने वास्ते अपने  
 मनमें राति दिन वर्षा होनेकी इच्छा करतेहैं ४ इति भा० द०  
 उत्तरार्द्ध शंकानिवारण मंज० सप्तपंचा शत्तमेऽध्याये सप्त  
 पंचाशत्तम वेणी ॥ ५७ ॥ श्लोक ॥ ३३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ सुतापितृस्वसुव्रह्मन् भगिनीसानि  
 यते। धर्मशास्त्रेषु गदितातामुवाह कथं हरिः १ वाचक  
 उवाच ॥ पर्वतपस्थितेशौरौ तस्ययापरिचारिकाः ।  
 विष्णुर्वरन्ददौ तस्मै भविष्ये हन्तवात्मजः २ रमयापिवरो  
 दत्तो दासीभ्योऽपिशुभस्तदा । युष्माकंतनुजाचाहं भ  
 विष्यामि त्वनेकधा ३ शौरेस्सहोदरास्तास्तु बभूवुः प  
 रिचारिकाः । तासु यज्ञेतदालक्ष्मीः प्रमाणेन यथाक्रमम्  
 ४ हरिर्विनानचान्येन ताश्चोद्वाह्याः कथंचन । कृष्णेनो  
 द्वाहिताः सर्वाश्चातो जात्वा पिपातकम् ५ इति भा० द०  
 शं० मं० अष्टपञ्चाशत्तमेऽध्याये अष्टपञ्चाशत्तमवेणी ॥  
 ५८ ॥ श्लोक ॥ ३१ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी, धर्मशास्त्रमें लिखा है कि, बुवा  
 की लड़की बहिनि है फिर कृष्ण ने बुवा की लड़की को क्यों  
 विवाह लेते भये १ वाचक बोले पहिले जन्ममें वसुदेव तप  
 करते थे तब वसुदेव की जो दासी थी सो सब वसुदेव की सेवन  
 में लगी रहि जब भगवान् वसुदेव को वरदान दिये कि हम  
 तुमारे लड़िका होवेंगे २ तब लक्ष्मीजी भी वसुदेव की दा-  
 सियों को वरदान देती भई हे दासियो तुमारी सबकी हम  
 बहुतसी कन्या होवेंगी ३ हे श्रोता हो ऐसे भगवान् के तथा  
 लक्ष्मी के वाक्य से पेशतर की जो दासी वसुदेव की थी सो  
 सब इस जन्ममें वसुदेव की बहिनि होती भई उन्ह वसुदेव  
 की बहिनी की पुत्री लक्ष्मी भई अपने वचन के प्रमाण करिके  
 ४ हे श्रोता हो लक्ष्मी रूप जो वसुदेव के बहिनी की लड़की  
 उनका भगवान् बिना दूसरा मान्य कैसा विवाह करेगा  
 इस वास्ते भगवान् जानै कि ये हमारी बहिनि है इनको हम



श्रोतार ऊचुः ॥ किमर्थंहरणंचक्रे  
 बुद्धिमान् । कुमारिकानामुद्वाहवर्जि  
 वाचक उवाच ॥ नृपाणाम्माननाशाय  
 रताः । भविष्यज्ञेनमुनिनावारितोनारदे ...  
 यदाभौम त्वमुद्वाहंकरिष्यसि । त . . .  
 ननैवचकारसः ३ स्वोद्वाहंराजकन् . . .  
 घातितः ४ इति भा० द० उ० शं० मं० . . .  
 ध्यायेएकोनषष्टितमवेणी ॥ ५६ ॥ श्लो० ॥

व्याह लेवेंगे तौ बड़ा पाप होवेंगा ऐसा जानिके  
 विवाह करते भये ५ इ० भा० द० उ० शं० मं०  
 तमेऽध्यायेअष्टपंचाशत्तमवेणी ॥ ५८ ॥ श्लोक ॥ ३१ ॥

श्रोता पूछते भये भौमासुर तौ बड़ाबुद्धिमान  
 फिर कुमारी कन्योंकोक्यों हरिलाता भया दोतो  
 लड़िकी थीं उनको तो विवाह नहीं हुआथा कि  
 कर्म करने वास्ते हरि लैआया यह पड़ी शंका  
 वाचक बोले राजों को अभिमान नाश करनेवास्ते सब  
 की लड़िकियों को हरिलै आया तथा अपना  
 वास्ते राजे लोग कुलुभी नहीं करिसके तब  
 चारेकि येसब कन्यातौ भगवान्की स्त्रीहोवेंगी ऐसा  
 कै भौमासुरको मनाकरि दिये २ नारदकहे हे भौ  
 हमारी आज्ञा लिये इन्ह लड़िकियों के संग अप  
 करना नहीं हे श्रोताहो ऐसा कहिकै भौमासुर के  
 करनेकी आज्ञा नारद नहीं दिये न भौमासुर बिवा  
 व्याह करने की इच्छा करते करते श्रीकृष्ण भौम  
 डाले कन्यों को अपनीस्त्री करिलिया इसवास्ते

श्रोतार ऊचुः ॥ उवाचरुक्मिणीकृष्णो भजस्वान्य  
 १ ॥ कदापीत्थं वचो लक्ष्मीनो वाचकमलापतिः १  
 तथापि न कृतस्तया । मानो भगवत  
 कदापीत्थं भ्रमश्चनः २ वाचक उवाच ॥ ज्ञात्वा  
 कृष्णो लोकहिताय च । योषिताम्मानना  
 कलिजानामिदं वचः ३ उवाचरुक्मिणीकृष्णो  
 मेव चो योषितश्चापि द्वयोस्त्रा  
 हरणं भौमनाम राक्षस किया ॥ ३ ॥ इति भा० द० उ०  
 म० एकोनषष्टितमोऽध्याये एकोनषष्टितमवर्णा ॥ ५६ ॥  
 ० ॥ ३३ ॥

श्रोता पूछते भये श्रीकृष्ण रुक्मिणी को कहेकि तुमहम  
 छोड़िके दूसरापति करिखेवो हे गुरु जी ऐसी महागँवार  
 वचनतौ भगवान् लक्ष्मी को कभीभी नहीं कहेथे इस  
 में क्यों कहे १ जो कोई कहे कि रुक्मिणी को मान  
 करने वास्ते ऐसे वचन कृष्ण कहेहैं तौभी गुरुजी कृष्ण  
 तौ रुक्मिणी कभी मानभी नहीं किही ऐसा खोटा  
 भगवान् क्यों कहे बड़ीशंका हमारे सबके मनमें है २  
 बोले श्रीकृष्णने कलियुगको राज थोरेही दिनमें होवे  
 ऐसा जानिके संसार को कल्याण होनेवास्ते तथा कलि-  
 स्त्रियों को माननाश करने वास्ते रुक्मिणी से ऐसा  
 कहेथे ३ कृष्ण विचार किहोकि स्त्रीको अभिमान नाश  
 नेवाजे इस हमारे वाक्य को कलियुग में जो कोई स्त्री  
 सुनेगी स्त्रीभी डरेगी तथा पुरुषभी डरेगा कि भाई स्त्री  
 प्रेमसब से बड़ा है देखो जरासे रुक्मिणीको भगवान्  
 हसी किये हैं तौभी रुक्मिणी प्राणत्यागने लगी  
 भाइयो ऐसा विचारिके स्त्रीतौ अपनेपतिसे प्रेमकरे और

संपरस्परम् । करिष्यंतीत्यतो वाक्यमुवाच जगदीश्वरः  
इति भा० द० उ० शं० मं० पठितम् ॥ १७ ॥  
वेणी ॥ ६० ॥ श्लो० ॥ १७ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ ज्ञात्वाप्यधर्मकर्वीतद्विगुणम्पाप  
भागभवेत् । तद्ज्ञावाचकथं रुक्मीददौ पौत्रमिहामतिः ।  
अनिरुद्धायमुनयो न प्रशंसन्ति रौरवे । तस्नेहं येन जीव  
स्य पातोऽस्ति लोकनिन्दनम् २ वाचक उवाच ॥ कृष्ण  
स्नेहबलं स्वस्य ज्ञात्वा दृष्ट्वा च तत्कृतम् । द्वयोर्भीति  
पुरुष अपनी स्त्रीसे प्रेमकरै इसधर्म से दसग कोईभी बड़ाधर्म  
नहीं है कलियुग के जीव ऐसा मानिजैवेंगे इसवाक्ते  
वतार में लक्ष्मी को छोटा वाक्य भगवान् कहे हैं कुछ छद्म  
से नहीं कहे ॥ ४ ॥ इति भा० द० उ० शं० मं० पठितम् ॥ अध्याये  
पठितमवेणी ॥ ६० ॥ श्लो० ॥ १७ ॥

श्रोता पूछते भये भागवत में लिखा है कि रुक्मी राजा  
जानता था कि पुआकी लड़िकी विआहने वालेको तथा मामा  
की लड़िकी विआहने वालेको तथा इन्हदून्हों लड़िकी को  
ऐसी जगह विवाह करिदेवेंतौ दोनोंको बड़ापाप होता है तथा  
ऐसा धर्म बिनाजाने विवाह करैगातौ पापहोगा और  
जानि कै करैगातौ दूनाहोगातौ जानिकै अधर्म फिरे  
अपने पुत्रकी लड़िकी को विवाह अनिरुद्धके संग, क्यों  
करिदिया क्योंकि वह लड़िकी अनिरुद्ध के मामाकी भी १  
जो कोई ऐसा कहे कि श्रीकृष्णजकिस्नेह करिकै अधर्मरूप  
कन्या दान किया है रुक्मीने तो ठीक है जिस स्नेह करिकै  
संसारमें निंदा होवै तथा मृत्यु भयेपर जीवको रौरव नरक  
में वास करमा पड़ेगा ऐसे स्नेहकी मनि लोग तारीफ नहीं  
करते २ वाचक बोले रुक्मी राजा विचार किया कि मैं

ददौपौत्रीचभोजराट् ३ इति भा० द० उ०  
 ० मं० एकषष्टितमेऽध्याये एकषष्टितमवेणी ॥ ६१ ॥  
 १० ॥ २५ ॥

श्रोता ऊचुः ॥ कृशस्थलीकृष्णप्रतापपालिता  
 तितच्चतुर्दिशः । अहोनिशंवैविधिकल्प  
 णिनां शक्तिर्नकेषामपितत्प्रवेशने १ आज्ञाविना  
 कथम्प्रविष्टाखलुचित्रिणीचता ।  
 आपने लड़िकेकीलड़िकी को श्रीकृष्णके पोतेको व्याहिदंजंगा  
 तब कृष्ण मेरे ऊपर बहुत प्रसन्न होंवेंगे ऐसा विचारिकै  
 अपने ऊपर कृष्णको स्नेह जानिकै अधर्म रूप व्याहसे भई  
 जो लोकमें निंदाकी प्राप्ति तथा रौरव नरकमें पड़नेका डर  
 दोनों को त्यागिकै अपनी पांतीको व्याह कृष्णके पोताके  
 संग करि देता भया रुक्मी विचार किया जो मेरे ऊपर  
 कृष्ण प्रसन्न रहेंगे तब लोकमें मेरी निंदा कौन करेगा तथा  
 नरकमें भी मेरेको न पटकैगा हे श्रोता हो ऐसा विचारिकै  
 अधर्मरूप व्याह जानिकै रुक्मी करता भया ॥ १॥ इति भा०  
 द० उ० शं० मं० एकषष्टितमेऽध्याये एकषष्टितमवेणी ॥ ६१ ॥  
 श्लो० ॥ २५ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी श्रीकृष्णके तेजकरिकै पालना  
 हुई ऐसी द्वारका पुरी तथा द्वारका के चारों तरफ रातिदिन  
 सदृशचक्र भ्रमण करिरहा हे ऐसी द्वारकापुरीमें कपट करि  
 कै कोई जायाचाहे तौ ब्रह्मदेव के धनाये-जो जीव तिनकी  
 सामर्थ्य तौ नहींथी कि कपट करि कै द्वारका के दरवाजे  
 भीतर जायसकै १ तब हे गुरुजी चित्रलेखा रक्षा करने वाले  
 प्राणियोंकी आज्ञा नहीं लिई धिनापूछे कपट करिकै द्वारका  
 में जायकै सोतेभये जो अनिरुद्ध तिनको पलंग सहित उठाये

सुप्तं समादाय सुखेन साययौ पौत्रं सपर्य्यंकयुतं रमापतेः २  
 वाचक उवाच ॥ विचिन्त्य बाणस्य बध्नं रमापतिस्तदात्म  
 जो ह्वाह स्वपौत्रकारणम् । आज्ञापयामास सुदर्शनं हरि  
 स्सा चित्रलेखा स्वपुरीम् प्रयास्यति ३ प्रवेशने निर्गमने  
 सकृत्त्वया नवारयामास सुदर्शनं श्रताम् ४ इति भा०  
 द० उ० शं० मं० द्विषष्टितमेऽध्याये द्विषष्टितमवेणी  
 ६२ ॥ श्लो० ॥ २३ ॥

श्रोतारञ्जुः ॥ पुत्रस्य प्राणरक्षार्थं बाणमातारमा  
 कै बड़े सुख से लेके चर्का गई कोई दूसरा भी यादवको नहीं  
 श्रीकृष्णके खुद पोताको हरि ले गई दूसरा यादवको लेजाती  
 तौ थोरी शंका होती कि कोटके बाहर सोता रहा होगा  
 ऐतौ खुदको ले गई यह बड़ी शंका होती है २ वाचक बोले  
 बाणासुरकी मृत्युको भगवान् विचारिके तथा बाणासुरकी  
 फन्याके संग अपने पौत्रको विवाह भी विचारिके सुदर्शन चक्र  
 को आज्ञा देते भये कि द्वारिकापुरीको चित्रलेखा राक्षसी आ-  
 वैगी उसको तुम द्वारिका के भीतर जाने देना एकदफे  
 तथा भीतरसे द्वारकाके बाहरका जाने लगे तब जाने देना  
 जो चाहें सो लेजावै एकदफे द्वारकाके भीतर जाने वास्ते  
 तथा भीतरसे कुछ चीज लेके बाहर जाने वास्ते तुम मना  
 मत करना हे श्रोताहो कृष्णकी ऐसी आज्ञाको मानिके सु-  
 दर्शन चक्र चित्रलेखाको मनानहीं किया इस वास्ते अनि  
 रुद्धको हरि ले गई ४ इति भा० द० उ० शं० मं० द्विषष्टित  
 मेऽध्याये द्विषष्टितमवेणी ॥ ६२ ॥ श्लोक ॥ २३ ॥

श्रोता पृछते भये हे गुरुजी अपने पुत्रकी रक्षा करने वास्ते

१ । नगनाकथम्पुरस्तस्थौ मोहितुं कामिनं यथा १ वाचक  
 ॥ तपस्तप्त्वावरं लब्ध्वा कोटराविधिना सती ।  
 ते ते नगनांचत्वां कोपि द्रक्ष्यति । पुरुषो  
 भविष्यति तदाऽशुभे २ एव नगनापुरस्त  
 कृष्णनाशाय तस्य सा ३ इति श्री भा० द० उ०  
 मं० त्रिषष्टितमेऽध्याये त्रिषष्टितमवेणी ॥ ६३ ॥  
 ॥ २० ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ नृगवाक्यमयोग्यं च श्रुत्वानोकाम्पि  
 । उन्मत्तवत्कथम्प्रोक्तं नृगेनाचार्ययादवम् १  
 माता नग्न होके कृष्णके सामने क्यों खड़ी  
 भई नग्न होके खड़ी होनेसे क्या मालूम परता है जैसा किसी  
 कामी के सामने स्त्री नग्न होके खड़ी होवैती वह कामी स्त्री  
 को देखिके मोहि जावै तो स्त्री जो जो हुकुम करे सो सो हुकुम  
 वह कामी प्राणी किया करे तैसा काम वाणासुरकी माता  
 किया यह बड़ी शंका होती है १ वाचक वाले ब्रह्माने कोटरा  
 को वरदान दिये थे कि हे कोटरे तीन लोकमें जो पुरुष है ब्रह्मा  
 विष्णु शिवभी तथा चौरासी लाख योनि के पुरुष मात्र सब  
 तेरे को नंगी देखेंगे तब उसी वखत भस्म होजावेंगे अकेले  
 तेरे पति को त्यागिके तेरा पति नहीं भस्म होगा और सब  
 जल्दी भस्म होवेंगे २ हे श्रोताहो कोटरा ऐसा जानिके श्री  
 कृष्णको भस्म करने वास्ते श्री कृष्णके सामने खड़ी भई है  
 ३ इति भा० द० उ० शं० मं० त्रिषष्टितमेऽध्याये त्रिषष्टितम  
 वेणी ॥ ६३ ॥ श्लो० ॥ २० ॥

श्रोता पछते भये हे गुरुजी जो वचन कृष्णसे राजा नृग  
 ने कहे थे गौदान देने वास्ते उस वचनको सुनिके हमारा  
 सबको मनकांपने लगा कि पागल सरीके वचन नृग क्यों कहे

वाचक उवाच ॥ सिकताभूमिमय्यादा द्वी . . .  
 गच्छते । प्रोक्ताःकमंडलौर्काशेतारकास्सरितास्मृताः  
 अदिवस्मर्त्यलोकंच तत्रापिभारतन्तदा । वर्षधाराश्रमि  
 रयो नृगवासेचभारते ३ एकोनविंशऽध्यायस्यपंचम  
 स्कंधमानतः । गिरयस्सप्तविंशाश्च नद्यःपंचचतुस्तथा ।  
 पंचमेप्रथमाऽध्यायेद्वीपास्सप्तप्रकीर्तिताः ४ सिकतास्सप्त  
 द्वीपाश्चवाणब्धिः ५ तारकास्तथा । वर्षधारासप्तविंशा २०

क्योंकि गुरुजी रेतीकी कणको क्या प्रमाण एक मूठी भी  
 रेती हाथमें लेवै तौ दस बीस कोटिकण मूठीभरि रेतमेंहोवै  
 फिरि गंगा आदि नदियोंमें तथा रेती वाले देशोंमें रेतसिवा  
 दूसरी माटी नहीं तहां कणकी क्या गनतीहै फिरि ताराभ  
 गनतीसे हीनहै वर्षाकी धारा पृथिवीमें पड़तीहै तिसकी गनत  
 नहींहै ऐसा वचन बड़ा अयोग्यहै हर ३ वाचक बोले कमंडलु  
 कोश हजार ३०००० श्लोकहै तिसमें ५७३ मेदिनीमें श्लो  
 १७ से ४२ तक भूमिकी द्वीप आदि पर्वतोंको नाम लिखा  
 सिकता ७ द्वीपकी नाम लिखाहै तथा तारका बड़ी २ नदिये  
 को नामलिखाहै २ अदिव मर्त्य लोकको नाम लिखाहै मर  
 लोक में भी भारतखंडको भी अदिव नाम है वर्षधार पर्व  
 को नाम लिखाहै तथा राजा नृग भारत खंडमें बसता थ  
 इसवास्ते भरतखंडकी नदियोंके पर्वतोंके तथा सात द्वीपों  
 मिसकरिके गोदान देनेकी गनती कृष्णसे गुप्त करिके बताय  
 हैकि सबको मालूम परनेसे पुण्यका नाश होजाताहै ३ पंच  
 स्कंधकी वोनइसअध्याय १६ में लिखाहै कि मर्त्यलोकमें भा  
 रत खंडमें पर्वतोंमें श्रेष्ठ पर्वत २७ हैं तथा नदियोंमें श्रेष्ठ नद्य  
 ४५ हैं तथा पंचम स्कंध के प्रथमऽध्यायमें लिखाहै कि पृथ्वी

श्रौषाप्रोक्तान्तुगेनैवै ५ दत्ताश्रधेनवस्तेनब्राह्मणेभ्यो नृपे  
नवै ६ इति भा० द० उ० शं० मं० चतुष्पष्टितमेऽध्याये  
चतुष्पष्टितमवेष्टी ॥ ६४ ॥ श्लो० ॥ १२ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कथंचकर्षयमुनाम्बलशेषश्चकथ्य  
ते । मर्यादानाशनंतस्याश्चक्रेकामातुरोयथा १ वाचक  
उवाच ॥ यदाकालियनिर्मृक्ता तदाभून्मानगर्विता ।  
जलेनापिविनापर्णा मूनीनानवरोधिनी २ एतदज्ञात्वा  
मैं ७ सात द्वीप हैं ४ हे श्रोताहो इस प्रकार गुप्त करिकै  
राजा नृग कृष्णसे कहैथेकि महाराजजितनीभूमिकीसिकता  
कहे द्वीपहैं तितनी गाय मैं दियाहूँ तथा भारत खंडमें जितनी  
तारका कहे गंगा आदि लेकैं बड़ी बड़ी नदीहैं तितनी गाय  
मैं दियाहूँ तथा जितना वर्षधार कहे पर्वत मर्त्यलोकके भारत  
खंडमें हैं तितनी गायमैं दियाहूँ सब गौकी संख्या यह भई  
विद्वान् जोग विचारि लेना अंककी उल्टी रीतिसे प्रथम ७  
दूसरो ४५ तीसरा २७ जोड़सबका ७४५ सत्ताईसहजार २७०००  
चारिसौ ४०० सत्तावन ५७ गायंदेनेको नृग कृष्ण से कहैथे  
रेताकी कण आकाशको तारा जल वृष्टि वासुते नहीं कहैथे  
६ इति भा० द० उ० शं० मं० चतुष्पष्टितमध्याये चतुष्पष्टितमे  
वेष्टी ॥ ६४ ॥ श्लो० ॥ १२ ॥

श्रोता पूछते भये शेषको अवतार बलदेव को मुनियों ने  
वर्णन किया है सोई बलदेव बड़ा कामी सरीके यमुना को  
क्यों खेंचते भये यमुना की मर्यादा भी नाशकरते भये बड़ी  
शंकाहोती है १ वाचक बोले कृष्ण जी जब यमुनासे कालि-  
य को निकासि दिया तब यमुना बहुत अभिमान करने लगी  
वर्षाधिना पूरआने लगी मुनिजन मथुरा को तथा वृंदावनको  
आनेलगेँ तो रातिदिन जल से भरी रहै नांवचलने न देवै



निमित्तेन बलस्तान्दंडमांदधे ३ इति भा० द० उ० शं०  
मं० पंचषष्टितमेऽध्याये पंचषष्टितम वेणी ॥ ६५ ॥  
श्लो० ॥ २३ ॥ से २४ तक ॥

श्रोतार ऊचुः॥ पौंड्रकेन कथं प्राप्तं स्वरूपम् परमेशितुः ।  
महदाश्चर्यमेतद्वियोगज्ञैरपि दुर्लभम् १ वाचक उवाच ॥  
तपस्सुदुष्करं कृत्वा पूर्वजन्मनि पौंड्रकः । रमेशस्य वरं लब्धं  
तेन तद्रूपकल्पने । स्वबध्नापि याचित्वा प्राप्तो भूमि च  
दैत्यराट् २ इति श्री भा० द० उ० शं० मं० षट्षष्टितमे  
ऽध्याये षट्षष्टितम वेणी ६६ श्लोक १३ से १४ तक ॥

मुनियों की रस्ता रोकि देती भई ऐसी यमुना को उन्मत्त  
जानिकै जल कीड़ा के मिस करिकै यमुना को दंडबल देव  
करते भये ॥ २ ॥ इति भा० द० उ० शं० मं० पंचषष्टितमेऽ  
ध्याये पंचषष्टितम वेणी ॥ ६५ ॥ श्लोक ॥ २३ ॥ से २४ तक ॥

श्रोता पूछने भये योगियों करिकै बड़े दुःख सो प्राप्त होने  
जायक जो भगवान् को रूप तिस रूपको पौंड्रक नाम राजा  
क्यों करिकै प्राप्त भया गुरुजी बड़ी शंका होती है १ वाचक  
बोले पूर्व जन्म में पौंड्रक राजा भगवान् का बड़ा कठिन तप  
करता भया जब भगवान् प्रसन्न होके वरदान देनेको आये  
तब यह वरदान मांगा कि आपुको स्वरूप बनाने की बुद्धि  
को दीजिये तथा पृथ्वी में जन्म धारण करिकै आपु के  
हाथ से मेरी मृत्यु होवैगी तब भगवान् ऐसा वरदान देते  
भये हे श्रोता हो इस वास्ते पौंड्रक भगवान् को रूप बनाया  
था ॥ २ ॥ इति भा० द० उ० शं० मं० षट्षष्टितमेऽध्याये षट्षष्टितम  
वेणी ॥ ६६ ॥ श्लोक ॥ १३ से १४ तक ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ प्राणप्रियो रघुपते द्विविदो वानरो  
 त्तमः । कथम्विशेषितस्स्वर्गं सर्वप्राप्ताः कपीश्वराः १  
 वाचक उवाच ॥ रामरावणयोर्युद्धे चाष्टद्वारघुनन्दनम् ।  
 निशीथे सैनिकैस्स्वीयैः प्रविश्य रावणालयं २ अनेकरा  
 क्षसीर्गृह्य वस्त्रहीनास्स्वकारयत् । पश्चाद्ज्ञातं च रामेन  
 कर्म तस्य विनिर्दिष्टम् ३ निःकासितश्च सेनायाः प्रार्थि  
 तस्तेन राघवः । स्वतारणाय तेनोक्तो द्वापरे मुक्तिमाप्स्यसि  
 ४ नाहंत वाननन्दुष्ट द्रक्ष्याम्यद्य कदापि च । इतः शेषेन

श्रोता पूछते भये हे गुरु जी द्विविद नाम वानर श्रीरघुनं-  
 दन को बड़ा प्यारा था तब सब वानर तो त्रेता में स्वर्ग को  
 जाते भये द्विविद को श्रीराघवजी क्यों स्वर्ग को नहीं लेगये  
 यह बड़ी शंका होती है १ वाचक बोले रामचन्द्र का तथा  
 रावण का युद्ध होता था उस वखत अर्धरात्रि के समय में  
 द्विविद नाम वानर रामचन्द्र से पूछा भी नहीं आपनी फौज  
 लेके रावण के महलमें प्रवेश करिके २ बहुतसी रावण की  
 रानियों को पकड़िके नग्न करि देता भया तथा मारता भी भया  
 कुछ देर पीछे श्रीमर्यादा पुरुषोत्तम जो रघुनाथ जी तिनको  
 यह खोटा कर्म द्विविदने किया ऐसा मालूम पड़ा ३ तब उसी  
 वखत श्रीरघुनन्दनजी ने अपनी फौजमें से निकालि दिया  
 द्विविदको पीछेसे द्विविदने अपनी मुक्ति होने वास्ते राघवजी  
 की बिनती किया तब रामचन्द्र जी कहे कि द्वापर में तेरी  
 मुक्ति होगी रामचन्द्र कहे हे दुष्ट आजु से तेरा मुख हमतो  
 देखेंगे नहीं परन्तु शेषजी तेरेको द्वापर में मारेंगे तब तेरी  
 मुक्ति होगी हे श्रोता हो इसवास्ते द्विविद को बलदेव मारते

भविता चातःसंकर्षणाहतः ५ इति भा० द० उ० शं० मं०  
सप्तषष्ठितमेऽध्याये सप्तषष्ठितमवेणी ॥ ६७ ॥ श्लो० २ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ नानाजन्तुसमाकीर्णं चतुर्वर्णैरधि  
ष्ठितम् । साधुभिर्यतिभिश्चैव गवादिपशुपक्षिभिः १ युतं  
गजाव्हयन्तो ये सम्मज्जयितुमुद्यतः । जीवनाशकृतात्पा  
पाद्भयंचक्रे कथं न सः । केवलं कौरवान्दंतुं कथं नैच्छद्य  
दुःखः २ वाचक उवाच ॥ महापापंचज्ञात्वापि गुरुनिंदा  
नक्रोधतः । वभूवव्याकुलो वीरो नास्मरतच्च पातकम् ३  
इति भा० द० उ० शं० मं० अष्टषष्ठितमेऽध्याये  
अष्टषष्ठितमवेणी ॥ ६८ ॥ श्लो० ॥ ४१ ॥

भये तथा त्रेतामें स्वर्ग को नहीं गया था ॥ ५ ॥ इति भा० द०  
उ० शं० मं० सप्तषष्ठितमेऽध्याये सप्तषष्ठितमवेणी ॥ ६७ ॥  
श्लोक ॥ २ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी हस्तिनापुर में अनेक प्रकार  
के जीव तथा ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र साधु सन्यासी गाय  
और बहुत जातिके पशु पक्षी बसते थे ऐसे हस्तिनापुरको  
जल में डुबानेवास्ते बलदेव तैयार भये १ ऐसे पाप को नहीं  
डरते भये कि हस्तिनापुरको जल में डुबावेंगे तो असंख्य जीव  
की हत्या हमको लगैगी ऐसी भय नहीं मानते भये तथा अ-  
केले कौरवों को नाश करने वास्ते क्यों नहीं इच्छा किये  
तमाम पुरतौ कुछ अपराध किया नहीं रहा अपराधतौ कौरव  
लोग किये थे यह बड़ी भ्रम है दोश्लोक को अर्थ मिला है युग्म  
३ २ वाचक वाले कौरवों ने उग्रसेन की तथा यदुवंशकी निंदा  
किये तब बलदेव को आपने बड़ोंकी तथा सब कुलकी निंदा  
सुनिकै बड़ा क्रोध भया उसी क्रोधसे व्याकुल होकै जीवोंकी

(स्क०१०) भा० शंकानिवारण मंजरी ।

श्रोतार ऊचुः ॥ दुष्टबुद्धिः कथं जाता नारदस्य मुनी  
श्वर । षोडशस्त्रीसहस्रैश्च रमणवैरमापतेः १ शंकितो  
भूद्विनाकार्यं साधूनां नोचिवन्त्वित्दं । असकृन्नमहात्मा  
नम्मायाग्रसतिकालतः २ वाचक उवाच ॥ प्राणिभि  
दैवयोगाच्च कृतेन्यनेपि पातके । शापन्ददो बहुभ्यश्च  
प्राणिभ्यो नारदो मुनिः ३ भूरिशस्तापिता जीवास्तेन  
पापेन माधवे । दुष्टबुद्धिस्त्रिमुनिश्चक्रे श्रीकृष्णे भक्तवत्सले  
४ इति भा० द० उ० शं० मं० एकोनसप्ततमेऽध्याये  
एकोनसप्ततमवेणी ॥ ६६ ॥ श्लो० ॥ १ ॥

हत्याको भूलिगये ॥ ३ ॥ इ० भा० द० उ० शं० तं० अष्टषष्टितमेऽ  
ध्याये अष्टषष्टितमवेणी ॥ ६८ ॥ श्लो० ॥ ४१ ॥

श्रोता पूछते भये हे मुनीश्वर नारद की बुद्धि क्यों भ्रष्ट  
होगई कि त्रिलोक नाथकी षोडश १६००० सहस्र स्त्रियोंके  
संगक्रीड़ा सुनिकै बड़ा आश्चर्य मानते भये विनाकाज प्रयोजन  
दुःखी होना यह कामसाधू जनोंका नहीं है यह काम तो मूर्खों  
का है जो कोई कहै कि नारद को माया ग्रसित करि लिई रही  
है तो यह बात खिलाफ है माया तो बारंबार नहीं ग्रसित  
करती है एकदफे समयपायकै ग्रसित करती है २ वाचक योजे  
जो कोई जीवभूलिकै थोराभी पाप करिलेता था दैवयोग से  
अपनी इच्छा पाप करने की नहीं रही तब ऐसे ३ बहुत जीवों  
को विना विचार किहे नारद शापदेते भये इसी प्रकारसे  
बहुतसे जीवोंको नारद शापदेके दुःखदेते भये उन्हें पापोंकरिके  
भक्तवत्सल जो कृष्ण तिनह भगवान् में दुष्टबुद्धि नारद करते  
भये पाप करिके बिलकुल पागल होगये ॥ ४ ॥ इति भा० द० उ०  
शं० मं० एकोनसप्ततितमः एकोनसप्ततितमवेणी ॥ ६६ ॥ श्लो० ॥ १ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ १ ॥

पिडि । हृदयेशत्रवस्सन्ति कामाद्याष्वणमहाबलाः १  
तत्कथंवासुदेवस्य चोत्पन्नास्तेऽरयस्तदा । यानूगृही  
त्वादुराचारान् जघानपरमेश्वरः-२ वाचक उवाच ॥  
ऐहिकम्पारिकंकार्यंविनाकामादिसेवनात् । नसिद्ध्यन्ति  
कदापीत्थं तस्मात्सेव्याश्रतेसदा ३ सदसत्सुप्रवर्त  
ते कामाद्यास्तेविचार्य्यच । सत्सुगाह्याःपरित्यज्याश्चा  
सत्सुकुशलैर्नरैः ४ नासज्जाश्चसुधर्मायांसज्जास्ति  
ष्टितिसर्वदा । सज्जागृहीताःकृष्णेन चासज्जादूरता

श्रोता पूछते भये सुधर्मा सभा में बैठने वाले जीवों के  
हृदयमें काम क्रोध लोभ मद मोह मत्सर ये छ बैरी उत्पन्न  
नहीं होतेथे १ फिरि श्रीकृष्णके हृदयमें कोई छवो बैरी क्यों  
उत्पन्न होतेभये जिन छ बैरियोंको गृहण करिकैकृष्णजी बड़े  
बड़े दुष्टोंको मारते भये यह बड़ी शंका है २ वाचक बोले तीन  
लोक में यह लोकको काम तथा परलोकको काम विना काम  
आदि छवों बैरियोंको सेवन किये कभी भी नहीं सिद्ध होवेंगे  
इस वास्ते कामआदि छःबैरीको सेवन करना चाहियेपरन्तु  
विचारिकैसेवन करना क्योंकि ये छवों बैरी सुंदर काममें भीहैं  
तथा बुरे काममें भी हैं सुंदर काममें छवोंको गृहण करना  
जैसा सुंदर कामकी इच्छामें लोभ इसी प्रकारसे जान लेना  
चाहिये तथा बुरे काम में त्यागना चाहिये ४ सुधर्मा सभामें  
बुरेकाम वाले छबैरी नहींथे सुंदरकाम वाले काम आदि छबैरी  
रहेंथे इसवास्ते सुंदर कामोंके छवों बैरियों को कृष्ण गृहण  
करते भये बुरेकामवालों को त्यागि दिये क्योंकि ये कामआ  
दिछबैरी सुंदर कर्ममें सुंदरफल देतेहैं बुरे कर्ममें बुराफलदेतेहैं

भिताः ५ इति भा० द० उ० शं० मं० सप्ततितमेऽ  
ध्याये सप्ततितमवेणी ॥ ७० ॥ श्लो० ॥ १७ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कृष्णपांडवसंयोगे नगरेगजसा  
ह्वये । शूद्राश्चान्त्यजकर्माणो म्लेच्छाश्चसर्वयोनयः १  
सर्वेषांश्रुएवताम्ब्रह्मन् ब्रह्मघोषस्तदाकथम् । बभूव  
महदाश्चर्य्यं शंकेयम्महतीचनः २ वाचक उवाच ॥  
वेदपाठोनश्रोतव्यस्त्रिवर्णरहितैर्नरैः । एषोदोषेनचान्य  
श्च तत्रकेनापिनोश्रुतम् ३ शब्दंचापिशतघ्नानान्नकै  
श्चापितदाश्रुतम् । ब्रह्मघोषस्यकावार्ता कृष्णपाण्डव  
हे श्रोताहो इस वास्ते कृष्ण सुधर्मा समा में बैठिकैछवों  
वैरियोंको गृह्य करिकैदुष्टोंको मारतेभये ५ इति भा० द० उ०  
शं० मं० सप्ततितमेऽसप्ततितमवेणी ॥ ७० ॥ श्लो० ॥ १७ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी हसितनापुरमें श्रीकृष्णकी तथा  
पांडवों को मिलाप हुआ तब उस वखत शूद्र तथा अंत्यज  
चर्मकार आदि और सब नीच जाति तथा म्लेच्छ तमाशा  
देखने वास्ते तथा अनेक प्रकार को काम संसार को करने  
वास्ते उस सेना में रहेथे १ इन सबको सुनायकै ब्राह्मणों ने  
ब्रह्म घोष कहे वेद पाठ क्यों करते भये यह हमारे मनमें बड़ी  
शंका होतीहै क्योंकि वेदको श्रवण ब्राह्मण क्षत्री वैश्य सिवाय  
दूसरी जाति को वेदका श्रवण करना नहीं चाहिये २ वाचक  
बोले वेदको श्रवण ब्राह्मण क्षत्री वैश्य सिवाय दूसरेको नहीं  
करना चाहिये यह दीपहै दूसरा कोई भी दोष नहीं सो वेद  
को पाठ कोई भी नहीं उस वखत सुनते भये क्योंकि ३ हे  
श्रोता हो जब श्रीकृष्ण की तथा पांडवोंकी मुलाकाति भई  
तब ऐसा आदमी को शब्द आपस में होने लगा कि आद-

संगमे ४ इति भा० द० उ० शं० मं०  
 ५ध्याये एकसप्ततितमवेणी ॥ ७१ ॥ श्लो० ॥ २४

श्रोतार ऊचुः ॥ ७१ ॥

सत्तम । तत्त्वत्सः कथम् मृत्युम्प्रापामंगलकारणम् १  
 वाचक उवाच ॥ कदापि नैव जानन्ति वीरामृत्युममंगलम् ।  
 संगरे मरणं स्तेषां तैर्ज्ञातो मंगलं महत् २ तत्प्राप्तमागधे  
 नैव भद्रं श्रीकृष्णवाक्यतः ३ इति० भा० द० उ०  
 शं० मं० द्विसप्ततितमे ५ध्याये द्विसप्ततितमवेणी ॥ ७२ ॥  
 श्लो० ॥ १८ ॥

मियों के शब्द करि कै तोपकी आवाज तौ किसी को सुनी  
 नहीं परी ऐसा शोर हुआ तब वेद पाठ क्यों करि कै लोगों  
 को सुनि परै किसीको कुछ नहीं सुनिपरा इस वास्ते ब्रह्मण्य  
 वेद पाठ करते भये ॥ ४ ॥ इति भा० द० उ० शं० मं० एकसप्तति  
 तमे ५ध्याये एकसप्ततितमवेणी श्लोक ॥ २४ ॥

श्रोता पूछते भये श्रीकृष्ण जरासंधको कहे थे हे  
 तुम्हारा कल्याण होवेगा फिरि उसी समयमें युद्ध करि कै कुछ  
 दिन पीछे अमंगल रूप मरण को क्यों प्राप्त हुआ यह बड़ी  
 शंका है कि भगवान् आपने मुख से मंगल होना कहे फिरि  
 वह जल्दी मरि क्यों गया १ वाचक बोले शूरवीर जो हैं सो  
 युद्धमें मरण होने को अशुभ कभी भी नहीं मानते युद्ध में  
 अपना मरण होने को बड़ा कल्याण मानते हैं इस वास्ते  
 कृष्णकी वाक्य के प्रमाणसे युद्धमें मरण रूप कल्याण जरा  
 सन्ध को प्राप्त होगया २ इ० भा० द० उ० शं० मं०  
 तितमे ५ध्याये द्विसप्ततितम वेणी ७२ ॥ श्लोक ॥ १८ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ यदाविमुक्तास्तेभूपाः कथंकृष्णेति  
। चक्रुश्चस्वात्मवत्तुल्यमहायोग्यमितीरितम्

१ वाचक उवाच ॥ सत्संगवर्जिताःपूर्वम्पूर्वाग्राम्या  
श्चमानिनः । इदानींदुःखिताश्चासन् वाक्यकौशलता  
कुतः । अतोविनिर्गतन्तेषा माननाद्यत्तथैवतत् २ इ०  
भा० द०उ० शं० मं० त्रिसप्ततितमेऽध्याये त्रिसप्ततितम  
वेणी ॥ ७३ ॥ श्लो० ॥ १३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ नकेवलमभूद्यज्ञन्धर्मस्यपृथिवी

श्रोता पूछते भये जरासन्ध को बधन करिकै कृष्ण ने  
बीस हजार राजों को बंदीघर से छुड़ाये तब वो सब राजा  
भगवान् को हे कृष्ण कहिकै क्यों बुलाते भये जैसा कोई  
आदमी अपनी बरोवरि वाले को बुलावै तैसा क्यों बुलाते  
भये बड़ी अयोग्य बात राजोंने कहेहैं राजोंको करुणा चाहता  
था हे महाराज हे त्रिलोकनाथ हे दीन पालक हे दया सागर  
इन्ह आबि ओर अनेक प्रकारको दुलार करिकै श्रीकृष्णको  
बुलाना चाहता था १ वाचक बोले वाराजालोग पेशतरजो  
अपनी २ राजगद्दी पर बैठे थे तबतौ अभिमान से सत्संग  
किहे नहीं इसी वास्ते गंवार तथा मूर्ख होगए पीछे से  
जरासंध पकरिकै बेरी भरिकै जेहल खाने में करिदिया तब  
दुःखी होगये ऐसे दूनो तरहसे भ्रष्ट जो राजा उनको वचन  
बोलने की चतुराई क्यों होवै वोतो पशु हैं विना सींग  
पंखको इसी वास्ते उनराजों के मुख से जो वचन निकलै  
सोई अच्छा है इसवास्ते भगवानको अपने बरोवरी सरीके  
बोलेहैं २ इतिभा०द०उ०शं० मं० त्रिसप्ततितमेऽध्यायेत्रिसप्त  
वेणी ॥ ७३ ॥ श्लो० ॥ १३ ॥

श्रोता पूछतेभये हेगुरुजी पृथ्वीमेंकुछ पहिले युधिष्ठिर यज्ञ



तले । नापितेनूतनाविप्रास्तेपियज्ञार्हकोविदाः १  
 विचारयांचकुर्यज्ञधर्मस्यतेतदा । प्रथमाहर्च्यसुरंचैतन्म  
 हत्कौतूहलन्तदाश्वाचक उवाच । नविस्मृतोजगन्नाथ  
 स्सर्वेज्ञातस्सएवच । सर्वत्रापिचयज्ञेचपूजनीयोरमाप  
 तिः ३ एवंसर्वेपिजानन्तस्तथापिदैवयोगतः । प्रमोह  
 यत्समास्थान्तान् चैद्यकालोमुनीनपि । बालवच्चरितं  
 चक्रुस्तेसर्वेमोहितास्तदा ४ इति भा० द० उ० शं०  
 मं० चतुस्सप्ततितमेऽध्याये चतुस्सप्ततितमवेणी ॥  
 ७४ ॥ श्लो० ॥ १८ ॥

नहीं करते भये यज्ञ तौ सतयुग से अनेक राजा किहे हैं तथा  
 युधिष्ठिर के यज्ञ कराने वाले ब्राह्मण भी प्रथमहीं यज्ञ कराने  
 के वास्ते नहीं आये थे ब्राह्मणभी सतयुग से यज्ञ गनती से  
 हीन कराये रहे हैं १ फिर धर्म राजकी यज्ञ में पहिले पूजन  
 करने वास्ते देवता को विचार क्यों करते भये कि पहिले  
 पूजन किसका करना जो बात प्रथम होती है उस बात को  
 विचार करना चाहिये जो हजारों वर्ष से बात होती आती  
 है उसको क्या विचार करना यह बड़ी शंका होती है २ वाचक  
 बोले सब ब्राह्मण भगवान् को भूलि नहीं गयेथे सब जानते  
 थे कि सब कामोंमें तथा यज्ञमें भी भगवान् को पूजन करना  
 चाहिये ३ ऐसा जानते थे परन्तु दैवयोग से शिशुपालको काण  
 सब मुनियोंको तथा यज्ञ की सभा में बैठने वाले प्राणियों  
 को मोहिजेता भया काल करिके मोहित मुनि जन सब भये  
 और सब मानुष्य बालक सरीके कर्म करते भये क्योंकि  
 जो यज्ञमें पहिले पूजनकरने लायक कौन है ऐसा विवाद न होता  
 तौ शिशुपाल कृष्णकी निन्दा क्यों करता बिना निन्दा किरे

श्रोतार ऊचुः ॥ एकपत्नीव्रतोस्माभिश्श्रुनोराजा  
 ॥ ७६ ॥ स्वपत्नीभिः कथं यज्ञे शुशोभधर्मनन्दनः १  
 ॥ उवाच ॥ दृष्ट्वापतिव्रतन्तस्या द्रौपद्याधर्मनं  
 ॥ ७७ ॥ आत्मानं सततं मेने प्रमदानेकसंयुतम् २ ज्ञात्वा  
 तन्मानसम्भावं मुनिनोक्तस्तथापि च । इति० भा० द०  
 ० शं० मं० पंचसप्ततितमेऽध्याये पंचसप्ततितमवेणी  
 ७५ ॥ श्लो० ॥ १८ ॥

१ मारिजाता हे श्रोताहो इस वास्ते शिशुपाल के काल  
 करिके मोहित जो मुनि तथा और सब सभा में बैठनेवाले  
 प्रथम पूजन करने लायक को विचार करते भए ४ इ०  
 भा० द० उ० शं० मं० चतुस्सप्ततित० चतुस्सप्ततितमवेणी॥  
 ७४ ॥ श्लो० ॥ १८ ॥

श्रोता पूछते भए शास्त्र में तथा लोक में भी ऐसा सुना  
 है हम सब कि युधिष्ठिर राजा एक स्त्री सिवाय दूसरी  
 स्त्री के संग अपना विवाह नहीं किए कारण युधिष्ठिर  
 के एक स्त्री थी फिर यज्ञ में बहुत क्रियां करिके  
 शोभायमान युधिष्ठिर क्यों होते भए यह बड़ी शंका होती  
 है १ वाचक बोले द्रौपदी ने युधिष्ठिर की सेवा ऐसी किया  
 कि जो सेवा कोटियों स्त्री के किये से कभी नहीं बनेगी  
 ऐसे द्रौपदी के पतिव्रतको युधिष्ठिर देखिके मनमें जानते  
 भए कि हमारे कोटियों स्त्री हैं तथा व्यासजी भी युधिष्ठिर  
 के मनकी बात जानिके कहते भए युधिष्ठिर अपनी बहुत  
 सी क्रियां करिके सहित अपनी यज्ञ में शोभित होने भए  
 इति भा० द० उ० शं० मं० पंचसप्ततितमेऽध्याये पंचसप्त-  
 तितम वेणी ॥ ७५ ॥ श्लो० ॥ १८ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ प्रद्युम्नश्चशरैर्जघ्ने - । १५ ॥  
 नपि।मेनिरेपरमाश्चर्यन्तन्ट्टाचकथम्मुने । सैन्ये  
 स्थतस्यापि किमिदं कर्म नतनम् १ वाचक उवाच  
 कृष्णादृतेन कस्यापि ब्रह्मणा वरदानतः । शाल्वं सैन्यं  
 कंयुद्धे शक्तिरस्ति विमर्दितुम् २ प्रद्युम्नेनार्दितशाल्वो  
 युद्धे सैन्यसमन्वितः । ब्रह्माद्यामेनिदेश्वर्यं मन्येषांचैव  
 काकथा ३ इति भा० द० उ० शं० मं० षट्सप्ततितमे  
 अध्याये षट्सप्ततितमवेणी ॥ ७६ ॥ श्लो० ॥ २० ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ मायया कल्पयच्छाल्वो वसुदेवं कथं  
 न्तदा । एषामहीयसीशंका बुद्धिन्नाभ्रामयेत्सदा १

श्रोता पूछते भए कि प्रद्युम्नने बाण करिकै शाल्व को  
 तथा शाल्व की फौजको मूर्छित करि दिए तब प्रद्युम्न के  
 ऐसे पराक्रमको देखिकै शाल्वकी फौज तथा प्रद्युम्न की  
 आश्चर्य क्यों मानती भई प्रद्युम्न को क्या यह नवा कर्म है  
 ऐसा कर्म तौ अनेक दफे प्रद्युम्न किए थे गुरुजी यह बड़ी  
 शंका होती है १ वाचक बोले शाल्व को ब्रह्माने वर दिए  
 थे कि तेरे को तथा तेरी सेना को युद्ध में श्री कृष्णजी  
 मूर्छित करेंगे और तीन लोकमें कोई प्राणी तेरेको तथा तेरी  
 सेना को दुःखित नहीं करि सकैगा २ जब प्रद्युम्न शाल्व को  
 सेना सहित मूर्छित किया तब ब्रह्मा आदि सब देवता  
 आश्चर्य मानते भये तथा दूसरा प्राणी आश्चर्य मानि लिये तब  
 क्या बड़ी बात हुई ३ इति भा० द० उ० शं० मं० षट्सप्तति  
 तमेऽध्याये षट्सप्ततितमवेणी ७६ ॥ श्लोक ॥ २० ॥

श्रोता पूछते भये शाल्व माया करि कै वसुदेव की मूर्ति  
 बनाय लिया गुरुजी यह शंका तौराति दिन हम सबकी बुद्धि

क उवाच ॥ शाल्वायब्रह्मणादत्तो वरोमायाचशि  
 । ऋतेत्रिदेवात्सर्वेषाम्प्राणिनांकल्पनात्रलिः २  
 । यदात्वंकल्पयिष्यसि । वसुदेव  
 ध्रुवम्प्राप्स्यसिदानव ३ एवमुक्त्वापिविधिना  
 कल्पयामासवैशौरि कृष्णेन  
 हतः ४ इति भा० द० उ० शं० मं० सप्तसप्ततित  
 मेऽध्यायेसप्तसप्ततितमवेणी ॥ ७७ ॥ श्लो० ॥ २५ ॥  
 श्रोतार ऊचुः ॥ संकर्षणस्त्वयंशेषस्तस्यभावंयकुतः  
 प्रभो । बलाद्यस्यतदाजघ्ने सूतंसंकर्षणोविभुः १

भ्रमाती है क्योंकि राक्षस माया करिके अनेक प्रकारकी वस्तु  
 बनाय लेते हैं शास्त्रों में लिखा है परन्तु वसुदेव सरीके तपस्वी  
 कि जिन के वैकुण्ठनाथ पुत्र होते भये तिनकी मूर्ति को माया  
 करिके राक्षस बनाय लिया यह बड़ी शंका है १ वाचक बोले  
 ब्रह्मा ने शाल्व को वरदान दिये थे कि ब्रह्मा विष्णु शिव इन  
 की मूर्ति तेरी बनाई नहीं वनेगी और तीन लोक में जिसकी  
 मूर्ति बनाया चाहैगा तिसकी मूर्ति बनाय लेवैगा २ तथा ब्रह्मा  
 शाल्व को ऐसा भी कहे थे जब तू वसुदेव की मूर्ति बनावेगा  
 तब तेरी मृत्यु होवैगी ऐसे ब्रह्मा के वचनको कालकी घशि  
 होके भूलि गया वसुदेव भी मूर्ति बनाया तब श्रीकृष्ण शाल्व  
 को मारिडाले हे श्रोताहो इस वास्ते शाल्व वसुदेवकी मूर्ति  
 बनाता भया ॥४॥ इ० भा० द० उ० शं० मं० सप्तसप्ततितमेऽ  
 ध्याये सप्तसप्ततितमवेणी ॥ ७७ ॥ श्लोक ॥ २५ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी भावी प्राकृति जीवों के वास्ते  
 है उन से भला बुरा कर्म कराय सकनी है कुरु भगवान् के  
 उपर भावी को जोर नहीं चकता तो फिर वल्लदेवजी शेष

वाचक उवाच ॥ किंचित्कर्तुं न वै शक्नुः श्वशुराणां ।  
 भाव्यन्तथापि मर्यादा पालितुं तस्य ते त्रयः । तद्वशा  
 कुर्वन्तिलोके भाव्यार्हकारणात् ॥ इति भा० द० उ०  
 मं० अष्टसप्ततितमोऽध्याये अष्टसप्ततितमवेणी ॥  
 श्लोक ॥ २८ ॥

श्रोतार उचुः ॥ जगाम सर्वतीर्थानि । ।  
 बलस्तदा । वाराणशीमवन्ती च नेयाय कारणं किमु  
 सेविताश्च द्वयोः पार्श्वे ये तीर्थास्ते न सर्वशः १ ।  
 उवाच ॥ काश्यपन्त्योः फलं चार्द्धं पत्नीहानिनेन प्राप्यते  
 एकाकिना कृता सर्वे तीर्थारामेन ते तदा २ : . .  
 भगवान् थे सो भावी की बशि होकै सूत जी को क्यों मार  
 भये यह बड़ी शंका है १ वाचक बोले हैं सज्जनों ब्रह्मा विष्णु  
 महेश्वर के ऊपर कुछ भी भावी नहीं करसकती तथापि भावी  
 की मर्यादा पालना करने वास्ते तीनों देव संसार में भावी की  
 बशि होकै अनेक प्रकार को काम करते हैं इस वास्ते शे  
 रूप जो बलदेव सो भावी की बशि होकै सूतको मारते भये  
 इति भा० द० उ० शं० मं० अष्टसप्ततितमोऽध्याये अष्टसप्तति  
 तमवेणी ॥ ७८ ॥ श्लो० ॥ २८ ॥

श्रोता पूछते भये बलदेव जी सब तीर्थ को जाते भये  
 काशी को तथा उज्जैन को क्यों नहीं गये और काशी के  
 तथा उज्जैन के आसपास जो तीर्थ थे उनको तो गये परन्तु  
 एतेनों बड़े तीर्थ तिनको क्यों छोड़ि दिये यह बड़ी शंका है ।  
 वाचक बोले शास्त्र में ऐसा लिखा है कि स्त्री बिना अकेल  
 मानुष्य काशी तथा उज्जैन इन दोनों तीर्थों को दर्शन  
 करता है तब उस को आधा फल प्राप्त होता है और बलदेव

मिपुनस्तौ द्वे काश्यवन्त्यौ सुपुण्यदे । सपत्नीकश्चैतदर्थं न  
 पुन्यौ द्वौ जगाम सः ३ इति भा० द० उ० शं० मं० एकोन  
 अशीतितमेऽध्याये एकोन अशीतितमवेणी ॥ ७६ ॥  
 श्लोकनियमो नास्ति समस्ताऽध्याये शंका ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कृष्णस्यान्तःपुरे ब्रह्मन् किमज्ञाश्चा  
 पिसंस्थिताः । ये पूजितं च तन् दृष्ट्वा कृष्णेन च किंता भवन्  
 १ वाचक उवाच ॥ कृष्णस्यान्तःपुरे नाज्ञा किंतु गोलोक  
 वासिनः । कृष्णादन्यन्न जानन्ति श्रेष्ठं कमपि सर्वदा २  
 अकेले तीर्थों को गये स्त्रीसंग नहीं रही इस वास्ते आधा फल  
 होना बिचारिके काशी तथा उज्जैन को नहीं गये बलदेव जी  
 ऐसा बिचार किये कि स्त्रीको संग लेके फिरि काशी को तथा  
 उज्जैन को आवेंगे हे श्रोता हो इस वास्ते काशी तथा उ-  
 ज्जैन को नहीं गये ॥ ३ ॥ इ० भा० द० उ० शं० मं० एको  
 न अशीतमेऽध्याये एकोन अशीतमवेणी ॥ ७६ ॥ श्लोक को  
 नेम नहीं ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी कृष्ण भगवान् के महलों के  
 दरवाजे पर मूर्ख लोग बसे थे क्योंकि जो मूर्ख लोग नहीं पहरा  
 देते होते तो भगवान् सुदामा को पूजन किया तो वो लोग आश्चर्य  
 क्यों मानते क्योंकि सज्जन लोग तो जानते हैं कि भगवान् तो  
 ब्राह्मण को पूजन सदा करते थे वो आश्चर्य क्यों मानते यह बड़ी  
 शंका होती है १ वाचक बोले कृष्ण के हृदय में मूर्ख नहीं रहे  
 थे गोलोक वासी थे उन लोगों की यह प्रतिज्ञा थी कि श्रीकृष्ण से  
 घड़ा तीन लोक में किसी को नहीं जानते थे श्रद्धा आदि देवतों  
 को तथा योगियों को ब्राह्मणों को भी कृष्ण से घड़ा नहीं जानते थे  
 टीपा ॥ इस अध्याय में श्लोक को नियम नहीं सब अध्याय में शंका है ॥

ब्रह्मादिसुरवर्गाश्च द्विजान् योगकरानपि । एतदर्थं च चक्रि  
तास्तं दृष्ट्वा कृष्णपूजितं ३ इति भा० द० उ० शं० मं०  
अशीतितमेऽध्याये अशीतितमवेणी ८० ॥ श्लो० ॥ २४ ॥

श्रोतार उचुः ॥ कथं श्रीजगद्देहस्तं जग्धुकामस्य  
तंडुलम् । द्वितीयमुष्टिमाचार्य वदेदं भ्रमवारिधिं ।  
वाचक उवाच ॥ निरीक्ष्य ब्राह्मणे प्रीतिं कृष्णस्य दुर्बले  
ऽचलाम् । विचार्य रुक्मिणीभीता कुरुते मत्पतिं द्विजम् ।  
स्वयंच ब्राह्मणीभर्ता भविष्यन्त्यद्य वै हरिः । पतिव्रतश्च मे  
शीघ्रं नाशमेष्यति निश्चितम् । अतो जग्राह हस्तं सा त  
इस वास्ते सुदामा के पूजन को कृष्ण किये तौ सब आश्चर्यमान ते  
भये कि इन्हसे बड़ा यह कौन आया जिसका पूजन भगवान  
करते भये ॥ ३ ॥ इति भा० द० उ० शं० मं० अशीतितमेऽध्याये  
अशीतितम वेणी ॥ ८० ॥ श्लो० ॥ २४ ॥

श्रोता पूछते भये हे वाचक जी महाराज सुदामा के हाथ  
से छीनिके एक मूठी चावल कृष्ण चाबिजेते भये दूसरी मूठी  
फिरि चावने लगे तब रुक्मिणीजी कृष्णको हाथ पकाड़ि लिया  
यह बड़ी शंका को समुद्र है तिसको आपु हम सब को पार करो  
१ वाचक बोले रुक्मिणीने श्रीकृष्णकी प्रीति सुदामामें बहुत  
देखिके डरि गई कि लक्ष्मी जो मैं हूं सो मेरेको ब्राह्मणको देवेंगे  
चावल के बदले में २ तब मेरा ब्राह्मण पति होवेंगा तथा आपु  
ब्राह्मण की स्त्री जो भूलक्ष्मी तिसके पति होवेंगे तब  
धर्म भी नाश हो जावेंगा ऐसा बिचारिके रुक्मिणी  
न भगवानको हाथ पकाड़ि लिया है चावल नहीं चावने दिया  
इन सबको अर्थ यह है कि प्रेमसे चावल चाविके भगवान  
ब्राह्मण को तौ लक्ष्मी पति करते आपु दरिद्र पति होते ऐसा

त्परा कमलापतेः ३ इति भा० द० उ० शं० मं० एका  
शीतितमेध्याये एकाशीतितमवेणी ८१ ॥ श्लो० ॥ १० ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ धर्मराजाश्रयाभूपा बभूवुर्विस्मृताः  
कथम् । श्रीकृष्णं च समालोक्य सभायर्थमुनिसत्तम १  
वाचक उवाच ॥ सर्वत्र कृष्णवाक्यं च श्रुतम् भूपैस्तु स  
र्वदा । वर्णितम् मुनिभिः शास्त्रे स्त्रियश्च नरकातिदाः २  
निरीक्ष्यातोयुतं ताभिस्संस्मृत्य मुनिभाषितम् । सशं  
काश्चाभवन् भूपास्ताशामपि च शानुगम् ३ इति भा० द०  
उत्तरार्द्ध शं० मं० द्वैशीतितमेध्याये द्वैशीतितमवेणी ॥  
८२ ॥ श्लो० ॥ २६ ॥

सुदामासे कृष्ण को प्रेमया ॥ ३ ॥ इति भा० द० उ० शं० मं०  
एकाशीतितमेध्याये एकाशीतितमवेणी ॥ ८१ ॥ श्लो० ॥ १० ॥

श्रोता पूछते भये हे मुनि सत्तम युधिष्ठिर की आज्ञा करने  
वाले राजों ने श्रीकृष्ण को स्त्री सहित देखिके विस्मय को क्यों  
प्राप्त भये यह बड़ी शंका होती है १ वाचक बोले सब शास्त्रों  
में कृष्ण के वचन को राजा लोग मुनियों के मुख से सुने थे  
कि भगवान् कहे थे सब शास्त्रों में कि स्त्री लोग नरक की देने  
वाली हैं जो कोई जीव मोक्ष चाहै सो जीव स्त्री लोगों की संगति  
न करे २ फिर स्त्रियों करिके सहित कृष्ण को राजों ने देखिके  
तथा जो जो काम करने को स्त्री लोग कहती हैं उस काम को  
जल्दी कृष्ण करते हैं ऐसा स्त्रियों की वशि भये कृष्ण को  
देखिके राजा लोग विस्मय को प्राप्त भये कि और जीवों को स्त्री की  
वशि होना मना करते हैं और आपु स्त्रियों की वशि हो गये हैं हे  
श्रोता हो इस वास्ते राजा लोग विस्मय को प्राप्त भये ३ इति भा०  
द० उ० शं० मं० द्वैशीतितमेध्याये द्वैशीतितमवेणी ८२ ॥ श्लो० ॥ २६ ॥



श्रोतार ऊचुः ॥ वेदशास्त्रप्रमाणोयं सर्वेषां भगवान्  
 गुरुः । चराचराणां लोकानां जीवानां गतिरच्युतः १  
 तान्सर्वान्वैपरित्यज्य कथंगोपी गतिर्गुरुः व्यासेनोक्तश्च  
 श्रीकृष्णः शंकां द्विधिगुरोचनः २ वाचक उवाच ॥  
 अत्र गोप्यो न ताः प्रोक्ता व्यासेन कृष्णबल्लभाः । गोपश्च  
 भगवान् प्रोक्तो गोपीमायायसिंघुजा ३ तयोः पतौरमा-  
 नाथे सम्भूते जगताम्भतौ । गतिर्गुरुश्च विज्ञेयो यतः श-  
 क्तिमयं जगत् । अतो गोपीपतिः प्रोक्तो गुरुश्चापि यदूत-  
 मः ४ इति भा० द० उ० शं० मं० त्र्यशीतितमेऽध्याये  
 त्र्यशीतितमवेष्टी ॥ ८३ ॥ श्लोक ॥ १ ॥

श्रोता पूछते भये वेदको शास्त्रको ऐसा प्रमाण है कि तीन  
 लोक में जो चर अचर जीव हैं तिन सब जीवों के भगवान्  
 गुरु है तथा गतिभी है १ फिर व्यासजी सब जीवोंको त्यागि  
 के भगवान् के गोपियों को गुरु तथा गति कपो कहें यह  
 बड़ी शंका होती है २ वाचक बोले गोपीनां सगुरुर्गतिः इस  
 श्लोकको अर्थ व्यास जी ब्रजकी गोपी जो श्रीकृष्णकी प्यारी  
 थीं उन गोपियों को गोपी न कहें उस श्लोकको अर्थ  
 व्यास जी ऐसा किये हैं कि गो शब्दको संसारभी कहते  
 हैं शास्त्रों में ऐसा गो कहें चर अचर संसार उस को जो रक्षा  
 करें तिसको नाम गोप है गोप भगवान् हैं तथा गोपी  
 भगवान्की माया है सोई मायारूप लक्ष्मी है ऐसा अर्थ गोपी  
 को व्यासमुनि किये हैं ३ मायाके तथा लक्ष्मीके तथा जगत्के  
 पतिजो भगवान् सो कृष्ण होके पृथ्वी में विराजमान रहें  
 इसवास्ते माया के पति तथा गुरुभी भगवान् हैं क्योंकि माया  
 रूप संसार है इसवास्ते कृष्णको गोपीपति तथा गुरु व्यास जी

श्रोतार उचुः ॥ कथम्प्रोक्तो भगवता भोमे पूजकधीः  
 पुमान् । गोखरस्सस्तु विस्थातो तोये तीर्थमतिस्तथा १  
 वाचक उवाच ॥ वेदशास्त्रे पद्मो मार्गो प्रोक्तो विधिविधान  
 तः । कर्ममार्गो मोक्षमार्गो ह्यविमो जीवसेवितो २  
 कर्ममार्गो श्रयो जीवो भवेत्पूजकधीर्यदा । भोमे जलेऽ  
 तुलं सोऽस्यम्प्राप्नुयादिति निश्चितम् ३ मोक्षमार्गं रतां जी  
 वो भोमे पूजकबुद्धिमान् । जले तीर्थमतिश्चापि गो खर

कहे थे पूजवाली गोपियों को पति गुरु अकेला नहीं कहें ॥४॥  
 इति भा० द० उ० शं० मं० त्र्यशीतितमेऽध्याये त्र्यशीतितमे वशी  
 ८३ ॥ श्लोक ॥ १ ॥

श्रोता पूजते भये श्रीकृष्णजी ब्राह्मणसे कुरुष्वेत्र में कहें कि  
 भोम जो प्रतिमा देवता की होती है उस प्रतिमा में जो प्रा-  
 णी देवता मानते हैं कि यह प्रतिमामें भगवान् घसे हैं सो  
 प्राणी मानुष्य नहीं है ऐसा मानने वाले प्राणी धूल तथा  
 गदहाहो हैं तथा जल में तीर्थ मानने हैं कि इस तीर्थ में  
 स्नानकिये से मोक्ष होयगा वोभी बलगदाहो हैं हे गुरुजी ऐसा  
 बचन क्यों कहें प्रतिमाकी तथा गंगा आदि तीर्थों की निंदा  
 भगवान् करते भये हैं यह प्रहरी शंका होती है १ वाचक योक्ष  
 वेद में तथा शास्त्र में दो मार्ग लिखे हैं एक कर्म मार्ग दूसरी  
 मोक्षमार्ग संसारी जीव दोनों रस्ताको भ्रमन करना है २ जो  
 जीव कर्म मार्ग को सेवन करता है जेसा गृहस्थ आदि ज्ञानमा  
 जीव प्रतिमा में देवता मानेगा तथा जल में स्नान किये से  
 मोक्ष होना मानेगा तब निश्चय से कर्म करने वाले जीव को  
 मननी मे हीन मूल प्राप्त होयगा ३ औरतो जीव मोक्ष मार्ग  
 को भ्रमन करते हैं वो जीव प्रतिमा में देवता मानेगा तथा

स्सस्तुकथ्यते४भगवद्वचनन्त्वेतज्जीवस्यकर्मिणो नहि ।  
 सन्न्यस्तस्यविजानीयान्नान्यथाभ्रममावहेत्५इतिभा०  
 द० उ० शं० मं० चतुरशीतितमेऽध्यायेचतुरशीतितम  
 वेणी ॥ ८४ ॥ श्लो० ॥ १३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ नपीतम्वासुदेवेन देवकीस्तनज  
 म्पयः । पीतशेषंकथम्प्रोक्तं तत्पयोयत्पपुश्र्यते१वाचक  
 उवाच ॥ त्रिविधंकर्मसंप्रोक्तं वेदेशस्त्रैचलौकिके

वाङ्मनःकायजंकर्म न्यूनाधिकविवर्जितम् २ प्रपीतन्ते  
नमनसा देवकीस्तनजम्पयः । कृष्णेनसर्वदातश्च पी  
तशेषम्प्रभाषितम् ३ इति० भा० द० उ० शं० मं०  
पंचाशीतितमेऽध्यायेपंचाशीतितमवेणी ८५ श्लो० ५५

श्रोतार ऊचुः ॥ विदेहनगरेब्रह्मन् गमनंमुनयस्तदा ।  
कुर्वन्तश्चानिश्चिन्तस्मान्निर्यातास्स्वस्वमाश्रमम् १ आलो  
किताः पुरजनैस्सुज्ञैरपिमुनीश्वराः । श्रुतपूर्वावभूवुस्ते क  
थन्तैश्चमुनीश्वराः २ ॥ वाचक उवाच ॥ नसर्वकालिकः  
पूर्वोग्राह्योत्रातिसुकोशलैः । यदापश्यन्पुरजनाःप्राप्तान्  
कोई कर्म बड़ाभी नहीं है येतीनों कर्म वरोवरि हैं २ देवकीके  
स्तनके दूधको भगवान्सबदिन मनकरिके पीतेभये जोमनसे  
दूधपियेतौ वचन तथा शरीर से दूधको पीनासत्य होगया इस  
वास्ते व्यास जीने कहे हैं कि कृष्णजी के पीनेसे जो दूध  
वाकी देवकीके स्तनमें था उस को वो सब बाजक पीतेभये ॥  
३ ॥ इ० भा० द० उ० शं० मं० पंचाशीतितमेऽध्यायेपंचाशीतितम  
वेणी ८५ ॥ श्लोक ॥ ५५ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी मुनिलोग विदेह राजाके नगर  
को सदा आतेथे तथा नगरमें कुछदिन वासकरिके अपने  
अपने आश्रमको जातेथे १ तब जनकपुरीमें बड़े बड़े महात्मा  
तथा और प्रजा घसेथे तब वह पुरवासी प्रजा तथामहात्मा  
जन मुनियोंको देखतेथे पहिचानतेथे फिरि क्यों व्यास जी  
कहेकि पेशतर जिन मुनियोंको द्वाद्दण मुनि रखाथा उन  
मुनियोंको पूजनकरता भया गुरुजी इस वाक्यसे मालूम  
परताहैकि नारदादि मुनिजनक पुरीको कभीभी नहीं गये  
नये २ कृष्णके साथ गये हैं इसवास्ते व्यासजी कहेहैंकि जनक

मुनिवरांश्चते ३ तत्पूर्वग्रहणं चात्र ज्ञातव्योतिवि  
क्षयैः । आयातिमुनिभिस्सार्द्धं मेतैः कृष्णश्चतैश्श्रुता ।  
श्रुतपूर्वास्ततः ख्याता मुनयः पुरवासिभिः ४ इति भा०  
द० उ० शं० मं० षट्शतीतितमेऽध्याये षट्शतीतितम  
वेणी ॥ ८६ ॥ श्लो० ॥ २३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ नृणां क्षेमाय चाकल्पान्मुनिर्नाराय  
णो हरिः । तपस्यतिष्ठदित्युक्तं तत्किं स्वस्तिनृणामिह १

पुरवासी प्रजा देखे नहीं थे परंतु सुने तो थे कि अमुक २ मुनि  
पृथ्वीमें हैं यह शंका हम सबके मनमें है २ वाचक बोले (श्रुत  
पूर्वान्मुनीश्वरान्) इस श्लोकमें विद्वान्जन सब दिन तथा वर्ष  
को तथा बहुतदिन को पहिले नहीं मानते बहुत दिन तथा  
वर्ष से तो पुरवासी प्रजा सब मुनियों को जानते थे परंतु  
जब श्रीकृष्णके साथ सब मुनि आये तब सब मुनियों  
को पुरवासी प्रजा देखते भये ३ उसवखतसे पहिले सुनि  
राखे थे मुनियोंको पुरवासी ऐसा अर्थ है क्यों जनकपुरमें बड़ा  
शोर मचि गया था कि श्रीकृष्ण जनकपुरीको आते हैं तिनके  
साथ अमुक २ मुनिजन भी आते हैं ऐसा पुरवासी सुने थे तब  
जिनको २ आनेका सुने थे सो सब आय गये तिन सबको  
पूजन करते भये हे श्रोता हो (श्रुतपूर्वान्मुनीश्वरान्) को अर्थ  
व्यास मुनि ऐसा किये हैं और ऐसा नहीं किये कि कभी देखे  
नहीं थे सुने थे ४ इति भा० द० उ० शं० मं० षडशीतितमेऽध्याये  
षडशीतितम वेणी ॥ ८६ ॥ श्लो० ॥ २३ ॥

श्रोता पूछते भये गुरुजी वदिकाश्रम में नारायणनाम  
मुनि मानुष्योंके कल्याण होनेवास्ते बहुत युग कल्प कल्पांतसे  
तप करते हैं सो उस तपकारिके मानुष्योंको कल्याण क्या होता

(स्क० १०) भा० शंकानिवारण मंजरी ।

वाचक उवाच ॥ विषयेन्द्रियजाः सौख्यास्सर्वत्र सर्वयो  
निषु । ज्ञानमेव परं सौख्यम् भारतेष्वववर्तते २ प्रभावात्त  
स्य तपसो ज्ञानान्नान्यं नृणामिह । सौख्यन्तस्मान्मुनिश्च  
केनृणां क्षेमाय वै तपः ३ इति भा० द० उ० शं० मं० सप्ता  
शीत्यध्याये सप्ताशीतिवर्णा ॥ ८७ ॥ श्लो० ॥ ६ ॥  
श्रोतार ऊचुः ॥ वृकस्य वंचने विष्णुर्ब्रह्मचारी बभू  
वह । कथन्न भगवान्दध्रे चान्यरूपं सुचंचलम् । बटोरयो  
ग्यं सम्प्रोक्तम् वेदे चानृतभाषणम् १ वाचक उवाच ॥  
न केषामपि विश्वासः खिलो केष्वपि मन्यते । वृको महाबली

यह शंका है वाचक बोले सब जीवों को इन्द्रियों को जुदा जुदा  
।षय सुख सब लोक में हैं परंतु नारायण नाम मुनि भारतखण्ड  
। तप करते हैं इस वास्ते मनुष्यों को ज्ञान को सुख तथा मोक्ष  
। कन्याय ज्ञान से होना भरतखंड सिवाय दूसरा द्वीप तथा  
। बड तथा और लोक में ज्ञान नहीं है हे श्रोता हो ज्ञान से दूसरा  
। कन्याय मनुष्यों को कोई भी नहीं है इस वास्ते मनुष्यों के  
। कन्याय होने वास्ते नारायण मुनि तप करते हैं ऐसा लिखा है ३  
इति भा० द० उ० शं० मं० सप्ताशीतितमेऽध्याये सप्ताशीतितम  
वर्णा ८७ ॥ श्लोक ॥ ६ ॥

श्रोता पूछते भये वृकासुर को छलने वास्ते परमेश्वर ब्रह्म-  
चारी को रूप क्यों धारण करते भयं क्योंकि वेद में ब्रह्मचारी  
को झूठ बोलना खोटी बात लिखी है इस वास्ते और अनेक  
रूप भगवान् के बनाये संसार में हैं दूसरा रूप धारण करिके  
छल करना योग्य था यह बड़ी शंका हमारे सब के मन में  
होती है सो आप कृपा करके उसका छेदन करो १ वाचक  
बोले वृक नाम दैत्य तीन लोक में किसी को विश्वास

धूर्तोद्वयोश्चमन्यतेसदा २ नारदस्यचभेषस्य ब्रह्मचारिणएवच । नारदेनोपदिष्टं ज्ञात्वानोभगवांस्तदा । ब्रह्मचारिविपुर्धृत्वा कार्य्यचक्रेजगत्पतिः ३ इति भा० द० उ० शं० मं० अष्टाशीतितमेऽध्यायेअष्टाशीतितमवेणी ॥ ८८ ॥ श्लो० ॥ २७ ॥

श्रोतार ऊचः ॥ त्रिषुदेवेषुकःश्रेष्ठो विचारोयमनर्थकः । अज्ञानांचैवबालानां मूर्खेशानाम्पुनःपुनः १ महदद्भुतमेतद्विष्णुपयश्चक्रिरेकथम् । वाचक उवाच॥

नहीं मानता था क्योंकि वह बड़ाधूर्तथा सबदिन बड़ामानी थापरन्तु तीनलोक में दोजने को विश्वास मानताथा एक तो नारद को दूसरा ब्रह्मचारी के भेषको भगवान् विचार कियेकि यह दैत्य नारद की आज्ञा मानिके यह कर्म किया है इसवास्ते ब्रह्मचारी को रूप धरिके सब काम भगवान् करते भये ॥ ३ ॥ इ० भा० द० उ० शं० मं० अष्टाशीतितमेऽध्याये अष्टाशीतितमवेणी ॥ ८८ ॥ श्लो० ॥ २७ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरु जी तीनदेवतोंमें बड़ादेवताकौनहै ब्रह्मावड़ा है कि विष्णु वड़ाहै किशिववड़ाहै ऐसा विचार मुनि जन क्यों करते भये क्योंकि ऐसा विचारतो बड़े बड़े अज्ञानी तथा बालक तथा बड़े बड़े मूर्ख करतेहैं मुनिलोग ऐसा विचार कभी नहीं करते यह बड़ीशंकाहै १ वाचक बोले किसारस्वत मुनिके वंश में जन्मलिये जो ब्राह्मण सो सब ब्रह्मकर्म में बड़े निपुण होतेथे ऐसा ब्रह्मकर्म के अभिमान करि के सब देवतों को तथा मुनिजन को अनादर करते भये बचन करिके भी किसीका आदर नहीं करते थे २ ऐसा सारस्वत ब्राह्मणों का अभिमान भगवान् जानि के विचार कियेकि ऐसा अभिमान

सारस्वतकुलेजातास्तेविप्राःकर्मगर्विताः।मुनीन्सुरान्  
तिरश्चक्रुर्नादरंवचनैरपि २ ज्ञात्वैतान्ब्राह्मणान् विष्णु  
नैरकंगन्तुकामुकान् । कृपयाबुद्धिसम्मोहन्तेषांचक्रमखे  
हरिः ३ अतोविस्मृतज्ञानास्ते बभूवुर्भ्रमतापिताः।भृगु  
प्रवर्णितंश्रुत्वा मानहीनावभूविरे ४ इति भा० द० उ०  
शं० मं० एकोननवतितमेऽध्यायेएकोननवतितमवेणी  
८६॥श्लो० ॥ १ से २ तक ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ मानुष्यवत्कथंचक्रे महाक्रीडांजग  
पतिः । कृष्णःस्त्रीभिश्च स्वीयाभिर्द्वारकायाम्मुनेवद १  
वाचक उवाच ॥ ज्ञात्वाकलियुगम्प्राप्तं भविष्यन्ति  
हरिकै येसब सारस्वत ब्राह्मणनरकमें पड़ेंगे क्योंकि हमै आदि  
जेकै ज्यतने देवता तथा ब्राह्मणहैं तिन्ह सबको येब्राह्मण कुछ  
भी नहीं जानते ऐसा भगवान् विचारि कै उन्हहीं ब्राह्मणों  
की यज्ञमें कृपा करिकै उन्हहीं ब्राह्मणोंकी बुद्धिको भ्रष्टकरि  
देतेभये तबवो सब ब्राह्मण ज्ञानको भूलिगये पागल बिल-  
कुल होगये मूर्खता से भस्महोने लगे कुछदेरपीछे भगवान् को  
चरित्र भृगुवर्णन किये तब सब सारस्वत ब्राह्मण अभिमान से  
रहित हांगये हे श्रोताहो इसवास्ते सारस्वत ब्राह्मण बुद्धिभ्रष्ट  
होगये ॥३४इति भा० द० उ० शं० मं० एकोननवतितमेऽध्याये  
एकोननवतितमवेणी ॥ ८६ ॥ श्लो० ॥ १ से २ तक ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरु जी श्रीकृष्ण अपनी स्त्रियों के  
संग मानुष्यके सरीके क्रीड़ा क्यों करते भये द्वारका पुरीमें हे  
मुनिजी इसशंका को उत्तर आपु कहो १ वाचक वाले श्री  
कृष्ण जी विचार कियेकि अब थोरेही दिनमें कलियुग आवे-  
गा कलियुग मेंबड़े बड़े दुष्ट अधर्मीऐसे मनुष्य जन्मैंगे अपनी



नराधमाः । परस्त्रीशक्नमनसस्स्वस्त्रीताडनकारकाः  
विनन्दयतितदाधर्मः स्त्रीपुंसोर्वेदानिर्मितः ।

नानराणाम्बै शिक्तणायरमापतिः ३ चक्रे । १ । २ । ३ ।  
कलिस्त्रीरक्षणाय च । ममेदं क्रीडनं श्रुत्वा जारं संत्यज्य  
मानवाः । सर्वोपायैः स्वस्त्रियस्ते पूजयिष्यन्ति वै कलौ ४  
इति भा० द० उ० शं० मं० नवतितमेऽध्याये नवतितम  
वेणी ॥ ६० ॥ श्लो० ॥ १ से २ तक ॥

स्त्री को छोड़ि कै दूसरे की स्त्री से मन लगावेंगे अपनी स्त्री को  
अन्न वस्त्र नहीं देंगे जो स्त्री कुछ बोलेंगी तो मारेंगे २  
तब वेद में जो विवाह हुये स्त्री पुरुष को धर्म लिखा है सो नष्ट  
होवगा तब सनातन धर्म नष्ट हुये पर वर्ण संकर प्रजा होवै  
गी तब पृथ्वी रसातल को जावैगी और जल्दी हमको अवतार  
लेना पड़ेगा ऐसा भगवान् विचारि कै कलियुग में उत्पन्न जो  
मानुष्य होवेंगे उन मानुष्यों को सिखाने वास्ते ३ तथा कलियुग  
में स्त्रियों की रक्षा करने वास्ते अपनी स्त्रियों के साथ बड़ी क्रीड़ा  
कृष्ण करते भये कृष्ण विचारि किये कि हमारी अपनी स्त्रियों  
के साथ क्रीड़ा को कलियुग के मानुष्य सुनिकै जारं कर्म छोड़ि  
कै अपनी अपनी स्त्रियों को आदर पूजन करेंगे जानेंगे कि  
अपनी स्त्री गृहस्थी में बड़ी चीज है जो उत्तम चीज न होती  
तो भगवान् बड़ा बड़ा आदर पूजन अपनी स्त्रियों को क्यों  
करते हे श्रोता हो इस वास्ते द्वारकापुरी में मानुष्य सरी के अपनी  
स्त्रियों के साथ श्रीकृष्ण क्रीड़ा करते भये काम की वशिहो के  
नहीं किये ४ इति श्री भागवत द० उ० शं० मं० नवतितमेऽ  
ध्याये नवतितमवेणी ॥ ६० श्लो० १ से २ तक ॥

इ० भा० द० शं० मं० सुधामयी टीका सहिता समाप्ता ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

एकादशस्कथ ॥

सुधामयीटीकासहिताविरच्यते ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ जगत्कर्ताजगत्स्वामी वेदमार्गप्रर  
क्षकः । स्वयमुत्पाद्यस्वकुलं कथंजह्नेरमापतिः १ पराव  
रज्ञोभगवान् कथम्पूर्वमजीजनत् । हलाहलस्यचेद्वृत्तं  
स्वयमारोप्ययत्नतः । पश्चाच्छेतुमयोग्यं च स्वहस्तेन  
तिनःश्रुतम् २ वाचक उवाच ॥ स्वांशभूतान्यदून

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी श्रीकृष्ण तीनलोकों के मालिक  
हो कै अपने शरीर से अनेक प्रकारको पुत्रपौत्र प्रपौत्र उत्पन्न करि  
कै फिरि उनको नाश क्यों करते भये ? जो कोई कहै कि कृष्णने  
विचार किये कि इन यदुवंशियोंको छोड़िकै हम बैकुंठको  
जावेंगे तौ ये सब पृथ्वीको दुःख देवेंगे तौ ऐसा कहनेवाला  
विलकुल पागल है क्योंकि श्रीकृष्ण महाराज घट २ की बात  
जानने वाले थे कुछ मानुष्य नहीं थे ईश्वर थे जानते थे कि हम  
बैकुंठको जावेंगे तब हमारे अंशसे जन्म लिये जो यादवसो  
पृथ्वीको दुःख देवेंगे ऐसा जानते थे फिर उन सबको उत्पन्न क्यों  
करते भये क्योंकि आपु उत्पन्न करिकै आपुई नाश करना यह बड़ा  
अयोग्य है क्योंकि शास्त्रमें ऐसा लिखा है कि जहर के खायेसे  
प्राणी मरिजाते हैं ऐसीवुरी चीज है परन्तु जो अपने हाथसे

ज्ञात्वा कलिं चागतमच्युतः । निमित्तं भूमिभारस्य  
 जह्रे कुलम्बिभुः ३ युगश्चायम् महाघोरो नति-  
 वः । औषधाशत्रुणच्छेद मिव सौख्यं भविष्यति ।  
 ज्ञात्वा च श्रीकृष्णस्संजह्रे स्वकुलम्बिभुः ॥४॥ इति  
 भा० ए० शं० मं० प्रथमेऽध्याये प्रथमवेणी ॥ १ ॥  
 श्लोक ॥ १ ॥

जहरको वृद्धभी लगाना तो फिरि अपने हाथ से उस को  
 काटना बड़ा अयोग्य है और चेतन शरीरको उत्पन्न करिके  
 आपुसे फिरि आपुई उसको नाश करना यह बड़ा खोटा काम  
 है गुरुजी कृष्णने अयोग्य कर्म क्यों किये यह बड़ी शंका है २  
 वाचक बोले श्रीकृष्णने ऐसा बिचार किहे कि जिस दिन हम इस  
 लोकसे बैकुण्ठलोकको जावेंगे उसी दिन कलियुग बड़ा घोर मर्त्य  
 लोक को राजा होवैगा और एसब यादव हमारे अंश करिके उत्पन्न  
 होते भये हैं ३ कलियुग में ये सब यादव रहेंगे तब दुःख पावेंगे क्योंकि  
 कलियुग में भूमिमें साधु नहीं रहेंगे और जो कोई साधु रहेंगे  
 तो अष्टहोके दुःख पावेंगे इस वास्ते इन सब यादवों को  
 पेश्तर अपने लोक को भेजिके पीछे से हम जावेंगे यादवों  
 को नाश भये पर दुख तो होवैगा लेकिन पीछे सुख होवैगा  
 कैसा कि जैसा दवाई खाते वखत कड़ू मालूम पड़ती है परन्तु  
 पीछे से सुख होता है फोड़ा को चिगात वखत जीव दुख पाता  
 है परन्तु पीछे से सुख होता है हे श्रोता हो ऐसा कृष्णने विचा-  
 रिके पृथ्वी के भार को कारण करिके अपने अंशसे भये जो  
 यादव तिन सब को नाश करिके आपने अंश को संग लेके  
 चले गये कलु निर्दयपनासे यादवों को नाश नहीं किये दो  
 श्लोक को अर्थ मिला है यगम है ॥४॥ इति श्री भा० एका०  
 शं० मं० प्रथमेऽध्याये प्रथमवेणी ॥ १ ॥ श्लोक ॥ १ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ सस्सद्धर्मश्चकः प्रोक्तो यस्य सद्यः प्र  
पुनाति हि । देवविश्वद्रुहश्चापि महदाश्चर्यमेव तत् १  
एकस्यापि नरस्यैव कृतघ्नत्वं करोति यः । तस्यापि दुर्ल  
भापूतिर्देवविश्वद्रुहः कथम् २ दयायुक्तो हरेर्नाम जप  
स्सद्धर्मं दृष्यते । दाहयेत्सर्वपापानि तु लराशिमिवानलः  
३ इति भा० एकादशस्कंध शं० मं० द्वितीयेऽध्याये  
द्वितीयवेणी ॥ २ ॥ श्लो० ॥ १२ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ भक्त्योत्पन्ना तु या भक्तिस्तयोत्पुल

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी ऐसा बड़ा सुंदर धर्म क्या है  
कि जो धर्म जलदी ऐसे दुष्टों को पवित्र करता है कैसे दुष्टों  
को जो तीन लोक की तथा देवता की बुराई करते हैं  
तीनको पवित्र करना बड़ा कठिन है क्योंकि १ शास्त्रों में  
ऐसा लिखा है कि जो प्राणी किसी दूसरे प्राणी की एककी  
भी बुराई करेगा तो वह बुराई करनेवाला प्राणी कभी नहीं  
पवित्र होगा वो तो चांडाल सरीके बनारहैगा और जो तीन-  
लोक की तथा सब देवता की बुराई करेगा सो क्यों करिके  
पवित्र होगा यह बड़ी शंका है २ वाचक बोले हे श्रोता हो  
जो धर्म तीन लोक तथा सब देवता की बुराई करनेवाले प्राणी को  
पवित्र करता है सो धर्म यह है कि मनमें दया करिके भगवान्  
को नाम जपना यह ऐसा सुंदर धर्म है कि सब पाप को नाश  
करता है जैसा रुईके समूह को एक तरिसे प्रमाण अग्नि  
भस्म करि देता है तैसा भगवान् के नामका जप थोराभी करे  
गा तो अनेक जन्म के पाप को वह जप नाश करेगा ॥ ३ ॥  
इति भा० प० शं० मं० द्वितीयेऽध्याये द्वितीयवेणी ॥ २ ॥ श्लो० ॥ १२ ॥  
श्रोता पूछते भय हे गुरुजी भक्ति करिके उत्पन्न जो भक्ति

कितान्तनुंविभ्रद्देवम्भजेद्भक्तस्साभक्ति

१ वाचक उवाच ॥ ५ ॥ योऽपि

निगद्यते । तयानिर्भरयाविष्णुं जिह्म ।

२ इति श्रीमद्भागवतएकादशस्कंधशंकानिवारणमं  
जय्यां तृतीयेऽध्याये तृतीयवेणी ॥ ३ ॥ श्लोक॥ ३१ ॥

श्रोतार उचुः ॥ ब्रह्मज्ञोजनकोराजा ब्रह्मवार्तावि  
हायच । कथम्पप्रच्छ योगेशमवतारकथाःशुभाः १  
वाचक उवाच॥बीजंविनाजनिर्नास्ति केषामपिचराचरे।  
ब्रह्मज्ञानस्यबीजंच सगुणब्रह्मकीर्तनम् । अतःपप्रच्छ

तिस भक्ति करिके भगवान् के भक्तों को रोम २ खड़ा होजा-  
ता है ऐसी रोमांच हुई देहको धारण करिके भक्तजन  
भगवान् को भजन करते हैं ऐसी उत्तम भक्ति क्या कहाती  
है यह बड़ीशंका हमारे मनमें है १ वाचक बोले भगवान् में  
बड़ीभक्ति जैसी अंबरीष आदिभक्त भक्ति करतेथे ऐसी भक्ति  
करिके प्रभु के चरणों में प्रीति उत्पत्ति होवै उसी प्रीति करने  
को नाम भक्तिसे उत्पत्ति भई भक्ति है ऐसी भक्ति करिके  
भगवान् को भजन करेगा तब जीवमोक्ष को जावैगा ॥ २ ॥  
इतिभा०ए०शं०मं०तृतीयेऽध्यायेतृतीयवेणी॥३॥श्लो०॥ ३१ ॥

श्रोता पूछते भए हे गुरुजी राजा जनक चड़े ब्रह्म के  
जानने वाले थे ऐसे ब्रह्मज्ञानी होकै ब्रह्मकी कथाको त्यागिके  
मुनिराज से सगुण अवतारकी कथा क्यों पूछते भए क्यों-  
कि ब्रह्मज्ञानी सज्जन सगुण में प्रीति नहीं करते यह शंका  
है १ वाचक बोले तीनलोक में जो चर अचर जीव हैं तिन  
सबको बीज बिना जन्म नहीं हो सक्ता किसी को भी  
जन्म बीज बिना नहीं होता तैसे ब्रह्मज्ञानको बीज सगुण

वैदेहो हरेराविर्भवशुभम् २ इति भा० ए० शं० मं०  
चतुर्थेऽध्यायेचतुर्थवेणी ॥ ४ ॥ श्लो० ॥ १ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ सेवनं भजनं विष्णोः राज्ञा पृष्टो युगे  
युगे । अयोग्यमिदमाख्यातं योगीशेनापितत्कथम् १  
वाचक उवाच । भिन्नं भिन्नं न तस्यास्ति भगवान्दीन  
वत्सलः । भिन्नता सर्वजीवेषु भक्तिरेव सदानृणाम् २  
असंख्यातं हरेर्नामये भजन्ति यथा युगे । तथा जगत्पति

ब्रह्मको कीर्तन है सगुण के दीर्जन से ब्रह्मज्ञान होता है हे  
श्रोता हो इसवास्ते राजा जनक ब्रह्मज्ञानी होके सगुण  
भगवान् के अवतारकी कथा पूछे हैं २ इति भा० ए० शं०  
मं० चतुर्थेऽध्याये चतुर्थवेणी ॥ ४ ॥ श्लो० ॥ १ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी राजा जनक मुनिसे भगवान्  
को भजन तथा सेवन आदि सब कर्म युग २ को जुदा जुदा  
पूछे कि सतयुग में कैसा भजन सेवन होता है तथा त्रेतामें  
कैसे भजन सेवन होता है द्वापरमें कैसे कलियुगमें कैसे और  
मुनिभी चारों युगों को जुदा २ पूजन आदि सब भगवान् की  
सेवन वर्णन करते भये यह बड़ा अनुचित कर्म है जुदा जुदा  
क्यों वर्णन किये क्योंकि शास्त्र में भगवान् सर्वध्यापी निरं-  
जन लिखे हैं जुदा जुदा कामतों जीव के होता है ईश्वर के  
नहीं होता यह पड़ीशंका है १ वाचक बोले हे श्रोता हो भग-  
वान् तो दीनदयालु हैं तिनलोक में जो चर अचर प्राणी हैं  
तिन सब प्राणियों में भगवान् किसी युगमें भी भिन्नभाव  
नहीं राखते सबको एक समान जानते हैं ऐसे दयासागर हैं  
परन्तु मानुष्यों में अनेक प्रकार के जीव हैं ज्यतनी मानुष्य  
की देह है त्यतने जीव हैं इसवास्ते सब जीवों में भगवान् की

विष्णुर्गोर्वत्समिवरक्षति ३ भक्तिलीलारसोन्म...  
 प्रवर्द्धनाय च । नामवर्णैः पृथग्विष्णोः प्र-  
 नृपः ४ इति भा० एका० शं० मं० पंचमेऽध्याये पंच  
 मवेणी ॥ ५ ॥ श्लो० ॥ १८ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ हरिं सर्वावतारेषु वैकुण्ठगमनम्प्रति  
 विरंचिः प्रार्थयामास कथं कृष्णं यथा च वै १ वैकुण्ठगम  
 नार्थाय स सुरेश द्विजैर्वृतः २ वाचक उवाच ॥ अवतारा  
 भक्ति जुदी २ होती है सब युगोंमें कोई कैसी भक्ति करता है  
 २ तथा भगवान् के नाम तथा चरित्र को भी पार नहीं जिस  
 नाम पर जिस जीवकी भक्ति भई उसी नामको जपने लगा युग २  
 में भगवान् उस नाम जपने वाले जीवकी रक्षा कैसा करते हैं  
 जैसी गाय अपने वत्सकी रक्षा करती है ३ तथा राजा जनक  
 भी भगवान् के भक्तिकी लीला करिके मस्त हो रहे हैं भग-  
 वान् की भक्ति की वृद्धि होनेवास्ते युग २ में जुदा २ भगवान्  
 को नाम तथा वर्ण तथा पूजन सेवन पूछते भये भिन्नभाव  
 मानिके नहीं पूछे ॥ ४ ॥ इ० भा० ए० शं० मं० पंचमेऽध्याये  
 पंचमवेणी ॥ ५ ॥ श्लोक ॥ १८ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी भगवान् अनेक अवतार  
 धरिके पृथ्वी में अनेक प्रकारको चरित्र करते भये परंतु पृथ्वी  
 से भगवान्को वैकुण्ठ जानेवास्ते किसी अवतारों में ब्रह्मा  
 प्रार्थना नहीं किए कि महाराज अब आप वैकुण्ठ को चलो  
 तो फिरि इंद्रको तथा ब्राह्मणों को ब्रह्मा अपने संग छेके  
 वैकुण्ठ चलने वास्ते श्रीकृष्णकी याचना क्योंकि एक अब  
 आप वैकुण्ठको चलो यह शंका है १ वाचक बोले भगवान्  
 अनेक अवतार धारण करते भये संसारको सुख होने वास्ते

एथनेकानिहरिणासन्धृतानिवै । कार्याथभगवान्कृष्णो  
मानुषत्वमुपागतः ३ शून्यवैकुण्ठमालोक्य तारकोभगव  
त्पुरीम् । यद्दिनेपीडितुंशक्त्वासितश्चक्रेतेजसा॥छावि  
तस्तद्दिनेब्रह्मा प्रार्थयामासयादवम् ४ इति भा० ए०  
शं० मं० षष्ठाऽध्याये षष्ठवेणी ॥ ६ ॥ श्लो० ॥ २७ ॥  
श्रोतार ऊचुः ॥ प्रोवाचाङ्गोद्धवम्प्रीत्या श्रीकृष्णो  
भक्तवल्लभः । नवस्तव्यन्त्वयातात मयात्यक्तेमहीतले  
१ सकथंकृतवान्वासं बद्रीकाश्रममंडले २ वाचक  
तेसेई पृथ्वी को भार उतारने वास्ते श्रीकृष्ण मानुष्यहोके  
मर्त्यलोक में आते भये २ जब श्रीकृष्ण मर्त्यलोक में आए  
तब तारक नाम राक्षस वैकुण्ठ पुरीको भगवान्से हीन देखि-  
कै भगवान् की पुरीको दुःख देने को विचार करता भया ३  
आजु दुःख देवै कलि देवै ऐसा विचारकरते करते तारक को  
वर्ष १२४ महीना १०६ शवीति गया परन्तु जिस दिन निश्चय  
करिकै दुःख देने को भला कुलु थोरा उत्पात वैकुण्ठ में कि-  
या तब सुदर्शनचक्र भस्म करनेको तारक के वास्ते दौड़ते  
भये तब सुदर्शनके डरसे तारक भागिगया तब उसीदिन  
ब्रह्मा विचार कियेकि आज दुष्ट वैकुण्ठ में उपद्रव करने को  
प्रारंभ किया है आजतौ भागिगया चक्रसे डरिकै परन्तु अब  
जो भगवान् वैकुण्ठ को नहीं आवेंगेतौ कभी तारकदेव वैकुण्ठ  
की नाश करिदेवंगा हे श्रोताहो ऐसा ब्रह्मा विचारिकै श्रीकृष्ण  
को वैकुण्ठ चक्रने वास्ते बिनती करते भये ॥४॥ इति भा० ए०  
शं० मं० षष्ठऽध्यायेषष्ठवेणी ॥ ६ श्लो० ॥ २७ ॥  
श्रोता पूछते भये हे गुरुजी श्रीकृष्ण उद्धव को कहये कि  
हे उद्धव पृथ्वी को हम त्यागिकै वैकुण्ठ को जावेंगे तब तुम



उवाच ॥ वृन्दावनं हरि क्षेत्रं यत्र गंगायमानुजा ।

द्वारिका काशी बद्रीकाश्रममेव च । ते

क्षेत्रे मोक्षमण्डलाः ३ इति भा० ए० शं० मं० सप्तमेऽ  
ध्याये सप्तमवेणी ॥ ७ ॥ श्लोक ॥ ५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ ज्ञानाप्त्यै मुनयश्च कुर्जन्मभिर्बहुभिः  
गुरो । यत्नन्नाप्तन्तु तैर्ज्ञानं क्षणेनापकथंचतत् १ पिंगला  
नकदाचके सत्कर्म हरितुष्टिदम् २ वाचक उवाच ॥  
यदर्थं विधिना सृष्टा पिंगला तत्प्रकुर्वती २ विदेह नगरे स  
र्वस्वधर्म हरितत्पराः । नरानार्यश्च श्रोतारस्तथेयमपि

पृथ्वी में वास मति करना तो फिर कृष्णको बैकुण्ठ गये  
पीछे बद्रीकाश्रम में उद्धव क्यों टिकते भये क्या बद्रीका-  
श्रम पृथ्वी में नहीं है यह शंका होती है १ वाचक बोले  
वृन्दावन अयोध्या प्रयाग नैमिषारण्य द्वारिका काशी बद्रीका  
श्रम इन्ह सब क्षेत्रों को सात द्वीप पृथ्वी में गिनती नहीं है ऐसा  
शास्त्रों में लिखा है कि ये सब मोक्ष भूमि है सात द्वीप सरी  
के भूमि नहीं है हे श्रोता इस वास्ते बद्रीकाश्रम में उद्धव  
टिके हैं २ इति भा० ए० शं० मं० सप्तमेऽध्याये सप्तमवेणी ॥  
७ ॥ श्लोक ॥ ५ ॥

श्रोता पृछते भए हे गुरुजी ज्ञान प्राप्ति होने वास्ते मुनियों  
ने अनेक जन्म तथा अनंत युग तप करते भये परंतु ज्ञानकी  
प्राप्ति मुनि लोगों को नहीं होती ऐसा कठिन ज्ञान है और  
पिंगला वेश्या कभी भी सुंदर कर्म नहीं किये कि जिस कर्म  
करिके ईश्वर प्रसन्न होवे ऐसी पतित रंडी पिंगला एक क्षण  
में ज्ञान को क्यों प्राप्त हुई यह शंका है १ वाचक बोले जो  
काम करने वास्ते ब्रह्मा जिस योनि को बनाया है वह प्राणी

कामिनी ३ रत्यन्तेस्नानमाकृत्यहरिञ्चिन्तयतीसदा ।  
 तद्दिनेग्लानिमार्गेण ज्ञानमाप्तंतयास्वतः ४ इति भा०  
 ए० शं० मं० अष्टमेऽध्याये अष्टमवेणी ॥ ८ ॥ श्लो० ॥ २७ ॥  
 श्रोतार ऊचुः ॥ श्रीकृष्णोवाचबालश्च चिन्तामुक्तो  
 द्वयंकथम् । यदिचिन्ताविमुक्तश्च जन्मतोरोदनंकथम् १  
 तदापतितमात्रोपिकौकरोतिससत्वरम् । चिंतयाचविमु  
 उसी काम को करेगा तो पाप नहीं लगेगा परन्तु अपने कुल  
 को कर्म करिके कुछ देर भगवान् की प्रीति करेगा तब जैसा  
 भारत में धर्म व्याध आदि जीव हैं इसी प्रकारसे ब्रह्मा जो  
 कर्म करने वास्ते पिंगला को भी बनायेथे सो कर्म पिंगला भी  
 करता थी क्योंकि जनकपुरीमें सब जीव अपने २ कुलके धर्म  
 को करिके पीछेसे भगवान् में प्रीतिकरतेथे ईश्वरको भुजि नहीं  
 गये थे स्त्री पुरुष सब भगवान् को नाम जपतेथे हे श्रोताहो तैसे  
 पिंगला ३ पुरुषोंके संगराति करिके पीछेसे स्नान करिके दूसरा  
 वस्त्र पहिरिके भगवान् को नाम जपती थी तथा ईश्वरकी प्रार्थना  
 करिके अपनी देहसे किया जो पाप तिसकी क्षमा कराती थी  
 नित्य उसदिन भगवान् की कृपा होगई तब बुरे कर्म में ग्लानि  
 उत्पत्ति भई पिंगलाके उसी ग्लानि करिके ज्ञान प्राप्त होगया  
 हे श्रोताहो इस प्रकार से एक क्षण में ज्ञान प्राप्त पिंगलाको  
 भया कुछ विलकुल अष्ट नहीं थी कि ईश्वर को नहीं जानना  
 वोतो जानती थी ॥ ४ ॥ इति भा० ए० शं० मं० अष्टमेऽध्याये  
 अष्टमवेणी ॥ ८ ॥ श्लो० ॥ २७ ॥

श्रोता पढ़ते भये उद्धव से श्रीकृष्ण कहेथे कि बालों  
 के मनमें चिंतानहीं रहती है हे गरुजी इसमें यह शंका होती  
 है कि जो बालक चिंतासे छूटेहोंगे तो फिर जन्मही से रोतेहैं  
 क्यों माता के उदर से भूमिमें पड़े तब भूमिमें पड़े जलदी

कस्यरोदनन्नैवश्रूयते २ वाल्यावस्थाशिशोर्यावत्ता  
वत्तद्रुदनंसदा । वाचक उवाच ॥ ज्ञानेषुगृह्यतेनैव  
शिशुर्वालश्चसज्जनैः । लज्जाश्रमविहीनश्चसबालः प्रो  
च्यतेबुधैः ३ इति भा० ए० शं० मं० नवमेऽध्याये  
नवम वेणी ॥ ६ ॥ श्लो० ॥ ४ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ स्पर्द्धासूयादिभिर्नष्टंश्रुतमुद्रवनि  
श्चितम् । इतिप्रोक्तंभगवताकिन्त्वेतेऽपियुगत्रयेऽवाचक  
उवाच ॥ विष्णुदेहेषुवर्तते धर्म्माऽधर्मादिसंचयाः ।

रोते हैं जो प्राणी चिंतासेती छुटिगया है वो प्राणीको रोना  
कभी नहीं सुनि परैगा और बालकी कीर्ती जबतक बालपन  
रहता है तबतक रोते हैं यह बड़ी शंका है २ वाचक बोले  
ज्ञानकी बार्ता में सज्जनलोग बालक को बालक नहीं कहते  
पण्डित लोग बालक उसको कहते हैं कि जोप्राणी संसारकी  
तथा अपने कुलकी लाजको तथा डरको त्यागदेवै हे श्रोता  
हो ऐसे पंडितों के बचन के प्रमाण से कृष्णभी उसी बालक  
को चिंतासे दूरिभया कहे हैं जन्मलिये हुये बालक को नहीं  
कहेथे ॥ ३ ॥ इति भा० ए० शं० मं० नवमेऽध्यायेनवमवेणी ॥  
६ ॥ श्लोक ॥ ४ ॥

श्रोता पछते भये हे गुरुजी श्रीकृष्ण भगवान् उद्धव से  
कहेथेकि ईर्ष्या निंदा आदि लकै और जो खराब कर्म हैं तिन्ह  
खराब कर्मों करिके वेदोंके वचन नष्ट होगये इसमें यहशंका  
होती है कि ईर्ष्या आदि जो बुरेकर्म सो सतयुग भेता द्वापरमें  
भीथे १ वाचक बोले शास्त्रों में लिखा हैकि भगवान् की देह  
में धर्म तथा अधर्मदूनों रहते हैं सवयुगमें किसी युगमेंधोरा  
खराब कर्म भगवान् की देहमें रहता है किसी युगमें बहुत

युगत्रयेकिमाश्रय्यैकचिदल्पंकचिद्वदुर्इति भा० ए०  
 श० मं० दशमे ऽध्याये दशम वेणी ॥ १० ॥ श्लो० ॥ २१ ॥  
 श्रोतार ऊचुः ॥ पोषणीयास्सदागावस्तृणतोयान्न  
 मोदकैः । दंशादिसर्वोत्पातैश्च सप्रसूर्विप्रसूरपि १ सदु  
 ग्धावाविदुग्धावाकृष्णोवाचोद्धवंकथम् । दुग्धदोहांच  
 गारक्षन्नरोवैदुःखदुःखभाक् २ वाचक उवाच ॥ गां-  
 दुग्धदोहांयोज्ञात्वातामरक्षति कुर्वति । सनरोदुःखदुःखं

रहता है क्योंकि युगोंकी मर्यादा पालन करने वास्ते दूसरी  
 बात नहीं जानना चाहिये हे श्रोताहो इसवास्ते कृष्ण कहेथे  
 के वरेकर्म करिके वेदोंकी मार्ग नष्ट होगई ॥ २ ॥ इति भा०  
 २० शं० मं० दशमे ऽध्याये दशमवेणी ॥ १० ॥ श्लो० ॥ २१ ॥

श्रोता पृच्छते भये हे गुरुजी शास्त्रमें तथा वेदोंमें ऐसा लिखा  
 है कि गायचाहे तौ व्यातीहांवै चाहे न व्यातीहांवै चाहे व्याने  
 पर भी दूध न देती होवै जातमारतीहांवै परन्तु गायको तो चारा  
 मोदक जल अन्न और अनेक प्रकार की सुंदर चीज मिलाय  
 के गायकी सेवन करना दंशमच्छर आदि अनेक दुःखसे गाय  
 की सेवन करना १ दूधदेवै तौभी नदूध देवै तौभी गायकी  
 सेवन तो करना चाहिये तो फिनि उद्धव से श्रीकृष्ण क्यों कहेथे  
 कि जोगाय दूधदेना बंद करिदेवै अथवा बांझ होवै जनेन ऐसी  
 गायकी जो मानुष्य पालना करेगा सो मानुष्य दुःखसे दुःख बढ़ा  
 दुःख भोगेगा गुरुजी ऐसे कृष्ण के वाक्य सुनिके हम सबको शंका  
 खाय लेती है २ वाचक बोले हे श्रोताहो (गांदुग्धदोहां) इस श्लोक  
 में भगवान् नीति धर्मान दिये हैं सो सुनो हम कहते हैं श्रीकृष्ण  
 भगवान् कहे थे कि जो प्राणी गाय को ऐसा जानिके कि यह  
 गाय अब दूध नहीं देती अथवा बांझ है व्याती नहीं ऐसा जानिके

वैभुनक्तीतिविनिश्चितम् । एवं पंचकलत्रादीनप्यरत्नस  
दुःखभाक् ३ इति भा० ए० शं० मं० एकादशाध्याये  
एकादश वेणी ॥ ११ ॥ श्लो० ॥ १६ ॥

उस गाय की रक्षा करना छोड़ देवैगा मतलब खाने पीने को नहीं देवैगा भूखी प्यासी गौ रहेगी तब यह लोकमें तौ गाय को दाम डूबिजायगा क्योंकि पालना करता तौ फिर व्याती अथवा वांझ होती तौ भी गोबर होता और मरे पर रौरव नरक परैगा गायको भूखी प्यासी राखिवेकेपापसे इसी प्रकार से दुष्ट स्त्री होगई उसकीभी पालन करना प्राणी छोड़ि देवैगा तौ वह स्त्री संसार में बुरा कर्म करैगी तौ वह प्राणी को यह लोक में निंदा और परलोकमें नरक परैगा और जो पालन करैगा तौ धीरे धीरे सुंदरि रस्ता में आयजायगा ऐसे पराये आर्धान देह जानिकै हानि मानिकै देहको पालन करना छोड़ि देवैगा तौ देहको नाश होजावैगा और जो पालना करैगा तौ कभी तौ कभी सुख होवैगा ऐसे धनको मानिलेवै कि इस धन से मैं पुण्य नहीं करताहूं किस काम आवैगा ऐसा जानिकै धन की रक्षा करना छोड़ि देवैगा तौ चोर खेजावेंगे और जो धन की रक्षा करता रहेगा तौ कभी पुण्य होवई करैगी ऐसे वचन से भगवान्को नाम नहीं लिया ऐसा खराब वचन को जानिकै सत्संग छोड़ि दिया तौ भ्रष्ट होजावैगा और जो वचन बिगड़ा है पण सत्संग से बन्दोवस्त करैगा तौ कभी भगवान् को नाम वचन से निकलैगा हे श्रोताहो ऐसा नीति युक्त अर्थ भगवान् उस श्लोकको अर्थ कियेहैं यह नहीं किये कि गाय दूध देना वंद करिदेवै तौ उसकी पालना नहीं करना (मयाऽरक्षति) श्लोकमें ऐसा अर्थ निकसैगा ३ इति भा० ए० शं० नि० मं० एकादशाध्याये एकादशवेणी ॥ ११ ॥ श्लोक ॥ १६ ॥



पूर्वस्वतन्तुं जारन्तुम् मनश्चक्रे पितामहः । त  
 हीतांगो नोत्तरन्दत्तवांस्तदा २ इ० भा० ए० शं० मं०  
 त्रयोदशो० त्रयोदशवेणी ॥ १३ ॥ श्लो० ॥ १८ ॥

श्रोतार उचुः ॥ मुमुक्षुः

तत्सखा । वर्णयामास तत्पुत्राकथं कृष्णो गुणात्मकम् ।  
 वाचक उवाच ॥ शीघ्रं न ज्ञायते ध्यानं मुमुक्षुणां कदापि  
 हि । श्रुतेन वर्णनेनापि विना सत्संगसेवनात् २ तमपक्व  
 हृदं ज्ञात्वा स्वप्रयाणं चकेशवः । ध्यानं प्रोवाच स्वस्यैव  
 शनैराप्स्यत्ययंचतम् ३ इति० भा० ए० शं० मं० चतु-  
 र्दशोऽध्याये चतुर्दशवेणी ॥ १४ श्लो० ॥ ३१ ॥

लज्जा करिके ब्रह्मा की देह को तेज नष्ट होगया हानिमानि के  
 नहीं बोले ब्रह्मा विचार किये कि क्या मुख देखाय के बोलें ॥ २ ॥  
 इति भा० ए० शं० मं० त्रयोदशोऽध्याये त्रयोदशवेणी १३ श्लो० १८ ॥

श्रोता पूछते भये कृष्ण से उद्धव पूछे कि मुक्तिकी इच्छा  
 करने वाले योगी भगवान् को ध्यान कैसे करते हैं तब श्रीकृष्ण  
 उद्धव के प्रश्न की बात को त्यागिके सगुण को ध्यान वर्णन किये  
 यह शंका होती है १ वाचक बोले कृष्ण विचार किये कि ब्रह्म  
 को ध्यान मुक्तिकी इच्छा करने वाले योगी करते हैं सो ध्यान  
 सुने से तथा कहे से नहीं प्राप्त होता वह ध्यान तो बहुत दिनों  
 तक सत्संग करे तो प्राप्त होता है २ और उद्धव का हृदय  
 ज्ञान में कच्चा है और हमारी भी तयारी जाने की हो रही है  
 जो कुछ दिन हमको मृत्युलोक में रहना होता तो भी  
 उद्धव ब्रह्मज्ञान में पका हो जाता ऐसा विचारिके सगुण  
 को ध्यान कहे हैं कि धीरे २ सगुण को ध्यान करते २ ब्रह्म  
 के ध्यान को उद्धव प्राप्त होवेंगे इसवास्ते ब्रह्म को ध्यान त्यागि

श्रोतार ऊचुः ॥ योगिनो योगनिरता वासुदेव पराय  
 : अग्न्यर्कविषहोयानां स्तंभने किम्प्रयोजनम् । तेषां  
 धैकृष्णेन सिद्धिरुक्ता च योगिनाम् १ वाचक उवाच ॥  
 ॥ पिप्पिधा प्रोक्ता योगशास्त्रविचक्षणैः २ विरक्ताश्च  
 ॥ सिद्धिरेषा पुरातनी । गृहस्थानां हितायोक्ता कृ.  
 ॥ ३ आतुरत्वान्ननियमं च कारयोगिनां  
 ॥ ४ इति भा० ए० शं० मं० पंचदशे अध्याये पंच  
 ॥ १५ ॥ श्लो० ॥ ८ ॥

सगुणध्यान कृष्ण वर्णन किये हैं ॥ ३ ॥ इति भा० ए० शं०  
 ॥ चतुर्दशे अध्याये चतुर्दशवेणी ॥ १४ ॥ श्लो० ॥ ३१ ॥  
 श्रोता पूछते भये आगि सूर्य जहर जल इन्ह आदि और बड़ी २  
 को तजरोकने वास्ते कृष्ण सिद्धि वर्णन किये कि ऐसी  
 धैय कारकै योगी लोग आगि सूर्य जहर जल इन्ह सबके  
 तेज को रोकिलेते हैं इसमें यह शंका है कि भगवान् में  
 जो योगीजन तिन्हको इन सब चीजों के तेजरोक  
 क्या प्रयोजन था १ वाचक बोले योगशास्त्र के जानने वाले  
 जो दो प्रकार को योगी कहथे एक तो गृहस्थ योगी जो  
 में बैठे २ योग करते हैं दूसरा विरक्त योगी जो घर  
 त्यागिकै योग करते हैं और आठ सिद्धि भी आदि से चली  
 आती हैं २ तब गृहस्थ योगियों के वास्ते श्रीकृष्ण इन सिद्धियों को  
 कहे थे आगि सूर्य विष जल को तेज रोकने वास्ते जो कोई  
 कहे कि ऐसा भेद तो नहीं किये कि गृहस्थ योगियों के वास्ते  
 ये सिद्धि हैं तो ठीक है भगवान् को बैकुण्ठ को जाने की तैयारी  
 रही उसी आतुरता से योगियों को नेम नहीं किये ३ इति  
 ॥ ए० शं० मं० पंचदशे अध्याये पंचदशवेणी ॥ १५ ॥ श्लोक ॥ ८ ॥



श्रोतार ऊचुः ॥ चतुर्वर्णस्सदापज्ये  
 त्सलः । न ब्राह्मणानान् नियमः केवलं हरिपूजने  
 नोक्तमाचार्यन्तत्कथं द्विजसत्तम । ॥ १५ ॥  
 न्तेयथावदतथाप्रभो २ वाचक उवाच ॥  
 नृष्ट्या विप्रशापसमुद्भवम् । ॥ १६ ॥  
 जान्मेने स ईश्वरान् ३ अतः ४  
 न्तिकथाम्बिभो ४ इति० भा० ए० शं० मं०  
 ध्याये षोडशवेणी ॥ १६ ॥ श्लो० ॥ २ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ यो

श्रोता पूछते भये भक्तों के प्यारे जो भगवान् तिसक  
 पूजन भजन ध्यान और जो भगवान् की सेवा सो ब्राह्मण चर  
 वैश्य शूद्र सब को करना लिखा है ऐसा नहीं लिखा है कि ब्राह्मण  
 अकेला भगवान् को पूजन करे और कोई वर्णन करे ?  
 ब्राह्मणों में उत्तम वाचक तो फिर श्रीकृष्ण से उद्धव क्यों कह  
 कि हे भगवन् जिसविधि से ब्राह्मण आपको पूजन करते हैं  
 सो विधि कहो यह शंका है क्योंकि वेदकी विधिके पूजने में  
 तो एकविधि है शूद्र की जुदा है और भक्तिमार्ग में सबकी  
 एक विधि है सो उद्धव भक्तये भक्तिमार्गकी पूजन बात पूछते थे  
 इसवास्ते भ्रम है वाचक बोले उद्धव ने ब्राह्मणकी शाप करिके  
 यदुवंशियों की खय देखिके ब्राह्मणों को भगवान् मानते  
 क्योंकि श्रीकृष्ण के देखते देखते ब्राह्मणके शाप से  
 नाश होगया श्रीकृष्ण कुछ भी सहाय नहीं किया  
 उद्धव जीने कि ब्राह्मणों के ऊपर भगवान् को कुछ भी अक  
 नहीं चतता ३ इति भा० ए० शं० मं० षोडशे अध्याये षो  
 १६ ॥ श्लो० ॥ २ ॥

दुःख उद्धरेत् । तमुद्धरिष्ये सद्यो ह मापद्भ्यश्च कथन्तस्म  
 १ वैश्यवत्कथमित्यन्तुकृष्णेनोक्तमिदम्बचः २ वाचक  
 उवाच ॥ ब्राह्मणानाम्महापापैरापदस्संभवन्ति च । इतरे  
 षांतथान्यनैरेतद्ज्ञात्वाप्युवाच सः ३ यावत्पापविनिर्मु  
 क्तो न भवेद्ब्राह्मणो हरिः । तावदन्येन तद्दुःखशान्तिकार

श्रोता पृच्छते भए श्रीकृष्ण उद्धवसे कहे कि हमारे भजन  
 करने वाले ब्राह्मण को दुःख दारिद्र आदि लेके अनेक संकट  
 से जो कोई मनुष्य छुड़ाता है तो उस छुड़ाने वाले मनुष्य को  
 हम बहुत जल्दी से दुःख दारिद्रसे कष्टसे छुड़ा देते हैं इस  
 में यह शंका होती है कि अपने भजन करने वाले ब्राह्मण को  
 आप क्यों नहीं जल्दी दुःख दारिद्रसे छुड़ाते दूसरे को लोभ क्यों  
 खाते हैं १ जैसा बाणियां आड़ते लोगों से काम करते हैं ऐसा  
 चन कृष्ण क्यों कहे २ वाचक बोले बड़ा बड़ा पाप ब्राह्मण  
 करते हैं तो उन्हें बड़े २ पापों करिके ब्राह्मण को दुःख दारिद्र  
 कष्ट होता है और चत्री वैश्य शूद्र को थोरही पापसे दुःख  
 दारिद्र होता है इस वास्ते भगवान् विचार किये कि हम  
 जल्दी ब्राह्मणों को अपना भजन करनेवाला जानिके दुःख  
 दारिद्रसे छुड़ा देवेंगे तो ब्राह्मण और मान करिके पाप करेंगे  
 जानि लेंगे कि भजनके प्रतापसे दुःख नाश हो जाता है  
 क्या करेगा २ ऐसा विचारिके ब्राह्मणों को मान नाश करने  
 वास्ते कृपा करिके जब तक ब्राह्मण पापसे छुटता नहीं तब  
 तक उस ब्राह्मणके दुःख दारिद्रको दूसरे मनुष्यसे दूर कराने  
 हैं कि ब्राह्मण को मालूम पर जावे कि हम भगवान् को ऐसा  
 बड़ा भजन करते हैं तो भी हमको यही पापी जानिके हमारा  
 दुःख दारिद्रको नाश नहीं किये जो हमारे पास पाप न होता

यतेऽनिशम् ३ इति० भा० ए० शं० मं० सप्तदश वेणी ॥ १७ ॥ श्लो० ॥ ४३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ जिघृक्षोर्ब्राह्मणस्यैव संन्यासं प्रमदादयः । विघ्नं कथं प्रकुर्वन्ति वैराग्यमनसो द्विज १ वाचक उवाच ॥ कलत्रादिभयः पाशो दुःखेष्टयः सर्वजन्तुभिः । नराणां चैव कावार्ता तद्वशाः पशुपक्षिणः । अतश्चोक्तं प्रकुर्वन्ति विघ्नान् दारादिरूपिणः २ इति भा० ए० शं० मं० अष्टादशेऽध्याये अष्टादशवेणी १८ ॥ श्लो० ॥ १४ ॥

तो जल्दी भजन के प्रतापसे हमारे दुःख को नाश कर देते अब पाप कभी नहीं करेंगे ऐसा विचारिके ब्राह्मण पापबुद्धि त्याग देंगे हे श्रोता हो इस वास्ते दूसरेसे ब्राह्मण को दुःख नाश करने वास्ते कृष्ण कहें ३ इति भा० ए० शं० मं० सप्तदशेऽध्याये सप्तदश वेणी ॥ १७ ॥ श्लो० ॥ ४३ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी जो ब्राह्मण वैरागमें मन लगाय के संन्यास लेनेकी इच्छा करते हैं उनके विघ्नको स्त्री आदि परिवार कैसे करेंगे क्योंकि मन कच्चा होवे तब तो जो चाहें सो विघ्न करि देंगे और जो मन पक्का होके वैराग में लाग गया तो किसीको किया विघ्न नहीं होसकैगा यह शंका है १ वाचक बोले भाई स्त्री पुत्र कुटुंब करिके उत्पत्ति भई जो फांसी उससे सब घर अचर जीव काटा चाहें तो किसीकी काटी नहीं कटैगी जो कोई महात्मा काटने को मन करेंगे तब बड़े कठिनसे काटि सकेंगे क्योंकि स्त्री पुत्रके मोह में पशु पक्षी बंधि गये हैं तो मनुष्य बंधि गया तो क्या आश्चर्यकी बात हुई इस वास्ते भगवान् कहें कि ब्राह्मण को मन वैरागमें लगा है तो भी स्त्री पुत्र आदि परिवार संन्यासमें विघ्न करते हैं २

श्रोतार ऊचुः ॥ तपस्तीर्थजपोदानमन्याश्चापि  
सुसक्रियाः । विहाय भगवान् ज्ञानं कथं श्रेष्ठमुवाच ह १  
वाचक उवाच ॥ फलदाश्चिरकालेन सर्वा वैश्यक्रियादयः ।  
सद्यः फलति संसारे ज्ञानमेकं सुखप्रदम् २ दृष्ट्वा चिरमुवा  
चेदमुद्धवस्य रमापतिः ३ इति भा० ए० शं० मं०  
एकोनविंशोऽध्याये एकोनविंशवेणी ॥ १६ ॥ श्लो० ॥ ४ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ ज्ञानवैराग्यकर्मादि तथा तपजपौ  
इति भा० ए० शं० मं० अष्टादशेऽध्याये अष्टादशवेणी ॥ १८ ॥  
श्लोक ॥ १४ ॥

श्रोता पूछते भये तपस्या तीर्थ जप दान आदि और जो  
अनेक सुन्दर २ क्रिया हैं तिन सब को त्यागिके अकेले ज्ञान  
को बड़ा श्रीकृष्ण क्यों कहे यह बड़ी शंका है १ वाचक बोले  
जितनी संसार में सुंदरि २ क्रिया कर्म हैं जप तीर्थ आदि ए  
सब बहुत जन्म में फल देते हैं क्योंकि तप जलदी फल नहीं  
देवैगा तीर्थ में स्नान करत मात्र स्वर्ग नहीं होवैगा और जिस  
बखत शरीर में ज्ञान उत्पन्न होवैगा उसी बखत अनेक जन्म  
को दुःख नष्ट होके जलदी सुख प्राप्त होवैगा २ लक्ष्मी के पति  
जो श्रीकृष्ण सो अपना तथा उद्धव को एकठा रहना बहुत  
दिन तक नहीं देखे घरी आभघरी को देखिके जलदी उद्धव को  
सुख होने वास्ते ज्ञान की उपासना उद्धव को बताये हे क्यों  
कि श्रीकृष्ण के वियोग को दुःख जप तप तीर्थों करिके दूर न  
हो सकता और ज्ञान उस दुःख को जलदी दूर करि दिया हे  
श्रोता हो इस वास्ते तप जप तीर्थ को त्यागिके श्रीकृष्ण ज्ञान  
को श्रेष्ठ कहें ३ इति भा० ए० शं० मं० एकोनविंशतितम  
एकोनविंशतितमवेणी ॥ १६ ॥ श्लोक ॥ ४ ॥

रपिसुदुर्लभ्या सातस्तेऽत्रनसंतिवै २ इति भा० एका० शं०  
मं० द्वाविंशेऽध्याये द्वाविंशवेणी ॥ २२ ॥ श्लो० ॥ ३५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ मुनिमिश्रापिदुर्लभ्यं ज्ञानं लेभे  
द्विजः कथम् । दुष्टः क्रूरमतिर्लुब्धो कृपणो विमुखो हरौ ।  
वाचक उवाच ॥ धनक्षीणो भ्रमन् विप्रः कानने स्तेदिवा  
करे । पंकमग्नां च गान्दृष्ट्वा तस्मात्तामुद्धधारह २ तत्प्री  
त्यापद्रुतं ज्ञानं ब्राह्मणः कर्मतापितः ३ इति भा० ए०

नाम है कि जो प्राणी मोक्ष विद्या को जाने मोक्ष विद्या कैसी  
है कि जिस मोक्ष विद्या की प्राप्ति होने वास्ते बड़े बड़े चतुर योगी  
जन उपाय करि करि दारिगये परंतु मोक्ष विद्या नहीं प्राप्त भई  
और जो किसी योगी को प्राप्त भई तो बड़े कठिन से ऐसी  
विद्या जानने वाले विद्वान् पृथ्वी में नहीं हैं इस वास्ते उद्धव  
कहे हैं शास्त्र पढ़ने वाले विद्वानों के वास्ते नहीं कहे थे २ इति भा०  
ए० शं० मं० द्वाविंशेऽध्याये द्वाविंश वेणी ॥ २२ ॥ श्लो० ॥ ३५ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी बड़ा दुष्ट खोटी बुद्धि कृपिण  
भगवान् में प्रीति नहीं ऐसा दुष्ट ब्राह्मण मुनियों करिके बड़े  
दुःख से प्राप्त होने लायक जो ज्ञान तिस ज्ञान को क्यों प्राप्त  
भया यह शंका है ? वाचक बोले धन को नाश हो गया तो ब्रा-  
ह्मण दुःखी होके बन में भ्रमता भ्रमता शाम होगई तो क्या  
देखता है कि एक गाय गारामें धसि गई है गारा से निकसि नहीं  
सक्ती बाहर आने को उस गाय को यह ब्राह्मण देखिके बड़ी दया  
से हाय हाय शब्द करिके कीचड़ से निकालिके बाहर करि  
दिया गाय खुशी होके धीरे धीरे चली गई २ गाय की कृपा  
से बहुत जन्दी ब्राह्मण को ज्ञान प्राप्त भया जो ज्ञान मुनिजन  
को बड़े कठिन से प्राप्त होता है यह स्थिति में जो खराब कर्म ब्राह्मण

शं० मं० त्रयोविंशोऽध्याये त्रयोविंशवेणी ॥ २३ ॥  
श्लो० ॥ १३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ ममेतिकृष्णः प्रोवाच कथम्ब्रह्मन्  
पुनःपुनः । ईश्वरस्य तदाश्चर्यं मभिमानयुतं वचः १  
वाचक उवाच ॥ प्रार्थितश्चोद्धवेनादौ श्रीकृष्णो मम स  
न्निधौ । कदाप्यन्यचरित्रस्य मावदिष्यसि त्वंकथाम् २  
त्वन्नामरसमग्नो ह मतो माधवभाषितम् ३ इति भा०  
ए० शं० मं० चतुर्विंशोऽध्याये चतुर्विंशवेणी ॥ २४ ॥  
श्लोक ॥ ६ से १० तक ॥

ने दिया था उन्हें कर्मों करिके धनको नाश भये पर जल  
रहा ज्ञानको पायके आनन्द होगया हे श्रोता हो इस उपायसे  
दुष्ट ब्राह्मण को ज्ञान मित्रता भया ३० इति भा० ए० शं० मं०  
त्रयोविंशोऽध्याये त्रयोविंशवेणी ॥ २३ ॥ श्लो० ॥ १३ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी श्रीकृष्ण बारम्बार मम ऐसा  
वचन क्यों कहते भये क्योंकि ईश्वर होके अभिमान युक्त  
वचन बोलना यह बड़े आश्चर्य की बात है मूर्ख मानुष्य तो  
ऐसी बात बोलते हैं यह बड़ी शंका है १ वाचक बोले पहिले  
ही उद्धव श्रीकृष्णकी प्रार्थना किये थे हे कृष्ण महाराज मेरे  
सामने आपु किसी दूसरे देवताकी और अपने दूसरे अवतारों  
की कथा मत कहना कभी भी आपनी एक कथा तो कहना २  
उद्धव कहे हे भगवन् आपु के नाम के रस के सुख में मैं  
मस्त होगया हों दूसरे को चरित्र मेरेको नहीं अच्छा लगता  
हे श्रोता हो ऐसी उद्धवकी प्रार्थनाको मानिके श्रीकृष्ण मम २  
कहे थे कुछ अभिमान से नहीं कहेये ३ इति भा० ए० शं०  
मं० चतुर्विंशोऽध्याये चतुर्विंशवेणी ॥ २४ ॥ श्लोक ॥ ६ ॥ से  
१० ॥ तक ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कोजीवोयस्तुजीवेन मुक्तोभवति  
 भोगुरो । एषानोमहतीशंका तांकृन्धिभ्रमदायिनीम् १  
 वाचक उवाच ॥ जीवोब्रह्मस्वरूपश्च अजीवोदेहमुच्यते  
 तन्मुक्त्वासुखमाप्नोति नान्यथादुःखभागभवेत् २ इति  
 भा० ए० शं० मं० पंचविंशेऽध्याये पंचविंशवेणी ॥ २५ ॥  
 श्लोक ॥ ३५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ वेदादिसर्वशास्त्रेषु भगवान्जगदी  
 श्वरः । कथितस्त्वहमार्तानामुवाचशरणन्त्वहम् १  
 वाचक उवाच ॥ भवताम्बचनसत्य मुन्मत्ताः कामिनः

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी जीव क्या है जो जीवसे छूटि  
 जाता है यह हमारे सब के मन में बड़ी शंका है इस शंका  
 को आप काटो १ वाचक बोले जीव ब्रह्म को रूप है अजीव  
 देह है जब तक देह के सुखकी इच्छा जीव करता है तब तक  
 दुःख भोगता है और देह में बँधा भी रहता है और जब देह  
 के सुखकी इच्छाको छोड़ देता है तब देहकोभी त्यागिके ब्रह्म  
 सुखको प्राप्त होता है यह अर्थ (जिदोऽजीवो विहायमां) इस  
 श्लोक में है २ इति भा० ए० शं० मं० पंचविंशेऽध्याये पंच  
 विंश वेणी ॥ २५ ॥ श्लोक ॥ ३५ ॥

श्रोता पूछते भए वेद शास्त्र सब में लिखा है कि भगवान्  
 तीन लोक बौदह भुवन चर अचर प्राणी को मालिक है तो  
 फिरि श्रीकृष्ण अपने मुख से क्यों कहेकि दुःखी प्राणी की  
 शरण हम हैं यह बड़ी शंका है १ वाचक बोले तुमारे सबके  
 वाक्य सत्य है परंतु अभिमानी कामी दुष्ट ये सब प्रभुको

जः । नैव जानन्ति ते विष्णुन्दीनाश्चाहोऽनिशम्प्रभुं २  
 ० ए० शं० मं० षड्विंशोऽध्याये षड्विंशवेणी २६  
 श्लो० ॥ ३३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ क्रियायोगं च सर्वेषामाग्रमाणां च  
 सम्मतम् । आश्रमेष्वपि सन्यासश्चेष्टस्तस्य कथन्त्व  
 दम् १ वाचक उवाच ॥ आदौ कृत्वा क्रियायोगम् पश्चा-  
 त्संन्यासमाश्रिताः । न तेषां सम्मतन्तद्वै परैः पृष्टावदन्ति

नहीं जानते और गरीब राति दिन प्रभुको जानता है इसवास्ते  
 गरीब प्रभुको प्यारे हैं अभिमानी द्रोही हैं इसवास्ते कृष्ण  
 कहे थे कि मैं गरीबों को मालिक हूँ ॥ २ ॥ इति भा० ए० शं०  
 मं० षड्विंशोऽध्याये षड्विंशवेणी ॥ २६ ॥ श्लोक ॥ ३३ ॥

श्रोता पृच्छते भये हे गुरुजी छवोंशास्त्रों का चारों वणोंका  
 चारिआश्रमों का मत यह है स्नान चंदन पुष्प धूपदीप नीरां-  
 जन और अनेक सामग्री करिके ईश्वरको पूजन करना योग्य  
 है परन्तु तीन आश्रम जैसा ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ एतौ  
 भगवान् को पूजन करना मानते हैं परन्तु इन्हें तीन्हों से  
 बड़ा जो संन्यासी बोलोग पूजन करना क्यों मानेंगे वो तो सघ  
 कर्मत्यागि दिहे हैं तो फिर उद्भव क्यों कहे थे कि भगवान् को  
 पूजन करना चारों आश्रम को मत है यह शंका है ? वाचक  
 बोले मुनिजन पेशतरतो बड़ी बड़ी विधि से पैकुठनाथको  
 पूजन करिके पीछे से संन्यास लेते हैं संन्यास पाहेपर फिर  
 उनको मत यह नहीं है कि अभीभी पेशतर तरीके सामग्री  
 करिके भगवान् को पूजन करना परन्तु जो कोई सज्जन भ-  
 गवान् को पूजन करनेकी विधि पढ़ता है तो उम्हो घताने हैं  
 इसवास्ते उद्भव कहे कि संन्यासी देहसे पूजन नहीं करते



हि २ एतस्मादुद्धवेनोक्त माश्रमाणां च सम्मतम् ३३०  
भा० ए० शं० मं० सप्तविंशोऽध्याये सप्तविंशवेणी २७ ॥  
श्लो० ॥ ४ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कृष्णवाक्यमिदं शुद्धं प्रशंसेन्न निंद  
येत् । परेषां कर्मणो भावं कस्यार्थमिदमीरितम् १ वाचक  
उवाच ॥ विरक्तानामिदं कर्म विरक्तेष्वपि न्यासिनाम् ।  
न्यासिनामपि श्रोतारस्सर्पवृत्तिधियान्ध्रुवम् २ इति०  
भा० ए० शं० मं० अष्टविंशोऽध्याये अष्टविंशवेणी २८ ॥  
श्लो० ॥ १ ॥

लेकिन मनमें तौ जानते हैं कि पूजन को भूले नहीं जो भूलिग  
ये होते तो दूसरे को क्यों बताते २ इस वास्ते चारि आश्रम को  
मत पूजन करने में उद्धव कहे थे ॥ १ ॥ इति भा० ए० शं०  
मं० सप्तविंशोऽध्याये सप्तविंशवेणी ॥ २७ ॥ श्लो० ॥ ४ ॥

श्रोता पूछते भये श्रीकृष्ण जी कहे कि कोई सुन्दर कर्म  
करै तौ उसकी तारीफ़ नहीं करना और कोई बुरा कर्म करै  
तौ उसकी निन्दा भी नहीं करना क्योंकि जो स्वभाव जिस  
जीव को होता है सो तैसा कर्म करता है तौ हे गुरुजी ऐसा  
सुन्दर वचन श्री कृष्ण जी किसके वास्ते कहे थे यह स्थ किसी  
की निन्दा स्तुति न करै कि विरक्त न करै यह शंका है । वा-  
चक बोले हे श्रोता हो यह वचन भगवान् विरक्त को कहे हैं  
तथा विरक्तों में जो कोई संन्यासी होता है उसके वास्ते भी  
कहे हैं और संन्यासियों में जो कोई परम हंम होजाते हैं उन  
के वास्ते तो निश्चय से कहे हैं यह अर्थ है कि साधु भरे को  
किसी जीवकी निन्दा स्तुति नहीं करना चाहिये ऐसे कृष्ण  
के वचन यह स्थ के वास्ते नहीं कहे हैं ॥ २ ॥ इति भा० ए०

श्रोतार ऊचुः ॥ प्रोक्तवानुद्धवः कृष्णम्मोहो विष्ठावि  
तश्च मे । अभवन्मोहसंयुक्तः क्षत्राष्टः पुनः कथम् १  
वाचक उवाच ॥ नरस्वभावादभवद्गतमोहोऽपि चो  
द्धवः । मोहग्रस्तः क्षणं भूत्वा कृष्णं स्मृत्यजहौ पुनः २ ॥  
इति० भा० ए० शं० मं० एकोनत्रिंशे० एकोनत्रिंशवेणी  
२६ ॥ श्लो० ॥ ३७ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कथं ध्यातिसमापेदे व्याधः कृष्णपदे  
शं० मं० अष्टविंशेऽध्याये अष्टविंश वेणी ॥ २८ ॥  
श्लो० ॥ १ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी श्रीकृष्ण से उद्धव कहे कि  
महाराज मेरा मोह अब मेरी देह को त्यागिके भागि गया मोह  
से अब मैं छूटि गया तो फिर यमुना के तट पर विदुर उ-  
द्धव से कृष्ण का हाल पूछे तो क्यों मोह ग्रसित होगये ईश्वर  
का हाल भी नहीं कहि सके कुछे देर पीछे हाल कहे जो कोई  
कहे कि ज्ञान पाये पीछे फिर मोह घेर लिया होगा तो सत्य  
है जो बहुत दिन होगया होगा तो आश्चर्य नहीं था परन्तु  
ज्ञान पायके कृष्णके पास से दिन तो दो तथा तीन भया था  
विदुर की उद्धव की मुलाकाति भई तब यह शंका है १ वा-  
चक बोले उद्धव का मोह नाश भया था तो मनुष्य के स्वभाव  
करिके ब्रह्म १ मोहके बश होके श्रीकृष्णको स्मरण करिके फिर  
मोहको त्यागि देते भये हे श्रोता होई सवास्ते यमुना के तट पर उद्धव  
को मोह भया कुछ अज्ञानी सरीके मोह नहीं भया २ इति भा०  
ए० शं० मं० एकोनत्रिंशेऽध्याये एकोनत्रिंश वेणी ॥ २६ ॥  
श्लो० ॥ ३७ ॥  
श्रोता पूछते भये व्याधा को मनुष्य को तथा मृगा के

तदा । मृगमानुष्ययोश्चिन्देयोजधनेचरणेहरेः  
 वाचक उवाच ॥ अंगदश्चगतःस्वर्गरामपदाब्जसेवया  
 रामदत्तवरश्चैवस्वपितुर्ऋणमोचने २ नि...  
 स्वीरस्स्वर्गादागत्यकानने ।...  
 एकमलापतेः ३ इति भा० ए० शं० मं० त्रिशोऽध्याये  
 त्रिशवेणी ३० ॥ श्लो० ३३ ॥

पहिचानने भ्रम क्यों भया जिस भूल करिके श्रीकृष्णके चरणों  
 रविद को मृग मानिके महाराज के चरण में बाण  
 मारता भया निशाना लगाने वाले मनुष्य कभी भी नहीं  
 चुकते छोटी भी चीज होती है तौभी दृष्टि से देखते हैं और  
 त्रिलोकनाथकी देह तौ बड़ी रही होगी व्याधा कैसा पागल  
 हो गया मृग और मानुष्य उसको नहीं मालूमपरा यह शंका  
 है १ वाचक बोले अंगद रघुनन्दन के कमल चरणों की सेवा  
 करिके स्वर्ग को जाने लगा तौ रघुनाथ जी अंगद से कहेकि  
 जो वरदान तेरेको चाहै सो मांगु तब अंगद बोला हे महाराज  
 मेरे पिता को आपु मारि डाले हो सो दांव में लिया चाहता  
 हूं आपुसे तब रघुनाथ जी कहेकि हम कुछ युग बीते बादर में  
 कृष्ण अवतार धरेंगे तब तुमारे पिता के चरणसे तुमको छुड़ा  
 देंगे तुमारे हाथ के बाणसे हम प्राण त्यागिके वैकुण्ठ को जावें  
 गे २ श्रीरघुनन्दन जो सनय कहि गयेथे उसी समय को देखि  
 के धीर अंगद स्वर्ग लोक से उसी वनमें आयके व्याध होके  
 लक्ष्मी के पति जो भगवान् गिनके चरण में बाण मारता  
 भया हे श्रोता हो इस वास्ते व्याध को मनुष्य को तथा मृग  
 को पहिचान भूलि गया क्योंकि बहुत दिनको व्याध नहीं पा  
 वा तो जल्दी आया पिताको दांव सेके चला गया ॥ ३ ॥  
 इति भा० ए० शं० मं० त्रिशोऽध्याये त्रिशवेणी ॥ ३० ॥ श्लो० ३३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ योगाग्निना शरीरं च दग्ध्वा देहमगा  
 । स देहो न जगत्कर्ता शंकैषा भ्रान्तिदा च नः १ वाच  
 क उवाच ॥ न शोभानरदेहेन वैकुण्ठगमने मम । यद्येहामु  
 म्परित्यज्य धृत्वा पौर्वम्ब्रजाम्यहम् २ मृतावशेषाय दव  
 स्सस्त्रियः पितरौ च मे । आगत्य मेतनु नृदृष्ट्वा भविष्यन्त्य  
 तिविह्वलाः । मरिष्यन्ते पितेषाम् वैदुःखं बहुतरं भवेत् ३  
 अतो योगाग्निना दग्ध्वा शरीरं गतवान् पदम् ॥ ४ ॥  
 इति भा० ए० शं० मं० एकत्रिंशो० एकत्रिंशवर्णी  
 ११ ॥ श्लो० ६ ॥

श्रोता पृच्छते भये हे गुरुजी श्रीकृष्ण योग अग्निसे अपनी  
 देहको भस्म करिके अपने स्थानको जाते भये परन्तु देहसहि  
 त क्यों नहीं गये देह जलाना पामर जीवों के वास्ते है कुछ  
 ईश्वरके वास्ते नहीं है यह शंका होती है १ वाचक बोले  
 श्रीकृष्ण विचार किये कि मानुष्य की देह सहित वैकुण्ठ को  
 जावे तब तौ शोभा नहीं होगी क्योंकि वैकुण्ठ लोकवाजी देह  
 तौ हमारी दूसरी है यह देहतौ मानुष्य लीजा करने वास्ते  
 धारण कियाथा और जो इस देह को इस स्थानपर त्यागि कै  
 अपना पेश्तरको स्वरूप धारण करिके वैकुण्ठको चले जावे तौ  
 भी अच्छा नहीं क्योंकि २ जोय दुयंशी मरिगये सोतो मरिगये  
 परन्तु जो कोई थोरे २ स्त्री सहित नहीं मरेजीते हैं जैसे हमारे  
 माता पिता तथा रुक्मिणी आदि जेकै स्त्रियाँ सो सब इस स्थान  
 पर आयके हमारी देहको जीवरहित देखिके बहुत दुःखी  
 होवेंगे मरेगे तो सही परन्तु मरण समय में भी हमारी देहको  
 देखि देखि बहुत दुःखसे प्राण छोड़ेंगे ३ हे श्रोताहो श्रीकृष्ण

ऐसा विचारिकै योगआग्निसे अपने शरीरको भस्म  
गोलोक को पधारते भये ॥ ४ ॥ इति भा० ए० शं० मं०  
त्रिंशेऽध्याये एकत्रिंशवेष्टी ॥ ३१ ॥ श्लो० ॥ ६ ॥

इति श्रीमद्भागवतैकादशस्कंधशंकानिवारण  
मंजरी शिवसहायबुधविरचितासुधामयी  
टीकासमाप्ता ॥

## ।दशस्कथ

सुधामयी टीका सहिता विरच्यते ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ स्वलोकंगमितेकृष्णवंशंकौसूर्यसो  
मयोः। प्रवर्तितंस्वयंराजादृश्यापिष्टृष्टवान्कथम् १ वंशः  
कस्याभवद्भूमावाचार्यमिदमद्भुतम्। समीचीनमिद  
म्प्रश्नविनष्टेचद्वयोःकुले । कस्यवंशोभवेद्भूमौक्षिती  
शोभुनिसत्तम २ वाचक उवाच ॥ ज्ञात्वासन्निधिमाप  
न्नमृत्युंसर्पोद्भवन्नृपः। प्रयाणंशुकदेवस्यशीघ्रवीक्ष्या

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी श्रीकृष्णको बैकुंठ गयेके पीछे  
पृथ्वी में सूर्य वंशके राजा तथा चंद्रवंश के राजा बहुतथे तिन  
राजों को परीक्षित राजा देखताथा कि दोनोवंश के राजा  
भूमिमें राज करिरहे हैं परन्तु राजा देखि कै फिरि शुकदेव-  
जीसे क्यों पूछाकि महाराज कृष्णको गोलोकगये पीछे पृथ्वी  
में किसवंश के राजा होतेभये १ हे गुरुजी जब सूर्यवंश के  
तथा चंद्रवंश के राजोंको नाश होगया होता तब तो परीक्षि  
तको ऐसा पूछना योग्यथा हे शुकजी महाराज श्रीकृष्ण तो  
अपने लोकको गये अब भूमिमें किसकेवंश के राजा होवेंगे  
यह शंका हे २ वाचक बोले राजा परीक्षित ज्ञानतौ पायगया  
बड़ाज्ञानी होगया तौभी मानुष्य देहके स्वभावसेतौ अपना  
मरण सर्व करिकै साम्ने जानिकै कि अब मेरा शरीर धोरेही

तुरोभवत् ३ द्वयोर्विरहसंततः प्राप्तज्ञानोपिभूपतिः ।

च्छातुरभावेनकस्यवंशोऽभवत्क्षितौ ४ इति भा०

शं० मं० प्रथमेऽध्याये प्रथमवेणी ॥ १ ॥ श्लोक १

श्रोतार ऊचुः ॥ द्वितीयेद्वादशस्यैववसुश्लो  
श्वरः । क्षत्रशब्दमधश्चक्रेछन्दभंगोऽपिनोकथम्  
वाचक उव

विनष्टंक्षत्रधर्मस्थंविशमन्योन्यविग्रहम् ।

मधश्चक्रएतदर्थंकलौमुनिः २ इति भा० द्वा० शं० मं०

द्वितीयेऽध्याये द्वितीयवेणी ॥ २ ॥ श्लोक ॥ ८ ॥

देरमें छूटैगा तथा शुकदेव कोभी जानिलिया कि अब  
विदा होजावेंगे दोनों विरहसेती राजा भस्म होरहा है  
ऐसी आतुरसे पूछता भया महाराज कृष्ण के गयेपीछे भूमि  
में किस वंशके राजा होतेभये हे श्रोताहो चौरासी लाख यो-  
निमें ऐसा कोई प्राणी नहीं है जिस को अपनी देहके वियोग  
को दुःख तथा गुरुकी देहके वियोग को दुःख नहोवै ॥ ४ ॥  
इति भा० द्वा० शं० मं० प्रथमेऽध्यायेप्रथमवेणी ॥ १ ॥ श्लो० १ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी द्वादश के दूसरे अध्याय के  
श्लोक ८ में व्यासजी ने क्षत्रिको नीचे पदमें लिखे हैं और  
वाणियों को ऊपर के पदमें लिखे हैं ब्राह्मण के नीचे क्षत्री  
लिखे जाते हैं क्षत्री के नीचे वैश्य वैश्यके नीचे शूद्र ऐसा शा-  
स्त्रमें प्रमाण लिखा है फिर उल्टा क्यों व्यास जी लिखे जो  
कोई विद्वान् कहै कि क्षत्री को पहिले लिखेसे श्लोक को छंद  
भ्रष्ट होता रहा होगा इस वास्ते उल्टा लिखे हैं सो श्लोक  
को छन्द भी नहीं नष्ट होता क्यों उल्टा पद लिखे यह बड़ी  
शंका है ; वाचकबोले व्यास मुनिभूत भविष्य वर्तमान तीनों

श्रोतार ऊचुः ॥ श्रुतभागवताऽर्थोपिशुकशिष्यो  
विशेषतः। प्राप्तसन्निधिकालश्च तथापिकलिजस्य वै। कथ  
म्पप्रच्छदोषस्य शान्त्युपायन्तुपोत्तमः १ वाचक उदाच  
विचार्यमानसेस्वीयेकलौकौरवसत्तमः। समाजोदुर्लभ  
श्चेदृग्भवितामोक्षसूचकः २ पप्रच्छकलिदोषस्यकलि

काक्षके जानने वाले थे ऐसे व्यासजी देखिके कि कलियुग में  
कुर्म करिके चत्रियों का वंश नष्ट होजावैगा चत्री आपुस में  
बिगाड़ करेगे चोरी तथा अन्याय करेंगे जनेऊ पहिरना त्याग  
देवेंगे इन्हें आदि और अनेक बुराकर्म करेंगे नीचकी स्त्रीको  
गृध्रपान करेंगे और जो शास्त्रों में चत्रियोंको धर्म लिखता  
है धर्मकी रक्षा करना आदिके और अनेक प्रकारको सुंदर २  
कर्म वैश्य करेंगे इसवास्ते वैश्य के नीचे चत्री को लिखे हैं  
वैश्य को चत्रीके ऊपर लिखे हैं ॥ १ ॥ इति भा० द्वा० शं० मं०  
द्वितीयेऽध्यायेद्वितीयवेणी ॥ २ ॥ श्लो० ॥ ८ ॥

श्रोता पूछते भये राजा परीक्षित भागवत समस्त सुनि  
लिये तथा शुकदेव जीके शिष्यभी थे मरणभी जल्दी होना था  
उस समय ज्ञानमें चित्त देना था ऐसे ज्ञानी भी तथा दुःखी भी  
परीक्षितराजा कलियुग के दोषकी शान्ति होने के उपाय क्यों  
पूछे जानते नहीं थे मैं तो थोरेही देर में मरूंगा भगवान् में  
चित्त देवों कलियुग के दोषको मेरे को क्या डर है जीते तबतो  
डरथा अब शान्त होनेका उपाय क्यों पूछों ऐसा विचार त्यागि  
कै क्यों पूछे यह शंका है १ वाचकवाले राजा परीक्षित आप-  
ने मनमें विचार किये कि कलियुग में मोक्ष देने वाली ऐसी  
समाज कभी नहीं होवैगी पेट भरने वास्ते कथा चार्ता होवे  
गी ३ इसवास्ते दूसरे जीवों को दुःख करिके दुःखी जो



जानोसुखाय च ।

तः ३ इति भा० द्वा० शं० मं०  
वेणी ३ श्लो० ॥ १६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ शतवर्षाधिकोवायुर्वातिवर्षतिवारि  
दाः । शतवर्षाणिमुनिनाप्रमाणं प्रलये प्रभो १ किमभि  
प्रायमाश्रित्य नन्यूननाधिकं कृतम् २ वाचक उवाच ॥  
क्षमाबलं समाश्रित्य संस्थिता पृथिवी जले । क्षमाशत  
परीक्षित सो कलियुगमें जन्मैगे जो प्राणी तिनको सुख होने  
वास्ते कलियुगके दोष की शान्ति होनेका उपाय राजा पूछते  
भये कि मुनि जो उपाय कहेंगे तो उसी उपाय करिकै कलि-  
युगमें जीवोंका उद्धार होवैगा हे श्रोता हो ऐसा उपकार करने  
वास्ते राजा दुःखी भी था तौभी पूछाहै कुछ मूर्खता से नहीं  
पूछा ४ इति भा० द्वा० शं० मं० तृतीयेऽध्याये तृतीय वेणी ॥  
३ ॥ श्लो० ॥ १६ ॥

श्रोता पूछते भये प्रलय होने वास्ते व्यासजीने शत १००  
वर्ष को प्रमाण क्यों करि दिया सौ वर्ष से दोचारि एक वर्ष  
तथा मास ऊपर प्रमाण करते अथवा सौ वर्षके नीचे दोतीन  
पांच छ वर्ष तथा महीना तथा दिन प्रमाण करते परन्तु ऐसा  
प्रमाण क्यों लिखे कि एक वर्ष से सौ १०० वर्ष को अधिक  
करिकै कि सौ वर्ष अन्ततक वायु चलती है फिरि सौ वर्ष मेघा  
जल वर्षते हैं ऐसा सौ वर्ष को प्रमाण क्यों लिखे यह शंका है  
वाचक बोले पृथ्वी में क्षमा बहुत है उसी क्षमाके जोर करि  
कै जलके ऊपर टिकी पृथ्वी को जल डुबोय नहीं सकता  
क्षमा के प्रताप सेती क्षमा के सौ १०० गुण हैं भगवान् भी  
क्षमाको जीता चाहें तौ भगवान् के जीते क्षमा नहीं जीती

गुणाप्रोक्तानजेयाहरिणापिसा । एकैकगुणनाशार्थं शत  
वर्षावधिः कृता ३ इति भा० द्वा० शं० मं० चतुर्थे०  
चतुर्थवेणी ॥ ४ ॥ श्लो० ॥ ८ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ वएर्यतेऽत्र भृशं विष्णुर्मुनिवाक्य  
मिदंगुरो । न त्वत्र दृश्यते भीक्षुं हरिर्वर्णनमएवपि १  
वाचक उवाच ॥ पश्यन्ति ब्रह्मवेत्तारो विश्वमेतच्चरा  
चरम् । ब्रह्मरूपं च श्रोतारश्चातो भीक्षुम्प्रकीर्तितम् २  
इति भा० द्वा० शं० मं० पंचमेऽध्याये पंचमवेणी ॥ ५ ॥  
श्लो० ॥ १ ॥

जावैगी ऐसी बलवान् चंमा है २ इसी वास्ते चमाके सौ १००  
गुणोंका एक २ वर्ष में नाश करने वास्ते सौ वर्ष १०० किये हैं  
एक एक वर्ष में एक २ गुणको नाश होवै सौ वर्ष १०० में  
सौगुण को नाश भयेपर प्रलय होवैगा है श्रोताहो इस वास्ते  
सौवर्ष प्रलय होने को प्रमाण किये हैं ॥ ३ ॥ इति भा० द्वा०  
शं० मं० चतुर्थेऽध्याये चतुर्थवेणी ॥ ४ ॥ श्लो० ॥ ८ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी शुकदेव जी कहे कि हे राजन्  
इस भागवत में बारंवार भगवान्को नाम तथा चरित्र वर्णन  
भया है ऐसे भागवत में बारंवार भगवान् को नाम चरित्र  
थोराभी नहीं वर्णन भया समय पायकै सब कथा वर्णन भई  
तथा भगवान् कोभी चरित्र वर्णन भया है तो फिर बारंवार  
वर्णन होने वास्ते मुनिजी क्यों कहे यह शंका है १ वाचक  
बोले ब्रह्मके जाननेवाले मुनिजो हैं सो चर अचर को ब्रह्मरूप  
देखते हैं शुकजी ब्रह्मके जाननेवाले हैं चर अचर को ब्रह्म  
रूप जानिके चर अचर को वर्णन बारंवार भयातो भगवान्

श्रोतार ऊचुः ॥ १८ ॥

तितक्षकः । प्रेरितोद्विजवाक्येनसम्पराजर्षिसतम १  
त्वामित्युवाचकंहंसोचेज्जीवसमुवाचसः । त ।  
ग्यंकेनापिनजीवोदह्यतेकदा २ लौकिकेदेहप्राधान्यंदे  
हंत्वामित्युवाचसः । दृष्ट्वालोकेनकैर्ज्ञातोजीवोविधिवि  
निर्मिमते । बभूवतत्कथम्भस्मसर्पदंष्ट्रोन्मृपस्यसः ३

को वर्णन जानिलिये इसवास्ते भगवान् को चरित्र बारंबार  
वर्णन होनेको कहते भये ॥ २ ॥ इतिभा० द्वा० शं० मं० पंचमेऽ  
ध्यायेपंचमवेणी ॥ ५ ॥ श्लो० ॥ १ ॥

श्रोता पूछते भये द्वादशस्कंध के पांचवें अध्याय में शुकजी  
कहे हेराजन ब्राह्मण के शापकी आज्ञा को पाये जो सर्प सो  
तुमको भस्म नहीं करेगा १ भागवत के श्लोक में (त्वां) खिला  
है तब शुकदेव जीने त्वां किसको कहथे परीक्षित की देहको  
कहथे कि जीवको कहथे जो जीवको (त्वां) कहथे तौभी अयो-  
ग्य है क्यों जीव किसी के जलाने से जालि नहीं सकता २  
जो कदापि ऐसा देखिके कि संसार में देहईकी तारीफ है  
जीवको कोई नहीं जानता देहको (त्वां) कहथे तब फिरि सर्प  
के काटेसे देह भस्म क्यों होगई मुनितो कहथे कि भस्म नहीं  
होगी यहशंका होती है वाचक बोले जो प्रश्न तुमसबजनोंने  
किया सो प्रश्न सत्य है संसार में देहकी तारीफ देखिके कि  
देह सिवाय जीवको कोईभी नहीं जानता इसवास्ते मुनिजी  
देहको (त्वां) कहथे अबदेह भस्म होनेको कारण सुनो शुकके  
वचन सत्यये राजाकी देह सर्पकेकाटे से भस्म न होती परन्तु  
परीक्षित के मरण के समय में भगवान् विचार किये शुक-  
देव जीसे राजा भागवत सुना ७ दिन से सर्पके काटेसे मरते

उवाच ॥ भवदूभिश्चैवसत्योक्तन्देहं वामिति  
सोऽब्रवीत् । श्रीभागवतमर्यादापालितुंतत्तकस्यच ४  
ब्रह्मर्षेश्चापिसंचक्रेहरिर्निरयमोक्षणम् । वैकुण्ठप्रेष्यराजा  
नंतदेहंभस्मसात्कृतम् ५ इति भाग० द्वा० शं० मं०  
षष्ठेऽध्यायेषष्ठवेणी ६ श्लोक ॥ १३ ॥

श्रोतार उचुः ॥ सुरेशम्पातितुंशक्ताद्विजायस्तुसुधा  
धिपः । यज्ञेसुरगुरुःप्रोचेनायम्ब्रध्वस्वयानृप १ अने

हैं प्राणी तब उनको नरक होताहै भागवत के प्रताप से इसको  
अब नरक में नहीं जाना चाहिये जोऐसा करेंगे तौ सर्प की  
मर्यादा नाश होवैगी इसवास्ते भागवत की सर्पकी शुकजी  
की इन तीनोंकी मर्यादा राखनेवास्ते भगवान् परीक्षित् को  
तीन कर्म करिके तीनों की मर्यादा राखते भये ४  
सर्प काटे से मृत्यु होवै तौ उस प्राणी को नरक वास करना  
परता है सो भागवत के श्रवण के प्रताप से परीक्षित् को  
भगवान् ने नरकवास से लुड़ाय लिये तथाशुक जी को राजा  
शिष्य था इस वास्ते वैकुण्ठ को राजाको प्राप्त किये सर्पकी  
मर्यादा रक्षा वास्ते राजा की देहको भस्म करि दिये हे श्रो-  
ता हो इस कारण से राजा की देह भस्म हो गईहै कुछशुक  
का वाक्य झूठा नहीं है जो सर्पकी मर्यादा भगवान् रक्षा  
न करते तौ कभी भी राजा की देह भस्मनहोती ५ इतिभा०  
द्वा० शं० मं० षष्ठेऽध्याये षष्ठवेणी ॥ ६ ॥ श्लो० ॥ १३ ॥

हे गुरुजी जनमेजयकी यज्ञमें बृहस्पति जनमे जय राजा  
से कहे कि हे राजन् तत्तक अमृतको पीलियाहै अब तुमारे  
मारेसे नहीं मरेगा क्योंकि अमृत को जो प्राणी पीलिते हैं  
सो किसी के मारेसे नहीं मरते इसमें यह शंका होतीहै कि

श्रोतार ऊचुः ॥ पंचा-ये-  
 तितत्तकः । प्रेरितोद्विजवाक्येनसर्पोराजर्षिसतम  
 त्वामित्युवाचकंहंसोचेज्जीवसमुवाचसः । ८  
 ग्यंकेनापिनजीवोदह्यतेकदा २ लौकिकेदेहप्राधान्यंदे-  
 हंत्वामित्युवाचसः । दृष्ट्वालोकेनकैर्ज्ञातोजीवोविधिवि-  
 निर्मिते । बभूवतत्कथम्भस्मसर्पदंष्ट्रोन्मृपस्यसः ३

को वर्णन जानिलिये इसवास्ते भगवान् को चरित्र बारंबार  
 वर्णन होनेको कहते भये ॥ २ ॥ इतिभा० द्वा० शं० मं० पंचमेऽ  
 ध्यायेपंचमवेणी ॥ ५ ॥ श्लो० ॥ १ ॥

श्रोता पूछते भये द्वादशस्कंध के पांचवें अध्याय में शुकजी  
 कहे हेराजन ब्राह्मण के शापकी आज्ञा को पाये जो सर्प सो  
 तुमको भस्म नहीं करेगा। भागवत के श्लोक में (त्वां) खिला  
 है तब शुकदेव जीने त्वां किसको कहेथे परीक्षित की देहको  
 कहेथे कि जीवको कहेथे जो जीवको (त्वां) कहेथे तौभी अयो-  
 ग्य है क्यों जीव किसी के जलाने से जालि नहीं सकता २  
 जो कदापि ऐसा देखिकै कि संसार में देहईकी तारीफ है  
 जीवको कोई नहीं जानता देहको (त्वां) कहे थे तब फिरि सर्प  
 के काटेसे देह भस्म क्यों होगई मुनितो कहेथे कि भस्म नहीं  
 होगी यहशंका होती है। वाचक बोले जो प्रश्न तुमसबजनोंने  
 किया सो प्रश्न सत्य है संसार में देहकी तारीफ देखिकै कि  
 देह सिवाय जीवको कोईभी नहीं जानता इसवास्ते मुनिजी  
 देहको (त्वां) कहेथे अबदेह भस्म होनेको कारण सुनो शुकके  
 वचन सत्यथे राजाकी देह सर्पकेकाटे से भस्म न होती परन्तु  
 परीक्षित के मरण के समय में भगवान् विचार किये शुक-  
 देव जीसे राजा भागवत सुना ७ दिन से सर्पके काटेसे मरते

उवाच ॥ भवद्भिश्चैवसत्योक्तन्देहं वामिति  
 १८ वीत् । श्रीभागवतमर्यादापालितुं तत्तत्कस्यच ४  
 ब्रह्मर्षेश्चापिसंचक्रे हरिर्निश्चयमोक्षणम् । वैकुण्ठप्रेष्य राजा  
 नेतरेहं भस्मसात्कृतेम् ५ इति भाग० द्वा० शं० मं०  
 षष्ठेऽध्याये षष्ठवेणी ६ श्लोक ॥ १३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ सुरेशम्पातितुं शक्ता द्विजायस्तुमुधा  
 धिपः । यज्ञे सुरगुरुः प्रोचेनायम्बध्यस्व यानृप १ अने

हैं प्राणी तब उनको नरक होता है भागवत के प्रताप से इसको  
 अब नरक में नहीं जाना चाहिये जो ऐसा करेंगे तो सर्प की  
 मर्यादा नाश होवैगी इसवास्ते भागवत की सर्पकी शुकजी  
 की इन तीनोंकी मर्यादा रखनेवास्ते भगवान् परीक्षित को  
 तीन कर्म करिके तीनों की मर्यादा रखते भये ४  
 सर्प काटे से मृत्यु होवै तो उस प्राणी को नरक वास करना  
 परता है सो भागवत के श्रवण के प्रताप से परीक्षित को  
 भगवान् ने नरकवास से छुड़ाय लिये तथा शुक जी को राजा  
 शिष्य था इस वास्ते वैकुण्ठ को राजाको प्राप्त किये सर्पकी  
 मर्यादा रक्षा वास्ते राजा की देहको भस्म करि दिये हे श्रो-  
 ता हो इस कारण से राजा की देह भस्म हो गई है कुछ शुक  
 का वाक्य झूठा नहीं है जो सर्पकी मर्यादा भगवान् रक्षा  
 न करते तो कभी भी राजा की देह भस्म न होती ५ इति भा०  
 द्वा० शं० मं० षष्ठेऽध्याये षष्ठवेणी ॥ ६ ॥ श्लो० ॥ १३ ॥

हे गुरुजी जनमेजयकी यज्ञमें बृहस्पति जनमेजय राजा  
 से कहे कि हे राजन् तत्तत्क अमृतको पीलिया है अब तुमारे  
 मारेसे नहीं मरेगा क्योंकि अमृत को जो प्राणी पीलेते हैं  
 सो किसी के मारेसे नहीं मरते इसमें यह शंका होती है कि

नापीतममृतमित्ययोग्यंकथंगुरो । वाचक उवाच ॥

रेण हरेर्नामसकृदुच्चरितं यदि । तदा सं

मिति ज्ञात्वा तु तत्तकः २ कैर्नापिरक्षितः ३

ने स्थितः ३ उच्चचार हरेर्नाम आतुरोऽश्रुपरिप्लुतः ।

न्तदमृतन्तेन गुप्तो गुरुवाच ह ४ इति श्री भा०

शं० नि० मंजरी ४ षष्ठाऽध्याये सप्तमवेणी ७ ॥

अमृत को मालिक इन्द्र जो राति दिन अमृत पीता

अमृत पीते २ अनेक युग पीति गये ऐसे इन्द्र को

से गिरायकै राजा की यज्ञ के कुंड में भस्म करने की

तो ब्राह्मणों की थी और जो राई भरि अमृत पीलिया सर्प

सो ब्राह्मण के मन्त्र से भस्म न हो सकता १ वाचक बोले

बहुत दुःखी होकै भगवान् को नाम एको भी दफे जपे तो अ-

संख्य नाम के जप का फल होता है ऐसा शास्त्रों में लिखा है ऐसा

तत्त्वक जानिकै २ विचार किया कि मैंने बड़े बड़े देवतों के

पास गया कोई भी मेरी रक्षा नहीं किये ऐसा विचारिकै

इन्द्र के मकान में टिकिकै बहुत दुःखी हो रहा है आंखों से

आंसू पड़ रहा है बहुत आतुर होकै है भगवान् है नारायण है

त्रिलोक नाथ इस प्रकार से बड़े आदर प्रेम प्रीति से भगवान्

को नाम जपता भया ३ भगवान् को नाम सोई अमृत भया

उसी अमृत को जप करना सोई अमृत तत्त्वक पीता भया

इस वास्ते गुप्त करिकै बृहस्पति कहे थे कि तत्त्वकने अमृत पी-

लिया तुमारे बधन किये नहीं मरेगा कुछ इन्द्र वाले अमृत

के वास्ते नहीं कहे थे ४ इति भा० द्रा० शं० मं० षष्ठेऽध्याये

सप्तम वेणी ॥ ७ ॥ श्लो० ॥ २४ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ ब्रह्मर्षयः कथंचक्रुर्विद्याध्ययनमद्  
भुतम् । सूतात्तदाद्विजानष्टामहाश्रय्यमिदंगुरो १  
वाचक उवाच ॥ व्यासस्यसेवनंचक्रेसुतो विनयनमृतः  
चिरकालमतस्तेनसंस्कृतः पुत्रवत्सुर्यः २ तवाननाच्च  
येविप्राश्शृण्वन्तिभगवत्कथाम् । पठिष्यन्तिचयेविद्यांते  
प्राप्स्यन्तिसहस्रधाफलंचातोद्विजास्सर्वेसूताद्विद्याम्प्रपे  
ठिरे३इ०भा०द्वा०शं०मं०सप्तमे०अष्टमवेणी ८ श्लो० ६

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी भागवत द्वादश स्कंधके अष्ट  
मा अध्याय में लिखा है कि सूतके मुख से ब्राह्मणलोग विद्या  
पढ़ते भये तो इसमें यह शंका होती है कि क्या उस वखत  
ब्राह्मणोंको विद्या पढ़ाने वास्ते ब्राह्मण वंश नहीं थे सब ब्राह्म-  
णों को नाश हो गया था इस वास्ते सूतके मुखसे विद्या पढ़ते  
भये बड़ा आश्चर्य होता है १ वाचक बोले सूत व्यास की  
सेवन बहुत वर्षों तक करता भया तब अपना पुत्र सरीके  
मानिके व्यासजीशास्त्रके तथा तपके जोरसे और भगवान्को  
अवतार भी थे सूतको यज्ञोपवीत आदि जो कर्म सो सधकरते  
भये २ संस्कार करिके सूतको वरदान दिहे हैं हे पुत्र सूततुमारे  
मुखसे भगवान्की कथाको जो कोई ब्राह्मण अभिमान त्यागि  
के सुनैंगे तथा विद्या पढ़ेंगे तब उन सुननेवाले पढ़नेवाले ब्राह्म-  
णोंको हजार गुण कथा को फल तथा हजार गुण विद्यापढ़े  
को फल प्राप्त होगा हे श्रोताहो इसवास्ते सब ब्राह्मण तथा  
सनकादिक अभिमान को छोड़ि २ सूतसे कथा सुनते भये  
तथा विद्याभी पढ़ते भये और ब्राह्मण को वंश नष्ट नहीं हुआ  
लोभ करिके सब पढ़े सुने हैं ॥ १ ॥ इति भा० द्वा० शं० मं०  
सप्तमेऽध्याये अष्टमवेणी ॥ ८ ॥ श्लोक ॥ ६ ॥



श्रोतार ऊचुः ॥ मुनीनांतपसोभंगमप्सराः  
 रयेत् । सर्वशास्त्रश्रुतज्ञश्च शचीभर्ताऽतिवंचकः ।  
 मुनयः कस्मात्तस्मैदंडविकोपिताः १ वाचक उवाच-  
 शताश्वमेधजंपुण्यंयावत्तस्यप्रवर्तते ।  
 पन्दातुमिच्छन्तिकर्हिचित् । मुनीनामुपतापेन दु-  
 तिराक्षसात् ३ इति भाग० द्वा० शं० मं०  
 ध्यायेनवमवेणी ६ ॥ श्लो० ॥ १५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ ..... चि .....  
 स्मयम् । गच्छन्तिष्ठन्परस्थान .....  
 श्रोतापूजतेभयेहे गुरुजी इन्द्रबड़ाकपटीहै  
 मैं सुना है असुरों को भेजिके मुनियोंको तप भ्रष्ट करि देता  
 तौ मुनिजनक्रोध करिके इन्द्रको शाप क्यों नहीं देते युग  
 मुनि लोगोंके तपको भंग डारिके न करे यह शंकाबड़ीकरहै १  
 वाचकबोलेसौ अश्वमेधकी पुण्य जब तक इन्द्रके पास रहती  
 है तबतक मुनिजन भी शाप देने की इच्छा नहीं  
 क्योंकि जानतेहैं कि पुण्य के प्रभाव सेती भगवान्की कृपा  
 इसके ऊपर है हम शाप देंगे तौ ईश्वर भी हमारे ऊपर  
 नाराज होवेंगे ऐसा विचारिके चमा करिके मुनि दुःख सहि  
 लेतेहैं परन्तु मुनियों के दुःख से इन्द्रको तेज दिन दिन नष्ट  
 होता है तब राक्षस लोग इन्द्रको ऐसा दुःख देतेहैं कि अनेक  
 युगों तक इन्द्र दुःख भोगता है हे श्रोताहो इस कारण से  
 मुनिजन इन्द्र के अपराध को चमा करिके शाप नहीं देते ३-  
 इति भा० द्वा० शं० मं० अष्टमेऽध्याये नवमवेणी ॥ ६ ॥ श्लो० ॥ १५

श्रोता पूजते भये दुष्ट मानुष्यों का लक्षण यह है कि  
 करते करते मुसिकि आते हैं तथा कोई मानुष्य उन

१ मार्कण्डेयाश्रमाद्गच्छन्स्मयस्वैधर्मनन्दनः ।

२ वाचक उवाच ॥

मोहितुं तं स्म

इति भाग० द्वा० शं०

मंजर्यान्वमेऽध्याये दशमवेणी १० ॥ श्लोक ७ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ अनाष्टष्टचमुनिना मार्कण्डेयेन शं

करः । ब्रह्मविष्णुमहेशाना मेकत्वं कथमुक्तवान् १ वाचक

पर आवैतौ उस को आता देखिकै मुसिकिआयँगे

तथा वो मानुष्य उन दुष्टों के मकान से चक्कर लगेँगे तौभी

मुसिकिआयँगे अथवा आपु किसी सज्जन के मकान पर

जावँगे तौ जाते वखत बैठेँगे तौ मुसिकिआयँगे चलने लगेँगे तौ

मुसिकिआयँगे एदुष्ट जीवों की पहिचान करने को लग्य है तब हे

गुरुजी मार्कण्डेय मुनि के आश्रम से नारायण मुनि चलने लगे

अपने स्थान को तब मुसिकिआते २ ध्याँ गये बड़े मुनि होकै

ऐसा बुरा कर्म करना यह बड़ी शंका होती है २ वाचक बोले

नारायण मुनि विचार किये कि मार्कण्डेय मुनि माया को प्रभाव

देखा चाहते हैं इन के मनमें ऐसा अभिमान है कि मैंने माया

को तप करिकै जीत लिया है ऐसा माया करिकै इन्हको मोह

करवावोंगा कि युग २ भूँगे नहीं हे श्रोता हो ऐसा विचारिकै

अपने मनमें नारायण मुनि मुसिकिआते चल गये कुछ दुष्ट कर्म

से नहीं मुसिकि आने इति भा० द्वा० शं० मं० नवमेऽध्याये दशम

वेणी ॥ १० ॥ श्लोक ॥ ७ ॥

श्रोता पूछते भये मार्कण्डेय मुनि ब्रह्मा विष्णु महादेव से

पूछे नहीं कि तुम तीन देवतों में कौन बड़ा है कौन छोटा है

कि तीनों जनों बरोबर हो तो बिना पूछे भी महादेव क्यों

उवाच ॥ मुनेर्हार्दिसमाज्ञाय त्रिषु देवेषु कवेरः ।  
 स्यात्स्याशुशान्त्यर्थं मनाष्टोप्युवाच सः २ इति  
 द्वा० शं० मं० दशमेऽध्याये एकादशवेणी ॥ १  
 श्लो० ॥ २१ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ वक्ष्येऽद्यस्वगुरुं नत्वा  
 षण्णदीरपि । सूतोक्तिरद्भुतेयम्बै पूर्वोक्ता ।  
 वाचक उवाच ॥ सर्वविष्णुमयं विश्वमुक्ता ।

कहथ मार्कण्डेय से ब्रह्मामें विष्णु में और हमारेमें  
 हमतीनोंदेव एकहीहैं यह हमको बड़ी शंकाहोती है ।  
 जोले मार्कण्डेय मुनि के मनमें ऐसा विचारथा कि तीनों  
 में कौनश्रेष्ठ है परन्तु लज्जा करिकै पूछिनहीं सकतेथे  
 महादेव ऐसी मार्कण्डेय के हृदयकी बातको जानिकै  
 डेय मुनि पूछेभी नहीं तौभी मार्कण्डेय मुनिके भ्रम की  
 होनेवास्ते ब्रह्मा विष्णु और शिवकी एक स्वरूप की  
 कहते भये ॥ २ ॥ इति भा० द्वा० शं० मंजय्या  
 एकादशवेणी ॥ ११ ॥ श्लो० ॥ २१ ॥

श्रोता पूछते भये बड़े आश्चर्यकी बातहै कि सूतकहे  
 अब अपने गुरुको नमस्कार करिकै विष्णुकी विभूति  
 वर्णन करताहों गुरुजी प्रथमस्कंधसे द्वादशस्कंधकी ११  
 तक विष्णुकी विभूति को वर्णन नहीं हुआ किरि  
 विभूति को वर्णन पेशतर हुआथा यहशंका है । वाचक  
 पेशतर ऐसा वर्णन भया है कि तीनजोक चौदह भुवन  
 अचर ये सब ईश्वर को स्वरूप हैं इसवास्ते  
 संपूर्ण संसार तिसकी विभूति को वर्णन भया है और  
 अकेले भगवान् की महिमा चारत्र को वर्णन होगा ।

मिदानीकेवलं हरेः २ इति भा० द्वा०  
मं० एकादशेऽध्याये द्वादशवेणी ॥ १२ ॥ श्लो० ॥ ४ ॥  
श्रोतार ऊचुः ॥ सूतेनोक्तमुनिभ्यश्च धर्मान्वक्ष्ये  
इति नोमहतीशंका पूर्वोक्तानसनातनाः १  
उवाच ॥ श्रीमद्भागवते धर्मा ये सर्वे मुनिवर्णि  
सनातनाश्च ते सर्वे कारणैकान्विबोधत २ प्रथम  
प्रोक्ता धर्मास्सुद्धमपथानि शम् । तेषां चात्क  
प्रोक्ता विस्तृतं श्लोकसंचयैः ३ उपक्रमणिकेऽ  
द्वादशस्कंधजाकथा । सर्वाः प्रोक्ताश्च व्यासेन  
सूतकहेथे किं अहं भगवान् कीं विभूतिं को वर्णनं करते  
हैं ॥ २ ॥ इति भा० द्वा० शं० नि० मंजय्या एकादशेऽध्याये द्व  
दशवेणी ॥ १२ ॥ श्लो० ॥ ४ ॥

श्रोता पूछते भये सूतेने मुनियों से कहै कि हम अब सना-  
तन धर्मको कहेंगे आपु मन लगाय के सुनो हे गुरुजी इस  
में यह शंका होती हो कि पेशतर जो धर्म वर्णन भये सो सनातन  
नहीं है जलदी की बनाये हैं १ वाचक बोले श्रीमद्भागवत में  
जो जो धर्म वर्णन भये हैं सो सब सनातन धर्म हैं जलदी बना  
ये एक भी नहीं हैं परन्तु एक कारण है तिसको श्रोता जनो  
श्रवण करो २ मुनियों ने प्रथम इस धर्मको बहुत थोरे करिके  
वर्णन किये हैं चारों धार कछु दिन पीछे उन्हींको थोरा सा वर्णन  
हुआ धर्मोंको विस्तार से बहुत श्लोक करिके कवि वर्णन  
करते भये ३ इस अध्याय में चारह स्कंधोंकी कथा व्यास जी  
थोरी रस्ता से वर्णन किए हैं जेसा पशुनर मुनि जन थोरे थोरे  
श्लोक में संपूर्ण धर्म वर्णन किये थे इसयास्ते सूतजी कहेंगे  
अब मैं सनातन धर्म वर्णन करता हों क्योंकि सनतन धर्म तो

न्युनेनास्मिन्यथाशुभाः । अतस्सनातनाधर्मा  
मिदंवचः ४ इति भा० द्वा० शं० मं०  
त्रयोदशवेणी ॥ १३ ॥ श्लोक ॥ १ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ श्रीमद् :

तौसूतसत्तमः । स्वगुरुंसर्वदेवं  
१ सर्वावताराणिहरेर्विहायकथमद्भुतं ।  
वीरंशंकेयम्महतीचनः २ वाचक उवाच ॥  
समाश्रित्यदेवासि सन्धुममन्थिरे ।  
फलितंचमनोरथं ३ त । सूतः ।  
तार्यवे । पारस्तंस्मृत्यकूर्मवैप्रणमामाशुविप्लुतः

वोई है जो मुनिजोग थोरे श्लोकों करिके वर्णन कियेये बहुत  
विस्तार तौ पीछेसे कवियोंने कियाहै सूत ऐसेनहीं विचारिके  
कहेथे कि अबतक सनातन धर्म नहीं वर्णन भया सनातन  
धर्म अब कहताहों ४ इति भा० द्वा० शं० मं० द्वादशाध्याये  
त्रयोदशवेणी ॥ १३ ॥ श्लो० ॥ १ ॥

श्रोता पूछते भये श्रीमद् भागवतकी समाप्ति में सूतजी  
अपने गुरुको तथा सब देवतोंको ब्रह्मा विष्णु शिवको १ भ-  
गवान् केसब औतारोंकोइन सबको त्यागिकेकच्छप भगवान्  
को नमस्कार क्यों किये यह शंका होतीहै २ वाचक बोले  
कच्छप भगवान्की कृपा करिके देवतोंने समुद्रको मधिके  
देवता लोग अमृत पाते भये अमृत पायके देवतोंका मनो-  
रथ सिद्ध होगया ३ तैसे सूतभी समुद्ररूप भागवत के पार  
कोगये कूर्मको स्मरण करिके इसवास्ते प्रेमसे सूतकी आंखों  
से अश्रु पड़रहीहै सबको त्यागिके कूर्मको नमस्कार करते

नभेदस्तेषुसर्वेषुहरेराविर्भवेषुच ४ इति भा० द्वा०  
शं० मं० त्रयोदशाऽध्याये चतुर्दशवेणी ॥ १४ ॥  
श्लोक ॥ २ ॥

भये तथा भगवान्के अवतारों में भेद भी नहीं है४इतिभा०  
द्वा० शं० मं० त्रयोदशेऽध्याये चतुर्दशवेणी ॥ १४ ॥  
श्लो० ॥ २ ॥

इति श्रीमद्भागवतद्वादशस्कंधशंकानिवारण -  
मंजरी शिवसहायबुधविरचितासुधामयी  
टीकासमाप्ता ॥ श्रीरस्तुशुभम् ॥

समाप्तेयंश्रीमद्भागवतशंकानिवारणमंजरी ॥  
ॐ नमः—पुष्पमस्तु ॥



श्रीमद्भागवतशंकानिवारणमंजरीकल्पनेकारणमिदं  
विद्वद्भिर्ज्ञातव्यम् ॥

श्रीमद्भागवत शंकानिवारण मंजरी बनानेका मेरा यह  
कारण है सो कारण विद्वान् जनोंको जानना चाहिये ॥

श्लोक ॥

विद्वांसस्सुब्रियोऽर्थबोधनपराजानंत्विमंकारणं जैनेज्यै  
र्यवनेशपूजिततरैर्म्लेच्छैस्तथान्यैरपि ॥ श्रीमद्भाग  
वतार्थवचनपरैस्संकलेशितो ऽहंसदाचातस्तन्मुखत्रो  
टनायहिमयासंकल्पितेयम्प्रभा ॥ १ ॥

हेविद्वज्जनाहो आपुसबजनोंकी शास्त्रोंमें बुद्धिबड़ीनिपुणहै  
तथा व्याकरण पढ़ेहो इस वास्ते सब शास्त्रोंके अर्थोंको जान  
तेहो श्रीमद्भागवत शंका निवारण मंजरी मैंने बनाया है  
तिसका कारण यहहै इस श्लोक से आप जन मालूम करना  
कि यती ढूँढ़ि आसमवेगी तथा मौलवी आदि लोके और  
जो म्लेच्छ हिन्दुस्तानमें वर्तमानहैं कैसेहैं भागवतकी निंदा  
राति दिन करते हैं येसब लोग मेरेको जिसी देश में मैं गया  
उसी देशमें बड़ा दुःख देते भये कि तुमारे भागवत में ऐसा  
२ अनर्थ लिखाहै इस वास्ते वो जो निंदा करने वाले पीछे  
लिखेहुयेहैं उन लोगोंके मुख भंजन करने वास्ते यह भाग-  
वत शंका निवारण मंजरी मैंने बनाया है इसको पढ़ने वाले  
सुननेवाले विद्वान्के सामने निंदक लोग नहीं खड़ेरहेंगे॥१॥

इतिभागवतशंकानिवारणकल्पनेसूचना १ समाप्ता ॥

अथस्वाध्यायान्त्यैविद्वान्सोमयाप्रार्थ्यन्ते ॥

ग्रन्थस्याऽस्यसकृद्बभूवरचनालेखावलिर्लेखकाद्य  
न्त्रांकांकितशोधनादिनिचयंरोगोऽपिमामगृहीत् एतस्मा  
द्यदशुद्धवर्णबहुलंतत्तन्म्यताम्भोबुधा दासोहंनितरांच  
शब्दविदुषांयूयंकृपासागराः ॥ १ ॥

इस ग्रन्थके बनानेमें जो मुझसे भूल चुक होवै सो अपना  
अपराध क्षमा कराने वास्ते व्याकरण पढ़ने वाले विद्वानों की  
प्रार्थना मैं करताहूँ प्रथम तो इस ग्रन्थको बनाने वास्ते भा-  
गवत में शंका को विचार मैंने किया फिरि उत्तर देनेको  
विचार किया फिरि श्लोक बनाना फिरि भाषा टीका बनाना  
फिरि लेखकसे लिखाना शोधना छपाना यह सब काम एकई  
साथ महीना ४ चार में भया इसी बीच में मैं बीमार भी  
होगया इस वास्ते जो कोई अच्छर अशुद्ध होवै उसको आपु  
सबमेरे ऊपर कृपा करिकै विचारिकै पठन करना मेरे अपराध  
को क्षमा करना क्योंकि व्याकरणपाठी विद्वानोंका मैं किंकर  
हूँ आप सब कृपाके समुद्रहो ॥

वाणा ५ विध ४ अङ्क ६ पृथिवी १ युतवत्सरेवै शुभले  
रवौयमतिथौ १० शुभैवेक्रमीये ॥ मासाश्विनस्य कृपया  
गिरिजापतेर्वैसम्पक् समाप्तिमगमच्छुभमंजरीयम् ॥१॥

इस ग्रंथके बनाने वाले पण्डित शिवसहायको देशांतर में  
पण्डित अयोध्या वासी जी कहतेहैं ॥

इस किताबकी रजिस्ट्री छोटेलाज, लक्ष्मीचन्द बुकसेलर  
के नामसे हुई है बिना उनकी आज्ञा कोई छापनेका  
अधिकारी नहीं है ॥



# इशितहार ॥

लीजिये ! लीजिये !! दोड़िये !!! क्या लूट मची है ॥

जो २ पुस्तकें संस्कृत, काव्य, कोश अलंकार नाटक, चंपू, ज्योतिष, वैद्यक, वेद और पाठशालाओं, की पढ़नेवाली और भाषा टीका इस दूकानपर सस्ते कीमत पर शुद्ध मिलती हैं जिन महाशयों को खरीदना मंजूर हो तलब फ़रमावे वेल्यू फ़ौरनूरवाना होगा ॥

दः छोटेलाल, लक्ष्मीचन्द

बुकसेलर अयोध्या जी.

# इशितहार ॥

नीचे लिखी हुई पुस्तकों की तारीफ़ नहीं करसक्ता हूँ देखनेसेही दिलकमल कलीसा खुल जायगा सज्जनों को देखना चाहिये ये नई २ पुस्तकें छपी हैं ॥

होलीविनोद	२॥	पुगुलविनोदपदावली	
फाग चौताल संग्रह २५ भक्तों का		पधुरअलीकृत	॥
संग्रह	१॥	हरिनाममुभिरनीषावा	
फागवसंत विनोद	३॥	रघुनाथदासकृत	१॥
फागप्रमोद चौताल	३॥	पारधीविधानभाषाटीका	१॥
रामकृष्ण चौताल	३॥	स्नेहसंग्रहवली वैद्यकभाषा	१॥
बृहद्भजनमुक्तावली	१-	सियबरकेलिपदावलीदोनोंभाग	१॥
फागुन बहार	३॥	रामसखेपदावली	१॥
भागवत शकानिवारणपंचरी	१॥	सावनबहार झूजा दोनोंभाग	३॥

दः छोटेलाल, लक्ष्मीचन्द

बंबई बुकसेलर अयोध्या जी.

जिस किताबपर मेरे दस्तख़त न हों वह चोरी की है ॥

## किताबों की फ़ेहरिस्त ॥

	फ़ीमत	रा० प०
भागवत भाषाटीका	१२)	२)
पद्मपुराण	१८)	३)
घातुमीकीय भाषाटीका	२१)	२॥)
घातुमीकीय संस्कृत टी०	८)	१)
हरिवंश मय माहात्म्य	६)	॥)
इक्षी भागवत	७)	॥)
अध्यात्मरामायण भा० टी०	४)	॥=)
रामाश्वमेध भा० टी०	४)	॥)
भागवत शंका निवारण मञ्जरी	१॥)	॥)
नन्दमहोत्सव	॥)	२)
दृष्टान्तप्रदीपिनी	॥)	२)
भागवत जीला कल्पद्रुम	१॥)	३)
भागवत माहात्म्य भा० टी०	१=)	६)
सत्यनारायण भाषाटीका	॥)	७)
वासिष्ठी	॥)	७)
गरुडपुराण भाषाटी०	१)	७)
कार्तिक माहात्म्य भा० टी०	१)	७)
एकादशी माहात्म्य भा० टी०	७)	७)
निर्णयसिन्धु भा० टी०	४)	७)
धर्मसिन्धु भा० टी०	७)	॥)
भावप्रकाश भा० टी०	६)	१)
योगभट्ट	१=)	२॥)

	क्र.सं.	द.०५०
रसरज महादात्र	१)	५)
चिकित्साचक्रवती भा०	३)	५)
रामायण बड़ी	४)	१०)
रामायण मध्य	१॥॥)	१५)
रामायण गुटका	२)	१)
रामायण सटीक ज्वालाप्रसाद	७)	१॥)
रामायण रामरयामकृत	८)	१॥)
रामायण रामचरुण टी०	४)	१॥)
रामायण रामचरण टी० सांची सफेद	७)	१॥)
रघुवंश भाषाटी	३)	॥)
शिशुपालवध भा० टी०	३)	॥)
रघुवंश छोटा	२)	५)
रघुवंश बड़ा	१॥)	५)
सुखसागर	७)	१॥)
सुखसागर छोटा	३)	१५)
निघंटरलाकर भा०	६)	१॥५)

दः छोटेलाल, लक्ष्मीचन्द्र बुकसेलर

बम्बई पुरतकालय अयोध्याजी ॥



अयोध्याप्रसाद कम्पनी  
जिला लखनऊ पो० काकोरी  
मौदा